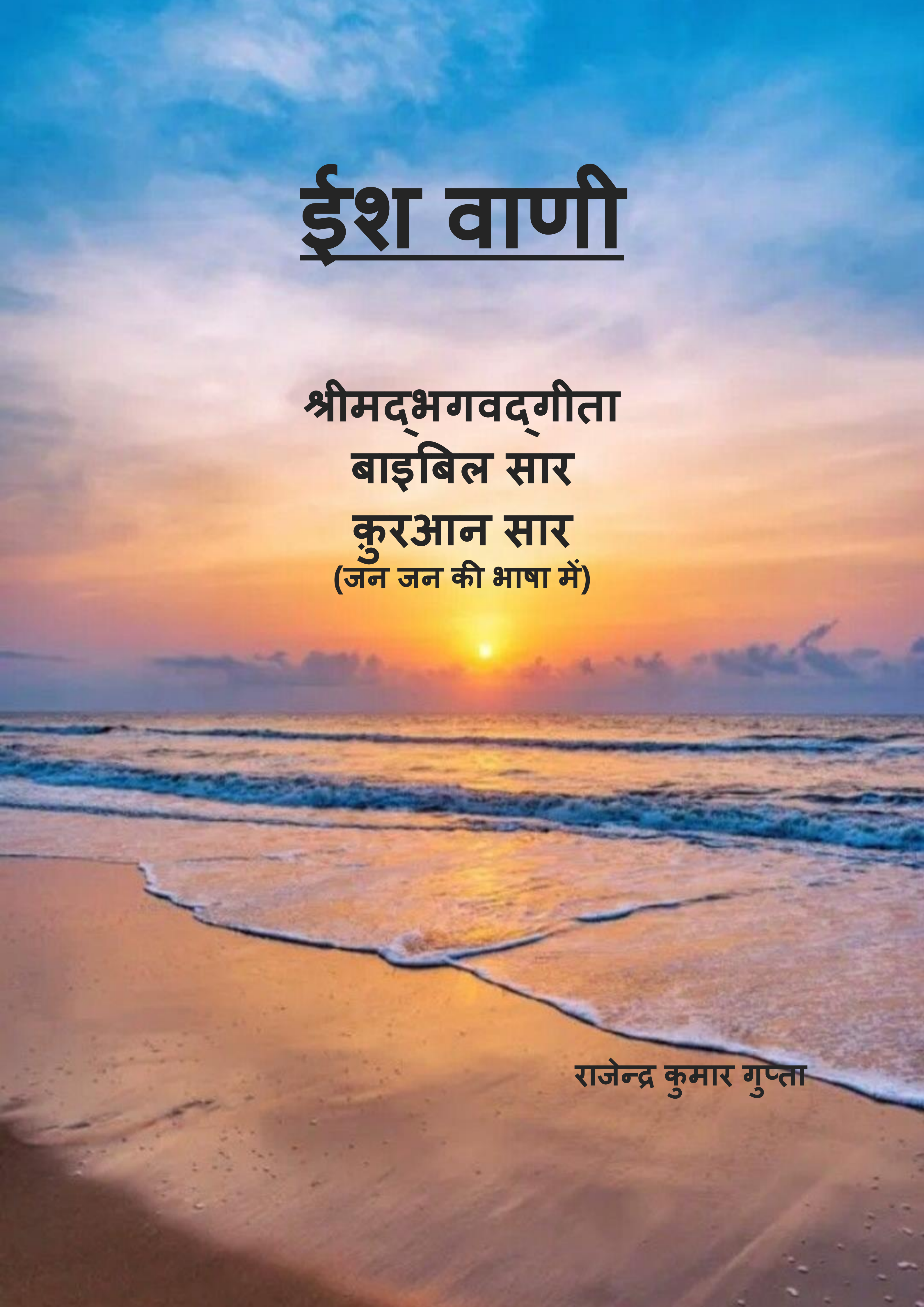

ईश वाणी

श्रीमद्भगवद्गीता
बाइबिल सार
कुरआन सार

(जन जन की भाषा में)

राजेन्द्र कुमार गुप्ता

<u>ईश वाणी</u>

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता
बाइबिल सार
कुरआन सार
(जन जन की भाषा में)

निवेदन

'ईश वाणी' दुनिया के तीन महानतम धार्मिक ग्रन्थ, श्रीमद्भगवद्गीता, पवित्र बाइबिल एवं क़ुरआन मजीद का सार सन्देश सुधि पाठकों के लिए सामान्य, जन जन की भाषा में, प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। ये तीनों ग्रन्थ स्वयं परमेश्वर द्वारा या उसके किसी फरिश्ते या दूत द्वारा दिए गए सन्देशों के संकलन हैं और अपने-अपने धर्मावलम्बियों में सर्वोच्च स्थान रखते हैं। मेरा अपना व्यक्तिगत अनुभव है कि शीर्षस्थ ग्रन्थ होने के उपरान्त भी हम में से अधिकतर लोगों ने स्वयं इन ग्रन्थों का अध्ययन-मनन ना कर लोगों से सुनी-सुनायी बातों पर ही विश्वास कर लिया कि जो कुछ वे कह रहे हैं ठीक है बिना यह सोचे कि अक्सर सुनी-सुनायी बातें भ्रम ज्यादा फैलाती हैं। इस प्रस्तुति का उद्देश्य लोगों तक इन तीनों ग्रन्थों का सन्देश यथावत लेकिन सरल और संक्षिप्त रूप में पहुँचाना है ताकि वे स्वयं इन ग्रन्थों के सन्देशों को आसानी से समझ सकें। ईश वाणी का उद्देश्य इन ग्रंथों का तुलनात्मक अध्ययन कदापि नहीं है बल्कि इनमें निहित आध्यात्मिक सन्देश को लोगों तक पहुँचाना मात्र है।

ये तीनों ही महान ग्रन्थ परमेश्वर की सर्वोपरिता और उसकी कैवल्यता को स्वीकारते और अनुमोदित करते हैं और इन तीनों ही ग्रन्थों का मुख्य सन्देश मनुष्य को सत्कर्म एवं परस्पर सद्भावना के लिए प्रेरित करना है। इन तीनों ही ग्रन्थों में बारम्बार जोर देकर यह कहा गया है कि सत्कर्म करने वाला चाहे किसी भी धर्म या समुदाय का हो, उस पर परमात्मा की कृपा होना और उसका उद्धार होना निश्चित है।

ये ग्रन्थ हमसे अपेक्षा रखते हैं कि हम इनको गहराई, उदार दृष्टिकोण और खुले दिमाग से समझें और इनकी बातों को प्रासंगिक, सारगर्भित और जन-कल्याण की भावना के साथ ग्रहण करें। केवल शाब्दिक और सतही अर्थ से कई बार उसके भावार्थ को खो देने का डर बना रहता है। उदाहरणार्थ 'सूद' लेने की मनाही का, मेरे विचार में असल मकसद यह सन्देश देना है कि मनुष्य को दूसरों की मजबूरी का फायदा नहीं उठाना चाहिए। क्या यह उचित हो सकता है कि कोई व्यक्ति अपने कर्जदार से सूद तो ना ले लेकिन उसकी मजबूरी का लाभ उठाकर बिना उचित कीमत दिए उसकी जमीन हथिया ले ? नहीं, बिलकुल नहीं। ये सद्ग्रन्थ इस पैगाम द्वारा हमें एक नेक इंसान बनने का सन्देश देते हैं जो औरों की सहायता को तत्पर हो और इस सहायता के पीछे उनकी मजबूरी का लाभ उठाने की नीयत ना रखता हो। बाइबिल इस विषय में स्पष्ट रूप से कहती है कि यदि तुम किसी को कर्ज दो तो उसकी चक्की का पाट रहन ना रखना अर्थात उसके जीवन में कठिनाईयाँ ना पैदा करना।

ईश वाणी की काव्यात्मक धारा प्रवाह में यथासम्भव इन तीनों ग्रन्थों में जड़े शब्द रूपी मोतियों का ही प्रयोग किया गया है, फिर भी कहीं-कहीं इस प्रवाह की सरसता और सहजता बनाए रखने के लिए एकाध अन्य शब्द का उपयोग आवश्यक जान पड़ा, लेकिन प्रयास यही रहा है कि इन ग्रन्थो के मूल भावार्थ से कोई छेड़-छाड़ ना हो। कहीं-कहीं फॉन्ट की अपनी सीमित क्षमता और बाध्यता के कारण कुछ शब्द पूर्णतया सही तरीके से नहीं लिखे जा सके हैं। पाठकों से अनुरोध है कि वे इसे अन्यथा ना लें और उन शब्दों के सही अर्थ को ही ग्रहण करने की कृपा करें।

श्रीमद्भगवद्गीता में 18 अध्याय एवं 700 श्लोक हैं, जिनकी प्रस्तुति इस पुस्तक में 633 पदों में की गई है। इस प्रस्तुति में कहीं-कहीं पर एक से अधिक श्लोकों का अनुवाद एक या अधिक पद में या एक श्लोक का अनुवाद एक से अधिक पद में बन पड़ा है। क़ुरआन मजीद में 114 सूर: एवं 6236 आयते हैं जिनको यहाँ 1670 पदों में प्रस्तुत किया गया है। पवित्र बाइबिल के विषय में तो सभी जानते हैं कि यह एक वृहद ग्रन्थ है। फिर भी पुराने नियम को 900 पदों में और नये नियम को इस पुस्तक में 1020 पदों में अर्थात बाइबिल का यह संक्षिप्त सार कुल 1920 पदों में प्रस्तुत किया गया है

। कुरआन मजीद और पवित्र बाइबिल इन दोनों ग्रन्थों का सार संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना दुष्कर कार्य है, इसमें कितनी सफलता मिल पायी है, इसका निर्णय तो पाठक स्वयं ही कर सकते हैं । प्रयास यही रहा कि दोहराव से जितना हो सके बचा जाए; यह पुस्तक की पठनीयता तथा सीमित आकार को देखते हुए भी आवश्यक था । इस प्रयास में बाइबिल की कुछ पुस्तकों (अध्यायों) को केवल उनके नाम के लिए ही शामिल किया गया है । इस पुस्तक में कई जगह परमात्मा को 'वो', 'उसे', 'उसका', 'उससे', 'हम', 'जिस' आदि शब्दों द्वारा संबोधित किया गया है, जिसे संदर्भानुसार पाठक आसानी से समझ सकेंगे ।

परमात्मा शब्दों की जगह उसके पीछे उनमें निहित भावों को तवज्जोह देता है, ऐसा मेरा मानना है । यदि किसी जगह ऐसे शब्दों का प्रयोग हो गया हो जो इन पवित्र ग्रन्थों के भावार्थ को सही रूप से प्रकट ना कर पाए हों तो मेरा पाठकों से विनम्र निवेदन है कि वे सही अर्थ को ही ग्रहण करने की कृपा करें ।

यूँ तो ये तीनों ही ग्रन्थ कई वर्षों पहले अलग-अलग प्रस्तुत किए जा चुके हैं लेकिन श्रीमद्भगवद्गीता और कुरआन मजीद को निजी तौर पर छापने के कारण कुछ जानकार लोगों को छोड़ आम लोगों को ये उपलब्ध नहीं हो पाए । इन तीनों ग्रन्थों को एक जगह एक साथ प्रस्तुत करने का विचार अभी हाल ही में मेरे मन में इस आशा के साथ आया कि सम्भवत: पाठक इन तीनों ग्रन्थों को एक साथ एक जगह पाकर इन्हें पढने को उत्साहित होंगे । इस पुस्तक में पूर्व प्रकाशित 'बाइबिल सार' को लगभग एक-चौथाई पद-संख्या में, अर्थात और भी अधिक संक्षिप्त कर प्रस्तुत किया गया है ताकि पाठकों के समय की कुछ और बचत की जा सके और पढ़ने में उनकी रूचि को बनाए रखा जा सके । इन ग्रन्थों की तब की प्रस्तावनाओं और अनुमोदनों को पाठकों की जानकारी के लिए इस पुस्तक में भी दिया जा रहा है ।

पाठकों की सुविधा के लिए अधिकतर उर्दू शब्दों का जो आम बोल-चाल की भाषा में प्रयुक्त नहीं होते, उनका हिंदी भाषा में अर्थ पुस्तक के अंत में दिया जा रहा है ।

मेरा आग्रहपूर्वक अनुरोध है कि पाठक एक बार अवश्य ही इस पुस्तक को स्वयं पढ़ कर इन ग्रन्थो का स्वअर्जित ज्ञान प्राप्त करें और जानें कि हम इनकी शिक्षाओं पर कितना खरा उतर पा रहे हैं ।

यह पुस्तक गुरुजनों का कृपा प्रसाद एवं परिजनों के सहयोग का परिणाम है, जिन्हें मैं सादर प्रणाम और साधुवाद निवेदन करता हूँ ।

पाठक अपने सुझाव rkgupta51@yahoo.com एवं +91-9899666200 पर भेज सकते हैं और अन्य प्रकाशित पुस्तकों के बारे में और अधिक जानकारी के लिए वे वेबसाईट www.sufisaints.net देखने के लिए आमंत्रित हैं ।

निवेदक
राजेन्द्र कुमार गुप्ता

Jaipur 4
27.9.88

Dear Son Blessings,

I heard Gita in Poem written by you
word by word. I am over joyed & my
heartiest blessings & Pray to Guru Bhagwan
to bestow you "Param Pad" परमपद
during this life. You may work for
Guru Bhagwan's mission now. Guru
Bhagwan has got me Crossed the ocean of
[illegible] - [illegible] - [illegible] & showed me that
"Baitarni River"
Lacs of People have Crossed.
My book is now complete
due to his 'Love'. My book of
Gita & my book of
experiences you may get Printed the
I have written two
you so desire.
more. If considered necessary Gita Press
may be Contacted for Gita Publication in
their Kalyan Chapter by chapter for Public.
There is no another God for me except
my Guru Bhagwan. He may bestow all
happiness & his Love to you & your wife.
all OK Blessings to Rinku & Vipin.

your father
[signature]

Archbishop Vincent M. Concessao
Archbishop of Delhi

Archbishop's House
1, Ashok Place
New Delhi - 110 001 (INDIA)
Phone : 23343457, 23362058
E-mail : archbishopdelhi@yahoo.co.in
Fax : 91-011-23746575

TO BEAR WITNESS TO THE LORD

Ref. No. GA/0101/2010 **February 9, 2010**

Mr. R.K. Gupta
27/103 East End Apartments
Mayur Vihar Phase-I Extn,
Delhi – 11 - - 96

Dear Mr. Gupta,

I glanced through your book titled "Bible Saar"- an essence of the Holy Bible. It is commendable that you have taken this initiative to bring the message of the Holy Bible through poetry, even though you yourself belong to a different religious tradition. I am sure your book will help the readers specially thore who love poetic language to appreciate the message of the Bible.

With warm regards and wishing you God's blessings in your noble works.

Yours sincerely,

+ [signature]

+ Vincent M. Concessao
Archbishop of Delhi

घोषणा-पत्र

REGIONAL BIBLE INSTITUTE

Sugranth Subodhana

(Of the Agra Ecclesiastical Region)

Date ....

TO WHOMSOEVER IT MAY CONCERN

This is to certify that I have gone through the book 'Bible Saar', and I find it free from any Scriptural error to the best of my ability. Keeping in mind particularly that a Hindu has written about Jesus, I find it worthy of publication.

Fr. Thomas D'Sa

Fr Thomas D'Sa
Director

date : 1st Feb 2010
Place : Bareilly

Director
Sugranth Sobodhana
Regional Bible Institute
HARUNAGLA
P.O. UNIVERSITY-243006,
BAREILLY

Address : Regional Bible Institute, Haru Nagla, Golden Green Park Road,
University Post, 243 006, Bareilly, U.P.
E-mail : regbibinst@yahoo.com Tel. : 09412761785, 0581-2520018

Dr. Mrs. Manju Jyotsna
M.A., M.Ed., Ph.D., D. Litt.
Emeritus Fellow, U.G.C.
(St. Xavier's College, Ranchi)
Former University Prof. & Head of the Department, Hindi, Ranchi University
Former Member, Bihar State University Service Commission.

Tel. : 0651-2201868
Mob. : 0-9334147500
Address :
1-B, Akshay Bhawan
R.G. Street, Tharpakhana
Ranchi 834 001, Jharkhand

प्राक्कथन

बाइबिल एक ग्रन्थ है, जिसका अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में हुआ है। इसका मूल रूप इब्रानी, अरामी और यूनानी भाषाओं में मिलता है। हिन्दी में इसका प्रथम अनुवाद 1818 में सिरामपुर में विलियम केरी ने किया। तब भी इसका यही उद्देश्य था कि यह सर्वजन सुलभ हो। इसी उद्देश्य से इसका अनुवाद भारत की कई भाषाओं के साथ हिन्दी की कई उप-बोलियों-बोलियों में भी हुआ था। लेकिन आज श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता का यह पद्यानुवाद पढ़कर मुझे लिखना पड़ेगा कि सहज भाषा में, स्पष्ट अभिव्यक्ति के साथ सटीक पद्यानुवाद का यह अनूठा प्रयास है। बाइबिल के शब्दों के साथ, बाइबिल की घटनाओं का कथा प्रवाह 'पुराना विधान' से बहता हुआ बड़ी कुशलता के साथ 'नया विधान' तक चलता है। इस पद्यानुवाद में बाइबिल के सागर से बड़ी दक्षता के साथ उन्हीं अंशों का चयन किया गया है जिनसे कथा आगे बढ़ती है। यह अनुवादक की और एक कुशल शिल्पी की पारखी नजर का ही कमाल है। राजेन्द्र जी का उद्देश्य भी पूर्ण होता है कि उनकी यह पद्यात्मक कृति पठनीय है और यही पुस्तक की सार्थकता भी है।

विषय और भाषा पर जैसे उनको अधिकार प्राप्त है तभी उन्होंने बाइबिल की गद्यात्मकता को पद्यात्मकता में सजा दिया है। बाइबिल एक धर्मग्रन्थ है जिसकी उक्तियों, घटनाओं और उसके तेवर से छेड़छाड़ नहीं की जा सकती। राजेन्द्र जी ने इसकी रक्षा का उत्तरदायित्व भी वहन किया है। बाइबिल के विशद कलेवर को छोटे सुधा-चषक में प्रस्तुत करने के श्लाघनीय प्रयास के हम कायल हैं।

मैं आशा करती हूँ और मेरी शुभकामना भी है कि आपकी यह पुस्तक धर्म, वर्ग और वर्ण के दायरे तोड़कर पाठकों को तुष्ट करेगी।

मंजु ज्योत्स्ना
01-02-2010

आभार ज्ञापन

"बाइबिल सार" जन-जन की भाषा में श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता द्वारा प्रणीत काव्यात्मक पवित्र अभिव्यक्ति है।

इस काव्यात्मक ग्रंथ का अध्ययन, मनन-चिन्तन आध्यात्मिक चिंतकों एवं मनीषियों के लिए जितना उपयोगी है उतना ही जन-साधारण के लिए भी है। इस काव्यात्मक धर्मग्रंथ में रचनाकार ने प्रभु येसु मसीह की भक्ति और आराधना का सरल मार्ग प्रशस्त करने का स्तुत्य प्रयास किया है।

कर्त्तव्यों का परित्याग करके ईश्वर के प्रति भक्ति व्यक्त नहीं की जा सकती है। बाइबिल सिखाती है कि सुधरी हुई विचारधारा का मनुष्य ही देवता कहलाता है। परोपकार में लगे हुए येसु के लिए संसार में कुछ दुर्लभ नहीं है। ज्ञान ही मनुष्य का परम मित्र है और अज्ञान उसका शत्रु। ईश्वर के प्रति कर्मनिष्ठा में विश्वास रखने वाले आयु के बंधन में नहीं बँधते। स्वर्ग जैसी वरिष्ठता प्राप्त करने के लिए दिव्य जीवन में प्रवेश किये बिना और कोई उपाय नहीं है। प्रेम और विश्वास जीवन की सर्वोच्च सिद्धि है, इस काव्यात्मक धर्मग्रंथ का यही संदेश है। इस कृति के रचनाकार के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ।

पी0एस0 यादव
भूतपूर्व प्राध्यापक
ईश्वर शरण कॉलेज,
इलाहाबाद

मूल्यांकन

बाइबिल सार—जन-जन की काव्य भाषा में

कितनी सरल भाषा में कोई रचना कर सकता है? कुछ लोग सोचेंगे कि पद्य होने के कारण भाषा में कठिनाई आयी होगी क्योंकि पद्य में लोग जटिल शब्दों का प्रयोग जरूर करते हैं। पर श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता ने बाइबिल के पद्यानुवाद में बाइबिल को पद्यरूप देने में सबसे सरल, सरस और प्रांजल भाषा का प्रयोग किया है। उत्पत्ति से आरंभ करके अंत तक उसी भाषा का निर्वाहा है।

उदाहरण के लिए आरंभ में : "परमेश्वर ने शुरू करी सृष्टि रचना
आकाश और पृथ्वी को बनाकर,
बेडोल और सुनसान थी पृथ्वी,
कुछ भी नहीं था तब धरती पर।

घनघोर अंधेरा था तब छाया,
'हो उजियाला' परमेश्वर ने कहा,
अच्छा जानकर उजियाले को,
पृथक अंधेरे से उसको किया।"

आरंभ में एक स्थान पर 'स्त्री' की सृष्टि भी आ जाती है। हम सोचते हैं कि इस अवसर पर भाषा अधिक भावयुक्त होगी और फलस्वरूप कठिन। पर ऐसी नहीं है। वहाँ भी सरल, सटीक और संयमित भाषा का प्रयोग हुआ है।

यहोवा उसे लाया मनुष्य के पास,
तब उसे देख मनुष्य ने यह कहा,
आया है इसका शरीर मेरे शरीर से,
इसलिए इसके साथ मैं रहूँगा सदा।

आगे बढ़ते अनुवाद में और भी अधिक सरलता आयी है। कहीं-कहीं नया विधान का अनुवाद बिलकुल सरल, प्राकृतिक और सहज है। एक-दो उदाहरण इसके लिए काफी हैं—

यीशू मंदिर में

"फिर यीशू मंदिर के अहाते में आया,
खदेड़ा खरीद-बेच करने वालों को उसने,
मंदिर में कुछ अंधे, लंगड़े, लूले थे,
कर दिया चंगा जिन्हें यीशू ने।

कहने लगे बच्चे ऊँचे स्वर में,
'होशन्ना'! धन्य है दाऊद का वह पुत्र,
क्रोधित हुए याजक और धर्मशास्त्री,
देख यीशू के वे अद्भुत कृत्य।"

सहजता और सरलता के लिए एक और उदाहरण प्रस्तुत है :

उसी दिन पुनर्जीवन को नहीं मानने वाले,
कुछ सदूकी लोग यीशू के पास आये,
पूछा उन्होंने मूसा के उपदेश के अनुसार,
निस्संतान विधवा को मृतक का भाई अपनाये।
अब मानो हम सात भाई हैं,
क्रम से निस्संतान जो मरते गये,
उन सबके बाद स्त्री भी मर गयी,
उस बारे में हम तुझसे पूछने आये।
अगले जन्म में इन सातों में से,
वह स्त्री होगी पत्नी किसकी,
क्योंकि पूर्व जन्म में वह स्त्री
पत्नी बनी थी उन सातों की।
कहा यीशू ने तुम नहीं जानते,
शक्ति शास्त्रों की या परमेश्वर की,
देवदूतों के समान होंगे पुनर्जीवन में,
होगी न उस जीवन में कोई शादी।
कहा था उसने, मैं परमेश्वर हूँ
इब्राहीम, इसहाक और याकूब का,
मरे हुओं का नहीं है वो,
वह परमेश्वर है जीवित लोगों का।

कितनी सरल, सुंदर और सटीक अभिव्यक्ति है दोनों की– प्रभु येसु की और सदूकियों की। इस पद्यानुवाद को कवि ने अंत तक निभाया है जिसे पढ़ना अच्छा लगता है। आपको भी यह अच्छा लगे, यही मेरी शुभकामना है। यदि कहीं दुरूहता है तो वह मूल पर आधारित है जैसे "प्रकाशित वाक्य" में मिलता है। निम्नलिखित पंक्तियों में "**संसार के लोगों का न्याय**" वर्णित है–

फिर मैंने एक विशाल श्वेत सिंहासन,
और जो उस पर विराजमान था, उसे देखा,
धरती आकाश भाग गये उसके सामने से,
कहाँ गये उनका पता तक न चला।
फिर मृतक खड़े देखे सिंहासन के सामने,
पुस्तकों में लिखे कर्मानुसार न्याय हुआ उनका,
जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं थे,
उन्हें भी आग की झील में गया धकेला।

फा. डा. मैथ्यु लिओ वेच्चूर, हिन्दी विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

"प्रस्तावना"

भारतीय उप महाद्वीप में हिन्दू और मुस्लिम दोनों तेरह शताब्दियों से भी अधिक समय से साथ-साथ रहते आये हैं। इस दौरान उन्हें एक-दूसरे के धर्मग्रंथों का अध्ययन करने, पारस्परिक समझ के अनुरूप भाषाओं में अनुवाद करने और तटस्थ तथा यथार्थ भाव से रचनात्मक अन्तरधर्मीय संवाद के बहुत से अवसर मिले जिससे पारस्परिक आदर व समझ को बल मिला।

लेकिन दुर्भाग्य से इन प्रयासों को यथोचित सम्मान यदा-कदा ही प्राप्त हो पाया। तेरहवीं शताब्दी के महान वैज्ञानिक एवं इतिहासकार अल-बरूनी जिन्होंने ज्ञान का आदान-प्रदान करने हेतु भारत भ्रमण किया था, ऐसे प्रथम विद्वान थे जिन्होंने हिन्दू धर्म, शास्त्रों और हिन्दू दर्शन को अनुभूत कर उनके बारे में लिखा। तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी में हजरत निजामुद्दीन औलिया जैसे संत एवं अमीर खुसरों जैसे प्रतिभा के धनी कवि ने अन्तरधर्मीय संवाद और समझ में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान किया। इसके लम्बे समय बाद अपने समन्वयवादी विचारों के साथ अकबर ने अन्तरधर्मीय संवाद को प्रोत्साहन दिया और उसके दरबार के बहुत से विद्वानों जैसे अबुल फजल एवं फैजी ने रामायण एवं महाभारत जैसे ग्रंथों का अनुवाद और समीक्षा की। उनके बाद जायसी और खान खानन जैसे कवियों का उदाहरण आता है जो भारतीय साहित्य के सच्चे प्रेमी थे। यही नहीं, अब्दुर रहमान चिश्ती ने भगवदगीता पर "हाकिक" नाम से विद्वातापूर्ण एवं मर्मस्पर्शी टीका लिखी और शाहजहां के सुपुत्र दारा-शिखो ने अपने पर-दादा की तरह ना केवल आपसी संवाद को प्रोत्साहित किया बल्कि उसने उपनिशदों एवं अन्य ग्रंथों पर टीकाएं भी लिखीं। किसी गैर मुस्लिम द्वारा क़ुरआन या हादिस पर लिखी कोई पांडित्यपूर्ण टीका मेरी नजरों में अभी तक नहीं आयी। यूरोपीय और अमेरिकी लेखकों ने अवश्य लिखा है, और वे निरन्तर लिखते रहते हैं, कभी-कभार यथार्थ भाव से, लेकिन अधिकतर पूर्वाग्रहों से ग्रसित हो कर। अतः मेरे लिये यह अत्यंत प्रसन्नता एवं संतुष्टि का विषय है कि मेरी मुलाकात राजेन्द्र कुमार गुप्ता से हुई, जो बेहतरीन भारतीय मिश्रित संस्कृति के एक उत्कृष्ट परिणाम और ऋषियों, सूफी एवं रहस्यवादी कवियों के एक प्रतिनिधि के रूप में मेरे सामने आये। गुप्ता प्रतिष्ठित रामचंद्रिया नक्शबंदिया सूफी सिलसिले से संबंधित हैं। यह सूफी सिलसिला हजरत मिर्ज़ा ज़ानज़ाना एवं रामचंद्र जी जो अठाहरवीं-उन्नीसवीं सदी में महान सूफी

संत हुए हैं, की संयुक्त प्रेरणा से स्थापित हुआ। गुप्ता ने इस सिलसिले के संत महात्माओं के जीवन चरित्र पर "Yogis in Silence" नाम से एक भावपूर्ण पुस्तक लिखी है जिसे उन सभी को जो भारत के विभिन्न धार्मिक आस्थाओं के बीच समन्वय में रुचि रखते हों, अवश्य पढ़नी चाहिए। उनकी दो और पुस्तकें "Sufism Beyond Religion" एवं "Science and Philosophy of Spirituality" भी प्रकाशित हो चुकी हैं। गुप्ता के लेखन में भाव प्रवणता एवं प्रतिबद्धता का सम्मिश्रण है जो एक निष्कपट लेखक के प्रमाण चिन्ह हैं। भारतीय सिविल सर्विस में संवेदीनशील कार्य करते हुए आध्यात्मिक और देवीय भाव के प्रति इनका गहन समर्पण उनके उपरोक्त लेखन कार्य से परिलक्षित होता है।

उनके इस नये कार्य क़ुरआन सार में उनकी आकंक्षा क़ुरआन का अनुवाद करना नहीं है। यह कार्य ना तो क़ुरआन का अनुवाद है, ना ही क़ुरआन की सम्पूर्ण-रूपेण व्याख्या या उसका शब्दार्थ। क़ुरआन सार में गुप्ता ने क़ुरआन के मुख्य अंशों को अपनी समझ के अनुसार प्रस्तुत किया है जिसका उद्देश्य क़ुरआन के विभिन्न सूरो: का सार, हिन्दी पाठकों के लिए सरल एवं रोजमर्रा की भाषा में पेश करना है। क़ुरआन के अंग्रेजी भाषा के दो मुख्य अनुवादक ममार्दुक पिकथल एवं ए.जे. आर्बरी दोनों ने अपने कार्यों को क़ुरआन का अनुवाद कहलाने से इंकार किया। एक ने इसे "The meaning" (अर्थ) और दूसरे ने उसे "The interpretation" (व्याख्या) कहा। इसी तरह गुप्ता अपने कार्य को "Essence" (सार) कहते हैं। यह घोषणा इंगित करती है कि क़ुरआन को पहली दफा पढ़ने वाले पाठकों को यह पुस्तक इस पवित्र ग्रंथ में अन्तरनिहित संदेश, मानवता की एकता पर बल, मानव जाति के लिए पैगम्बर मुहम्मद के समक्ष उदघोषित दिव्य ज्ञान की प्रमाणिकता, मनुष्य के परमात्मा, अन्य मनुष्यों एवं समाज के साथ संबंधों को अनुशासित करने वाले सदाचार के नियम का सार जानने समझने का अवसर प्रदान करती है।

गुप्ता ने एक बार फिर से इस क़ुरआन सार द्वारा अन्तरधर्मीय आस्थाओं के बीच आपसी समझ व समन्वय के लिए योगदान किया है। मैं आशा करता हूँ कि यह सारभूत प्रयास भारत की दो मुख्य कौमों - हिन्दू एवं मुसलमानों को एक-दूसरे को और बेहतर ढंग से समझने व सराहने में सहायक होगा।

मूसा राजा
ट्रस्टी - इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर
एवं भारत सरकार के पूर्व सचिव

"प्राक्कथन"

प्रस्तुत संकलन क़ुरआन के सार को जन-साधारण की भाषा में, कविता के रूप में पेश करने का एक प्रयास है। लेखक आर.के गुप्ता जो नक्शबंदी सूफी संत ठाकुर रामसिंह जी (सांगानेर - जयपुर) के शिष्य हैं, के अनुसार कम ही लागों ने क़ुरआन को स्वयं पढ़ा होगा। उन्हें जो थोड़ी बहुत जानकारी इस बारे में होती है, वह दूसरों के कहने सुनने से। अत: लेखक ने इस प्रयास द्वारा सामान्य पाठकों के लिये क़ुरआन को स्वयं जानने का एक अवसर उपलब्ध करवाया है। उन्होंने इसके अलावा अन्य पुस्तकें यथा "Yogis in Silence - The Great Sufi Masters"; Sufism Beyond Religion"; ''प्रेम प्रवर्तक सूफी'' और ''सूफी संत मत-दर्शन और विज्ञान'' भी लिखी है।

क़ुरआन की यह प्रस्तुति लेखक के कोई पूर्व संकल्प का क्रियान्वयन न होकर, फरवरी 2007 में यकायक एक दिव्य प्रेरणा का साकार होना है। तुरन्त ही लेखक ने एकाध दिन में इस पर कार्य शुरू कर दिया। हालांकि यह कार्य अत्यंत कठिन प्रतीत हो रहा था, लेकिन अल्लाह की मेहरबानी से उचित शब्दों का प्रवाह होने लगा। इस कार्य में ईश्वरीय कृपा का आभास इस बात से भी अनुभूत किया जा सकता है कि पूरे कार्य के सम्पन्न होने में दो महीने से भी कम समय लगा।

क़ुरआन सर्वशक्तिमान अल्लाह का फरमान है, इसका उद्देश्य मनुष्य को परमात्मा की सृष्टि रचना की व्यवस्था से अवगत कराना है, अर्थात् उसे यह बतलाना है कि परमात्मा ने मनुष्य को एक शाश्वत प्राणी के रूप में बनाया है जिसका जीवनकाल दो भागों में बांटा गया है:-एक मृत्यु से पहले का आजमाइश वाला निश्चित जीवनकाल और दूसरा मृत्यु उपरांत हमेशा की जिंदगी जिसमें वह यहां बिताये जीवन अनुसार पुरस्कार या दंड का भोग करता है। इस संसार में जहां आदमी और औरतों की आजमाइश होती है, भलाई पाने के लिए दो चीजें उनमें होना जरूरी है:-एक तो सृष्टिकर्ता के अस्तीत्व को स्वीकारना, और दूसरा क़ुरआन में वर्णित सिद्धांतों पर आधारित नियमित जीवन जीना।

क़ुरआन में 114 सूर: एवं 6263 आयतें शामिल हैं। लेखक ने इनका 1669 पदों में अनुवाद किया है। इस अनुवाद को सीधे-सरल तरीके से प्रस्तुत करने के प्रयास में

लेखक ने सूर: और आयतों का क्रम वैसे ही रखते हुए अधिकतर जगहों पर कई आयतों को इकट्ठा कर उनका सार पद रूप में अनुवादित किया है।

क़ुरआन को आने वाले वक़्त के लिए समग्र रूप से सुरक्षित कर रखा गया है। यद्यपि मूल रूप से क़ुरआन अरबी भाषा में है, लेकिन इसके अनुवादकों के प्रयासों द्वारा यह अरबी भाषा से अनभिज्ञ लागों तक पहुंचता रहा है। मूल रूप का स्थानापन्न न होने पर भी, अनुवादकों ने जो एक सबसे मुख्य कार्य साधा है वह है अल्लाह के फरमान को गैर-अरबी भाषी लागों में दूर-दूर तक पहुंचाना। प्रस्तुत कार्य औरों से कुछ अलग है, क्योंकि यह अनुवाद कवितामय और सरल भाषा में ईश्वरीय फरमान का सार लोगों तक पहुंचाता है।

मैं चाहूँगा की पाठक इसे स्वयं पढ़े और क़ुरआन में वर्णित परमात्मा की सृष्टि व्यवस्था के विषय में जानें।

वहीदुदीन खान,
प्रेसीडेंट, सेंटर फार पीस एण्ड स्पिरिच्यूलिटी

जून 2007
न्यू देहली, इंडिया

<u>श्रीमद्भगवद्गीता</u>

(जन जन की भाषा में)

पृष्ठभूमि

पृथ्वी बोझिल हुई अधर्म से,
प्रभु ने तब निश्चय ठाना,
दुष्टों का करने को नाश,
युद्ध का बुना ताना-बाना ।

महाभारत का हुआ घोष,
सेनाएँ आ डटी सामने,
जीवन का मोह त्याग,
रण में मरने और मारने ।

एक तरफ असंख्य सेना,
स्वयं श्रीकृष्ण दूसरी ओर,
कौरव सेना पा हर्षित थे,
पाण्डव भी थे भाव-विभोर ।

प्रभु बन गए स्वयं सारथी,
अर्जुन को राह दिखाने को,
रण में ना शस्त्र उठाऊँगा,
अपना यह वचन निभाने को ।

मद में चूर हुए कौरव,
भूल गए मानवता सारी,
जीतेंगे केवल वे रण में,
अहंकार से बुद्धि हारी ।

अन्यायी कुरू सेना में यूँ तो,
थे उपस्तिथ अनेक महारथी,
धृतराष्ट्र मगर चिंतित थे,
होगी जीत रण में किसकी ?

प्राणप्रिय पुत्रों का मोह,
बेचैन कर गया मन को,
निकट आ रहा विनाश,
दिख पड़ा धृतराष्ट्र को ।

विचलित चित्त, घनी शंकाएं,
मन विषाद से भर आया,
औरों का हक छीना जिसने,
उसने ना कभी यश पाया ।

....

श्रीमद्भगवद्गीता

अध्याय 1

अर्जुनविषादयोग

कुरुक्षेत्र का हाल जानने,
संजय से पूछा धृतराष्ट्र ने,
क्या किया रण में सम्मुख हो,
मेरे और पाण्डु पुत्रों ने ? (1)

दिव्य दृष्टि से भूषित संजय,
करने लगे रणभूमि का वर्णन,
दुर्योधन ने जो कहा द्रोण से,
निरख पाण्डवों का सैन्य संरचन । (2)

हे आचार्य ! अपने शिष्य की,
बुद्धिमान द्रोपद धृष्ट्धुम्न की,
देखिए व्यूहाकार में संरचित,
महान सेना यह पाण्डवों की । (3)

इस पाण्डव सेना में हैं,
भीम, अर्जुन से अनेक महारथी,
धनुर्धारी, विकट, शूरवीर,
द्रुपद, विराट और सात्यकि । (4)

धृष्टकेतु, चेकितान, कशीराज,
कुन्तिभोज, शैव्य और पुरुजित,
इनके अतिरिक्त और बहुत से,
पराक्रमियों से यह सेना सज्जित । (5)

युधामन्यु, अभिमन्यु, उत्तमौजा,
महारथी पाँचों पुत्र द्रौपदी के,
हे द्विजोत्तम ! अब सुनिए,
सेनापति जो हैं अपनी सेना के । (6-7)

स्वयं आप, पितामह, कर्ण सरीखे,
महारथी हमारी सेना में हैं,
कृपाचार्य, अश्वत्थामा, विकर्ण आदि,
रहते विजयी जो रण में हैं । (8)

प्राणों की आहुति को तत्पर,
अन्य अनेक शूरवीर भी हैं,
अनेक शस्त्रों से सुसज्जित वे,
युद्धकला में प्रवीण भी हैं । (9)

पितामह भीष्म द्वारा संरक्षित,
अपार हमारा यह सैन्य बल है,
लेकिन भीम द्वारा संरक्षित,
सीमित पाण्डवों का सैन्य बल है । (10)

सामरिक महत्व के स्थानों पर,
आप सभी स्थित हो रहें,
और पितामह भीष्म के साथ,
पूर्णतया सब सहयोग करें । (11)

सुन दुर्योधन का यह कथन,
गुरु द्रोण से जो उसने कहा,
भीष्म पितामह ने हर्षित हो,
सिंह-गर्जन सा शंखनाद किया । (12)

शंख, नगाड़े, ढोल, मृदंग,
एक साथ बज उठे वहाँ,
मिलकर उन सबकी ध्वनि,
स्वर भयंकर हुआ वहाँ । (13)

दूसरी ओर पाण्डव सेना में,
श्वेत अश्वों से जुते रथ पर,
प्रभु श्रीकृष्ण और अर्जुन के,
गूँज उठा शंखों का स्वर । (14)

पाँचजन्य नामक शंख बजाया,
ऋषिकेश भगवान श्रीकृष्ण ने,
अर्जुन ने बजाया देवदत्त, और,
पौण्ड्र फूँका महाबली भीम ने । (15)

युधिष्ठर, नकुल, सहदेव ने भी,
अपने-अपने शंख बजाए,
अन्य उपस्थित योद्धाओं ने भी,
संग में अपने शंख बजाए । (16-17)

शंखों के उस तुमुल घोष ने,
गुंजा दिया धरती-आकाश,
कौरवों का हृदय विदीर्ण कर गया,
पाण्डवों का वह शंखनाद । (18-19)

श्रीहनुमान चिन्हित ध्वजावाले,
रथ पर बैठ, धनुष धारण कर,
निरख धृतराष्ट्र पुत्रों को अर्जुन,
तब युद्ध के लिए हुआ तत्पर । (20)

मेरे रथ को, बोला अर्जुन,
ले चलें मध्य में, हे अच्युत !
देखूँ मैं उन योद्धाओं को,
करने आए जो मुझसे युद्ध । (21-23)

दोनों सेनाओं के मध्य ले चले,
उस रथ को भगवान ऋषिकेश,
फिर बोले अर्जुन से ले अब तू,
कौरव, भीष्म, द्रोणादि को देख । (24-26)

अर्जुन ने देखे निज सम्बन्धी,
दोनों दलों में खड़े हुए,
अनेक गुरुजन, भाई और मित्र,
युद्ध को तत्पर अड़े हुए । (27)

निरख बान्धवों को अर्जुन,
करुणा से आक्रान्त हुआ,
श्रीकृष्ण को उन्मुख हो,
उसने तब यह वचन कहा । (28)

हे कृष्ण ! युद्ध के लिए खड़ा,
यह स्वजन समुदाय देख,
सूखा जा रहा है मेरा मुख,
शिथिल होती जा रही देह । (29)

मुझे कम्पन व रोमांच हो रहा,
त्वचा मेरी सब जलती है,
छिटक रहा गाण्डीव हाथ से,
बुद्धि भ्रमित सी लगती है । (30)

असमर्थ हूँ मैं खड़ा रहने में,
सब ओर अमंगल दीखता है,
स्मृति मेरी लोप हो रही,
हे केशव ! मेरा मन डिगता है । (31)

नहीं प्राप्त होगा कुछ श्रेय,
करके वध इन स्वजन का,
ना ही प्रलोभन है मुझको,
विजय, राज्य अथवा धन का । (32)

हे गोविन्द ! क्या हमें प्रयोजन,
राज्य, सुख अथवा जीवन से,
जिनके लिए चाह इन सबकी,
वे ही सम्मुख खड़े हैं रण में । (33)

जीवन की आशा को त्याग,
सम्मुख खड़े हैं युद्ध के लिए,
नहीं मार सकता हूँ इनको,
मैं अपने प्राणों के भी लिए । (34)

पृथ्वी की तो बात ही क्या,
मिलता जो त्रिभुवन का भी राज,
नहीं योग्य फिर भी वध इनका,
होगा हमें ना इससे कुछ लाभ । (35-36)

हुए लोभ से भ्रष्ट चित ये,
उद्दत करने को कुल नाश,
लेकिन ज्ञान हमें है इसका,
नहीं उचित हमको यह पाप । (37-38)

होगा नष्ट सनातन कुलधर्म,
कुल का विनाश हो जाने से,
दूषित हो जाएँगी स्त्रियाँ भी,
कुल में अधर्म बढ़ जाने से । (39-40)

होती वर्णसंकर की उत्पत्ति,
ऐसे पतन हो जाने से,
पतित हो जाते पितर भी,
कुलधर्म नष्ट हो जाने से । (41-42)

वे करते नित्य नरक में वास,
जो करते कुलधर्म का नाश,
ओह ! यह कैसा आश्चर्य महान,
हो रहे लोभवश हम अनजान । (43-44)

बेहतर इससे मुझ निहत्थे को,
कौरव ही देवें रण में मार,
धनुष त्याग कर बैठ गया,
अर्जुन रथ में, यूँ कर विचार । (45-46)

अध्याय 2

सांख्ययोग

संजय बोला तब करुणा से,
व्याकुल अर्जुन का चित्त हुआ,
आँखों में आँसू भर आए,
शोकमग्न वह वीर हुआ । (1)

श्री मधुसूदन बोले अर्जुन से,
कैसे तुझे यह अज्ञान हुआ,
है अपयश का ही कारण,
विकट समय जो मोह हुआ । (2)

प्रतिकूल यह जीवन गरिमा के,
नहीं उचित अर्जुन यह तुझको,
उठ खड़ा हो करने को युद्ध,
मत प्राप्त हो इस दुर्बलता को । (3)

अर्जुन बोला सुनिए भगवन,
कैसे ले सकता मैं इनके प्राण,
द्रोण, भीष्म, ये मेरे पूज्य हैं,
करता निश-दिन जिन्हें प्रणाम । (4)

अधिक श्रेयस्कर मधुकरी है,
गुरुजनों का वध करने से,
रक्त रंग में रंग जाएंगे,
भोग हमारे, इनके वध से । (5)

नहीं जानते हम क्या श्रेष्ठ हैं,
मर जाना या विजय पाना,
ना ही वध करके इनका,
अभीष्ट मुझे यह राज्य पाना । (6)

नहीं समर्थ स्वधर्म पालन में,
छूट रहा है सब धैर्य ध्यान,
मैं आपका शिष्य शरण आपकी,
कृपा कर दीजिए ज्ञान दान । (7)

नहीं दिखती मुझे कोई राह,
इस महाशोक से बचने की,
ना ही मिट पाएगा सन्ताप,
सम्पूर्ण राज्य मिलने पर भी । (8)

हे गोविन्द ! मैं नहीं लडूँगा,
यह कह अर्जुन शान्त हुआ,
भगवन बोले तब हँसते से,
अर्जुन की यह देख दशा । (9-10)

बातें करता विद्वानों सी तू,
पर वे तो करते शोक नहीं,
प्राणी जीवित हो या मृत हो,
पण्डित करते शोक नहीं । (11)

ना कोई काल कभी ऐसा था,
जब मैं ना था या तू ना था,
ना काल कोई ऐसा होगा,
जब मैं ना हूँगा, तू ना होगा । (12)

जैसे क्रम से इस देह को,
प्राप्त होती है विभिन्न अवस्था,
वैसे ही मृत्यु होने पर,
प्राप्त होती फिर नूतन काया । (13)

सुख दुःख और गर्मी-सर्दी,
क्षण भंगुर और अनित है,
नहीं शाश्वत इनका अस्तित्व,
इन्द्रियाँ और विषय जनित है । (14)

कर अभ्यास इन द्वन्दों का,
अविचलित रह सहन करने का,
ना होता जो व्याकुल इन से,
निश्चय पात्र वह मुक्ति पाने का । (15)

असत्य का नहीं अस्तित्व होता,
और सत्य का नहीं अंत होता,
यह आत्मा अजर और अमर है,
इसका ना कभी विनाश होता । (16-17)

अज्ञानी, जो इसे मरा समझते,
या इसे मारने वाला जानते,
ना यह मरता, ना यह मारता,
ऐसा यथार्थ ज्ञानी जन जानते । (18-19)

यह आत्मा शाश्वत और नित्य है,
प्राकृत देह पर नाशवान है,
बदलती रहती काया पल-पल,
आत्मा लेकिन सदा समान है । (20)

हे पार्थ ! जानता आत्मा को,
जो अव्यय, अजन्मा, अविनाशी,
मार सकता या मरवा सकता,
कैसे वह कोई भी प्राणी ? (21)

बदल देता है जैसे मनुष्य,
पुराने वस्त्र, नये वस्त्र से,
वैसे ही आत्मा बदल देता,
जीर्ण शरीर, नयी देह से । (22)

काट इसे नहीं सकता शस्त्र,
अग्नि नहीं जला सकती,
जल नहीं गीला कर सकता,
वायु नहीं सुखा सकती । (23)

यह आत्मा है, हे कुन्तीनन्दन,
सर्वव्यापी, स्थिर, सनातन, नित्य,
अच्छेद्य, अक्लेध, अदाहृय, अशोष्य,
अविनाशी, अव्यक्त और अचिन्त्य । (24-25)

नहीं शोक का कोई भी कारण,
यदि तू चाहे ऐसा भी माने,
इस आत्मा को नित्य जन्मनें,
और नित्य मरण वाला माने । (26)

यह जीवन मृत्यु तक चलता,
जन्म लेता वह निश्चय मरता,
जो मरता फिर जीवन पाता,
भला शोक क्यों अर्जुन करता ? (27)

निरन्तर चलता रहता यह चक्र,
देह के साथ प्राणी होते व्यक्त,
जन्म से पहले, मृत्यु के बाद,
सभी प्राणी पर रहते अव्यक्त । (28)

कोई आत्मा को देखता चकित हो,
कोई साश्चर्य इसका वर्णन करता,
कोई इसे नहीं जान पाता कभी,
कोई साश्चर्य इसका श्रवण करता । (29)

हे अर्जुन, यह आत्मा अमर है,
भला शोक का क्या कारण है,
कर तू क्षत्रिय धर्म का पालन,
धर्ममय युद्ध कल्याण साधन है । (30-31)

हे पार्थ, सुखी वे क्षत्रिय हैं,
मिला जिन्हें धर्मयुद्ध का अवसर,
खुले स्वर्ग का द्वार सरीखा
स्वधर्म पालन का यह अवसर । (32)

इस पर भी जो तू ना लड़ेगा,
होगा अपयश का ही भागी,
स्वधर्म पालन में प्रमाद करने से,
कीर्ति तेरी सब होगी माटी । (33-34)

सब कायर तुझको समझेंगे,
बिना लड़े जो हार गया,
शत्रु तेरा उपहास करेंगे,
मानेंगे भय से भाग गया । (35)

बहुत बड़ा यह दुःख होगा,
अपमान ना कोई बढ़ कर होगा,
हे अर्जुन, धैर्य रखना होगा,
तुझे युद्ध यह करना होगा । (36)

यदि वीर गति तू पाता है,
तो पाएगा तू स्वर्ग का राज्य,
यदि विजय तुझे मिलती है,
तो पाएगा पृथ्वी का साम्राज्य । (37)

दोनों स्थितियां सुखकर होंगी,
दृढ़ता से जो कर्म करेगा,
निष्काम भाव से यदि लड़ेगा,
नहीं पाप से कलुषित होगा । (38)

बोले भगवन अब तक मैंने,
तेरे लिए सांख्य योग कहा,
निष्काम कर्म जिससे करते,
सुन वर्णन उस बुद्धियोग का। (39)

हे पार्थ, युक्त हो बुद्धियोग से,
पाएगा मुक्ति कर्म बन्धन से,
नष्ट हो जाता महान भय भी,
बुद्धियोग में अल्प साधन से। (40)

होते हैं स्थिर बुद्धि से युक्त,
बुद्धियोग पथ के अनुगामी,
अस्थिर मति वालों की लेकिन,
बुद्धि शाखाओं में बँट जाती। (41)

स्वर्ग और भोगों के दाता,
सकाम कर्मों का जहाँ विधान है,
वेद के उन आलंकारिक वचनों में,
अल्पज्ञों का बहुत ध्यान है। (42-43)

विषयों में आसक्ति के वश,
नहीं मानते इससे कुछ अच्छा,
हो रहे ऐसे वो सम्मोहित,
प्रेम चित्त में नहीं उपजता। (44)

वेद मुख्य रूप से करने वाले,
प्राकृत गुणों का ही विषय,
कर उल्लंघन इन गुणों का,
हे अर्जुन, पा गुणों पर विजय।

सुख-दुःख सर्दी और गर्मी,
हानि-लाभ, जीवन या मरण,
हो मुक्त इन सब द्वन्दों से,
हे अर्जुन, स्वरूपनिष्ठ बन। (45)

पूर्ण हो जाते सभी प्रयोजन,
ज्यों बड़ी जलराशि से, छोटी के,
वैसे ही सध जाते प्रयोजन,
वेदों का आन्तरिक मर्म जान के। (46)

नहीं अधिकार कर्मफल में तुझको,
अधिकार मगर है कर्म करने में,
ना हो कभी कर्मफल का इच्छुक,
ना आसक्त हो कर्म ना करने में। (47)

हे अर्जुन, हो योग में स्थित,
रख सम-भाव सिद्धि-असिद्धि में,
आसक्ति को त्याग मन से,
नियत हो बस कर्म करने में। (48)

हे धनंजय, वे तो दीन हैं,
जिन्हें है इच्छा फल पाने की,
हो मुक्त सकाम कर्मों से,
ले शरण तू बुद्धियोग की। (49)

भगवद् भक्ति जो करता है,
पाप-पुण्य से मुक्ति पाता,
यही महान कर्म कौशल है,
जो इस भक्ति को पाता। (50)

जो भगवन शरण लेते हैं,
जन्म मरण से मुक्ति पाते,
कर्मफल त्याग दुखों से परे,
परमपद वे सहज पा जाते। (51)

जब पार करेगी तेरी बुद्धि,
मोह रूपी सघन दलदल को,
सुनने योग्य और सुने हुए से,
होगा प्राप्त तू वैराग्य को। (52)

चंचलता से रहित होकर जब,
सकाम कर्मों का तू त्याग करेगा,
स्वरूप समाधि में स्थित हो,
दिव्य बुद्धियोग तू प्राप्त करेगा। (53)

अर्जुन ने पूछा हे प्रभु ! बताएँ,
क्या लक्षण स्थितप्रज्ञ पुरुषों के,
क्या बोलते, क्या भाषा उनकी,
क्या विशेषता आचरण में उनके ? (54)

बोले भगवन, जीव मन से,
त्याग देता जब विषय वासना,
सदा आत्मा में रहता संतुष्ट,
तब वह स्थितप्रज्ञ कहलाता। (55)

जो ना दुखी होता दुखों से,
स्पृहाशुन्य जो सुख में रहता,
आसक्ति, क्रोध, भय से मुक्त,
स्थितप्रज्ञ जग उस को कहता। (56)

स्नेह रहित हुआ सब ओर से,
शुभ प्राप्ति में ना हर्षित होता,
वह पूर्ण ज्ञान में निष्ठ जिसे,
अशुभ प्राप्ति में ना शोक होता। (57)

वह यथार्थ में परम ज्ञानी है,
जिसने विषयों का त्याग किया,
भोगों से आसक्ति मिट जाती,
जिसने बुद्धियोग रसपान किया। (58-59)

हे अर्जुन, विषय भोग में लिप्त,
इन्द्रियाँ अत्यंत वेगवती हैं,
विवेकी पुरुष के मन को भी,
यह वश में कर हर लेती हैं। (60)

इन्द्रियों का सयंम कर जो,
भक्ति के परायण हो जाता,
एकाग्र करता बुद्धि को मुझमें,
स्थिर बुद्धि पुरुष कहलाता। (61)

हो जाती है उनमें आसक्ति,
विषयों का चिन्तन करने से,
आसक्ति से काम, काम से क्रोध,
फिर अविचार और मोह क्रम से। (62)

मोह स्मृति भ्रमित कर देता,
स्मृति भ्रम बुद्धि को हर लेता,
इस प्रकार क्रम से विनाश,
संसार कूप में पतन कर देता। (63)

लेकिन सयंम का कर अभ्यास,
इन्द्रियाँ वश में जो कर लेता,
राग द्वेष से मुक्ति पा कर,
प्रभु कृपा वह प्राप्त कर लेता। (64)

प्रसन्न चित्त ऐसे व्यक्ति का,
सभी दुःख दूर हो जाता,
लेकिन प्रभु कृपा बिन चित्त,
वश में नहीं कभी हो पाता। (65)

जब तक चित्त ना होता वश में,
बुद्धि स्थिर नहीं हो पाती,
सुख उसको कैसे मिल सकता,
जिसे शान्ति नहीं मिल पाती ? (66)

जलगामी नौका को ज्यों,
प्रचण्ड वायु हर लेती है,
उसी तरह एक इन्द्रिय भी,
मन द्वारा बुद्धि हर लेती है। (67)

इसलिए हे महाबाहु अर्जुन,
उसकी बुद्धि ही स्थिर है,
विषयों से हटा इन्द्रियाँ जिसने,
अपने वश में कर ली हैं । (68)

आत्म संयमी उसमें जागता,
जो सब जीवों की रात्री है,
सब प्राणी पर जागते जिसमें,
वह तत्वज्ञों की रात्री है । (69)

जो पुरुष विचलित नहीं होता,
कामनाओं के अविच्छिन्न प्रवाह से,
सुख शान्ति वही पा सकता,
नहीं साध्य यह और तरह से । (70)

सम्पूर्ण रूप से जिसने त्यागी,
अपनी सभी इच्छा कामना,
अहंकार, इच्छा, ममता रहित,
सम्भव उसे ही शान्ति पाना । (71)

नहीं फिर वह होता मोहित,
पाकर इस दिव्य अवस्था को,
सुख शान्ति से जीवन जीकर,
पा जाता वह भगवद धाम को । (72)

अध्याय 3

कर्मयोग

बोला अर्जुन यदि श्रेष्ठ है,
बुद्धियोग सकाम कर्म से,
क्यों कहते हैं केशव मुझसे,
युद्ध हेतु कौरव सेना से ? (1)

हो रही है मेरी बुद्धि मोहित,
आपके अनिश्चित उपदेश से,
कृपा कर कहिए वह साधन,
मेरा कल्याण हो सके जिससे । (2)

भगवन बोले दो प्रकार की,
निष्ठा वाले पुरुष होते हैं,
कुछ सांख्य में प्रवृत हो जाते,
कुछ भक्ति की शरण लेते हैं । (3)

कर्म बन्धन से ना मुक्ति होती,
केवल कर्म नहीं करने से,
ना ही प्राप्त होती कृतार्थता,
केवल संन्यास ग्रहण करने से । (4)

क्षण मात्र भी नहीं रह सकता,
कोई प्राणी बिना कर्म किए,
प्राकृत गुणों से प्रेरित प्राणी,
करते कर्म सब परवश हुए । (5)

दमन कर कर्मेन्द्रियों का पर,
मन में विषय चिन्तन करते,
अपने को भ्रम में डाले हैं,
मिथ्या आचरण ही वे करते । (6)

मन से कर इन्द्रियाँ वश में,
अनासक्त भाव से करते कर्म,
अति श्रेष्ठ निश्चय ही हैं वे,
भक्ति भावित जो करते कर्म । (7)

नहीं निर्वाह होगा, हे अर्जुन,
खाली हाथ बैठे रहने से,
कर अपने कर्त्तव्य का पालन,
नहीं लाभ कर्महीन बनने से । (8)

अनिवार्य यज्ञार्थ कर्म करना है,
वरना कर्म बन्धन कारक होगा,
अनासक्त भाव से किया कर्म,
सर्वथा मुक्ति कारक होगा । (9)

रच कर प्रजा को यज्ञ सहित,
प्राचीन काल में प्रजापति ने,
कहा सुख भोग करो यज्ञ से,
वांछित फल देगा यज्ञ तुम्हें । (10)

होकर यज्ञों से प्रसन्न देवता,
तुमको भी वे धन्य करेंगे,
एक-दूजे का यूँ पोषण कर,
श्रेय को सब प्राप्त करेंगे । (11)

पूर्ण करते सभी आवश्यकता,
यज्ञों से हो प्रसन्न देवता,
वह चोर है जो भोगों को,
बिना पुनार्पण किए भोगता । (12)

हो जाते हैं वे पाप मुक्त,
जो यज्ञ शेषान्न ही खाते,
इन्द्रिय तृप्ति में ही तत्पर,
वे तो केवल पाप ही खाते । (13)

जीवन धारण होता अन्न से,
अन्न उत्पन्न होता वर्षा से,
वर्षा लेकिन होती यज्ञ से,
यज्ञ प्रकट होता स्वधर्म से । (14)

स्वधर्म कर्म वर्णित वेदों में,
प्रकट हुए जो परब्रह्म से हैं,
इसलिए सर्वव्यापी परब्रह्म,
नित्य प्रतिष्ठित यज्ञ में हैं । (15)

नहीं करता जो अनुसरण,
वेद की इस व्यवस्था का,
रहता लिप्त इन्द्रिय तृप्ति में,
वह पापी तो व्यर्थ ही जीता । (16)

लेकिन आत्म प्रकाश से युक्त,
आत्मा में जो आनन्दित रहता,
पूर्ण संतुष्ट सदा आत्मा में,
कर्त्तव्य शेष ना उसे रहता । (17)

नहीं स्वार्थ स्वधर्म आचरण में,
ना ही स्वार्थ कर्म ना करने में,
ऐसे स्वरूप ज्ञानी पुरुषों का,
नहीं आश्रय किसी अन्य प्राणी में । (18)

समझना चाहिए कर्म को कर्त्तव्य,
इसलिए अनासक्त भावना से,
प्राप्त कराता यह परम लक्ष्य,
मुक्त हो फल की चाहना से । (19)

प्राप्त हुए पहले भी संसिद्धि को,
जनक आदि कर्म के द्वारा,
आवश्यक है लोक शिक्षा हेतु भी,
कर्त्तव्य पालन कर्म के द्वारा । (20)

होता प्रमाण जन साधारण को,
महापुरुषों का आचरण सर्वदा,
सम्पूर्ण विश्व करता अनुसरण,
आदर्श की वे करते स्थापना । (21)

हे पार्थ, नहीं है त्रिभुवन में,
कोई भी कर्तव्य शेष मुझे,
ना अभाव, ना ही आवश्यकता,
फिर भी कर्म में रत हूँ मैं । (22)

यदि ना कर्म करूँ मैं तो,
सब मेरा अनुसरण करेंगे,
हूँगा वर्णसंकर का कारण,
सब लोक नष्ट हो जाएंगे । (23-24)

जैसे अज्ञानी होकर आसक्त,
फल के लिए करते हैं कर्म,
वैसे ही ज्ञानी पुरुष करें,
अनासक्त भाव से सब कर्म । (25)

पर ज्ञानी सकाम कर्मियों की,
बुद्धि में भ्रम उत्पन्न ना करें,
और अपने आचरण से उन्हें,
भक्तिमय कर्मों में प्रेरित करें । (26)

प्राकृत गुणों द्वारा सम्पादित,
होते हैं सब कर्म जीवों के,
पर अहंकार वश मोहित प्राणी,
मानते स्वयं को कर्ता उनके । (27)

भक्तिमय व सकाम कर्म में,
जो प्राणी भेद कर पाता,
वासना से परे तत्वज्ञानी वह,
नहीं लिप्त फिर उनमें होता । (28)

होकर गुणों से मोहित प्राणी,
प्राकृत क्रियाओं में आसक्त होते,
ना करें पर उनको विचलित,
ज्ञानी जन जो यह भेद जानते । (29)

सम्पूर्ण कर्म कर मुझमें समर्पित,
हे अर्जुन, हो आत्म ज्ञान से युक्त,
कर युद्ध तू निष्काम भाव से,
ममता व आलस्य से होकर मुक्त । (30)

हो जाते कर्म बन्धन से मुक्त,
जो इस शिक्षा पर चलते,
अज्ञानी, भ्रान्त और भ्रष्ट हैं वे,
जो इसका उल्लंघन करते । (31-32)

अपनी प्रकृति के अनुसार,
ज्ञानी भी कर्म करते हैं,
प्रकृति के वशीभूत प्राणी फिर,
कैसे निग्रह कर सकते हैं । (33)

विघ्न है स्वरूप साक्षात्कार में,
इन्द्रियाँ और विषय दोनों ही,
चाहिए किसी भी प्राणी को,
अतः इनके वश में होना नहीं । (34)

कल्याणकारी स्वधर्म आचरण,
परधर्म हमेशा होता भयकारी,
उत्तम स्वधर्म में प्राण त्यागना,
दोष उसमें कुछ होने पर भी । (35)

पूछा अर्जुन ने तब श्रीकृष्ण से,
फिर कौन उसे प्रेरित करता,
इच्छा ना होने पर भी,
पाप कर्म में वह प्रवर्त होता । (36)

रजोगुण से उत्पन्न काम ही,
इसका कारण है, बोले भगवन,
सदा अतृप्त महापापी शत्रु ये,
करता फिर क्रोध रूप धारण । (37)

धुएँ से अग्नि, धूल से दर्पण,
जेर से ज्यों गर्भ ढका रहता,
इसी प्रकार यह जीवात्मा भी,
काम आवरण से ढका रहता । (38)

इस प्रकार प्राणी का ज्ञान,
मोहित है इस नित्य शत्रु से,
सदा अतृप्त प्रचण्ड अग्नि सा,
बसता इन्द्रियों, मन, बुद्धि में । (39-40)

इसलिए पहले वश में कर,
हे अर्जुन, अपनी इन्द्रियों को,
मार डाल फिर इस महापापी,
ज्ञान-विज्ञानं विनाशक शत्रु को । (41)

जड़ प्रकृति से श्रेष्ठ कर्मेन्द्रियाँ,
पर मन श्रेष्ठ इन्द्रियों से है,
बुद्धि है मन से भी बेहतर,
और आत्मा श्रेष्ठ इन सबसे है । (42)

इस प्रकार हे महाबाहु, अपने,
दिव्य आत्म स्वरूप को जान,
बुद्धि द्वारा चित्त कर वश में,
कर कामरूपी शत्रु का निदान । (43)

अध्याय 4

ज्ञानकर्मसंन्यासयोग

भगवन बोले यह योग पहले,
कहा था मैंने विवस्वान को,
विवस्वान ने कहा मनु को,
और मनु ने इक्ष्वाकु को । (1)

पहुँचा ऐसे परम्परा से,
राजर्षियों में यह विज्ञान,
कालक्रम से खंडित होकर,
लुप्त हो गया यह विज्ञान । (2)

कहा वही प्राचीन योग तुझे,
तू मेरा भक्त और सखा है,
इस विज्ञान का दिव्य रहस्य,
भलीभांति तू समझ सकता है । (3)

अर्जुन बोला विवस्वान का,
जन्म आपसे अति पूर्व हुआ,
विस्मित हूँ कैसे उन्हें आपने,
इस ज्ञान का उपदेश किया । (4)

भगवन बोले तेरे और मेरे,
हो चुके अनेक जन्म व्यतीत,
मुझे स्मृति है उन सब की,
लेकिन तू भूल गया अतीत । (5)

मैं अजन्मा, ईश्वर, अविनाशी,
युग-युग में मैं अवतरण करता,
होती जब जहाँ धर्म की हानि,
प्रकट वहाँ अपने को करता । (6-7)

दुष्टों का करने विनाश,
और अपने भक्तों का उद्धार,
पुन: धर्म स्थापित करने,
युग-युग लेता मैं अवतार । (8)

दिव्य मेरा जन्म और कर्म,
जिसको है यह यथार्थ ज्ञान,
फिर वह जन्म नहीं लेता,
पा जाता मेरा दिव्य धाम । (9)

आसक्ति, भय और क्रोध मुक्त,
होकर पवित्र अनेक जन,
पा गए मेरे दिव्य प्रेम को,
लेकर मेरी अनन्य शरण । (10)

फल देता हूँ मैं वैसा ही,
जिस भाव से जो शरण लेता,
हे अर्जुन, सब मनुष्य मात्र,
मेरा ही पथ अनुगमन करता । (11)

मिलता है अतिशीघ्र परिणाम,
सकाम कर्मों का इस जग में,
अत: फल पाने हेतु पूजते,
मानव देवताओं को यग में । (12)

गुण और कर्म के अनुसार,
चारों वर्ण रचे मैंने ही,
लेकिन मुझे जान अकर्ता,
यद्दपि कर्ता होने पर भी । (13)

नहीं कर्मफल की मुझे चाहना,
अत: कर्म नहीं मुझे बाँधते,
जानते हैं जो इस सत्य को,
उनको भी कर्म नहीं बाँधते । (14)

किया है मुमुक्ष पुरुषों ने कर्म,
पूर्व में यह तत्व जानकर,
तू भी कर कर्त्तव्य का पालन,
बुद्धियोग से युक्त होकर । (15)

क्या है कर्म, क्या अकर्म है,
हो जाते बुद्धिमान भी मोहित से,
करता हूँ कर्म तत्त्व का वर्णन,
मुक्त हो जाएगा तू जान जिसे । (16)

अति गहन है कर्म का तत्त्व,
जान इसे तू भली प्रकार से,
अकर्म और विकर्म का स्वरूप,
जान इसे भी भली प्रकार से । (17)

कर्म अकर्म में, अकर्म कर्म में,
जो देखता वह बुद्धिमान है,
मुक्त है वह प्रवर्त होकर भी,
कर्म तत्त्व का जिसे ज्ञान है । (18)

जिसके कर्म कामना रहित हों,
वह ज्ञानी समझा जाता है,
दग्ध हो जाते सभी कर्मफल,
ज्ञानाग्नि द्वारा, कहा जाता है । (19)

नित्य तृप्त, स्वतंत्र है वह,
चाह नहीं जिसे फल की,
करता नहीं सकाम कर्म वह,
सब कर्म करता हुआ भी । (20)

वश में कर मन और बुद्धि,
त्याग कर भाव स्वामीपन का,
करता कर्म प्राण रक्षा निमित्त,
नहीं वह होता भागी पाप का । (21)

जो मिल जाए उसमें संतुष्ट,
स्थिर बुद्धि, द्वंद्वों से मुक्त,
सिद्धि-असिद्धि समान जिसे,
वह सर्वथा बन्धन से मुक्त । (22)

प्राकृत गुणों में अनासक्त,
रहता पूर्ण ज्ञान में लीन,
सब कर्म उसके हो जाते,
अप्राकृत तत्त्व में विलीन । (23)

ब्रह्ममय क्रियाओं के जो परायण,
जिसके लिए सब कुछ ब्रह्ममय,
ब्रह्म ही अग्नि, ब्रह्म ही आहुति,
निश्चित ब्रह्म से उसका समन्वय । (24)

करते देवताओं की उपासना,
कुछ ज्ञानी नाना यज्ञों से,
और कुछ ज्ञानी ब्रह्माग्नि में,
अर्पित करते यज्ञ-यज्ञ से । (25)

उनमें से कुछ यजन करते हैं,
क्रियाओं का संयम रूपी अग्नि में,
और कुछ अन्य हवन करते हैं,
विषयों का इन्द्रिय रूपी अग्नि में । (26)

स्वरूप साक्षात्कार जो करना चाहते,
मन व इन्द्रियों का संयम करते,
सब इन्द्रिय व प्राण क्रियाओं का,
संयम रूपी अग्नि में यजन करते । (27)

अन्य कुछ द्रव्य यजन कर,
अष्टांग योग का करते अभ्यास,
कुछ ज्ञान प्राप्त करने हेतु,
वेदाध्ययन का करते हैं अभ्यास । (28)

कुछ समाधि पाने को रोकते,
अपान प्राण में, प्राण अपान में,
कुछ संयमित भोजन के द्वारा,
करते प्राण का हवन प्राण में । (29)

यज्ञ द्वारा ये सभी यज्ञविद,
पापकर्मों से मुक्त हो जाते,
यज्ञ प्रसाद अमृत पान कर,
परम धाम को वे पा जाते । (30)

नहीं सुखकारी यह जीवन भी,
जो ना करते कर्म यज्ञ रूपी,
हे कुरुश्रेष्ठ अर्जुन, उनका फिर,
होगा कैसे परलोक सुखी ? (31)

वेदों में वर्णित इन यज्ञों को,
हे अर्जुन, तू कर्मजन्य जान,
पाएगा मुक्ति भवसागर से,
इस प्रकार यज्ञ तत्त्व को जान । (32)

होता है श्रेष्ठ, हे अर्जुन,
ज्ञानयज्ञ द्रव्यमय यज्ञ से,
प्राप्त होते पर्यवसान को,
कर्म ज्ञान में पूर्ण रूप से । (33)

तत्त्व ज्ञान मिलेगा सेवा से,
सद्गुरु के शरणागत होकर,
वे तत्त्वज्ञ आत्मज्ञानी पुरुष,
देंगे ज्ञान तुझे दीक्षित कर । (34)

ज्ञानोदय यह होने पर,
नहीं तू होगा फिर मोहित,
देखेगा जीव पूर्ण रूप से,
मुझ परमात्मा में स्थित । (35)

चाहे तू हो, हे अर्जुन,
सर्वाधिक पापी औरो से,
ज्ञान रूपी तरणी द्वारा,
तर जाएगा भवसागर से । (36)

भस्म कर देती जिस प्रकार,
प्रज्जवलित अग्नि ईंधन को,
जला डालेगी ज्ञानाग्नि वैसे,
प्राकृत कर्मों के बन्धन को । (37)

नहीं उदात्त और पावन कुछ,
ज्ञान के समान इस जग में,
सम्पूर्ण योग का परिपक्व फल,
प्रकट होता यह अंतर में । (38)

श्रद्धालु, जितेन्द्रिय, ज्ञानलीन,
परम शान्ति को पा जाता,
संशय युक्त अज्ञानी लेकिन,
पतित हो कष्ट ही पाता । (39-40)

नहीं बँधता वह कर्मों से,
जिसने संशयों का नाश किया,
श्री भगवान को कर अर्पण,
सब कर्मफल का त्याग किया । (41)

ज्ञान रूपी शस्त्र से अर्जुन,
कर विनाश इस संशय का,
फिर योग में स्थित हो तू,
उठ युद्ध हेतु तत्पर हो जा । (42)

अध्याय 5

कर्मसंन्यासयोग

अर्जुन बोला, पहले कर्म संन्यास,
फिर प्रशंसा करते कर्मयोग की,
कृपापूर्वक निश्चित कर कहिए,
उनमें से जो हो कल्याणकारी । (1)

भगवन बोले दोनों ही पथ,
निश्चित रूप से कल्याणकारी हैं,
फिर भी कर्म संन्यास करने से,
भक्ति भावित कर्म लाभकारी हैं । (2)

जिसे ना इच्छा कर्मफल की,
ना कर्मफल से हो द्वेष जिसे,
निश्चित ही वह निर्द्वन्द पुरुष,
पा जाता मुक्ति भव बन्धन से । (3)

केवल अज्ञानी ही कर्मयोग को,
कहते भिन्न है सांख्य योग से,
करता जो एक का भी पालन,
निश्चय फल पाता दोनों के । (4)

जो सांख्य योग द्वारा प्राप्य है,
भक्ति से वह सुलभ हो जाता,
कर्मयोग और सांख्य योग जो,
एक देखता वो यथार्थ देखता । (5)

भक्ति बिना लेकिन दुर्लभ है,
प्राप्त होना संन्यास को,
भक्ति द्वारा भक्त शीघ्र ही,
पा जाता है भगवान को । (6)

नहीं बँधता वह कभी कर्म से,
जीवों के प्रति जो दयामय है,
विशुद्धात्मा आत्मसंयमी पुरुष,
नित्य रहता जो भक्तिमय है । (7)

बुद्धियोग से युक्त पुरुष,
मानता यही अपने अन्तर में,
विषयों में प्रवर्त होती इन्द्रियाँ,
अकर्ता ही है वह यथार्थ में । (8-9)

समर्पित कर सब कर्म ब्रह्म में,
आसक्ति त्याग जो कर्म करता,
जल में कमल पत्र के समान,
नहीं पाप से वह कभी बँधता । (10)

अनासक्त भाव से योगी भी,
आत्मशुद्धि हेतु कर्म करते हैं,
कामना होती जिन्हें फल की,
कर्मफल से केवल वे बँधते हैं । (11-12)

मन से त्याग सम्पूर्ण कर्म,
आत्म संयमी सुख से रहता,
इस प्रकार देहबद्ध जीवात्मा,
अलिप्त हो सुख से रहता । (13)

ना करता यह कर्म में प्रवर्त,
ना कर्म या फल को रचता,
प्रकृति के गुणों के कार्य ये,
नहीं करता इन्हें जीवात्मा । (14)

नहीं ग्रहण करते परमेश्वर,
किसी के पाप या पुण्य को,
अज्ञान से आच्छन्न जीव,
यूँ प्राप्त हो रहा मोह को । (15)

नष्ट हो जाता किन्तु जब,
ज्ञान द्वारा सम्पूर्ण अज्ञान,
सम्पूर्ण तत्त्व प्रकट होता,
ज्यों सूर्य होता प्रकाशमान । (16)

एकाग्र कर बुद्धि, चित्त, निष्ठा,
जीव जब होता भगवत परायण,
शुद्ध हो पाप और संशय से,
मुक्ति के पथ पर करता गमन । (17)

ज्ञानी जन होते समदर्शी,
नहीं भेद जिनकी नजरों में,
करते ब्रह्म का ही दर्शन,
गौ, श्वान, ब्राह्मण, चाण्डाल में । (18)

जीत लिया जिसने द्वन्दों को,
चित्त जिसका समता में स्थित,
दोष रहित ब्रह्म समान वह,
नि:सन्देह सदा ब्रह्म में स्थित । (19)

हर्षित ना जो प्रिय को पाकर,
ना उद्विग्न हो अप्रिय प्राप्ति में,
मोह रहित स्थिर बुद्धि ज्ञानी,
नित्य स्थित वह ब्रह्म तत्त्व में । (20)

अनासक्त हो बाहरी सुखों से,
आत्मा में सुख करता अनुभव,
एकाग्र हो श्रीभगवान में वह,
अनन्त सुख का करता अनुभव । (21)

इन्द्रियों व विषयों का भोग,
केवल दुःख का ही दाता,
इनका आदि और अन्त है,
ज्ञानी इनमें नहीं भटकता । (22)

काम क्रोध से उत्पन्न वेग,
समर्थ है जो सह सकने में,
देह नाश होने से पहले,
वही योगी सुखी है जग में । (23)

आत्मा में ही क्रियाशील जो,
आत्मा में ही दृष्टी रखता,
आत्मा में ही सुखी सर्वदा,
योगी वह मुक्ति पा जाता । (24)

मुक्त है जो द्वैत भाव से,
जीवों के कल्याण में रत,
चित्त जिनका आत्म परायण,
पाते हैं वो मुक्ति का पथ । (25)

मुक्त हैं जो काम क्रोध से,
वश में कर चुके चित्त को,
आत्म तत्त्व ज्ञाता वे सन्त,
पा जाते हैं परम गति को । (26)

कर समान प्राण और अपान को,
मगन हो भृकुटी मध्य ध्यान में,
हो जाते जीवन मुक्त योगी वे,
चित्त, इन्द्रियाँ, बुद्धि कर वश में । (27-28)

सब जीवों के नि:स्वार्थ प्रेमी,
जानते मुझे परमेश्वर सबका,
शान्ति लाभ करते वे ऋषिजन,
जान भोक्ता मुझे यज्ञादि का । (29)

अध्याय 6

ध्यानयोग

कर्म त्याग या अग्नि त्याग से,
नहीं होता कोई सच्चा योगी,
अनासक्त हो जो कर्म करता,
वही है सच्चा संन्यासी व योगी । (1)

हो सकता नहीं कोई योगी,
किए बिना स्वार्थ का त्याग,
परतत्त्व से युक्त होने को,
हे अर्जुन, कहते हैं संन्यास । (2)

कर्म ही साधन कहा जाता है,
प्रारम्भिक साधक के लिए,
प्राकृत क्रियाओं का पूर्ण त्याग,
हेतु है योगारूढ़ के लिए । (3)

सकाम कर्म व इन्द्रिय तृप्ति में,
पुन: नहीं जो प्रवर्त होते,
योगारूढ़ उन्हें कहा जाता जो,
वासना में नहीं प्रवर्त होते । (4)

करें उद्धार आत्मा का अपनी,
सब जीव स्वयं मन के द्वारा,
मन ही मित्र है बद्धजीव का,
मन ही लेकिन शत्रु उसका । (5)

कर लिया मन जिसने वश में,
मन उसका सर्वश्रेष्ठ बन्धु है,
लेकिन मन नहीं जिसका वश में,
मन ही उसका परम शत्रु है । (6)

सुख-दुःख, मान-अपमान,
गर्मी- सर्दी है समान जिसको,
जीत लिया जिसने मन अपना,
नित्य प्राप्त परमात्मा उसको । (7)

रखते हैं योगी सम भाव,
मिट्टी, पत्थर और स्वर्ण में,
ज्ञान, विज्ञान से तृप्त योगी,
सदा स्थित वे ब्रह्म तत्त्व में । (8)

भेद नहीं जिसे मित्र, शत्रु में,
ना ही भेद साधू, असाधु में,
पुरुष जितेन्द्रिय वह उत्तम,
रखता समबुद्धि जो सब में । (9)

नित्य एकाग्र भक्ति भाव में,
योगी वह निर्जन में बस कर,
मुक्त कामनाओं व संग्रह से,
सदा सचेत एकाकी रह कर ।

एकाग्र हो, पवित्र भूमि पर,
दृढ़ आसन को स्थापित कर,
करे अभ्यास हृदय शुद्धि हेतु,
इन्द्रियाँ अपनी वश में कर । (10-12)

शांत, संयमित, निर्भय मन से,
ब्रह्मचर्य व्रत में होकर स्थित,
धारण कर मुझको हृदय में,
मेरे परायण हो मुझमें स्थित । (13-14)

तन, मन और क्रियाओं के,
संयम का कर निरन्तर अभ्यास,
भव रोग समाप्त होने पर,
योगी वह आ जाता मेरे पास । (15)

अनुचित बहुत अधिक या कम,
खाना या सोना योगी को,
यथायोग्य आहार विहार,
देता है मुक्ति योगी को । (16-17)

कर अभ्यास से चित्त वश में,
दिव्य तत्त्व में स्थित हो जाता,
नित्य एकाग्र ध्यान में हो कर,
योगी फिर डिगने नहीं पाता । (18-19)

संयमित जब हो जाता चित्त,
होता आत्म स्वरूप का दर्शन,
यह आनन्दमयी स्थिति पा योगी,
आत्म स्वरूप में करता रमण । (20-21)

परम सुख यह प्राप्त होने पर,
दुःख नहीं करता चलायमान,
मिलती मुक्ति दुखों से जिससे,
उसे योग रूपी समाधि जान । (22-23)

त्याग सम्पूर्ण कामनाएँ योगी,
मन द्वारा इन्द्रियाँ वश में करे,
पूर्ण दृढ़ता व श्रद्धा सहित वह,
निश्चय पूर्वक योगाभ्यास करे । (24)

धीरे-धीरे विश्वास पूर्वक,
बुद्धि द्वारा हो समाधि में स्थित,
कुछ भी चिन्तन ना करे,
वह आत्म स्वरूप के अतिरिक्त । (25)

चंचल और अस्थिर मन,
जहाँ-जहाँ विषयों में भटके,
वहाँ-वहाँ से खींच इसे,
फिर करे आत्मा के वश में । (26)

एकाग्र मन जो मुझमें करता,
योगी परम सुख वह पाता,
रजोगुण व पाप से निवृत हो,
शान्तचित्त वह मुक्ति पाता । (27)

योगाभ्यास में तत्पर योगी,
सब पापों से मुक्ति पाता,
परतत्व का सान्निध्य पाकर,
सर्वोपरि सुख वह पाता । (28)

स्थित देखता सब प्राणी मुझमें,
सब में दर्शन मेरे करता,
सदा प्राप्त रहता मैं उसको,
ना ओझल वह मुझसे होता । (29-30)

प्राणी मात्र के हृदय में स्थित,
जान मुझे जो भजन करता,
सेवा करता सभी जीवों की,
सदा मुझमें वह स्थित रहता । (31)

परम श्रेष्ठ वह योगी जो,
सबको देखता आत्मा समान,
सुख या दुःख प्राप्ति में जो,
सब जीवों को देखता समान । (32)

अर्जुन बोला हे मधुसूदन, यह,
आप द्वारा वर्णित योग पद्धति,
मन के चंचल होने के कारण,
मुझको स्थायी नहीं दिखती । (33)

हे कृष्ण, यह मन चंचल है,
उद्वेगकारक, बलवान, दुराग्रही,
कठिन इसे वश में कर लेना,
वायु वश में कर लेने से भी । (34)

बोले भगवन, हे कुन्तिनन्दन,
माना मुश्किल मन का रुकना,
पर अभ्यास और वैराग्य से,
सम्भव है मन वश में करना । (35)

असम्भव है स्वरूप साक्षात्कार,
असंयत मन वालों के लिए,
प्रयत्न द्वारा लेकिन सम्भव है,
विजित मन वालों के लिए । (36)

अर्जुन ने पूछा, हे माधव,
क्या गति पाता वह योगी,
विषयों में आसक्ति के वश,
विचलित हो जाता जो योगी । (37)

योग के परमोच्च लक्ष्य को,
प्राप्त नहीं जो कर पाता,
छिन्न मेघ की भांति ही क्या,
योगी नष्ट वह हो जाता । (38)

हे कृष्ण, केवल आपके सिवाय,
नहीं है सम्भव अन्य के लिए,
आप ही प्रभु पूर्ण समर्थ हैं,
कृपा कर संशय दूर कीजिए । (39)

बोले भगवन, हे अर्जुन,
सदाचारी का अमंगल नहीं होता,
शुभ कर्मों में रत योगी,
किसी लोक में नष्ट नहीं होता । (40)

योग भ्रष्ट योगी चिरकाल तक,
सुख भोग पुन्य लोकों में,
पुन: जन्म लेता फिर वह,
सदाचारी व धनी घर में । (41)

दीर्घकाल तक योगाभ्यास कर,
योगी भ्रष्ट जो हो जाता,
अति दुर्लभ इस जग में वह,
विद्वानों के घर जन्म पाता । (42)

उस देह में वह जन्मान्तर के,
बुद्धियोग को फिर पा जाता,
इस प्रकार पुन: योगयुक्त हो,
पूर्ण सिद्धि हेतु साधन करता । (43)

पूर्व जन्म के बुद्धियोग से,
पुन: आकृष्ट वह हो जाता,
इस प्रकार अनेक जन्मों में,
परम लक्ष्य वह पा जाता । (44-45)

तपस्वी, ज्ञानी, सकाम कर्मी,
इन सबसे श्रेष्ठ है योगी,
उनमें भी जो भक्ति परायण,
परम श्रेष्ठ है वह योगी । (46-47)

अध्याय 7

ज्ञानविज्ञानयोग

भगवन बोले भक्ति भाव से,
लगा मुझमें अपने मन को,
योगाभ्यास द्वारा फिर जैसे,
जानेगा मुझे सुन उसको । (1)

तेरे लिए तत्त्व ज्ञान कहूँगा,
विज्ञान सहित पूर्ण रूप से,
नहीं शेष रहता फिर कुछ,
जानने योग्य जान जिसे । (2)

यत्न करता है संसिद्धि का,
कोई एक हजारों में से,
जान पाता पर मुझे तत्त्व से,
विरला ही कोई उनमें से । (3)

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु,
आकाश, मन, बुद्धि, अहंकार,
अपरा प्रकृति आठ भागों में,
विभाजित है यह इस प्रकार । (4)

जड़ से अलग, जीव रूपी,
मेरी एक परा प्रकृति भी है,
इन दोनों से होता उत्पन्न,
इस जग में जो कुछ भी है । (5)

इस परा प्रकृति द्वारा ही,
धारण यह सारा जग है,
माला में गुंथित मणियों सा,
यह ब्रह्माण्ड मुझमें लय है । (6)

इस सम्पूर्ण जगत का हूँ मैं,
उत्पत्ति और प्रलय रूप,
नहीं श्रेष्ठ अन्य कुछ मुझसे,
मैं ही सबका आश्रय रूप । (7)

जल में रस, आकाश में शब्द,
सूर्य, चन्द्र में प्रभा मैं हूँ,
वैदिक मन्त्रों में औंकार,
मानव मात्र में पौरुष मैं हूँ । (8)

मैं ही पृथ्वी में आद्य सौरभ,
और अग्नि में तेज मैं हूँ,
मैं ही सब प्राणियों में जीवन,
तपस्वियों में तप मैं हूँ । (9)

सब प्राणियों का अदि बीज,
बुद्धिमानों की बुद्धि मैं हूँ,
जीवों में धर्म-सम्मत काम,
बलवानों का बल मैं हूँ । (10-11)

सत्य, रज, तम, सब भाव मुझसे,
मेरी शक्ति से होते अभिव्यक्त,
सब कुछ मुझसे होने पर भी,
माया से अतीत, मैं पूर्ण स्वतंत्र । (12)

इन त्रिगुणों से मोहित संसार,
उनसे परे मुझे नहीं जानता,
दुस्तर मेरी यह त्रिगुणी माया,
शरणागत मेरे ही बच पाता । (13-14)

माया से भ्रमित पापी अज्ञानी,
वो मेरी शरण नहीं लेते,
आर्त, अर्थार्थी, जिज्ञासु और ज्ञानी,
ये ही मेरी भक्ति करते । (15-16)

अनन्य भक्ति में सदा तत्पर,
ज्ञानी इन सब में सर्वश्रेष्ठ है,
मैं उसको अत्यंत प्रिय हूँ,
वह भी मुझको अतिशय प्रिय है । (17)

उदार हैं यह सभी भक्त,
लेकिन जो है तत्व ज्ञानी,
मेरी भक्ति के परायण,
स्थित रहता वह मुझमें ही । (18)

अति दुर्लभ वह ज्ञान योगी,
जो अनेक जन्मान्तरों के बाद,
आता है मेरी शरण में वह,
मुझे वासुदेव सर्वव्यापी जान । (19)

कामनाओं से मोहित है जो,
देवताओं की शरण वे लेते,
अपने स्वभाव के वश होकर,
विधि-विधान का पालन करते । (20)

जिस भी देवता की प्राणी,
इच्छा पूजने की करता,
उसकी श्रद्धा को स्थिर,
मैं उस देवता में करता । (21)

अराधना कर देवताओं की,
पाते हैं वे इच्छित भोग,
वास्तव में लेकिन मैं ही,
देता हूँ उनको ये भोग । (22)

क्षण भंगुर फल पर मिलता,
उन अल्पज्ञ मनुष्यों को,
देव लोकों को पाते हैं वे,
पर मेरे भक्त पाते मुझको । (23)

अव्यक्त से आकार को प्राप्त,
मुझे बुद्धिहीन मनुष्य मानते,
अविनाशी उत्तम मेरा स्वरूप,
यह स्वरूप वे नहीं जानते । (24)

योगमाया में छिपा रहता हूँ,
मूढ़ों को प्रकट नहीं होता,
मुझ अच्युत, अविनाशी को,
यह मोहित जग नहीं जानता । (25)

भूत, वर्तमान और भविष्य,
समान रूप से मैं हूँ जानता,
जानता हूँ सब लोगों को भी,
मुझको पर कोई नहीं जानता । (26)

इच्छा, द्वेष से उत्पन्न द्वन्दों से,
जीव जगत में मोहित होते,
लेकिन द्वन्दों से मुक्त पुण्यात्मा,
निष्ठापूर्वक मुझको ही भजते । (27-28)

मुक्ति चाहते जरा मरण से,
मेरे परायण वे भक्ति करते,
तत्व अध्यात्म और कर्म का,
सम्पूर्ण रूप से वे ही जानते । (29)

परमेश्वर, अधिभूत, अधिदेव, अधियज्ञ,
इस रूप में जो मुझे जानते,
वे स्थिर चित्त पुरुष मुझको,
अपने अन्तकाल में भी जानते । (30)

अध्याय 8

अक्षरब्रह्मयोग

ब्रह्म क्या है, क्या है अध्यात्म,
हे पुरुषोत्तम, कृपा कर कहिए,
सृष्टि, कर्म और अधिदेव का भी,
क्या है अन्तर, कृपा कर कहिए । (1)

कैसे हैं यज्ञपुरुष इस शरीर में,
किस अंग के निवासी हैं वे,
कैसे आपको जान सकते हैं,
भक्ति योगी अन्त काल में । (2)

प्राकृत देह का सृष्टि कार्य,
बोले भगवन कहलाता है कर्म,
अध्यात्म नित्य स्वभाव जिसका,
जीवात्मा वह कहलाता ब्रह्म । (3)

परिवर्तन शील प्रकृति अधिभूत है,
विराट पुरुष ही अधिदेव है,
जीवों का अन्तर्यामी परमात्मा,
मेरा अंश ही वह अधियज्ञ है । (4)

अन्तकाल में स्मरण मेरा,
करते हुए जो त्यागता देह,
मेरे स्वभाव को प्राप्त होता,
नहीं इसमें कोई भी सन्देह । (5)

जिस भाव का कर स्मरण,
त्यागता है यह जीव देह,
उसी भाव से भावित रहता,
पाता उसको ही निःसन्देह । (6)

इसलिए स्वधर्म कर्म का पालन,
और कर नित्य मेरा स्मरण,
हे अर्जुन, प्राप्त होगा मुझको,
मन, बुद्धि कर मुझमें अर्पण । (7)

अनन्य चित्त से जो निरन्तर,
करता परम पुरुष का चिन्तन,
निश्चय श्री भगवान को पाता,
भक्ति सहित जो करता स्मरण । (8)

सर्वज्ञ, अनादि, अणु से भी सूक्ष्म,
परम पुरुषोत्तम जगत से परे हैं,
सर्वपालक, ईश्वर, सूर्य से तेजोमय,
दिव्य स्वरूप वे प्रकृति से परे हैं । (9)

भृकुटी के मध्य कर स्थापित,
अन्त काल में अपने प्राण को,
भक्ति भाव से युक्त पुरुष वह,
पा जाता है भगवद धाम को । (10)

अविनाशी औंकार जिसे कहते,
प्रवेश वीतरागी जिसमें करते,
सुन उस मुक्ति पथ का वर्णन,
ब्रह्मचर्य जिसे पाने को रखते । (11)

सभी इन्द्रियाँ हटा विषयों से,
स्थिर करके चित्त हृदय में,
प्राण स्थापित मस्तक में कर,
स्थित जो होता मेरे ध्यान में । (12)

इस योगधारणा में स्थित हो,
अक्षर ब्रह्म औंकार उच्चार,
त्यागता देह मुझे स्मरण कर,
निश्चित जान उसका उद्धार । (13)

करता है जो मेरा स्मरण,
नित्य निरन्तर अनन्य भाव से,
सदा सुलभ उसके लिए मैं,
जो परायण है मेरी भक्ति के । (14)

मुझको प्राप्त मेरे भक्तजन,
परम संसिद्धि को पा जाते,
इस दुखी अनित्य जगत में,
फिर पुनर्जन्म वे नहीं पाते । (15)

प्राकृत जगत में सभी लोक,
दुखदायी और क्लेशपूर्ण हैं,
नीचे से लेकर ब्रह्मलोक तक,
जन्म-मृत्यु से परिपूर्ण हैं । (16)

एक हजार चतुर्युग वाले,
ब्रह्मा के दिन-रात होते हैं,
जीव समूह प्रकटते दिन में,
रात्रि में लय हो जाते हैं । (17-18)

जीव समुदाय प्रकट हो-होकर,
रात्रि आने पर लय हो जाता,
लेकिन कर्म के आधीन हुआ फिर,
दिन आने पर व्यक्त हो जाता । (19)

इस जड़ प्रकृति से श्रेष्ठ पर,
एक परा प्रकृति और भी है,
नहीं नष्ट होती जो प्रलय में,
सदा सनातन और अविनाशी है । (20)

परम गति कहते हैं जिसको,
अव्यक्त, अक्षर वह परम धाम,
पाकर जिसे ना लौटना पड़ता,
वही है मेरा दिव्य परम धाम । (21)

सभी जीव जिसमें स्थित हैं,
सब कुछ है जिनसे परिव्याप्त,
केवल अनन्य भक्ति द्वारा ही,
परम पुरुष वे हो सकते प्राप्त । (22)

हे अर्जुन, अब तेरे लिए मैं,
करूँगा उन कालों का वर्णन,
प्रयाण जिसमें करने पर,
निर्भर करता भव आवागमन । (23)

अग्नि, दिन, शुक्लपक्ष, उत्तरायण का,
जिस पथ में है अभिमानी देवता,
उस पथ में देह को त्याग कर,
ब्रह्म को पा जाता है ब्रह्मवेत्ता । (24)

धूम, रात्रि, कृष्णपक्ष, दक्षिणायन का,
जिस पथ में है अभिमानी देवता,
उस पथ में चंद्रलोक की ज्योति पा,
योगी फिर जग में पुन: लौटता । (25)

शुक्ल और कृष्ण दो ही मार्ग,
विदित वेदों में प्रयाण करने के,
मोक्ष पाते हैं शुक्ल गति से,
कृष्ण गति से आते लौट के । (26)

भक्त कभी मोहित नहीं होता,
इन मार्गों का तत्त्व जान कर,
इसलिए, हे पृथापुत्र अर्जुन,
भक्ति कर तू नित्य निरन्तर । (27)

यज्ञ आदि के पुण्य फलों का,
भक्त उल्लंघन कर जाता,
जानकर इस ज्ञान को वह,
मेरा अनादि धाम पा जाता । (28)

अध्याय 9

राजविद्याराजगुह्ययोग

भगवन बोले इस गोपनीय,
ज्ञान को विज्ञान सहित सुन,
जिसे जान जग के क्लेशों से,
मुक्त हो जाएगा, हे अर्जुन । (1)

यह ज्ञान विद्याओं का राजा,
अति गोपनीय, परम पावन,
प्रत्यक्ष फल कराता अनुभव,
धर्ममय, सनातन, अति सुगम । (2)

श्रद्धाहीन जो भक्ति योग में,
कभी ना मुझको पा सकते,
मृत्यु रूप इस जग में ही वे,
बारम्बार जन्म-मृत्यु पाते । (3)

यह सारा संसार व्याप्त है,
इन्द्रियातीत मेरे स्वरूप से,
समस्त प्राणी मुझमें स्थित हैं,
नहीं स्थित पर मैं उनमें । (4)

देख मेरे इस योगेश्र्वर्य को,
नहीं यह सृष्टि मुझमें स्थित,
सृष्टि कारक जीवों का भर्ता,
नहीं आत्मा मेरा उनमें स्थित । (5)

जैसे यह विचरण शील वायु,
स्थित रहता नित्य गगन में,
वैसे ही सम्पूर्ण प्राणियों को,
हे अर्जुन, जान स्थित मुझमें । (6)

लय हो जाती मेरी प्रकृति में,
सम्पूर्ण सृष्टि कल्पान्त होने पर,
रचता हूँ फिर अपनी शक्ति से,
यह सृष्टि कल्पारम्भ होने पर । (7)

बार-बार प्रकट होती है,
यह सृष्टि मेरे संकल्प से,
मेरे ही आधीन सृष्टि यह,
नष्ट होती मेरे संकल्प से । (8)

नहीं बंध सकता लेकिन मैं,
इन सब कर्मों के बन्धन से,
उदासीनवत स्थित हूँ मैं,
कर्मों में अनासक्त भाव से । (9)

रचती है समस्त चराचर,
यह माया शक्ति मेरे वश में,
इस कारण से प्राकृत सृष्टि,
क्रियाशील है संहार-सृजन में । (10)

नराकार में अवतरित होने पर,
मूर्ख मेरा करते उपहास,
लेकिन मुझ परमेश्वर का वे,
नहीं जानते दिव्य स्वभाव । (11)

इस प्रकार मोहित हैं जो,
आसुरी स्वभाव धारण करते,
इनका मनोरथ और ज्ञान सभी,
निःसन्देह निष्फल हो रहते । (12)

लेकिन मोहमुक्त महात्मा मेरी,
दिव्य प्रकृति के आश्रित होकर,
सेवा करते हैं अविचल भाव से,
सृष्टि का आदिकारण जान कर । (13)

नित्य मेरा वे भजन करते,
निश्चयपूर्वक पूर्ण यत्न से,
सदा तत्पर रह कर करते,
आराधना वे भक्ति भाव से । (14)

मुझ परमेश्वर को वे उपासते,
जो तत्पर ज्ञान के अनुशीलन में,
अद्वय रूप में, विविध रूपों में,
अनेक प्रकार के, विश्व रूप में । (15)

मैं ही हूँ सब कर्म काण्ड,
मैं ही यज्ञ और तर्पण हूँ,
घी, अग्नि और आहुति भी,
मैं ही औषधि और मन्त्र हूँ । (16)

इस जगत का माता-पिता,
पितामह और पोषक हूँ मैं,
परम पावन औंकार भी और,
ऋक, साम, यजुर्वेद हूँ मैं । (17)

ज्ञानी, साक्षी, ईश्वर, पालनकर्ता,
परमधाम, आधार हूँ सबका,
सृष्टि, प्रलय, अविनाशी बीज,
जीवों का सुहृद शरण दाता । (18)

मैं ही इस जग को तपाता,
जल को सोख मेंह बरसाता,
सत-असत, अमृत-मृत्यु,
मैं ही हूँ जग का अधिष्ठाता । (19)

सकाम कर्मों में जो रत हैं,
वे स्वर्गादि लोकों को पाते,
पर यथार्थ में वे यज्ञों द्वारा,
अप्रत्यक्ष रूप में मुझे ही पूजते । (20)

पुण्य क्षीण हो जाने पर वे,
मृत्यु लोक में फिर गिरते,
केवल क्षणभंगुर सुख पाकर,
जन्म-मृत्यु वे पाते रहते । (21)

अनन्य मन से जो लेकिन,
मेरे दिव्य रूप चिंतन करते,
योगक्षेम वहन करता उनका मैं,
भक्ति भाव से जो मुझे भजते । (22)

पूजते जो अन्य देवताओं को,
वास्तव में वे मुझे ही पूजते,
अविधिपूर्वक पर उनकी पूजा,
युक्त नहीं जो यथार्थ ज्ञान से । (23)

मैं ही हूँ सब यज्ञों का,
एकमात्र स्वामी और भोक्ता,
जो नहीं जानते मुझे तत्त्व से,
जन्म-मरण उनका होता । (24)

जो जिस भाव से पूजा करता,
वैसा ही वो फल पाता,
देवता, पितर, भूत या मुझको,
जिसे पूजता उसको पाता । (25)

भक्ति भाव के साथ भक्त,
करते मुझको जो भी अर्पण,
पत्र, पुष्प, फल, जल आदि,
करता मैं प्रेम सहित ग्रहण । (26)

इसलिए सुन, हे कुन्तीनन्दन,
जप, तप और दान, हवन,
जो तू करता, जो भी खाता,
वह सब कर मेरे अर्पण । (27)

इस प्रकार तू छूट जाएगा,
शुभ-अशुभ सब कर्मफलों से,
मुक्त हो मुझको ही पाएगा,
युक्त हो इस संन्यास योग से । (28)

समभाव मेरा सब जीवों में,
कोई प्रिय ना द्वेष किसी से,
लेकिन भक्ति जो मेरी करते,
वे मुझमे स्थित, मैं उनमें । (29)

अतिशय दुराचारी भी यदि,
अनन्य भाव से मुझे पूजता,
साधू ही वह मानने योग्य है,
क्योंकि यथार्थ है उसकी निष्ठा । (30)

अतिशीघ्र ही धर्म परायण हो,
परम शान्ति को वह पा जाता,
निश्चय पूर्वक घोषित कर, अर्जुन,
मेरे भक्त का नाश नहीं होता । (31)

निःसन्देह पाप योनि वाले भी,
अनन्य भाव से शरणागत हो,
स्त्री, वैश्य या शूद्र हों चाहे,
प्राप्त करते वे परम गति को । (32)

ब्राह्मण, भक्त और राजर्षि फिर,
क्यों ना हों भक्ति के परायण,
मुक्ति हेतु इस दुखलोक से,
हे अर्जुन, हो भक्ति के परायण । (33)

अनन्य भाव से नित्य निरन्तर,
मन से मेरा ही चिन्तन कर,
अतिशय प्रेम सहित मुझको तू,
हे अर्जुन, नित्य नमन कर ।

मेरा भक्त हो मेरे परायण,
सदा मेरा ही पूजन कर,
प्राप्त होगा मुझको ही तू,
हे अर्जुन, मेरी शरण ग्रहण कर । (34)

अध्याय 10

विभूतियोग

केशव बोले, हे सखा अर्जुन,
मेरे परम वचन फिर से सुन,
कहता हूँ तेरे कल्याण हेतु,
पाएगा परमानन्द, जिसे सुन । (1)

मेरे अविर्भाव को नहीं जानते,
महर्षि हों या हों वे देवता,
क्योंकि मैं आदि कारण हूँ,
सब प्रकार से उन सबका । (2)

अज, अनादि, लोक महेश्वर,
इस प्रकार जो मुझे जानता,
मनुष्यों में परम ज्ञानी वह,
सब पापों से मुक्त हो जाता । (3)

बुद्धि, ज्ञान, संशय से मुक्ति,
क्षमा, सत्य, इन्द्रिय संयम,
सुख-दुःख और जन्म-मरण,
भय-अभय, मन का संयम । (4)

अहिंसा, समता, संतोष, तप,
दान, यश, अपयश आदि,
प्रकट होते सब जीवों में,
ये विविध भाव मुझसे ही । (5)

सात महर्षि, चौदह मनु,
इनसे पूर्व सनक आदि,
उत्पन्न हुए मेरे संकल्प से,
जिनकी है यह प्रजा सभी । (6)

मेरे ऐश्वर्य व योग शक्ति को,
तत्त्व से जो कोई जानते,
नहीं इसमें कोई सन्देह,
वे मेरी अनन्य भक्ति करते । (7)

मुझसे ही उत्पन्न होकर,
सब मुझसे ही चेष्टा करते,
बुद्धिमान इस तत्त्व को जान,
श्रद्धा से मेरी भक्ति करते । (8)

मेरे भक्त निरन्तर मेरा ही,
चिन्तन औत स्मरण करते,
मेरी महिमा का कर बखान,
वे चिन्मय रसपान करते । (9)

भक्ति परायण भक्तों को,
प्रेम सहित जो मुझे भजते,
देता हूँ मैं दुर्लभ बुद्धियोग,
जिससे वे मुझको पा जाते । (10)

हृदय में हो स्थित भक्तों के,
मैं उन पर अनुग्रह करता हूँ,
अज्ञान से उत्पन्न अन्धकार,
ज्ञान दीपक द्वारा हर लेता हूँ । (11)

अर्जुन बोला, हे प्रभु आप हैं,
परमब्रह्म, परमधाम, परम पावन,
अजन्मा, आदिदेव, सनातन पुरुष,
ऋषि आपका यूँ करते वर्णन । (12-13)

कहा आपने जो मेरे प्रति,
सत्य है वो पूर्ण रूप से,
नि:सन्देह नहीं जानते आपको,
देव या दानव स्वरूप से । (14)

अपनी शक्ति से अपने को,
जानते हैं आप स्वयं ही,
हे परमेश्वर, हे देव देव,
हे पुरुषोत्तम, जग के स्वामी । (15)

कृपा कर कीजिए वर्णन,
आपकी सब विभूतियाँ दिव्य,
जिनसे आप सम्पूर्ण लोकों को,
करके व्याप्त हो रहे स्थित । (16)

हे योगेश्वर, किस प्रकार मैं,
करूँ आपका चिन्तन, मनन,
किन रूपों में करना चाहिए,
हे प्रभु, मुझे आपका स्मरण । (17)

अपने ऐश्वर्य और योग शक्ति को,
हे जनार्दन, कहिए विस्तार से,
तृप्त नहीं होता सुन-सुन कर,
अमृतमयी ये वचन आप के । (18)

तेरे लिए कहता हूँ अर्जुन,,
अपनी विभूतियाँ मुख्य रूप से,
बोले भगवन, क्योंकि अर्जुन,
अन्त नहीं है ऐश्वर्य का मेरे । (19)

हे गुडाकेश, सब जीवों के,
हृदय में स्थित आत्मा हूँ मैं,
मैं ही जीव मात्र का आदि,
मैं ही मध्य हूँ, अन्त हूँ मैं । (20)

अदिति के पुत्रों में विष्णु,
ज्योतियों में सूर्य हूँ मैं,
मरूदगणों में हूँ मरीचि,
और नक्षत्रों में चन्द्र हूँ मैं । (21)

वेदों में मैं सामवेद हूँ,
इन्द्रदेव हूँ देवों में,
इन्द्रियों में मैं मन हूँ,
जीवन शक्ति जीवों में । (22)

रुद्रों में मैं महादेव हूँ,
कुबेर यक्ष-राक्षसों में मैं,
वसुओं में मैं अग्नि हूँ,
मेरु पर्वत शिखरों में मैं । (23)

सब पुरोहितों में प्रधान,
देव गुरु बृहस्पती हूँ मैं,
सेना नायकों में कार्तिकेय,
जलाशयों में समुद्र हूँ मैं । (24)

महर्षियों में भृगु महर्षि,
औंकार हूँ वाणी में मैं,
यज्ञों में मैं हूँ जपयज्ञ,
हिमगिरी स्थावरों में मैं । (25)

वृक्षों में पीपल का वृक्ष,
देवर्षियों में नारद हूँ मैं,
गन्धर्वों में चित्ररथ और,
सिद्धों में कपिल मुनि हूँ मैं । (26)

अश्वों में उच्चैश्रवा हूँ,
ऐरावत हूँ गजराजों में,
मनुष्यों में मैं नराधिपति हूँ,
वज्र हूँ मैं सब शस्त्रों में । (27)

गायों में मैं हूँ कामधेनु,
सर्पों में मैं वासुकि हूँ,
सन्तान हेतु हे अर्जुन,
कामदेव भी मैं ही हूँ । (28)

जलचरों में वरुण देवता,
नागों में शेषनाग हूँ मैं,
पितरों में अयर्मा पितर,
शासकों में यमराज हूँ मैं । (29)

दैत्यों में मैं प्रहलाद,
दमनकारियों में काल हूँ मैं,
पक्षियों में मैं गरुड़राज,
पशुओं में वनराज हूँ मैं । (30)

पवित्र करने वालों में वायु,
शस्त्रधारियों में राम हूँ मैं,
जलजीवों में मगरमच्छ हूँ,
नदियों में भागीरथी हूँ मैं । (31)

सृष्टि का आदि, मध्य, अन्त,
विद्याओं में अध्यात्म विद्या हूँ मैं,
विवाद करने वालों में, हे अर्जुन,
तत्त्व का निर्णायक वाद हूँ मैं । (32)

समासों में द्वन्द समास,
अक्षरों में आकार हूँ मैं,
मैं ही हूँ अविनाशी काल,
ब्रह्मा, प्रजापलकों में मैं । (33)

मृत्यु, उत्पत्ति का कारण,
स्त्रियों में ख्याति हूँ मैं,
मधुर वाणी, स्मृति, बुद्धि,
निष्ठा और क्षमा हूँ मैं । (34)

मन्त्रों में मैं बृहत्साम मन्त्र,
छन्दों में गायत्री छन्द हूँ मैं,
ऋतुओं में मैं बसन्त ऋतु,
महीनों में मार्गशीर्ष हूँ मैं । (35)

छल करने वालों में जुआं,
प्रभावशालियों का प्रभाव हूँ मैं,
विजय और साहस भी मैं हूँ,
और बलवानों का बल हूँ मैं । (36)

वृष्णि वंशियों में वासुदेव,
पाण्डवों में अर्जुन हूँ मैं,
मुनियों में मैं वेदव्यास,
कवियों में शुक्राचार्य हूँ मैं । (37)

दमन करने वालों का दण्ड,
विजेताओं की नीति हूँ मैं,
गोपनीय भावों में मौन,
और इन्द्रियों का ज्ञान हूँ मैं । (38)

हे अर्जुन, और अधिक क्या,
सृष्टि का अदिबीज हूँ मैं,
अन्नत हैं मेरी विभूतियाँ,
ऐश्वर्य का अक्षय भण्डार हूँ मैं । (39-40)

इस ब्रह्माण्ड में जो कुछ है,
ऐश्वर्य और कान्ति से युक्त,
हे अर्जुन, उस-उस को जान,
मेरे ही तेज अंश से युक्त । (41)

अथवा क्या प्रयोजन तुझको,
बहुत जानने से, हे कुन्तीनन्दन,
व्याप्त हो रहा हूँ इस जग में,
अंश मात्र से इसे कर धारण । (42)

अध्याय 11

विश्वरूपदर्शनयोग

कृपा कर आपने मुझसे,
जिस अध्यात्म का उपदेश किया,
सुनकर उसको, बोला अर्जुन,
मोह मेरा सब नष्ट हो गया । (1)

हे कमलनयन, सुनी आपसे,
मैंने जीवों की प्रलय, उत्पत्ति,
और सुनी आपकी महिमा,
तत्व की जिससे होती अनुभूति । (2)

हे परमेश्वर, हे पुरुषोत्तम,
कहते आप जैसा अपने को,
देखना चाहता हूँ वैसा ही,
आपके उस दिव्य रूप को । (3)

समझते यदि आप मुझे योग्य,
अपने विश्वरूप दर्शन का,
हे योगेश्वर, दर्शन कराइए,
अपने उस अविनाशी रूप का । (4)

बोले भगवन, हे अर्जुन,
कर मेरे आलौकिक दर्शन,
सैकड़ों, हजारों दिव्य रूप,
नाना आकार, विविध वर्ण । (5)

देख अदिति के बारह पुत्र,
आठ वसु, ग्यारह रुद्रों को,
उन्चास मरूद, अश्विनी कुमार,
और अन्य आश्चर्यमय रूपों को । (6)

इसी एक स्थान में स्थित,
देख सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड लोकों को,
भूत, भविष्य और वर्तमान,
देख देखना तू चाहे जो । (7)

नहीं देख पाएगा लेकिन तू,
मेरी योगशक्ति इन आँखों से,
प्रदान करता हूँ दिव्य दृष्टि,
दिखता मेरा ऐश्वर्य जिससे । (8)

संजय बोला, हे कुरु राज,
इस प्रकार कह प्रभु श्रीकृष्ण,
अपने ऐश्वर्यमय दिव्य रूप का,
कराने लगे वह अपूर्व दर्शन । (9)

अर्जुन ने उस अद्भुत दर्शन में,
अनेक मुखों व नेत्रों को देखा,
नाना आलौकिक आभूषण देखे,
अनेक दिव्य शस्त्रों को देखा । (10)

उस अनन्त सर्वव्यापी रूप को,
दिव्य सुगन्ध से अनुलेपित देखा,
आश्चर्यमय, प्रकाशवान, दिव्य,
माला और वस्त्रों को देखा। (11)

उदित हो जाएँ यदि गगन में,
सूर्य हजारों एक साथ भी,
उस विश्वरूप के तेज सम,
प्रकाशित हों कदाचित ही। (12)

अनेक तरह विभाजित ब्रह्माण्ड,
देखे उस समय अर्जुन ने,
स्थित होकर एक जगह जो,
शोभित थे उस विग्रह में। (13)

आश्चर्य चकित वह रूप देख,
पुलकित हुआ अर्जुन का तन,
हाथ जोड़कर कहने लगा,
अर्जुन प्रभु को कर नमन। (14)

हे देवाधिदेव, आपके शरीर में,
देखता हूँ मैं सम्पूर्ण जीवों को,
पद्मासीन ब्रह्मा और शिवजी,
ऋषियों और दिव्य सर्पों को। (15)

हे विश्वेश्वर, अनेक हाथ,
पेट, मुख और नेत्र आपके,
ना आदि, ना मध्य, ना अन्त,
अनन्त हैं यह रूप आपके। (16)

चक्र, गदा, मुकुट युक्त,
तेजोमय सब ओर से,
देखने में अति गहन,
ज्योतिर्मय हैं सूर्य से। (17)

आप ही प्रभु, पुराण पुरुष हैं,
संरक्षक सनातन धर्म के,
जानने योग्य परमब्रह्म हैं,
परम आश्रय इस जग के। (18)

आप ही हैं आदि पुरुष,
हे अनन्त सूर्य-चन्द्र नेत्रों वाले,
तपा रहे अपने तेज से,
यह विश्व, हे अनन्त भुजाओं वाले। (19)

सम्पूर्ण आकाश लोक व अन्तरिक्ष,
यह सब एक आपसे परिव्याप्त,
देख आपके इस उग्र रूप को,
सब हो रहे हैं व्यथा को प्राप्त। (20)

देव वृन्द ले शरण आपकी,
भयभीत हो कर रहे प्रार्थना,
महर्षि और सिद्ध समुदाय,
कर रहे आपकी स्तुति वन्दना। (21)

रूद्र, आदित्य, वसु, विश्व देव,
यक्ष, असुर, गन्धर्व, मरूदगण,
विस्मय विस्फारित हुए सभी,
देख रहे आपको, हे भगवन। (22)

व्याकुल हो देख रहे सभी,
आपके इस विकट रूप को,
अनेक मुख, बाहें, जंघा, उदर,
विकराल जाड़ों वाले आपको। (23)

नहीं पाता मैं शान्ति व धीरज,
देख गगनचुम्बी यह विश्वरूप,
भयभीत हो रहा अंत:करण,
देख आपका यह तेजोमय रूप। (24-25)

कौरव, भीष्म, द्रोण, कर्ण,
दोनों पक्ष के योद्धा आदि,
देख रहा आपके मुख में,
प्रवेश कर रहे ये लोग सभी । (26-27)

जैसे नदियों के जल प्रवाह,
दौड़ते हैं सागर की ओर,
वैसे ही ये सब शूरवीर,
जा रहे आपके मुख की ओर । (28)

जैसे पतंगा नष्ट हो जाता,
गिरकर प्रज्वलित अग्नि में,
वैसे ही ये सम्पूर्ण लोग,
प्रवेश कर रहे आपके मुख में । (29)

प्रज्वलित मुखों से सम्पूर्ण लोकों को,
आप ग्रस और चाट रहे हैं,
प्रचण्ड प्रकाश और तेज से अपने,
परिपूर्ण कर जग तपा रहे हैं । (30)

कृपा कर कहिए आप कौन हैं,
प्रणाम करता हूँ, हे उग्र रूपधारी,
प्रसन्न होइए, हे देवाधिदेव,
बतलाइए स्वयं को, हे विस्मयकारी । (31)

भगवन बोले मैं महाकाल हूँ,
बढ़ा विनाश करने लोकों का,
तू युद्ध करे या कुछ न करे,
होगा विनाश इन वीरों का । (32)

तू तो केवल निमित मात्र है,
ये हैं पहले से मृत्यु को प्राप्त,
कर विनाश अपने रिपुओं का,
फिर भोग तू सम्पूर्ण साम्राज्य । (33)

द्रोण, भीष्म और कर्ण आदि,
मारे हुए हैं मेरे द्वारा ये सभी,
उठ निर्भय हो, कर तू युद्ध,
निःसन्देह होगी जीत तेरी ही । (34)

भयावह वह विश्वरूप देख,
और सुन वचन श्रीभगवान के,
भयभीत नमन कर बारम्बार,
अर्जुन बोला गदगद वाणी से । (35)

हे ऋषिकेश, आपके वन्दन से,
सम्पूर्ण विश्व अति हर्षित होता,
प्रणाम करते सभी सिद्ध प्राणी,
राक्षस दल पर भयभीत होता । (36)

बड़े है आप, आदि कर्ता हैं,
ब्रह्मा प्रणाम कैसे ना करे,
आप ही सब कार्य-कारण हैं,
अविनाशी और माया से परे । (37)

आदिदेव आप सनातन पुरुष हैं,
एक मात्र आश्रय इस जग के,
वेत्ता आप ही जानने योग्य हैं,
सम्पूर्ण सृष्टि व्याप्त आप से । (38)

अग्नि, वायु, प्रजापति, प्रपितामह,
वरुण, चंद्रमा, आप ही औंकार,
हजारों बार नमस्कार आपको,
फिर भी प्रभु बारम्बार नमस्कार । (39)

नमस्कार आगे से पीछे से,
नमस्कार आपको, हे सर्वरूप,
व्याप्त किए हैं सारे जग को,
हे अनन्तवीर्य, हे सर्वरूप । (40)

महिमा ना जान हे प्रभु आपकी,
कहा, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखे,
अपमान किया संग सोकर, खाकर,
हे शरणागतवत्सल, क्षमा करें । (41-42)

परम पूजनीय गुरु और पिता हैं,
आप ही इस सम्पूर्ण जगत के,
होगो कैसे कोई अधिक आप से,
नहीं जब कोई समान आप के । (43)

पिता पुत्र के, प्रेमी प्रियतम के,
अपराध क्षमा करता जैसे,
हे नाथ, चरण शरण आपकी,
अपराध क्षमा करें मेरे वैसे । (44)

आपका यह अद्भुत रूप देख,
हर्षित हूँ मैं, पर व्याकुल है चित्त,
हे नाथ, कृपा कर कीजिए,
प्रकट अपना वह रूप परिचित । (45)

शंख, चक्र, गदा, पदम युक्त,
माथे पर धारे दिव्य मुकुट,
हे विश्वमूर्ति, हे सहस्त्रबाहु,
दिखलाइए अपना रूप चतुर्भुज । (46)

भगवन बोले अनुग्रह कर,
दिखलाया तुझे यह विश्वरूप,
देखा नहीं किसी ने पहले,
तेजोमय मेरा यह अनन्त रूप । (47)

ना तपस्या, ना स्वाध्याय से,
ना यज्ञों से, ना ही दान से,
सम्भव दर्शन इस विश्व रूप का,
ना ही किसी अन्य साधन से । (48)

भयंकर मेरा यह रूप देख,
मत हो व्याकुल या मोहित,
प्रेम भरे मन से दर्शन कर,
फिर वही रूप मेरा परिचित । (49)

संजय बोला श्रीकृष्ण ने फिर,
दिखलाया अपना चतुर्भुज रूप,
आश्वासित कर अर्जुन को फिर,
दिखलाया अपना द्विभुज रूप । (50)

शान्त हुआ अर्जुन का चित्त,
द्विभुज रूप में कर दर्शन,
प्रभु बोले इस रूप में मेरे,
देवों को भी दुर्लभ दर्शन । (51-52)

हे अर्जुन, मेरा यह मधुर रूप,
देख रहा जो दिव्य नेत्रों से,
ज्ञेय नहीं यह तत्त्व रूप में,
जप, तप, पूजा और दान से । (53)

यूँ जानना, प्रत्यक्ष देखना,
सम्भव है केवल अनन्य भक्ति से,
प्राप्त हूँ मैं केवल उसको,
द्वेष नहीं जिसे किसी प्राणी से । (54-55)

अध्याय 12

भक्तियोग

अर्जुन बोला, हे प्रभु, बताएँ,
कौन परम सिद्ध इन दोनों में,
भक्ति सहित जो आपको भजते,
या पूजते जो निराकार रूप में । (1)

भगवन बोले नित्य निरन्तर,
तत्पर हो एकाग्र मन से,
भजते मुझे जो श्रद्धा सहित,
परम सिद्ध वो मान्य मुझे । (2)

अविनाशी, निराकार, सर्वव्यापी को,
उपासते जो इन्द्रियाँ वश में कर,
सब जीवों के हित में संलग्न,
सफल होते वे भी मुझे प्राप्त कर । (3-4)

चित्त लेकिन जिनका आकृष्ट है,
परम सत्य के निराकार रूप में,
कठिनाई से प्राप्त होती है,
देहाभिमानियों को गति उसमें । (5)

करता हूँ अतिशीघ्र उद्धार,
मैं अपने अनन्य भक्तों का,
सब कर्म कर मुझमें अर्पण,
आश्रय लेते जो भक्ति का । (6-7)

सम्पूर्ण बुद्धि से, अतः हे अर्जुन,
तू नित्य मेरा ही चिन्तन कर,
निःसन्देह तू पाएगा मुझे ही,
मन अपना मुझमें एकाग्र कर । (8)

समर्थ नहीं है यदि मन को,
मुझमें तू एकाग्र करने में,
भक्ति की शरण जगाएगी,
मुझे पाने की इच्छा तुझमें । (9)

कर्म कर सब मेरे लिए,
नहीं कर सकता यदि भक्ति,
पा जाएगा कर्म परायण हो,
तू मुझे प्राप्ति रूपी सिद्धि । (10)

हो बुद्धि योग से युक्त यदि,
तू कर्म भी नहीं कर सकता,
तो आत्मस्वरूप में स्थित हो,
कर्म कर फल त्याग करता । (11)

सम्भव नहीं यदि यह भी,
तो ज्ञान का अनुशीलन कर,
श्रेष्ठ मगर है ध्यान ज्ञान से,
ध्यान से फल त्याग बढ़कर । (12)

द्वेष, स्वार्थ, ममता, हठ रहित,
हानि-लाभ द्वन्दों से विरक्त,
मन बुद्धि से रत भक्ति में,
मुझको प्रिय वह मेरा भक्त । (13-14)

भय रहित जिससे सब जीव,
ना जो स्वयं भयभीत होता,
निस्पृह, उदासीन, परित्यागी,
फल की नहीं कामना करता । (15-16)

जो ना दुखी, ना हर्षित होता,
ना ही द्वेष या कामना रखता,
शुभ-अशुभ, सब फल का त्यागी,
अति प्रिय मुझे भक्त वह लगता । (17)

शत्रु-मित्र और मान-अपमान,
सुख-दुःख आदि जिसे समान,
दूर कुसंग से रहता हरदम,
करता नहीं जो मिथ्या अभिमान । (18)

सदा संतुष्ट और मननशील,
जिसका ना कोई नियत निवास,
स्थिर गति, ज्ञान में स्थित,
अति प्रिय मुझे वह मेरा दास । (19)

श्रद्धा सहित मेरे परायण हो,
भक्ति योग से दृढ़ निश्चय,
सेवन करता जो ज्ञानामृत,
भक्त मुझे वह प्रिय अतिशय । (20)

अध्याय 13

प्रकृतिपुरुषविवेकयोग

पूछा अर्जुन ने, हे केशव,
प्रकृति, पुरुष, क्षेत्र, क्षेत्रज्ञ,
कृपया बतलाए क्या ज्ञान है,
क्या उसके प्रयोजन का तत्त्व । (1)

प्रभु बोले, हे कुन्तीनन्दन,
यह शरीर क्षेत्र कहा जाता,
क्षेत्रज्ञ उसे ज्ञानी जन कहते,
इस क्षेत्र को जो है जानता । (2)

हे अर्जुन, सब देहों में,
मुझको ही तू क्षेत्रज्ञ जान,
देह, देही का भेद जानना,
मेरे मत में है यथार्थ ज्ञान । (3)

इस क्षेत्र का स्वरूप, विकार,
और इसका कारण, अर्जुन,
क्षेत्रज्ञ का भी स्वरूप, प्रभाव,
तेरे लिए कहता हूँ, सुन । (4)

ऋषियों द्वारा और वैदिक मन्त्रों में,
भलीभांति यह ज्ञान वर्णित है,
वेदान्त सूत्रों में विशेष रूप से,
कहा गया यह ज्ञान विदित है । (5)

पञ्च महाभूत*, अहंकार, बुद्धि,
अव्यक्त प्रकृति, और एक मन,
दस इन्द्रियाँ, पाँच विषय** सहित,
चौबीस तत्त्वों का यह संरचन । (6)

* पञ्च महाभूत - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश
** पाँच विषय - रूप, रस, गन्ध, शब्द व स्पर्श

इच्छा, द्वेष, सुख और दुःख,
स्थूल देह, धैर्य, जीवन लक्ष्ण,
इस प्रकार विकारों सहित,
क्षेत्र का है यह संक्षिप्त वर्णन । (7)

विनम्रता, सदाचरण, सहनशीलता,
सरल व्यवहार और अहिंसा,
सद्गुरु के शरणागत होकर,
निश्चल भाव से सेवा करना । (8)

भीतर बाहर की पूर्ण शुद्धि,
आत्म संयम और दृढ़ निष्ठा,
इन्द्रिय भोगों में अनासक्ति,
मिथ्याहंकार का त्याग सर्वथा । (9)

जन्म-मृत्यु, ज़रा-व्याधि में,
दुःख दोषों का चिन्तन करना,
पुत्र, स्त्री तथा घर आदि में,
आसक्ति व ममता ना रखना । (10)

अनुकूल या प्रतिकूल प्राप्ति में,
चित्त की समता का होना,
अनन्य भाव से नित्य निरन्तर,
भक्ति भाव से भावित होना । (11)

एकांत वास, विषय त्याग,
नित्य परम सत्य का ज्ञान,
मेरे मत में यही ज्ञान है,
इसके विपरीत सब अज्ञान । (12)

ज्ञेय तत्त्व कहता हूँ अब मैं,
तृप्त होगा तू सुन के जिसे,
अनादि ब्रहमतत्त्व आधीन मेरे,
जग के कार्य कारण से परे । (13)

परम सत्य वह सब ओर को,
हाथ, पैर और मुख वाला है,
इस प्रकार स्थित है वह,
सबको व्याप्त करने वाला है । (14)

सब इन्द्रियों का मूल स्रोत,
धारक, पोषक, इन्द्रियाँ रहित,
सभी गुणों का स्वामी है वह,
नहीं फिर भी माया रचित । (15)

चराचर में सर्वत्र परिपूर्ण है,
जाना नहीं जाता, सूक्ष्म अति,
वही परम सत्य सबके समीप है,
वही परम सत्य है दूर अति । (16)

पृथक-पृथक जीवों में स्थित,
फिर भी है विभाग रहित,
जन्म दाता, पालक, सहायक,
सब जीवों का करता हित । (17)

माया से अति परे अगोचर,
ज्योतिर्वानों का ज्योति है वह,
ज्ञान, ज्ञेय, ज्ञानगम्य है,
हृदय में सबके स्थित है वह । (18)

मेरे द्वारा इस तरह वर्णित,
क्षेत्र, ज्ञान, ज्ञेय का तत्त्व,
इसे जानकर मेरा स्वभाव,
पा जाता है मेरा भक्त । (19)

हे अर्जुन, प्रकृति और जीव,
दोनों को ही अनादि जान,
उनके विकारों और गुणों को,
प्रकृति से ही उत्पन्न जान । (20)

कही गई है यह प्रकृति,
प्राकृत कार्य कारण का हेतु,
और जीवात्मा इस जग में,
सुख व दुःख भोगने का हेतु । (21)

प्रकृति में स्थित जीवात्मा ही,
भोगता है विविध गुणों को,
गुणों के संग से ही जीवात्मा,
पाता है विविध जन्मों को । (22)

इस देह में जीव के साथ,
है एक और परम भोक्ता,
साक्षी और अनुमति दाता,
जानते जिसे सब परमात्मा । (23)

जीव व प्रकृति गुणों सहित,
ऐसे जो तत्त्व से जानता,
कैसे भी हो वर्तमान में,
पुनर्जन्म वह नहीं पाता । (24)

कुछ ध्यान करते हृदय में,
विशुद्ध चित से परमात्मा का,
और कितने ही पाते उसको,
निष्काम कर्म या ज्ञान द्वारा । (25)

कुछ दूसरों से सुनकर,
भक्ति में तत्पर हो जाते,
मृत्युरूप संसार सागर से,
निश्चय वे भी तर जाते । (26)

जो भी चर-अचर दिखता है,
हे अर्जुन, तू निश्चित मान,
क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ के संयोग से ही,
उसको तू उत्पन्न जान । (27)

जीवात्मा के संग परमात्मा,
सब जीवों में जो है देखता,
और जानता इनको अविनाशी,
वही वास्तव में यथार्थ देखता । (28)

परमात्मा को जीव मात्र में,
समभाव से जो स्थित देखता,
नहीं पतन होता फिर उसका,
परम गति को वह पा जाता । (29)

सभी कर्म प्राकृत देह द्वारा,
किए हुए ही जो है देखता,
जानता आत्मा को अकर्ता,
वही पुरुष यथार्थ देखता । (30)

पृथक-पृथक जीवों में जो,
परमात्मा का ही विस्तार देखता,
नहीं प्रभावित देह भेद से,
निश्चय ब्रहम को वो पा जाता । (31)

यह दिव्य निर्गुण अनादि आत्मा,
सनातन व माया से परे है,
लिप्त नहीं होता जो कर्म में,
यह आत्मा कर्म से परे है । (32)

ज्यों आकाश सूक्ष्म होने से,
नहीं किसी से होता लिप्त,
वैसे ही यह ब्रहमभूत जीव,
नहीं देह से होता लिप्त । (33)

हे अर्जुन, ज्यों सूर्य अकेला,
करता सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड प्रकाशित,
वैसे ही देह स्थित आत्मा,
उसे चेतना से करता आलोकित । (34)

देह से देही के भेद को,
बन्धन से मुक्ति साधन को,
जानते हैं जो तत्व द्वारा,
पा जाते मेरे परम धाम को । (35)

अध्याय 14

गुणत्रयविभागयोग

भगवन बोले तेरे लिए मैं,
फिर कहता हूँ परम ज्ञान को,
जिसे जानकर मुनिजन सब,
प्राप्त हो गए परम धाम को । (1)

लेकर शरण इस ज्ञान की,
जीव मेरा स्वभाव पा जाते,
नहीं जन्मते सृष्टि काल में,
ना प्रलय में व्याकुलता पाते । (2)

महद्ब्रह्म नामक मेरी प्रकृति,
योनि है सब जीवों की,
इसमें जीवों के गर्भाधान से,
होती उत्पत्ति जीवों की । (3)

जितने भी शरीर होते हैं,
यह उनका उत्पत्ति स्थान,
मैं पिता हूँ उन सबका,
करता बीज का गर्भाधान । (4)

सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण,
विद्यमान प्रकृति में रहते,
इस निर्विकार जीवात्मा को,
देह में यह गुण ही बाँधते । (5)

निर्मल और ज्ञान का प्रकाशक,
सत्वगुण मुक्त है विकारों से,
लेकिन यह भी है बन्धनकारक,
सुख और ज्ञान की उपाधि से । (6)

कामजनित रजोगुण की उत्पत्ति,
होती आसक्ति और तृष्णा से,
जीवात्मा को वह बाँध देता,
सकाम कर्मफल के बन्धन से । (7)

मोहित करने वाला तमोगुण,
उत्पन्न होता है अज्ञान से,
देहधारी जीवों को बाँधता यह,
आलस्य, निद्रा व प्रमाद से । (8)

ये तीनों गुण हैं बन्धनकारी,
रहती इनमे हरदम स्पर्धा,
कभी सत्वगुण, कभी रजोगुण,
कभी तमोगुण करता प्रभुता । (9-10)

सत्वगुण में देहद्वार सब,
प्रकाशित ज्ञान से हो जाते,
रजोगुण में लोभ, प्रवृति,
वासना आदि बढ़ जाते । (11-12)

विवेक हीनता, निष्क्रियता,
प्रमाद और अज्ञान आदि,
बढ़ जाने पर तमोगुण के,
होती इनकी अभिव्यक्ति । (13)

सत्वगुण से उच्च लोक,
रजोगुण से मानव योनि,
तमोगुण में मरने वाला,
पाता पशु आदि ही योनि । (14-15)

सात्विक कर्म से, हे अर्जुन,
अन्तःकरण की शुद्धि होती,
राजस कर्म से दुःख मिलता,
तामस से अनर्थ प्राप्ति होती । (16)

सत्वगुण से सच्चा ज्ञान,
लोभ रजोगुण से होता,
आलस्य, अज्ञान, मोह, प्रमाद,
प्राप्त तमोगुण से होता । (17)

सत्वगुणी स्वर्गादि को जाते,
रजोगुणी पृथ्वी पर आते,
पर तमोगुण में स्थित प्राणी,
अधम अधोगति ही पाते । (18)

देखेगा जब तू कर्मों में,
कर्ता केवल इन गुणों को ही,
और परे परमेश्वर इनसे,
पाएगा परा प्रकृति तब मेरी । (19)

जो इस देह के उत्पत्ति कारक,
त्रिगुणों का उल्लंघन कर जाता,
जन्म-मृत्यु आदि दुखों से छूट,
इसी जीवन में मुक्ति पा जाता । (20)

अर्जुन बोला किन लक्षणों से,
गुणातीत पुरुष भावित होता,
किस आचरण, किस साधन से,
त्रिगुणों से वह मुक्ति पाता । (21)

भगवन बोले जिसे द्वेष नहीं,
प्रवृति, निवृति, ज्ञान, मोह से,
उदासीन जो अविचलित रहता,
जान कार्य हो रहे गुणों से,

मिट्टी-सोना, निंदा-स्तुति,
शत्रु-मित्र में रखता समभाव,
त्याग दी जिसने सकाम कर्म,
गुण करते नहीं उस पर प्रभाव । (22-25)

जो लीन अनन्य भक्तियोग में,
सदा मेरा ही भजन करता,
उल्लंघन कर गुणों का वह,
तत्काल ब्रह्मभूत हो जाता । (26)

अमर और अविनाशी ब्रह्म का,
हे अर्जुन मैं ही हूँ आधार,
सनातन धर्म और परम सुख,
उनका भी मैं ही हूँ आधार । (27)

अध्याय 15

पुरुषोतमयोग

वृक्ष एक पीपल का जिसका,
मूल है ऊपर, नीचे शाखा,
जानता जो इसे तत्व से,
वेदों का वह मर्म जानता । (1)

त्रिगुण रूपी जल से सिंचित,
शाखाएँ इसकी सर्वत्र फैलीं,
इन्द्रिय विषय रूप इसके पत्ते,
बन्धनकारी जड़ें नीचे फैलीं । (2)

अप्रत्यक्ष इसका ना आदि अन्त,
अतिदृढ है इसका आधार,
संसार रूपी यह वृक्ष काटने,
उठा वैराग्य रूपी दृढ़ कुठार । (3)

खोज फिर उस परम पद को,
उन आदि पुरुष की शरण ले,
अनादि काल से आश्रित, फैली,
पुरातन संसार प्रवृति जिनसे । (4)

मुक्त हो जो मोह, कुसंग से,
निष्काम, अध्यात्म तत्व जानते,
द्वन्दों से मुक्त, भगवद शरणागत,
ज्ञानी वे परम पद पा जाते । (5)

सूर्य, चन्द्र और अग्नि जिसे,
नहीं प्रकाशित कर सकते,
पाकर वह मेरा परम धाम,
जीव जगत में नहीं लौटते । (6)

बद्ध जगत में है यह जीव,
मेरा ही शाश्वत भिन्न अंश,
कर रहा पर घोर संघर्ष,
मन और इन्द्रियों के संग । (7)

जैसे वायु ले जाता है,
गन्ध ग्रहण कर अपने साथ,
जीव वैसे ही देह त्याग,
इन्द्रियाँ ले जाता अपने साथ । (8)

नया जन्म पाने पर यह,
स्थूल शरीर ग्रहण करता,
इन्द्रियों और मन द्वारा फिर,
विषयों का यह सेवन करता । (9)

जीव जैसे यह देह भोगता,
और जैसे वह देह त्यागता,
मूढ़ उसे नहीं जान पाते,
ज्ञानी इसका अनुभव करता । (10)

योगी जन यत्न करते हुए,
देह में स्थित आत्मा को देखते,
अशुद्ध चित्त वाले अज्ञानी पर,
कभी उसे नहीं देख सकते । (11)

हे अर्जुन, सूर्य में स्थित तेज,
प्रकाशित करता जो जग को,
चन्द्रमा और अग्नि में भी तू,
जान उपस्थित मेरे तेज को । (12)

मैं ही प्रवेश कर धारण करता,
जीवों सहित सम्पूर्ण लोकों को,
और अमृत मय चन्द्रमा होकर,
पोषण देता सब औषधियों को । (13)

प्राणियों की देह में स्थित,
मैं वैश्वानर अग्नि रूप में,
प्राण और अपान के संग,
पचाता अन्न चार प्रकार के । (14)

स्मृति, ज्ञान और विस्मृति,
होता है सब मुझसे ही,
वेद, वेदज्ञ, ज्ञान और ज्ञेय,
मैं वेदों का प्रकाशक भी । (15)

चेतन जगत में हर जीव के,
दो भाग हैं क्षर और अक्षर,
नश्वर होती है प्राकृत देह,
नित्य जीवात्मा होता अक्षर । (16)

उन दोनों से उत्तम लेकिन,
अविनाशी परब्रह्म परमेश्वर,
धारण, पालन जो करता,
सब लोकों में प्रवेश कर । (17)

क्षर और अक्षर दोनों से परे,
और श्रेष्ठ हूँ उन सबसे,
अतः लोक और वेदों में,
मैं प्रसिद्ध पुरुषोत्तम नाम से । (18)

हे अर्जुन, जो मुझे जानता,
इस प्रकार निश्चित पुरुषोत्तम,
सम्पूर्ण वेद का तत्त्व जानता,
पाता वह मेरी भक्ति उत्तम । (19)

प्रकट किया मैंने यह ऐसे,
शास्त्रों का परम गोपनीय सार,
जिसे जान तत्त्व से प्राणी,
बुद्धि पाता, मिट जाते विकार । (20)

अध्याय 16

देवासुरसम्पद्विभागयोग

भगवन बोले, अभय, अहिंसा,
दिव्य ज्ञान का सेवन, निर्मलता,
यज्ञ, तप, वेदों का अध्ययन,
सत्य, दान और शांति, सरलता,

लज्जा, क्षमा, त्याग, दया,
क्रोध का अभाव, आत्म संयम,
तेज, धैर्य, अद्वेष इत्यादि,
दैवी प्रकृति के हैं यह लक्षण । (1-3)

इसके विपरीत, हे कुन्तीनन्दन,
पाखण्ड, क्रोध, गर्व, अभिमान,
आसुरी प्रकृति वालों के लक्षण,
निःसन्देह निष्ठुरता व अज्ञान । (4)

मोक्ष के लिए दैवी गुण हैं,
बन्धन हेतु आसुरी स्वभाव,
शोक मत कर, अर्जुन, तुझमें,
जन्म से ही हैं दैवी भाव । (5)

दैवी व आसुरी दो प्रकार के,
जीव प्रकट होते जग में,
आसुरी जीवों का विवरण,
हे अर्जुन, अब सुन मुझसे । (6)

क्या नहीं, क्या करना है,
इसका भेद ना होता उनमें,
न शौच, ना सदाचार,
ना ही सत्य होता उनमें । (7)

वे कहते जग मिथ्या है,
बिना आश्रय या ईश्वर के,
नहीं अन्य इसका कारण,
कामजनित कहते वे इसे । (8)

होते उत्पन्न जगत नाश को,
अल्प बुद्धि वे ज्ञान रहित,
अपने क्रूर कर्मों द्वारा वे,
करते जग का सदा अहित । (9)

काम, दम्भ, मान आदि का,
आश्रय सदा वो लिए रहते हैं,
मोह वश आसक्त हुए वे,
दूषित कर्म करते रहते हैं । (10)

कामोपभोग परम लक्ष्य उनका,
अन्यायपूर्वक धन संचय करते,
नहीं अन्त चिन्ताओं का उनकी,
आशाओं में वे सदा बंधे रहते । (11-12)

आज यह धन प्राप्त किया,
कल वह मनोरथ सिद्ध करूँगा,
आज इस शत्रु को मारा,
कल उसका विनाश करूँगा ।

ईश्वर, भोगी, धनवान हूँ,
इसी ध्यान में मगन रहते,
यज्ञ, दान, आनन्द करूँगा,
अज्ञान वश मोहित रहते । (13-15)

सदा रहते चिंता से ग्रस्त,
आसक्त हमेशा विषय भोग में,
मोह जाल में फँसे बंधे वे,
पाते अपवित्र नरक अन्त में । (16)

अपने को ही श्रेष्ठ समझते,
धन, मान, मद से अंधे,
शास्त्रविधि के बिना ही वे,
नाम मात्र को यज्ञ करते । (17)

अहंकार, बल, काम, क्रोध,
इन सबके वश में रहते,
अपने और औरों में स्थित,
द्वेष मुझ परमेश्वर से करते । (18)

इन द्वेष करने वालों को,
क्रूर कर्मी और नराधमों को,
देता हूँ मैं भव सागर में,
सदा आसुरी ही योनियों को । (19)

जन्म-जन्म पा असुरी योनि,
मुझ तक वो पहुँच नहीं पाते,
इस तरह बारम्बार वे मूढ़,
परम अधम गति को ही पाते । (20)

काम, क्रोध और लोभ, मोह,
करते आत्मा का ही पतन,
नहीं योग्य बुद्धिमानों को,
अत: करना इनका सेवन । (21)

इन तीनों से मुक्त पुरुष,
आत्म कल्याण का साधन करता,
शनै-शनै: आत्मबुद्धि द्वारा,
परम गति वह प्राप्त करता । (22)

लेकिन शास्त्र विधि को त्याग,
इच्छानुसार जो आचरण करता,
ना सुख को, ना सिद्धि को,
ना ही परम गति को पा सकता । (23)

इसलिए कर्म-अकर्म निर्णय में,
निश्चय शास्त्र ही हैं प्रमाण,
तदानुसार कर्म करना चाहिए,
मुक्ति हेतु, शास्त्र विधि जान । (24)

अध्याय 17

श्रद्धात्रयविभागयोग

अर्जुन ने पूछा विधि रहित,
पर करते यज्ञ जो श्रद्धा से,
सत्व, रज या तम, इनमें,
भावित होते किस श्रद्धा से । (1)

भगवन बोले जीवों की,
श्रद्धा होती तीन प्रकार की,
उनके गुणों के ही अनुरूप,
सात्विकी, राजसी या तामसी । (2)

अपने अन्त:करण के अनुरूप,
होती श्रद्धा जीव मात्र की,
यह जीव क्योंकि श्रद्धामय है,
जैसी श्रद्धा, वह वैसा ही । (3)

सात्विक श्रद्धालु देवों को पूजते,
राजस पूजते यक्ष-राक्षसों को,
तामस श्रद्धा पर जिनमें होती,
पूजते वे भूत-प्रेत आदि को । (4)

वेद विरुद्ध जो तप करते हैं,
अहंकार और आसक्ति के वश हो,
कष्ट पहुँचाते स्वयं को भी,
और मुझ अन्तर्यामी परमात्मा को । (5-6)

होता प्रकृति के अनुसार प्रिय,
आहार सबको तीन प्रकार का,
वैसे ही यज्ञ, तप और दान,
होता यह भी तीन प्रकार का । (7)

सात्विक मनुष्य को प्रिय होते,
आहार रसमय वृद्धि करने वाले,
आयु, शुद्धि, आरोग्य सुख देते,
हृदय को प्रिय लगने वाले । (8)

राजस मनुष्य को प्रिय होते,
आहार दाहकारी और रूखे,
रोग, शोक, दुःख देने वाले,
कड़ुवे, खट्टे, गर्म और तीखे । (9)

भोजन से एक प्रहर पहले,
बना हुआ भोजन बासी,
दुर्गंधित, नीरस और अपवित्र,
आहार पसन्द करते हैं तामसी । (10)

सात्विक यज्ञ वह यज्ञ है,
विधि अनुसार जो किया जाता,
फल की इच्छा से रहित,
कर्त्तव्य मान जो किया जाता । (11)

लेकिन इच्छा से फल की,
पाने को कुछ लौकिक लाभ,
किया जाता जिस यज्ञ को,
हे अर्जुन, उसे राजस जान । (12)

शास्त्र विधि के विरुद्ध यज्ञ,
प्रसाद वितरण जिसमें नहीं होता,
वेद मन्त्र, दक्षिणा से रहित,
श्रद्धाशून्य यज्ञ वह तामसी होता । (13)

श्री भगवान, गुरु और ब्राह्मण,
अन्य वेदज्ञ पुरुषों का पूजन,
पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य, अहिंसा,
शारीरिक तप हैं, हे अर्जुन । (14)

हितकारी भाषण, वेदाध्ययन,
प्रिय, सत्य व विनम्र शब्द,
नित्य करना इनका अभ्यास,
कहलाता है वाणी का तप । (15)

मन की प्रसन्नता, आत्म संयम,
भाव शुद्धि, व्यवहार निष्कपट,
गम्भीरता आदि का अभ्यास,
कहलाता है यह मन का तप । (16)

श्रद्धासहित, निष्काम भाव से,
प्रभु की प्रसन्नता के लिए,
ये तीनों हैं सात्विक तप,
एकाग्र चित्त से किए गए । (17)

सत्कार, मान, अर्चना हेतु,
दम्भपूर्वक जो किया जाता,
अनित्य व क्षणिक फल वाला,
राजसी तप वह कहा जाता । (18)

विवेक रहित, दुराग्रह पूर्वक,
पीड़ा सह जो किया जाता,
करने हेतु औरों का विनाश,
तप तामसी वह कहा जाता । (19)

प्रत्युपकार की इच्छा बिना,
कर्त्तव्य रूप जो दिया जाता,
योग्य देश काल में सत्पात्र को,
दान सात्विक वह कहा जाता । (20)

प्रत्युपकार की आशा या जो,
कुछ पाने हेतु दिया जाता,
क्लेशपूर्वक दिया गया दान,
राजस दान वह कहा जाता । (21)

बिना विचारे देश काल,
तिरस्कार पूर्वक दिया दान,
अपात्र को सम्मान के बिना,
कहलाता वह तामसी दान । (22)

ब्रह्म तत्त्व के वाचक हैं ये,
तीन शब्द ॐ, तत्, सत्,
आदि काल में हुए इनसे,
ब्राह्मण, वेद व यज्ञ प्रकट । (23)

करते इसलिए योगी उच्चारण,
सर्वप्रथम शब्द औंकार का,
उसके बाद ही करते प्रारम्भ,
वे यज्ञ, तप आदि क्रियाओं का । (24)

'तत्' शब्द का उच्चारण कर,
फल की इच्छा के बिना,
की जाती मुमुक्ष पुरुषों द्वारा,
यज्ञ, तप आदि सभी क्रिया । (25)

परब्रह्म और भक्ति के भाव में,
'सत्' शब्द प्रयोग किया जाता,
यज्ञ, तप, दान हेतु पुरुषार्थ,
सत् कर्म उसे कहा जाता । (26-27)

इसके विपरीत बिना श्रद्धा के,
करते जो कार्य, असत् कहलाता,
इस लोक में या मृत्यु के बाद,
भला नहीं कुछ, इससे हो पाता । (28)

अध्याय 18

मोक्षसंन्यासयोग

बोला अर्जुन तब श्री कृष्ण से,
हे ऋषिकेश, कृपया बतलाएं,
संन्यास और त्याग दोनों का,
तत्व अलग-अलग समझाएं । (1)

भगवन बोले सकाम कर्मों के,
त्याग को कहते हैं संन्यास,
और कर्मफल समर्पण को,
ज्ञानी पुरुष कहते हैं त्याग । (2)

कुछ कहते दोषयुक्त होने से,
सभी कर्म हैं त्यागने योग्य,
कुछ कहते यज्ञ, तप आदि,
कदापि नहीं हैं त्यागने योग्य । (3)

त्याग के विषय में अब,
तू मेरे निश्चय को सुन,
तीन प्रकार का है वर्णित,
शास्त्रों में त्याग, हे अर्जुन । (4)

कर्त्तव्य हैं यज्ञ, तप आदि,
कदापि त्यागने योग्य नहीं,
कर देते ये तो पावन,
मनीषियों के चित्त को भी । (5)

चाहिए ये कर्म भी करने,
लेकिन आसक्ति को त्याग,
फल की इच्छा के बिना,
मेरे मन में कर्त्तव्य मान । (6)

योग्य नहीं कभी भी लेकिन,
शास्त्र विहित कर्म का त्याग,
मोह वश छोड़ देना इनको,
कहलाता है वह तामस त्याग । (7)

देह कष्ट के भय से या जो,
दुःख रूप समझ कर्म त्यागता,
राजस त्याग करके भी वह,
नहीं त्याग का फल पाता । (8)

कर्तापन का अभिमान छोडकर,
नियत कर्म पर जो करता,
फल की आसक्ति से रहित,
त्याग सात्विक वह कहलाता । (9)

ना द्वेष करता दुखद कर्म से,
सुखद में ना होता आसक्त,
सत्य लीन स्थिर बुद्धि वह,
हो जाता संशयों से मुक्त । (10)

असम्भव है पर देह बद्ध जीव का,
पूर्ण रूप से करना कर्म त्याग,
इसलिए वही सच्चा त्यागी है,
जिसने किया कर्मफल का त्याग । (11)

फल की इच्छा करने वालों को,
सुख-दुःख आदि भोगना पड़ता,
कर्मफल त्यागी पुरुषों को पर,
नहीं कर्मफल भोगना पड़ता । (12)

सांख्य में वर्णित हैं, हे अर्जुन,
कर्म सिद्धि के पाँच कारण,
शरीर, चेष्टा, प्रेरक अन्तर्यामी,
कर्ता व इन्द्रिय रूप करण । (13-14)

जो भी करता है मनुष्य,
मन, वाणी और शरीर से,
धर्ममय या विपरीत कर्म,
ये हो पाँच हेतु हैं उसके । (15)

लेकिन अशुद्ध बुद्धि के कारण,
आत्मा को जो कर्ता जानता,
निःसन्देह जान उसे अज्ञानी,
तत्त्व से वह नहीं जानता । (16)

मिथ्या अहंकार नहीं जिसमें,
बुद्धि होती लिप्त नहीं,
मारता नहीं मारकर भी,
कर्म से वह बँधता नहीं । (17)

ज्ञान, ज्ञेय व जानने वाला,
प्रेरक हैं ये तीन कर्म के,
इन्द्रियाँ, कर्म तथा कर्ता,
आधार हैं ये तीन कर्म के । (18)

प्रकृति के गुणों के अनुसार,
तीन-तीन भेद, हे अर्जुन,
ज्ञान, कर्म तथा करता के,
कहे गए हैं, उनको भी सुन । (19)

सब परस्पर विभक्त प्राणियों में,
एक परा प्रकृति विभाग रहित,
दिखती है जिस ज्ञान द्वारा,
उस ज्ञान को तू जान सात्विक । (20)

नाना प्रकार के देहों में,
विविध प्रकार के जीवों को,
स्थित देखता जिस ज्ञान से,
राजस जान उस ज्ञान को । (21)

एक ही कर्म में पूर्णतया,
रहता जिसके कारण आसक्त,
तत्त्व से रहित तुच्छ अति,
जान उस ज्ञान को तू तामस । (22)

आसक्ति व राग-द्वेष रहित हो,
करता है जो नियत कर्म,
फल की इच्छा के बिना,
कहलाता है वह सात्विक कर्म । (23)

मिथ्या अहंकार के वशीभूत,
क्लेशपूर्वक जो किया जाता,
अपनी ही इच्छा के लिए,
राजस कर्म वह कहा जाता । (24)

धर्म हानि व अपना सामर्थ्य,
विचारे बिना जो किया जाता,
होता बन्धनकारी और हिंसक,
कर्म तामसी वह कहा जाता । (25)

उदासीन कर्म सिद्धि-असिद्धि में,
आसक्ति और अहंकार से मुक्त,
सात्विक कर्ता वह जो रहता,
धैर्य और दृढ़ उत्साह से युक्त । (26)

हर्ष और शोक से चलायमान,
लोभी कर्मफल में आसक्त,
राजस कर्ता वह जो रहता,
अपवित्र और द्वेष से युक्त । (27)

विषादी, आलसी, दीर्घसूत्री,
विषयी, हठी, कपट से युक्त,
तामस कर्ता वह जो रहता,
शास्त्र विरुद्ध कर्म में युक्त । (28)

तीनों गुणों के अनुसार,
बोले भगवन, हे अर्जुन,
बुद्धि और धृति इनके भी,
भेदों को अब मुझसे सुन । (29)

भेद जानती जो कर्म-अकर्म में,
भय-अभय, मुक्ति, बन्धन में,
सात्विकी बुद्धि वह कहलाती,
विवेक जिसे प्रवृति-निवृति में । (30)

राजसी बुद्धि वह कहलाती,
विवेकहीन जो धर्म-अधर्म में,
भेद नहीं कर पाती भलीभांति,
जो कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य में । (31)

मोहवश जो अधर्म, धर्म को,
और अधर्म को धर्म समझती,
लगी रहती विपरीत राह में,
कही जाती बुद्धि वह तामसी । (32)

धारते जो योगाभ्यास से,
अचल और अनन्य धृति,
कर वश में मन प्राणादि,
होती वह सात्विकी धृति । (33)

राजसी धृति से होती है,
आसक्ति धर्म-अर्थादि में,
भय, शोक, मोह इत्यादि,
होते ये तामसी धृति में । (34-35)

तीन प्रकार के सुख होते हैं,
सुन उनका भी वर्णन तू मुझसे,
जिसमें अभ्यास से सुख होता,
दुःख की निवृति होती जिससे । (36)

पहले विष जैसा लगता जो,
पर होता अमृत के समान,
आत्मिक विकास होता जिससे,
उसे सात्विक सुख तू मान । (37)

पहले लगता अमृत सरीखा,
विष तुल्य लेकिन परिणाम,
विषय व इन्द्रिय संयोग से,
राजस सुख होना उसे जान । (38)

आरम्भ में और परिणाम में भी,
लोप आत्म चेतना का करता,
होता निद्रा, आलस्य, प्रमाद से,
सुख वह तामस कहा जाता । (39)

नहीं कहीं कोई भी प्राणी,
जी हो इन त्रिगुणों से रहित,
गुणों के अनुसार अत: वर्णों के,
किए गए हैं कर्म विभाजित । (40-41)

ब्राह्मणों के स्वभाविक कर्म हैं,
शान्ति, आत्म संयम, पवित्रता,
ज्ञान-विज्ञान, भक्ति, विश्वास,
सत्य में निष्ठा और सहिष्णुता । (42)

क्षत्रिय का स्वभाविक कर्म है,
युद्ध में कभी पलायन ना करना,
पराक्रम, तेज, दृढ़ता, सूझबूझ,
नेतृत्व, दान, प्रजा पालन करना । (43)

कृषि, गौरक्षा और व्यापार,
वैश्य का स्वभाविक कर्म है,
और दूसरों की सेवा करना,
शूद्रों का भी सहज कर्म है । (44)

जन्में जिस परमेश्वर से प्राणी,
सम्पूर्ण जगत है जिनसे व्याप्त,
स्वभाविक कर्म से उसे पूजकर,
मनुष्य संसिद्धि कर लेता प्राप्त ।

अन्य का कर्म भलीभांति करने से,
श्रेष्ठ स्वधर्म पालन त्रुटिपूर्ण भी,
स्वभावानुसार नियत कर्म करने से,
नहीं प्राप्त होता है पाप कभी । (45-47)

धुएँ से अग्नि के समान,
कर्म दोष से ढके हैं सभी,
अत: त्यागने नहीं चाहिए,
सहज कर्म दोष होने पर भी । (48)

आत्म संयम का अभ्यास करने से,
त्यागने से प्राकृत सुख व आसक्ति,
संन्यास का फल प्राप्त होता है,
यही संन्यास की है परम संसिद्धि । (49)

सिद्धि को प्राप्त हुआ पुरुष,
कैसे प्राप्त ब्रह्म को होता,
संक्षेप में सुन अब मुझसे,
ज्ञान की वह दिव्य अवस्था । (50)

सात्विक धारणा द्वारा, विशुद्ध बुद्धि से,
मन वश में कर, विषयों को त्याग,
अल्प आहार, मन वाणी संयम कर,
निर्जन में रहता, राग द्वेष को त्याग ।

ध्यान योग रूपी समाधि में निमग्न,
ममता रहित और शांत हो जाता,
त्याग, काम, क्रोध, अहंकार इत्यादि,
स्वरूप साक्षात्कार योग्य हो जाता । (51-53)

परब्रह्म की अनुभूति करता,
उसे ना इच्छा होती ना शोक,
सब जीवों में रखता समभाव,
पा जाता वह मेरा भक्तियोग । (54)

तत्त्व से मुझ पुरुषोत्तम को,
भक्ति से ही जाना जा सकता,
पूर्ण रूप से जान मुझे वह,
अविलम्ब मुझमें प्रवेश पा जाता । (55)

मेरा आश्रित निष्काम भक्त,
सब कर्मों को करता हुआ भी,
मेरी कृपा से पा जाता है,
परमधाम सनातन, अविनाशी । (56)

चित्त से सम्पूर्ण कर्मों को,
कर निरन्तर मेरे ही अर्पण,
मेरे परायण हो भक्तियोग में,
नित्य कर मेरा ही स्मरण । (57)

मेरे स्मरण में लीन होकर,
सब बाधाओं को तर जाएगा,
अहंकार वश यदि नहीं मानेगा,
निश्चित ही नष्ट हो जाएगा । (58)

अहंकार वश यदि तू यह समझता,
मेरी अवज्ञा कर युद्ध नहीं करेगा,
मिथ्या निश्चय है तेरा जान ले,
प्रकृति वश होकर तू युद्ध करेगा । (59)

मोहवश मेरी आज्ञानुसार,
जिस कर्म को तू नहीं करेगा,
अपने स्वभाव के वश होकर,
वही कर्म हे अर्जुन, तू करेगा । (60)

प्राणी मात्र के हृदय में बैठा,
परमेश्वर वह घूमा रहा,
देह स्थित सब जीवों को,
अपनी माया शक्ति द्वारा । (61)

इसलिए सब प्रकार से अर्जुन,
उसी परमेश्वर की शरण में जा,
उसकी कृपा से परम शान्ति व,
सनातन धाम को तू जाएगा पा । (62)

तेरे लिए कहा इस प्रकार,
गोपनीय यह ज्ञान परम,
फिर जैसी इच्छा हो, कर,
पूर्ण रूप से करके मनन । (63)

परम गोपनीय मेरे सार वचन,
कहता हूँ तुझे फिर से सुन,
तू मेरा अतिशय प्रिय है,
इसलिए कहता हूँ, अर्जुन । (64)

प्रेम सहित मेरा पूजन कर,
मुझमें ही मन वाला हो,
सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ तुझसे,
मुझे पाएगा मेर भक्त हो । (65)

त्याग कर सब धर्मों को,
ले शरण मेरी अनन्य भाव से,
तू शोक मत कर, मैं तुझे,
तार दूँगा सब पाप से । (66)

नहीं ज्ञान यह कहना चाहिए,
तप रहित अथवा अभक्त को,
सुनाना नहीं चाहिए उसे भी,
जिसे द्वेष मुझ परमेश्वर से हो । (67)

परम गोपनीय यह रहस्य,
भक्तों के लिए जो भी कहेगा,
भक्ति योग पाएगा निश्चित,
मेरे पास वह लौट आएगा । (68)

उससे अधिक प्रिय मुझे,
नहीं कोई सेवक जग में,
ना ही उससे बढ़कर कभी,
होगा कोई इस जग में । (69)

इस हमारे पावन संवाद का,
जो कोई भी पाठ करेगा,
उसके द्‌वारा, घोषित करता हूँ,
ज्ञान यज्ञ से मैं पूजित हूँगा । (70)

श्रद्‌धा भाव से द्‌वेष रहित हो,
जो यह ज्ञान श्रवण करेगा.
मुक्त हो वह भी पापों से,
पुण्य लोकों को प्राप्त करेगा । (71)

पूछा भगवन ने क्या तूने,
एकाग्रचित्त हो यह शास्त्र सुना,
हे अर्जुन, इससे क्या तेरा,
ज्ञान और मोह नष्ट हो गया ? (72)

अर्जुन बोला, मोह नष्ट हो,
मुझे स्मृति फिर प्राप्त हो गयी,
संशय मुक्त हो दृढ़ता से,
पालन करूँगा अब आज्ञा आपकी । (73)

संजय बोला इस प्रकार मैंने,
भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन का,
परम अद्‌भुत और रोमांचकारी,
अति पावन यह संवाद सुना । (74)

श्री व्यासदेव की परम कृपा से,
परम गोपनीय इस योग को,
अर्जुन से स्वयं कहते सुना,
मैंने योगेश्वर श्रीकृष्ण को । (75)

हे राजन, श्रीकृष्ण-अर्जुन के,
इस परम पावन संवाद को,
बारम्बार स्मरण कर पाता हूँ,
मैं प्रतिक्षण हर्ष व रोमांच को । (76)

स्मरण कर बारम्बार वह रूप,
परम अद्‌भुत श्री भगवान का,
महान आश्चर्य होता है मुझको,
पुन: पुन: मुझे हर्ष हो रहा । (77)

साक्षात् योगेश्वर श्रीकृष्ण और,
गाण्डीवधारी अर्जुन हैं जहाँ,
समस्त श्री, शक्ति, नीति व विजय,
मेरे मत में सर्वस्व है वहाँ । (78)

ॐ ॐ ॐ

....

<u>बाइबिल सार</u>

(जन जन की भाषा में)

बाइबिल सार
उत्पत्ति

परमेश्वर ने करी सृष्टि रचना,
पृथ्वी और आकाश बनाए,
अंधेरा हटा, उजियारा किया,
सुबह और शाम उसने बनाए ।

बाँटा जल, आकाश बनाया,
पृथ्वी और समुद्र पृथक किए,
अन्न और फलों के पेड़-पौधे,
जो बीज उगाएँ, उत्पन्न किए ।

दिन और रात को किया निश्चित,
सूरज, चाँद और तारे बनाकर,
सागर और गगन भर दिया,
जलचर, पशु और पक्षी बनाकर ।

फिर परमेश्वर ने रचा मनुष्य को,
अपनी तरह और स्वरूप में अपने,
नर और नारी बनाकर उसने,
दी आशीष, हों बहुत संतानें ।

पूरी कर सृष्टि की रचना,
फिर परमेश्वर ने विश्राम किया,
आशीषित कर दिन वह सातवाँ,
पवित्र उसे उसने बना दिया ।

धूल से रचकर मनुष्य को उसने,
अदन के एक बाग़ में रखा,
तरह तरह के और जीवन का पेड़,
भला-बुरा बताने वाला पेड़ भी रखा ।

कहा, करो देखभाल बाग़ की,
और खा सकते हो कोई भी फल,
लेकिन खाना ना कभी भी तुम,
भला-बुरा बताने वाले पेड़ के फल ।

अकेला देख मनुष्य को उसने,
उसकी साथी स्त्री को बनाया,
बनाया मनुष्य की पसली से उसे,
उसका साथ मनुष्य को भाया ।

रहने लगे वे दोनों साथ,
लज्जा का विचार ना मन में,
चतुर सांप ने स्त्री को बहला,
वर्जित फल खिलवाया उन्हें ।

फल खाया, दृष्टि बदल गयी,
पत्तों से तन ढक लिया उन्होंने,
यहोवा आया और उनसे पुछा,
धोखा खाया मैंने, कहा स्त्री ने ।

बुरा किया, कहा यहोवा ने सांप को,
रेंगोगे, धूल चाटोगे, इंसा दुश्मन होगा,
दुःख भोगेगी प्रजनन में स्त्री,
पुरुष भोजन के लिए कष्ट भोगेगा ।

चर्मवस्त्र दिए आदम-हव्वा को,
कहा, पुरुष हमारे जैसा हो गया,
अच्छा-बुरा जानता है वो अब,
भले-बुरे का उसे ज्ञान हो गया ।

अमर जीवन के पेड़ का फल,
गर मनुष्य खायेगा, सदा जिएगा,
आग उस पेड़ की रखवाली और,
करूब[1] बाग़ की रखवाली करेगा ।

निकाले गए अदन से आदम-हव्वा,
एक बच्चा 'कैन' हव्वा ने जना,
फिर दूसरा बच्चा हुआ हाबिल,
वह गड़ेरिया और कैन किसान बना ।

फसल पकने पर उसका एक हिस्सा,
यहोवा को भेंट में कैन ले आया,
सर्वोत्तम भेड़ का सर्वोत्तम हिस्सा,
हबिल यहोवा को भेंट करने लाया ।

हाबिल और भेंट स्वीकारी यहोवा ने,
पर कैन की भेंट को उसने नकारा,
व्याकुल और निराश कैन ने,
क्रोधित हो हाबिल को मारा ।

चल दिया कैन यहोवा को छोड़,
रहने लगा वो नोव देश में,
वंश बढ़ा, पुत्र और पौत्र हुए,
लेमेक भी एक वंशज था उनमें ।

शेत नाम का एक और पुत्र,
जन्मा आदम-हव्वा के घर में,
फला फूला आदम का परिवार,
नूह नामक पुत्र पाया लेमेक ने ।

मनुष्य हो गए बहुत पापी,
सोचा यहोवा ने क्यों बनाया इन्हें,
सब जीवों को नष्ट करने का सोचा,
पर बचा लिया नूह को उसने ।

कहा, नूह को एक जहाज बनाओ,
कैसे और उसका सब नाप बताया,
सब जीवों का एक-एक जोड़ा,
सब तरह का भोजन रखो, फरमाया ।

सात दिन बाद भेजूँगा वर्षा,
चढ़ जाओ तुम सब जहाज में,
चालीस दिन बरसता रहा पानी,
बस नूह और जीव बचे जहाज में ।

बारिश थमी, धरती सूखी,
तब नूह बाहर आया जहाज से,
यहोवा के लिए वेदी बना,
प्रसन्न किया यहोवा को बलि दे ।

आशीषित किया यहोवा ने नूह को,
बहुत संतति का दिया वरदान,
अब ना नष्ट करूँगा बाढ़ से जीवन,
मेघधनुष इसका होगा प्रमाण ।

नूह के पुत्र शेम, हाम और येपेत,
संसार के लोग इनसे ही हुए पैदा,
दाखमधु पी, मतवाला हो गया नूह,
बिना वस्त्र ही तम्बू में सो गया ।

[1] करूब-परमेश्वर द्वारा भेजे विशेष दूत । इनकी मूर्तियाँ वाचा के संदूक के उपर थीं ।

देख लिया कनान के पिता हाम ने,
तो नूह ने शाप दिया कनान को,
शेम और येपेत को कहा, धन्य हों,
कनान को कहा, भाइयों का दास हो ।

नूह के पुत्र और वंशजों से,
बन गए बहुत राष्ट्र और देश,
एक ही भाषा थी पहले तो,
फिर हो गयीं भाषाएँ भी अनेक ।

सीदोन और हित्त हुए कनान के पुत्र,
बहुत से लोगों का उनका परिवार था,
शेम के एक वंशज ऐबेर का परिवार,
राष्ट्रों की इकाइयों में बँधा हुआ था ।

पूर्व से बढ़, शिनार देश में,
एक मैदान मिला उन्हें रहने को,
ईंट और गारे का कर प्रयोग,
गगनचुम्बी इमारतें बनाईं रहने को ।

धरती पर उन्हें फैलाने के लिए,
यहोवा ने करी भाषा में गडबड,
उस जगह का नाम बाबुल[2] पड़ा,
जहाँ यहोवा ने करी भाषा गडबड ।

'तेरह' एक वंशज था शेम का,
अब्राम, नाहोर और हारान का पिता,
सारै अब्राम की पत्नी बनी,
नाहोर की पत्नी बनी मिल्का ।

हारान का एक पुत्र था लूत,
उसे, अब्राम और सारै को साथ ले,
जन्मभूमि कसादियों का नगर छोड़,
तेरह जा बसा हारून नगर में ।

कोई संतान ना थी अब्राम-सारै को,
क्योंकि सारै बच्चा ना जन सकती थी,
कहा यहोवा ने, अपना नगर छोड़ दो,
नीवं रखोगे तुम एक महान राष्ट्र की ।

सारै और लूत को लेकर साथ,
हारून छोड़ अब्राम चल दिया,
जब पहुँचे वे कनान देश,
यहोवा ने दर्शन उन्हें दिया ।

यहोवा ने कहा, दूँगा यह देश,
तुम्हारी आने वाली पीढ़ी को,
जहाँ यहोवा प्रकटा, अब्राम ने वहाँ,
एक वेदी समर्पित की यहोवा को ।

सूखे और वर्षा के अभाव में,
कनान छोड़ अब्राम चला मिस्र को,
सुंदरता कोई मुसीबत ना कर दे,
सो उसे भाई बताए, कहा सारै को ।

मिस्र में फिरौन के पास,
ले गए सारै को अधिकारी,
सारै का भाई जान फिरौन ने,
अब्राम पर बड़ी दया दिखलायी ।

[2] बाबुल-अर्थात 'संभ्रमित' करना ।

भायी ना यहोवा को यह बात,
फिरौन के घर बीमारी फैलाई,
मिस्र से जाने को कहा फिरौन ने,
अब्राम ने क्योंकि सच्चाई छुपाई ।

सबके साथ लौट चला अब्राम,
करी राह में उपासना यहोवा की,
धन और जानवर बहस ना करा दें,
अब्राम और लूत ने अलग राह ली ।

पकड़ा गया सदोम में लूत,
उसका सब कुछ शत्रुओं ने ले लिया,
पर अब्राम ने अचानक धावा बोल,
शत्रुओं को हरा, सब वापस ले लिया ।

मेल्कीसेदेक एक राजा और याजक,
मिला अब्राम से, उसे आशीर्वाद दिया,
अब्राम ने लड़ाई में जो उसे मिली,
हर चीज का उसे दसवाँ भाग दिया ।

निन्यानवें वर्ष का जब हुआ अब्राम,
यहोवा ने करी एक वाचा उससे,
यदि मानेगा वो यहोवा की आज्ञा,
बनाएगा कई राष्ट्रों का पिता उसे ।

फिर उसका नाम बदल इब्राहीम रखा,
कहा, 'वो' सदा उनका परमेश्वर रहेगा,
करना होगा खतना हर वंशज का,
वाचा निभाने पर यह प्रदेश मिलेगा ।

सारै का नाम भी बदल किया सारा,
कहा, वह एक बच्चे को जन्म देगी,
नब्बे वर्ष की तब हो चुकी थी सारा,
हँसा इब्राहिम वो कैसे माँ बन सकेगी ?

पूछा उसने क्या इश्माएल तो नहीं,
दासी हाजिरा से पुत्र जो सेवा करेगा,
परमेश्वर ने कहा, नहीं, वह नहीं,
सारा को ही एक पुत्र जन्मेगा ।

आशीर्वाद दूँगा इश्माएल को भी,
बहुत बच्चों का वह पिता बनेगा,
पिता होगा वह बारह बड़े राजाओं का,
उसका परिवार एक बड़ा राष्ट्र बनेगा ।

अगले साल सारा को होगा 'इसहाक',
यह कह परमेश्वर आकाश को उड़ा,
पूरा किया अपना वादा इब्राहिम ने,
घर जाकर किया सबका खतना ।

एक दिन इब्राहिम ने देखा यहोवा को,
और तीन पुरुष अपने दरवाजे पर,
पूछा उन पुरुषों ने कहाँ हैं सारा,
इब्राहिम बोला आराम कर रही भीतर ।

यहोवा बोला फिर आऊँगा बसंत में,
सारा जन्म देगी जब पुत्र को,
हँसी जो सारा, यहोवा ने कहा,
क्या कुछ असम्भव है, यहोवा को ?

वे तीनों सदोम की और बढे,
इब्राहिम रुका यहोवा के सामने,
सदोमी और अमोरियों की बुराई देख,
उन्हें नष्ट करने का सोचा यहोवा ने ।

गर उनमें से कुछ अच्छे हों तो,
उन्हें बचा ले इब्राहिम ने विनती की,
गर दस भी अच्छे हों, यहोवा ने कहा,
बच जाएँगे उस नगर के वासी सभी ।

दो दूत उनमें से जो सदोम गए,
लूत आग्रह कर घर ले आया उन्हें,
कुकर्म उनके साथ करने को लोग,
ले जाना चाहते थे अपने साथ उन्हें ।

समझाया कई तरह से लूत ने,
ये तक कहा, मेरी पुत्रियाँ ले जाओ,
माने ना जो किसी तरह वे लोग,
तो दूतों ने कहा, अंधे हो जाओ ।

लूत से कहा, अपने परिजनों को,
नगर छोड़ने के लिए कह दो,
बुराई जान यहाँ की हमे यहोवा ने,
भेजा है यह नगर नष्ट करने को ।

मजाक लगी यह बात औरों को,
पर दो पुत्रियों और पत्नी के साथ,
लूत चला भोर में सदोम छोडकर,
उन दोनों दूतों का पकड़कर हाथ ।

दूतों ने कहा, कोई मुड़कर ना देखे,
और ले चले उन्हें सोअर शहर,
बरसाकर आग और जलती गंधक,
नष्ट किए सदोम और अमोरा शहर ।

भाग रही थी जब लूत की पत्नी,
देखा उसने जो पीछे मुड़कर,
जैसा कहा था उन दूतों ने,
वहीं ढेर हो गयी नमक बनकर ।

सोअर में रहने से डरा लूत,
रहने लगा निर्जन पहाड़ पर जाकर,
वंश चलाने हेतु पुत्रियों ने उसका,
उपयोग किया दाखरस पिलाकर[3] ।

गरार नगर में बस गया इब्राहिम,
वहाँ भी सारा को बहन बतलाया,
चाहा सारा को राजा अबीमेलेक ने,
पर यहोवा के कहने पर लौटाया ।

जब इब्राहिम हुआ सौ बरस का,
सारा ने पुत्र इसहाक को जना,
जब आठ दिन का हुआ इसहाक,
इब्राहिम ने उसका किया खतना ।

दूध छोड़ने के भोज में सारा ने,
देखा हाजिरा और इश्माएल को,
ईर्ष्यावश इब्राहिम से कह उसने,
दूर भिजवाया उन दोनों को ।

दुखी देख इब्राहिम को यहोवा ने,
आशीर्वाद दूँगा इश्माएल को भी कहा,
चल दिए वे दोनों बेर्शेबा की ओर,
और रहने लगे परात मरुभूमि में जा ।

इब्राहिम और अबीमेलेक की हुई संधि,
खोदा एक कुआँ इब्राहिम ने,
उस कुए का नाम पड़ा बेर्शेबा[4],
अबीमेलेक को दिए उसने सात मेमने ।

[3] उनसे मोआब और बेनम्मी (मोआबियों और अम्मोनियों के पिता) जन्में ।

[4] बेर्शेबा-यहूदा में नेगाव मरुभूमि का एक नगर । इस नाम का अर्थ शपथ का कुआँ है ।

यहोवा ने ली इब्राहिम की परीक्षा,
कहा इसहाक की होमबलि देने को,
वेदी बना उस पर इसहाक को रख,
तैयार हो गया उसकी बलि देने को ।

तभी एक देवदूत ने रोका उसको,
कहा, उसे ना क्षति पहुँचाओ,
जाना, करते हो यहोवा का आदर,
उसकी जगह मेढ़े की बलि चढाओ ।

127 वर्ष की हो मरी सारा,
और पायी लम्बी उम्र इब्राहिम ने,
अपने ही वंश की किसी लडकी से,
इसहाक के विवाह की ठानी उसने ।

वचनबद्ध कर एक नौकर भेजा,
वो करने लगा संकेत की प्रतीक्षा,
जो उसे और ऊँटों को देगी पानी,
उसी से विवाह होगा इसहाक का ।

इब्राहिम के भाई नाहोर की पोती,
रिबका वहाँ पानी भरने आई,
दोड़कर गया नौकर रिबका के पास,
ऊँटों और उसकी प्यास बुझाई ।

नाहोर से कहा, इसे यहोवा ने चुना,
इसहाक के साथ विवाह करने को,
घरवालों ने रिबका को भेजा साथ में,
नौकर ने उपहार दिए उन सबको ।

हुआ इसहाक और रिबका का विवाह,
इब्राहिम ने भी नया विवाह रचाया,
भरपूर जीवन जी जब मरा इब्राहिम,
सारा के पास मकपेला में दफ़नाया ।

जुड़वाँ बेटों को जन्म दिया रिबका ने,
बड़ा एसाव और छोटा भाई याकूब,
एसाव इसहाक को बहुत प्यारा था,
पर रिबका का प्यारा था याकूब ।

शिकार से लौटे, खाने के बदले एसाव ने,
पहलौठे का हक बेच दिया याकूब को,
फिर जब वहाँ भीषण अकाल पड़ा,
यहोवा ने कहा, गरार में ही रहने को ।

फली-फूली खेती, इसहाक अमीर हुआ,
अबीमेलेक उसकी समृद्धि से डरा,
कहा देश छोड़कर चले जाने को,
तो इसहाक बेर्शेबा को चला ।

एसाव ने किया हित्ती स्त्रियों से विवाह,
इसहाक और रिबका दुखी हुए इससे,
जब हो गया इसहाक बहुत वृद्ध,
शिकार लाने को उसने कहा उससे ।

लेकिन रिबका ने चलकर एक चाल,
दिला दिया आशीर्वाद याकूब को,
कहा, बहुत वर्षा दे यहोवा तुम्हें,
बहुत फसल और दाखमधु दे तुमको ।

सब सेवा करें, राष्ट्र सामने झुकें,
भाई आज्ञा मानें, शासन करो उन पर,
जो शाप दे तुम्हे, वो खुद शाप पाए,
जो दे आशीर्वाद, आशीर्वाद हो उस पर ।

शिकार कर जब लौटा एसाव,
पता चला फिर उससे हुआ धोखा,
बचा ना आशीर्वाद इसहाक के पास,
आशीर्वाद दिया भाई से आज़ादी का ।

घृणा करने लगा एसाव याकूब से,
सोचा वह मार डालेगा याकूब को,
पर माँ ने दुल्हन खोजने के बहाने,
मामा के घर भिजवाया याकूब को ।

बेर्शेबा छोड़ हारून को चला याकूब,
एक चट्टान पर सिर रखकर सोया,
सपने में स्वर्ग जाती एक सीढी देखी,
सीढी के पास खड़ा देखा यहोवा ।

तुम्हारे पिता, पितामह का परमेश्वर,
मैं यहोवा, तुम्हें यह भूमि दी जाती,
तुम्हारे साथ रह तुम्हारी रक्षा करूँगा,
जब तक यह बात पूरी ना हो जाती ।

शिला खड़ी कर तेल चढ़ाया याकूब ने,
और यादगार बनाया उस जगह को,
कहा, यहोवा कुशलक्षेम वहन करे तो,
दशमांश समर्पित करेगा वह उसको ।

याकूब के मामा लाबेन की थी,
बड़ी बेटी लिआ और छोटी राहेल,
सात बरस सेवा को माना याकूब,
यदि मामा उससे ब्याह दे राहेल ।

लेकिन सात वर्ष बाद लाबान ने,
राहेल की जगह ब्याहा लिआ को,
कहा, और सात बरस सेवा यदि करे,
तो ब्याह देगा राहेल भी याकूब को ।

राहेल को अधिक चाहता था याकूब,
सो लिआ को संताने बख़्शी यहोवा ने,
फिर अंत में राहेल की प्रार्थना सुन,
उसे भी एक पुत्र दिया यहोवा ने ।

विदा का जब वक्त आया लाबान ने,
याकूब को उसका हक देना ना चाहा,
लौट चलो अपने पूर्वजों के देश,
याकूब से तब यहोवा ने कहा ।

रखता था जहाँ वो दागदार बकरियाँ,
याकूब ने लिआ व राहेल को बुलाया,
कहा, पहले सा ना रहा पिता तुम्हारा,
कड़ी मेहनत के बदले कुछ न पाया ।

पशु, सामान और पत्नियों के साथ,
याकूब ने तैयारी कर ली जाने की,
लाबान के पीछे से राहेल ने घर से,
गृह-देवता की प्रतिमा चुरा ली ।

याकूब ने लाबान को बताया ना था,
तीन दिन बाद पीछा किया उसने,
सात दिन बाद उसे मिला याकूब,
जिसे पहले ही चेता दिया यहोवा ने ।

कुछ कहा-सुनी हुई दोनों के बीच,
ढूँढने पर भी प्रतिमा मिली ना उसे,
फिर गिलियाद[5] में उनमें संधि हुई,
लाबान बोला कभी टापूँगा ना इसे ।

[5] गिलियाद-गिलाद का दूसरा नाम । इस नाम का अर्थ चट्टानों का ढेर है ।

पिता के प्रदेश में लौटा याकूब,
भेंटे भेजी उसने एसाव के लिए,
यब्बोक नदी के पार भेजा उसने,
परिवार और माल सुरक्षा के लिए ।

नदी पार करने से पहले याकूब का,
मल्लयुद्ध हुआ एक व्यक्ति के साथ,
आशीर्वाद दिया उसने याकूब को,
इस्राएल कहलाएगा वो आज के बाद ।

याकूब और लिआ की पुत्री थी दीना,
कुकर्म किया उससे राजा के बेटे ने,
क्रोधित हुए बहुत दीना के भाई तो,
खतना की शर्त पर संधि हुई उनमें ।

लेकिन अभी जब वे जख्मी ही थे,
दीना के भाईयों ने हमला कर दिया,
मार डाले सभी पुरुष उन्होंने और,
स्त्रियों सहित सब लूट लिया ।

यहोवा ने कहा बेतेल जाने को,
तो बेतेल से एप्राता[6] गया याकूब,
लिआ, राहेल, और दासियों से[7],
बारह पुत्रों का पिता बना याकूब ।

रुबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, जबूलून ,
और इस्साकार थे लिआ के पुत्र,
बिन्यामीन और यूसुफ थे राहेल से,
यूसुफ था याकूब का प्यारा पुत्र ।

दान और नप्तानी दासी बिल्हा से,
गाद और आशेर की माँ जिल्पा थी,
ये बारह भाई याकूब के पुत्र थे,
लेकिन माताएं अलग-अलग थी ।

एसाव का परिवार भी फला-फूला,
कनान छोड़, प्रदेश बनाया राज्य किया,
रह गया याकूब कनान में,
उसका परिवार कनान में बस गया ।

यूसुफ ने देखे कुछ ऐसे स्वप्न,
जिनसे जाहिर थी उसकी महत्ता,
यूसुफ के कुछ सौतेले भाई,
करने लगे थे यूसुफ से इर्ष्या ।

शकेम जाते, धकेला कुए में उसे,
फिर धन के बदले उसको बेचा,
किस्मत यूसुफ को मिस्र ले गयी,
सेनापति पोतिपर ने उसे खरीदा ।

सौभाग्यशाली साबित हुआ यूसुफ,
पोतिपर ने घर का अधिकारी बनाया,
बहुत सुन्दर और सरूप यूसुफ पर,
दिल पोतिपर की पत्नी का आया ।

पकड़ा जो उसे, जब था वो अकेला,
यूसुफ ने भागकर पीछा छुड़ाया,
पर इल्जाम लगा उस पर ही उसने,
यूसुफ को दण्ड दिला जेल भिजवाया ।

---

[6] एप्राता-बेतलेहेम

[7] दासियों से- दासी बिल्हा और दासी जिल्पा ।

उसी जेल में बंद थे और दो कैदी,
एक-एक सपना देखा दोनों ने,
दोनों के सपनों की करी व्याख्या,
सच निकला जो कहा यूसुफ ने ।

उनमें से एक को मिला मृत्युदण्ड,
दूसरा सेवक बना, आज़ादी मिली,
दो बरस जेल में बीतने के बाद,
यूसुफ को यहोवा की मदद मिली ।

फिरौन ने देखा एक सपना जिसमें,
सात दुबली गायें मोटी को खा गयीं,
इसी तरह सपने में देखा फिरौन ने,
सात सूखी बालियां अच्छी को खा गयीं ।

कोई अर्थ बता ना पाया सपने का,
तो यूसुफ याद आया उस सेवक को,
बुलवाया गया यूसुफ को जिसने,
सपने का अर्थ बताया फिरौन को ।

कहा, सात वर्ष अच्छी फसल के बाद,
सात वर्ष झेलना पड़ेगा भयंकर सूखा,
भोजन एकत्र कर, व्यवस्था ठीक करें,
ताकि समाधान हो सके बुरे वक्त का ।

बनाया मिस्र का प्रशासक फिरौन ने,
आसनत नामक स्त्री से विवाह कराया,
यूसुफ ने सारे मिस्र में घूम-घूमकर,
खेतों में उपजा अन्न एकत्र कराया ।

मनेश्शे और एप्रैम, दो पुत्र हुए उसे,
संकट का समय भी आ खड़ा हुआ,
बेचने लगा मिस्र अनाज को तौल,
जमा किए अन्न से बड़ा काम सधा ।

बिन्यामीन के सिवा बाकी दसों को,
कहा याकूब ने, मिस्र से लाएँ अनाज,
पहचान उन्हें यूसुफ ने कहा,
तुम हो भेदिए, लेने आए जो राज ।

कहा उन्होंने, हम बारह भाई हैं,
एक मर गया, एक पिता के पास,
तीन दिन जेल में रख छोड़ा उन्हें,
पर शिमोन को रख लिया पास ।

कहा, ले आओ छोटे भाई को,
तभी होगा उनकी बात पर विश्वास,
उधर उन दसों को हुई आत्मग्लानि,
सोचकर, जो किया यूसुफ के साथ ।

दुभाषिया बीच में होने के कारण,
पहचान ना पाए थे यूसुफ के भाई,
वापस पहुँच जब पिता से कहा,
बोला, क्यों बिन्यामीन की बात बताई ?

अन्न बीता, समझा-बुझा पिता को,
बिन्यामीन को भी ले चले वो साथ,
दावत के लिए उन्हें यूसुफ ने बुलवाया,
वहाँ धन भी रखवाया अन्न के साथ ।

बिन्यामीन के सामान में यूसुफ ने,
रखवा दिया था चाँदी का प्याला,
विदा हुए, सेवकों ने तलाशी ली तो,
बरामद हो गया चाँदी का प्याला ।

ले जाए गए सब भाई यूसुफ के घर,
झुककर उसे प्रणाम किया उन्होंने,
हम चोर नहीं हैं, दास बन रहेंगे,
यूसुफ से कहा, उसके भाइयों ने ।

यूसुफ बोला जिससे मिला प्याला,
केवल वो ही मेरा दास बनेगा,
यहूदा बोला मर जाएगा पिता,
जब उसको इसका पता चलेगा ।

उसके बदले दास बना लो मुझको,
उसे छोड़ नही मैं जा सकता,
भर आया तब यूसुफ का भी दिल,
बतलाया उसने वो भाई है उनका ।

अन्न, धन और उपहार दिए,
और पिता को भी ले आओ, कहा,
उधर इस्राएल को यहोवा ने,
महान राष्ट्र बनाउँगा तुम्हें, कहा ।

कहा फिर निकाल लाउँगा मिस्र से,
डरो नहीं, चलूँगा मैं वहाँ साथ,
मरोगे जाकर तुम मिस्र में,
लेकिन यूसुफ होगा तुम्हारे साथ ।

प्राण त्यागे याकूब ने मिस्र में,
दफनाया गया वह पूर्वजों के साथ,
प्रण लिया यूसुफ़ ने भी कि उसकी,
अस्थियाँ ले जाएँगे वो अपने साथ ।

निर्गमन

वक्त गुजरा, संख्या और शक्ति बढ़ी,,
लगने लगा नए राजा को उनसे डर,
दास-स्वामी उन पर नियुक्त कर,
विवश किया उन्हें बनाएँ वे नगर ।

और भी बढ़ने लगी संख्या उनकी,
कहा धाइयों को हिब्रु बच्चों को मारें,
जीवित रहने दें गर लडकी हो पैदा,
पर लडकों को पैदा होते ही मारें ।

धाइयों ने परमेश्वर पर विशवास कर,
जिन्दा रहने दिया उनके पुत्रों को,
तब फिरौन ने आदेश दिया जन्मते ही,
हिब्रू नील नदी में फैंके पुत्रों को ।

यूसुफ़ के एक भाई लेवी के घर,
बेटा हुआ, माँ ने उसे छिपा रखा,
फिर डर कर, नदी किनारे उसने,
एक टोकरी में उस बच्चे[8] को रखा ।

[8] बच्चा-मूसा; जिसका अर्थ है 'खींचना' या 'बाहर निकालना' ।

उठा लिया फिरौन की पुत्री ने उसे,
लडके की बहन थी वहाँ छिपी,
सुझाया सहायता हेतु किसी को बुलाऊं,
बुला लायी तब माँ को वह बच्ची ।

मूसा नाम मिला उस बच्चे को,
वक्त गुजरा हो गया वो जवान,
देखा एक मिस्री को हिब्रू को पीटते,
तो मूसा के हाथ गयी मिस्री की जान ।

भाग गया मिद्‌यान देश में वो,
और विवाह कर लिया वहाँ उसने,
उधर इस्राएलियों पर ज़ुल्मों को देख,
अपना वादा याद किया यहोवा ने ।

पर्वत पर जलती झाड़ी दिखी मूसा को,
और सुनाई दिया एक दिव्य स्वर,
मैं तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर,
निकाल लाऊँगा तुम्हें मिस्र से बाहर ।

कहा मूसा से जाओ फिरौन के पास,
'मैं जो हूँ सो हूँ'[9] इस्राएलियों से कहना,
यह्‌वे[10] है तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर,
उसी ने भेजा है यहाँ पर उनसे कहना ।

कहा, मिस्र का राजा जाने नहीं देगा,
पर एक महान शक्ति विवश करेगी,
बना दूँगा मैं मिस्र वालों को ऐसा,
कि प्रजा तुम लोगों को भेंटें देगी ।

कैसे मानेंगे इस्राएली, जो पूछा उसने,
यहोवा ने कहा फेकों अपनी लाठी,
तुरन्त वो लाठी सांप बन गयी,
फिर हाथ में लेते ही बनी वो लाठी ।

और फिर दूसरे प्रमाण के लिए,
कहा, लबादे में डालो अपना हाथ,
बाहर निकाला, सफेद चमकते दाग थे,
फिर डाला तो हुआ पहले सा हाथ ।

फिर भी लोग ना मानें तो,
लेना नील नदी का कुछ पानी,
तुरन्त ही खून बन जाएगा,
जैसे ही जमीं से छूएगा पानी ।

कहा यहोवा ने सब मुझसे ही पाते,
जो भी गुण हैं, जिसके भी पास,
मूसा बोला मेरी ज़ुबाँ साफ़ नहीं है,
तो भाई हारून को भेजा उसके साथ ।

चला परिवार को ले मूसा मिस्र को,
यहोवा ने कहा, फिरौन ना मानेगा,
चमत्कार दिखा, कहना जाने दो हमें,
वरना तुम्हारा पहलौठा पुत्र मरेगा ।

सीनै पर्वत[11] से साथ लिया हारून को,
पर बात मानी ना फिरौन ने उनकी,
उल्टे बढ़ा दिए उसने ज़ुल्मों-सितम,
लोगों ने लगाया इल्ज़ाम मूसा पर ही ।

---

[9] "मैं जो हूँ सो हूँ'"-हिब्रू शब्द यह्‌वे (यहोवा) नाम की तरह है ।
[10] यह्‌वे-यहोवा, अर्थात 'वह है', या 'वो पदार्थों को अस्तित्व देता है' ।
[11] सीनै पर्वत-परमेश्वर का पहाड़; 'होरेब पहाड़'।

यहोवा से करी प्रार्थना मदद की,
तो फिरौन से फिर मिलने को कहा,
कहा, हारून से कहना लाठी डाल दे,
और देखना फिर कमाल लाठी का ।

फिरौन ने भी बुलवाए अपने जादूगर,
पर हारून के आगे वे टिक ना पाए,
उसकी लाठी खा गयी उनकी लाठियां,
पर फिरौन का हठ वो तोड़ ना पाए ।

नील का पानी खून में बदला,
मेंढक, जुएँ और मक्खियाँ बरसी,
बचा गोशेन,[12] क्षति हुई मिस्रियों की,
हुई ऐसी भयंकर ओला वृष्टि ।

बार-बार वादा कर पलट जाता फिरौन,
यहोवा ने टिड्डियाँ भेजी, अंधेरा किया,
फिर मिस्री लोगों के पहलौठे पुत्रों के,
प्राण लेने का यहोवा ने निश्चय किया ।

वो महीना[13] कहा, होगा पहला महीना,
मेमना बलि चढाएं चौदहवे दिन इसके,
और उसका रक्त लगाएँ इस्राएली,
दरवाजों और चोखटों में अपने घरों के ।

अखमीरी रोटी, कड़वी जड़ी-बूटियों संग,
खाएँ मेमने का माँस आग में भूनकर,
यहोवा का फसह[14], यात्रा के वस्त्र पहने,
क्योंकि ले जा रहा मिस्र से निकालकर ।

कहा, गुजरूँगा आज रात मिस्र से,
पहलौठे पुत्र व पशु मरेंगे मिस्रियों के,
ना होगा कोई नुक्सान इस्राएलियों का,
खून से चिन्हित घर बचेंगे उनके ।

चौदहवें से इक्कीसवें दिन निसन के,
खाओगे तुम रोटी बिना खमीर की,
अलग किया जाएगा हर वह व्यक्ति,
जो खाएगा इन दिनों रोटी खमीर की ।

मरे जो पहलौठे पुत्र और पशु,
हाहाकार मच गया सारे मिस्र में,
उन दोनों को बुलवा बोला फिरौन,
ले जाओ सब अपना जो चाहिए तुम्हें ।

मिस्रियों ने किया सोना चाँदी भेंट,
चार सौ तीस वर्ष रह निकले मिस्र से,
कहा यहोवा ने, पहलौठा पुत्र और पशु,
करोगे यहोवा को अर्पण तुम अब से ।

यहोवा को अर्पित पहला पुत्र या पशु,
खरीद लेना तुम उसे वापस यहोवा से,
बतलाना यह मिस्र छोड़ने का किस्सा,
जब बच्चे भविष्य में पूछें तुमसे ।

रमाजिस से सुक्काम, वहाँ से एताम,
जा पहुँचे इस्राएली मरुभूमि के छोर पर,
दिन में बादल, रात में अग्नि-स्तम्भ,
यों रास्ता दिखाया यहोवा ने पूरे सफर ।

[12] गोशेन-जहाँ इस्राएली रहते थे ।
[13] महीना-अर्थात 'आबीब' (निसन-मार्च मध्य से अप्रैल मध्य तक) ।
[14] फसह-अर्थात 'कूद जाना', 'गुजर जाना' या 'रक्षा करना' ।

फिरौन को भ्रमित करने के लिए,
कि वे रह गए मरुभूमि में भटककर,
यहोवा ने कहा, मूसा लोगों को कहे,
कि इस्राएली चलें पीछे मुड़कर ।

मिस्रियों ने देखा दास हाथ से निकले,
तो सेना पीछे दौड़ी रथों में बैठकर,
लगे इस्राएली मूसा को कोसने,
वो बोला अब देखो यहोवा का कहर ।

यहोवा बोला, अपनी लाठी लेकर,
उठाओ लालसागर के ऊपर उसे,
दो भागों में फट जाएगा सागर,
कर जाओ तुम सब पार उसे ।

तब बादल का स्तम्भ पीछे आ गया,
छाया पीछे आते मिस्रियों पर अंधेरा,
मिस्री आ ना सके निकट उनके,
यूँ ही रात बीत गयी, हुआ सवेरा ।

मूसा ने तब अपनी बाहें उठाई,
चली तेज हवाएँ, समुद्र फट गया,
सूखी जमीं पर चल पार उतरे वो,
यहोवा सब को उस पार ले गया ।

पीछा किया मिस्र के लोगों ने,
धसने लगे उनके रथ मिट्टी में,
फिर मूसा ने जब हाथ उठाया,
बह गए सब मिस्री जल में ।

मरुभूमि में जो मिला ना भोजन,
लोग तरह-तरह की लगे बातें करने,
पर यहोवा ने भेजीं बटेरे और 'मन्ना,'[15]
चालीस बरस खाया मन्ना उन्होंने ।

जब निकट आ पहुँचे कनान के,
फिर पेयजल का आ पड़ा संकट,
मूसा ने की यहोवा से प्रार्थना,
कहा, सीनै पर्वत के जाओ निकट ।

कुछ बुज़ुर्ग और अपनी लाठी लो साथ,
पर्वत पर मैं खड़ा हूँगा चट्टान पर,
जब उस पर तुम मारोगे अपनी लाठी,
पानी चट्टान से आ जाएगा बाहर ।

मित्रों, मूसा का श्वसुर आया मिलने,
संग ले मूसा की पत्नी और बच्चों को,
सब जानकार स्तुति करी यहोवा की,
और कुछ सुझाव दिए उसने मूसा को ।

सब काम अकेले मूसा ही निपटाता,
कहा मित्रों ने तैयार करो लोगों को,
जरूरी काम तुम स्वयं निपटाओ,
अन्य काम करने दो औरों को ।

यहोवा ने कहा, तुम विशेष लोग बनोगे,
गर मानोगे साक्षीपत्र और मेरी बात,
घने बादलों में तुम्हारे पास आऊँगा मैं,
ताकि सभी लोग सुन सकें मेरी बात ।

[15] मन्ना-सफेद धनिया के बीज के समान ।

पर्वत पर तीसरे दिन बादल उतरा,
चोटी पर आने को कहा मूसा को,
कहा, ना मानो कोई और देवता,
ना मूर्ति बनाओ, ना प्रतिमा पूजो ।

जो करते प्रेम, आदेश मानते मेरा,
कृपालु रहूँगा मैं सदा उन पर,
मेरे नाम का जो गलत उपयोग करते,
क्रोध प्रकट होता मेरा उन पर ।

सब्त[16] के दिन कोई काम ना करो,
आदर करो अपने माता-पिता का,
ना हत्या, ना व्यभिचार, ना चोरी,
ना झूठी गवाही, ना रखो लालसा ।

कुछ और नियम बताए यहोवा ने,
और दासों के क्या-क्या हैं अधिकार,
यदि कोई करे जान-बूझकर हत्या,
मृत्यु दण्ड पाएगा वो गुनाहगार ।

और कहा तुम थे मिस्र में विदेशी,
सो ना दो बेवजह उनको तकलीफ,
बेवा स्त्रियों और अनाथ बच्चों को भी,
ना हो कभी तुम्हारे कारण तकलीफ ।

ब्याज ना लो कर्ज पर मेरे गरीबों से,
परमेश्वर व मुखियाओं को शाप ना दो,
पहलौठे पशु और पुत्र पर हक है मेरा,
उन्हें समर्पित कर, मूल्य चुका ले लो ।

दोष ना लगाओ किसी पर अकारण,
ना दण्डित करो किसी निर्दोष को,
ना लो रिश्वत, ना किसी का पक्ष,
यकीन पक्का, तो ही दण्ड दोषी को ।

छह बरस तक धरती को जोतो,
और सातवें बरस उसे दो विश्राम,
ऐसे ही काम से विश्राम सातवें दिन,
पशु और मजदूर भी पा लें आराम ।

अखमीरी रोटी, कटनी, फसल बटोरना,
ये तीन पवित्र पर्व होंगे एक साल में,
यूँ तीन बार यहोवा के पास हाज़िर हों,
पहली फसल लाओ, यहोवा के सामने ।

फिर कहा, भेज रहा हूँ मैं दूत,
ले जाएगा तुम्हें अनेक देशों में,
मत पूजना तुम उनके देवता,
दिलाऊँगा विजय उन पर मैं तुम्हें ।

लाल सागर से फरात तक दूँगा,
पलिश्ती सागर पश्चिमी सीमा होगा,
अरब मरुभूमि होगी पूर्वी सीमा,
और कोई समझोता उनसे नहीं होगा ।

लिखकर सब आदेशों को चर्मपत्र पर,
लोगों को सुनाए सब आदेश मूसा ने,
तलहटी के समीप एक वेदी बना,
करी बारह शिलाएँ स्थापित उन्होंने ।

[16] सब्त-अर्थात शनिवार, यहूदियों के लिए उपासना और विश्राम का दिन ।

परमेश्वर द्वारा चयनित कुछ लोग,
पर्वत पर चढ़े और देखा उन्होंने,
नीलमणि से प्रकाशित एक आधार पर,
परमेश्वर को स्थित देखा उन्होंने ।

मूसा और यहोशु को यहोवा ने,
अपने पास बुलाया पर्वत पर,
देने को अपने आदेश और उपदेश,
दो समतल पत्थर पर लिखकर ।

हारून ओर हूर को अधिकारी बना,
गया मूसा यहोवा के पास पर्वत पर,
ज्यों चोटी पर दीप्त प्रकाश हो,
उतरी दिव्यज्योति सीनै पर्वत पर ।

चालीस दिन-रात रहा वहाँ मूसा,
बात करी मूसा से यहोवा ने,
कहा, लोगों से कहो मेरे लिए,
भेंटे लाएँ, तम्बू और संदूक बनाएँ ।

पवित्र सन्दूक में रखो साक्षीपत्र,
बबूल से बना, सोने से मढ़ा हो,
और बताए सब विधि-विधान,
जिस प्रकार से तम्बू बना हो ।

सब पवित्र चीजों के नाप बताए,
और किस प्रकार से बनाएँ उन्हें,
किस तरह कहाँ क्या रखा जाए,
और कैसे प्रयोग किया जाए उन्हें ।

कहा याजक बनेंगे हारून और पुत्र,
एपोद[17] और पटका वे पहना करेंगे,
महायाजक पहनेगा एक सीनाबन्द,
बारह रत्न जिस सीनाबन्द पर टगेंगे ।

याजक बनने हेतु विशेष आयोजन,
हारून और उसके पुत्र करेंगे,
बलि देंगे याजक यहोवा के लिए,
जिसका निश्चित भाग वे पाया करेंगे ।

फिर कहा इस्राएल के लोगों को गिनो,
भेंट दे हर एक आधे शेकेन चाँदी की,
उनके जीवन का मूल्य होगा यह धन,
याद दिला दे उनको जो यहोवा की ।

चिलमची, अभिषेक का तेल और धूप,
कैसे और कौन बनाए बताया यहोवा ने,
फिर दो पत्थरों पर अँगुलियों से लिख,
मूसा को दिए दोनों पत्थर यहोवा ने ।

उधर मूसा जो ना आया पहाड़ से,
बोले लोग हारून से बेचैन हो,
कहने लगे एक देवता बना लें,
जो राह दिखाए हम लोगों को ।

सोने से मढ़ा एक बछड़ा बनाकर,
पूजने लगे लोग उस बछड़े को,
क्रोधित हो यहोवा ने कहा,
करने दो मुझे नष्ट इन लोगों को ।

[17] एपोद-एक विशेष चोगा (अंगरखा) जिसे याजक पहनता था ।

अनुनय विनय कर मूसा ने मनाया,
किसी तरह शांत किया यहोवा को,
पर नीचे आकर देखा मूसा ने,
बछड़े के आगे नाच रहे थे वो ।

बहुत क्रुद्ध हुआ मूसा यह देखकर,
टुकड़े-टुकड़े कर दिया शिलालेखों को,
फिर उस बछड़े को आग में गला,
नष्ट कर दिया उसने उस बछड़े को ।

कहा, जो यहोवा का अनुसरण करते,
बाहर निकलकर आ जाएँ वो डेरे से,
लेवी का परिवार तब आया सामने,
तलवारें ले लो, मूसा बोला उनसे ।

तीन हजार लोग किए गए दण्डित,
विशेष लोग चुने गए लेवी परिवार,
मूसा बोला, फिर उसके पास जाऊँगा,
करूँगा यहोवा से माफ़ी की गुहार ।

यहोवा बोला, लोगो को ले जाओ,
जहाँ दूत मेरा दिखलाए रास्ता,
दण्डित होंगे वे जो हैं अपराधी,
जब वक्त आएगा दण्ड देने का ।

मूसा जब करता था बात यहोवा से,
तम्बू के द्वार पर बादल छा जाता,
झुकते थे सब बादल को देखकर,
यहोवा मूसा से करता प्रत्यक्ष वार्ता ।

महिमा देखना चाहता था मूसा,
यहोवा से करी प्रार्थना मूसा ने,
बोला वो सम्भव नहीं मुझे देखना,
बस पीठ ही दिखेगी मेरी तुम्हें ।

यहोवा के कहने पर मूसा ने,
दो समतल पट्टियाँ बनाई फिर से,
चालीस दिन पर्वत पर रहकर,
सब आदेश लिखे मूसा ने फिर से ।

यहोवा से जब-जब मिलने जाता मूसा,
चमकता मिलने का नूर मुख पर,
लोग जो डरते उस नूर को देख,
कपड़ा दाल लेता था मूसा मुख पर ।

दोहराए यहोवा के आदेश मूसा ने,
बनाया गया भव्य मंदिर आदेशानुसार,
पूर्ण होने पर बादल ने ढका तम्बू,
सब चलते थे बादल के संकेतानुसार ।

लैव्य व्यवस्था

फिर यहोवा ने मूसा को बुलाकर,
विभिन्न बलियों के नियम बताए,
दोषरहित, अपने रेवड़ का नर पशु,
अन्नबलि में नमक अवश्य चढ़ाएँ ।

तम्बू के द्वार पर हो बलि पशु की,
जलाई जाए उसकी चर्बी आग में,
सर्वोत्तम भाग बलि का यहोवा का,
खून और चर्बी होगी निषिद्ध तुम्हें ।

फिर बतलाए पापबलियों के नियम,
यदि संयोगवश पाप कोई हो जाए,
असावधानी से किए गए अपराध,
उनके लिए कैसे क्या बलि दी जाए ।

यहोवा के आदेशानुसार मूसा ने किया,
अभिषेक हारून और उसके पुत्रों का,
आशीर्वाद दिया हारून ने लोगों को,
अग्नि और एक तेज यहोवा का प्रकटा ।

मूसा और हारून से कहा यहोवा ने,
क्या खा सकते और क्या नहीं लोग,
खुर बँटें हों और जुगाली करते हों,
उन पशुओं को खा सकते हैं लोग ।

भोज्य हैं पंख और परतें वाले जलचर,
पर कुछ शिकारी पक्षी हैं निषिद्ध,
ऐसे ही रेंगकर चलने वाले कीट-पतंग,
जो उछल ना सकें, वे हैं निषिद्ध ।

आठवें दिन शुद्ध हों नवप्रसुताएँ,
विशेष भेंटें चढ़ाएँ, याजक के द्वारा,
पुत्र जन्मा हो तो सात दिन बाद,
वाचा पूरी करें खतना के द्वारा ।

फिर बतलाए आचरण सम्बन्धी नियम,
अनुचित है सम्बन्ध बनाना जिनमें,
प्रकृति के विरुद्ध आचरण अपनाना,
भयंकर पाप और अपराध एक है इनमें ।

पवित्र रहें इस्राएल के सब लोग,
जैसे परमेश्वर पवित्र यहोवा उनका,
ना मूर्ती, ना अन्य देवता की पूजा,
सम्मान करें अपने माता-पिता का ।

मनाओ मेरे नियम के विशेष दिनों को,
बलि चढाओ और खाओ उचित ढंग से,
कटनी के बाद बची फसल छोड़ दो,
गरीब और मुसाफिर पेट भर सकें उससे ।

ना ठगी, ना चोरी, ना झूठ, ना धोखा,
ना किसी को कष्ट दो किसी प्रकार से,
ना घृणा, ना मन में बदले की भावना,
न्याय करो निष्पक्षता और सच्चाई से ।

पड़ोसी बुरा करे तो उसे समझाओ,
क्षमा करो और भूल जाओ उसे,
जैसे प्रेम करते हो स्वयं से तुम,
वैसे ही प्रेम करो तुम उससे ।

पेड़ लगाने के बाद भविष्य में,
करो प्रतीक्षा तुम तीन वर्ष,
चौथे वर्ष के फल यहोवा के,
खा सकते फल तुम पाँचवें वर्ष ।

सम्मान करो स्त्रियों का तुम,
वेश्या उन्हें बनने मत दो,
ओझाओं और भूतसिद्धकों से दूरी,
उनसे कभी सलाह मत लो ।

याद रखो तुम थे मिस्र में विदेशी,
बुरा ना करो कभी विदेशियों के साथ,
हो व्यवहार अपने ही नागरिकों सम,
प्रेम अपनों जैसा हो उनके साथ ।

निकट सम्बन्धी के सिवा याजक,
ना छूए किसी मृत व्यक्ति को,
रहे पवित्र, सच्चरित्र स्त्री से विवाह,
और तत्पर यहोवा की सेवा को ।

यहोवा को समर्पित कोई भी चीज,
यहोवा की हैं, ना लें उसे याजक,
नवजात पशु और उसकी माँ का,
उचित नहीं वध सात दिन तक ।

घोषित करो निश्चित पर्वों को पवित्र,
सब्त, फसह, पहली फसल का पर्व,
सप्ताहों का पर्व, तुरही का पर्व,
और मैदे की अखमीरी रोटी का पर्व ।

सातवें महीने का दसवाँ दिन,
शुद्ध करेगा यह प्रायश्चित का दिन,
ना भोजन करोगे, ना चढाओगे बलि,
कुछ काम ना करोगे तुम उस दिन ।

फिर आश्रय के पर्व के विषय में बताया,
याद दिलाये मिस्र से निकाले गए दिन,
रहो इन दिनों अस्थायी आश्रयों में,
धर्मसभा होगी, और विश्राम आठवें दिन ।

कहा, लाएँ जैतून का शुद्ध तेल,
इस्राएल के लोग दीपकों के लिए,
जलाए रखेगा हारून दीपक हमेशा,
होगा इसका पालन सदा के लिए ।

सात वर्ष के सात समूहों के बाद,
पचासवाँ वर्ष होगा जुबली मुक्ति-वर्ष,
तुम में से हरेक व्यक्ति को उसकी,
लौटा दी जाएगी[18] वह भूमि उस वर्ष ।

दीन-हीन अपने बंधु-बाँधवों के साथ,
हो सद्व्यवहार, ना सूद लो उनसे,
गर कोई इस्राएली दास बन जाए,
उचित मूल्य दे मुक्त कराओ उसे ।

करोगे यहोवा के आदेशों का पालन तो,
सुख-सम्पत्ति पाओगे, प्रसन्न रहोगे,
दण्ड पाओगे अवहेलना करने पर,
शत्रुओं द्वारा पकड़ ले जाए जाओगे ।

यहोवा को अर्पित व्यक्ति या पशु,
खरीद सकते पाँचवाँ भाग अधिक दे,
पशु और पैदावार का दसवाँ हिस्सा,
होगी यहोवा की सम्पत्ति सदा से ।

[18] लौटा दी जाएगी-इस्राएल में भूमि परिवारों और परिवार समूहों की थी । कोई व्यक्ति अपनी भूमि बेच सकता था, किन्तु जुबली के समय वह भूमि फिर उसी परिवार या संयुक्त परिवार की हो जाती थी जिसे वह सर्वप्रथम दी गयी थी ।

गिनती

यहोवा के आदेशानुसार की गई गिनती,
इस्राएल के बारह समूहों के वयस्कों की,
बीस बरस या जो इससे ऊपर के थे,
शामिल किए गए इस गिनती में सभी ।

चुने गए कुछ लोग मूसा के सहायक,
की जिन्होंने अपने समूह की गिनती,
लेवी परिवार समूह के लोगों को छोड़,
छह लाख पैंतीस सौ पचास हुई गिनती ।

साक्षीपत्र के तम्बू की देखभाल की,
लेवी परिवार को मिली जिम्मेदारी,
अन्य तम्बू घेरे रहेंगे इस तम्बू को,
क्रम और दिशाएँ निश्चित ठहरी ।

लेवीवंशी नियुक्त हुए हारून के सहायक,
और याजक चुना गया वंशजों को उसके,
क्योंकि चुने गए लेवीवंशी सेवा के लिए,
देने ना होंगे अब औरों को पुत्र पहलौठे ।

एक माह से ऊपर लेवीवंशी,
गिनने पर निकले बाईस हज़ार,
निश्चित किया कहाँ किसका डेरा,
क्या इंतजाम देखेगा कौन परिवार ।

औरों के पहलौठे पुत्र और जानवर,
अब ना लेगा, यहोवा ने कहा,
लेवियों के पहलौठे पुत्र और जानवर,
करेंगे वे ही अब यहोवा की सेवा ।

लेवी परिवारों के सब सेवा कार्य,
कौन कैसे करेगा, कहा यहोवा ने,
पर पवित्र चीजों को वो ना देखें,
वरना तुरंत ही मरना होगा उन्हें ।

फिर बतलाए अपराधों के अर्थ दण्ड,
शंकालु पति की कैसे दूर हो शंका,
नाज़ीरों[19] का हो कैसे रहन सहन,
आशीर्वाद में क्या हो भाव याजक का ?

पवित्र तम्बू का जब पूरा हुआ लगाना,
भेंटे चढ़ाई तब सब मुखियाओं ने,
सन्दूक पर करुबों के बीच से,
यहोवा की वाणी सुनी मूसा ने ।

मूसा से कह, हारून से यहोवा ने,
सात दीपक उन स्थानों पर रखवाए,
दीपाधार के सामने के क्षेत्र में जिससे,
उन सात दीपकों का प्रकाश हो पाए ।

[19] नाज़ीर-यहोवा को समर्पित होने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति ।

पच्चीस से उपर के लेवीवंशियों को,
कहा, शुद्ध करो पानी छिड़ककर,
तम्बू के काम में वे हाथ बटाएँ,
सेवानिवृत हों, पचास के होने पर ।

बादल और अग्नि के रूप में,
यात्रा का निर्देशन करता था यहोवा,
सीनै की मरुभूमि से चलकर,
पारान मरुभूमि जा पहुंचा कारवाँ ।

फिर लोग करने लगे शिकायत,
मन्ना के सिवाय कुछ नही मिलता,
यहोवा ने कहा, सत्तर अग्रज बुलाओ,
दूँगा उन्हें अंश अपनी आत्मा का ।

यहोवा ने समुद्र से आंधी जो चलाई,
अनगिनत बटेरें मिली उन्हें खाने को,
पर साथ ही बीमारी भी आ पहुँची,
प्राण गँवाने पड़े बहुत लोगों को ।

कूशी[20] कहा मूसा की पत्नी को,
हारून और उसकी पत्नी मरियम ने,
क्रोधित यहोवा ने मूसा और उनको,
बुला तम्बू में यह कहा उन्हें ।

अब नबी जब तुम लोगों में भेजूँगा,
बात करूँगा सपने में ही उससे,
पर मूसा को रखा है सबसे ऊपर,
प्रत्यक्ष बात मैं करता हूँ जिससे ।

मरियम का चेहरा घिरा चर्मरोग से,
मूसा की विनती पर यहोवा ने कहा,
सात दिन में ठीक हो जाएगी वह,
गर उसके मुँह पर थूके उसका पिता ।

पारान मरुभूमि में डेरे डालकर,
जासूस भेजे गए कनान देश को,
चालीस दिन छान-बीनकर बतलाया,
बहुत संपन्न और शक्तिशाली हैं वो ।

निराश इस्राएली फिर देने लगे दोष,
क्रोध बहुत ही यहोवा को आया,
देकर उसकी करुणा का हवाला,
मूसा ने यहोवा को शांत कराया ।

यहोवा ने कहा, दण्ड मिलेगा इन्हें,
नहीं देख पाएँगे कनान ये लोग,
चालीस वर्ष गड़ेरिए बन भटकेंगे,
मर जाएँगे मरुभूमि में ये लोग ।

कहा जब तुम उस प्रदेश जाओगे,
यहोवा को बलि और भेंट चढ़ाना,
आटा गूँथ जब रोटी बनाओ,
पहली रोटी यहोवा को चढ़ाना ।

कुछ लेवीवंशी हुए मूसा के विरुद्ध,
कहा मूसा से तुम विशिष्ट नहीं हो,
कोरह, दातन, अबिराम और ओन से,
कहा मूसा ने यहोवा के समक्ष चलो ।

[20] कूशी-अफ्रीका का व्यक्ति ।

क्रोधित यहोवा ने मूसा, हारून से कहा,
नष्ट करूँगा मैं इन अपराधी लोगों को,
पैरों के नीचे से पृथ्वी फट गई,
और निगल गई डेरे से उनको ।

फिर भी इस्राएली हुए ना शांत,
जा पहुँचे फिर शिकायत लेकर लोग,
कहा, यहोवा के लोगों को मारा तुमने,
विशवास के पक्के ना निकले लोग ।

यहोवा का तेज तम्बू द्वार पर प्रकटा,
फ़ैल गई प्राणघातक बीमारी लोगों में,
चौदह हजार सात सौ लोग मर गए,
यहोवा को शांत करें, उतनी देर में ।

कहा बारह मुखियाओं की छड़ियाँ,
सन्दूक के समक्ष नाम लिखवा रखवाएँ,
उनमें से यहोवा ने चुनी हारून की छड़ी,
पत्ते, कलियाँ, फूल, बादाम लगे जिसमें ।

प्रमाणित किया हारून को महायाजक,
और कहा, चुना है मैंने लेवीवंशियों को,
पाएँगे इस्राएलियों से वे दसवाँ हिस्सा,
उनसे दसवाँ हिस्सा मिलेगा हारून को ।

फिर बताया कैसे लाल गाय को,
जलाकर बनाई जाए उसकी राख,
विशेष संस्कारों में शुद्ध होने को,
डेरे से बाहर रखी जाए वह राख ।

मिला ना पानी तो यहोवा ने कहा,
लोगों के समक्ष करो चट्टान से बात,
बहने लगा पानी, लोग तृप्त हुए,
पर मूसा यहोवा की भूल गया बात ।

शक्ति यह बख़्शी थी यहोवा ने,
बताया नहीं मूसा ने लोगों से,
यहोवा ने कहा वह देश तो दूँगा,
पर तुम ना होंगे उनमें से ।

राह में होर पर्वत पर मर गया हारून,
महायाजक उसका पुत्र एलीआजार बना,
अराद के कनानी राजा नेगेव से लड़े,
यहोवा की कृपा से जीत का काम बना ।

फिर लड़े एमोरियों के राजा से,
और हरा दिया युद्ध में उसे,
जीते निकट के अन्य प्रदेश भी,
बाशान देश भी हार गया उनसे ।

मोआब की ओर तब बढे इस्राएली,
बालाक था तब मोआब का राजा,
बोर के पुत्र बिलाम से मदद माँगी,
शक्तिशाली और कृपापात्र यहोवा का ।

मार्ग में यहोवा के दूत ने बताया,
क्या कहे बिलाम राजा बालाक को,
तीन दफा बालाक के पूछने पर भी,
इस्राएलियों के विरुद्ध ना बोला वो ।

कहा, निष्पाप और निर्दोष हैं इस्राएली,
जीतेंगे वे यहोवा साथ है उनके,
इस्राएलियों में से आएगा नया शाषक,
पराजित होगा एदोम हाथों उसके ।

अमोलक भी नष्ट किया जाएगा,
कनानियों को अश्शूर बनाएगा बंदी,
फिर आएंगे कित्तियों के तट से जहाज,
होगी हार अश्शूर और एबेर की ।

बिगड़े इस्राएलियों के आचरण शित्तीम में,
यहोवा को किया बहुत नाराज उन्होंने,
मिद्दानी स्त्री के साथ इस्राएली को मार,
शांत किया यहोवा को पीनहास ने ।

हारून का पोता था पीनहास,
बोला यहोवा, उसने प्रसन्न किया,
वो और उसके वंशज होंगे याजक,
हर्जाना इस्राएलियों का उसने दिया ।

फिर यहोवा ने गिनवाए इस्राएली,
छह लाख सत्तरह सौ तीस थे वो,
कहा हर परिवार समूह पाएगा भूमि,
संख्यानुसार भूमि मिलेगी सबको ।

युसूफ का एक वंशज था सालोफाद,
उसकी पुत्रियों ने भी मांगा हिस्सा,
यहोवा ने कहा वे ठीक कहती हैं,
पुत्रियाँ भी सम्पत्ति में रखती हिस्सा ।

मूसा को कहा पर्वत चढ़ देखो,
जो प्रदेश दे रहा देखोगे उसे,
हारून की तरह मरोगे तुम भी,
जब तुम देख चुके होंगे उसे ।

मूसा की जगह चुना गया यहोशू,
विशेष निर्णय एलीआजार के साथ लेगा,
करेगा ऊरीम[21] का उपयोग एलीआजार,
परमेश्वर के कहे अनुसार वो करेगा ।

फिर मिद्दानियों से लड़े इस्राएली,
दिया दण्ड मिद्दानियों को यहोवा ने,
एक भी इस्राएली मारा ना गया,
जीत का माल बाँट लिया उन्होंने ।

भारी संख्या में मवेशी रखते थे,
रुबेन, गाद, आधा मन्श्शे परिवार,
यर्दन नदी के पूरब में ही,
बसा दिए उन्होंने अपने परिवार ।

पूछने पर मूसा को बताया,
साथ भाइयों का देंगे युद्ध में,
केवल स्त्रियाँ, बच्चे और मवेशी,
वे ही रुकेंगे यर्दन के पूरब में ।

फिर यहोवा ने कहा मूसा से,
इस्राएली बसेंगे कनान देश में,
दें इस्राएली कुछ नगर लेवियों को,
कुछ भूमि पशुओं को चराने में ।

हत्यारे के मृत्युदण्ड का आधार,
होनी चाहिए गवाही एक से ज्यादा,
धन के बदले माफ़ी देना अनुचित,
हत्यारे को मिले दण्ड हत्या का ।

[21] ऊरीम-एक तरह के पासें ।

व्यवस्था विवरण

यहोवा के वचन दोहराए मूसा ने,
और कैसे-कैसे उन पर करी कृपा,
उसके आदेश मानने में ही भलाई,
परमेश्वर है हमारा, एक है यहोवा ।

मिस्र से लाया, साथ रहा हरदम,
सात बड़े राष्ट्र तुम्हारे आधीन करेगा,
सब तरह संपन्न, सोने चाँदी से लदे,
यहोवा तुम्हें उन पर विजित करेगा ।

हर एक चीज है यहोवा की ही,
पृथ्वी और स्वर्ग सब है उसका,
करता था तुम्हारे पूर्वजों से प्रेम,
इसलिए ही उसने तुमको चुना ।

नए देश में अपने मन्दिर के लिए,
यहोवा चुनेगा एक विशेष स्थान,
करेगा वहाँ अपना नाम प्रतिष्ठित,
करना तुम पालन विधि-विधान ।

पूजना ना अन्य देवता को कभी,
जो ऐसा करे, मार डालो तुम उसको,
दाखमधु, तेल और पहलौठा पशु,
फसल का दसवाँ भाग, दो यहोवा को ।

लेवीवंशी, विदेशी, अनाथ और विधवाएँ,
करो व्यवस्था उनके भोजन की,
हर सात वर्ष के आखिर में तुम,
दे दो इस्राएलियों को ऋण से माफ़ी ।

बनो ना स्वार्थी, मददगार बनो,
सातवें वर्ष दासों को मुक्त कर दो,
भरकर भेजो धन-धान्य से झोली,
उचित व्यवहार सदा लोगों से करो ।

नियुक्त करो न्यायाधीश और अधिकारी,
निष्पक्ष और न्यायसंगत जो निर्णय करें,
अपने में से ही किसी को चुनो राजा,
नेक चालचलन और प्रजा का भला करें ।

सीनै पर्वत पर जैसे कहा था उसने,
भेजेगा यहोवा तुम्हारे पास नबी,
झूठी बात या अन्य देवता का नाम,
यदि वो ले, समझना झूठा है नबी ।

नए राष्ट्र में बनाना तीन नगर तुम,
कोई अभियुक्त जहाँ शरण ले सके,
घृणावश हत्या कर यदि वहाँ छिपा हो,
बाहर निकाल सौंप देना दण्ड हेतु उसे ।

अपराध प्रमाणित करने के लिए,
होनी चाहिए एक से अधिक गवाही,
माफ़ी नहीं मिलनी चाहिए उसे जो,
स्वार्थवश दे रहा हो झूठी गवाही ।

रखो शांति-प्रस्ताव आक्रमण से पहले,
मानें तो कर लो दास स्वीकार,
वरना नगर घेर मार दो पुरुषों को,
स्त्रियाँ, बच्चे, पशु आदि उपहार ।

हित्ती, एमोरी, कनानी या हिब्बी,
या परिज्जी और अबूसी लोग,
नष्ट कर दो, और ना मानों तुम,
इनके देवता या जो करते ये लोग ।

यदि कोई व्यक्ति विवाह के बाद,
लगाए कलंक अपनी नवविवाहिता पर,
और वह लड़की साबित हो निर्दोष,
तो लगेगा दण्ड उसके पति पर ।

अगर अभियोग हो जाता है सिद्ध,
ले जाई जाएगी वह द्वार पिता के,
पत्थर से मार देगा उसे नगर प्रमुख,
जो करी बुराई, दण्डस्वरूप उसके ।

यदि कोई हो व्याभिचार का दोषी,
मृत्युदण्ड पाने का हकदार वो व्यक्ति,
यदि स्त्री की सहमती ना हो तो,
मारा जाए उसे जो करे जबरदस्ती ।

जब लड़ने जाओ, डेरे पवित्र रखो,
शरण आए दास को वापस ना भेजो,
देवदास या दासी बने ना कोई,
ना भेंट करो उसका धन यहोवा को ।

यदि पति दे दे पत्नी को तलाक,
तो कर सकती है वो दूसरा विवाह,
फिर तलाक या पति मर जाए,
तो उचित नहीं पहले से पुन: विवाह ।

नवविवाहितों को एक वर्ष तक,
उचित नहीं सेना में भेजना,
यदि किसी को दो तुम कर्ज,
चक्की का पाट रहन ना रखना ।

धोखा ना दो मजदूर को तुम,
ना मजदूरी देने में करो देरी,
ना मजबूरी का उठाओ फायदा,
लौटा दो उसको चीजें जरूरी ।

जो करे अपराध, उसी के सिर,
उसका दण्ड, वो खुद भोगेगा,
बाप का गुनाह, बाप के सिर,
बेटे का अपराध, बेटा भोगेगा ।

झगड़े निपटाओ अदालत में,
न्यायाधीश असहय दण्ड ना दें,
जाली बाटों का ना करो प्रयोग,
ना अपने पास रखो तुम उन्हें ।

पुत्रहीन मृतक भाई की पत्नी,
उसका ब्याह ना करो अजनबी से,
पूरा करो तुम कर्त्तव्य भाई का,
पहलौठे पुत्र का हक, भाई जैसे ।

यरदन नदी पार कर जब जाओ,
जहाँ यहोवा दे रहा नया प्रदेश,
चूने से लिपी शिलाओं पर लिखना,
जो आज बताए नियम और आदेश ।

गिरज्जीम पर्वत पर खड़े होकर,
आशीर्वाद देंगे कुछ परिवार समूह,
और एबाल पर्वत पर खड़े होकर,
अभिशाप देंगे कुछ परिवार समूह ।

अभिशप्त, झूठे देवता बनाने वाले,
माता-पिता का करते अपमान,
वर्जित रिश्ते जो कायम करते,
धन के प्रलोभन में ले लेते जान ।

गर करोगे तुम नियमों का पालन,
फलोगे-फूलोगे और समृद्ध बनोगे,
बहुत पशु और अन्न उपजेगा,
शत्रुओं पर सदा विजयी रहोगे ।

अवहेलना करोगे गर यहोवा की,
सब तरह से कष्ट ही पाओगे,
शत्रु से पराजय, प्राकृतिक आपदाएं,
जल्द ही तुम नष्ट हो जाओगे ।

फिर सब बातें समझाकर मूसा ने,
कहा, अब मैं बहुत वृद्ध हो चला,
जाओगे तुम यरदन नदी के पार,
यहोशू होगा अब से तुम्हारा नेता ।

तब मूसा से कहा यहोवा ने,
आ गयी अब तुम्हारी मृत्यु निकट,
ले आओ यहोशू को तम्बू में,
कुछ बातें उस पर करूँगा प्रकट ।

बादलों के एक स्तम्भ रूप में,
तम्बू के द्वार पर प्रकटा यहोवा,
कहा, ये इस्राएली होंगे बर्बाद,
क्योंकि भविष्य में तोड़ेंगे वाचा ।

सफलता के मद में होकर चूर,
करने लगेंगे दूसरे देवों की सेवा,
पड़ेंगे बड़ी मुसीबत में ये लोग,
घेर लेगी इन्हें भयंकर विपदा ।

कहा मूसा को एक गीत लिखो,
और गाना सिखलाओ गीत इन्हें,
भविष्य में जब गाएँगे ये गीत,
याद दिलाएगा गलती, गीत इन्हें ।

फिर मूसा अबीराम पर्वत पर गया,
देखा वह प्रदेश वहाँ से उसने,
आशीर्वाद दिया इस्राएलियों को,
यहोवा की करी स्तुति उसने ।

मोआब देश में तब मरा मूसा,
घाटी में दफनाया उसे यहोवा ने,
एक सौ बीस बरस जिया मूसा,
लोगों ने शोक मनाया पूरे महीने ।

नया नेता स्वीकार हुआ यहोशू,
मूसा का उसे दिया स्थान उन्होंने,
पर मूसा सा कृपा-प्राप्त चमत्कारी,
और कोई नबी ना देखा लोगों ने ।

यहोशू

यहोशू सहायक था मूसा का,
यहोवा ने करी बातें उस से,
कहा, जाओ तुम यरदन के पार,
हर देश मिलेगा तुम्हें यहोवा से ।

हित्तियों का पूरा देश और मरुभूमि,
लबानोन से लेकर परात नदी तक,
होगा सब तुम्हारी सीमा के भीतर,
यहाँ से पश्चिम में भूमध्यसागर तक ।

मूसा की तरह साथ रहूँगा तुम्हारे,
साहसी और दृढ़ होना होगा तुम को,
दो आदेश, जीत लेंगे यरदन पारकर,
तीन दिन में हम उस देश को ।

यरदन के पार, यरीहो नगर में,
भेजे दो जासूस यहोशू ने,
यहोवा उनका सहायक है जानकर,
आश्रय दिया उन्हें एक स्त्री ने ।

बदले में माँगी परिवार की सुरक्षा,
कहा उन्होंने, लाल रस्सी बाँध रखना,
फिर आकर सब बतलाया यहोशू को,
तय हुआ दूसरे दिन, नदी पार करना ।

सन्दूक संग जब पाँव रखा नदी में,
पानी रुक गया, सूखी जमीं निकल आई,
रुके रहे याजक बीच नदी में,
सब इस्राएलियों को नदी पार कराई ।

स्मृति स्वरूप बारह शिलाएँ चुनी गयीं,
हर नए व्यक्ति का किया गया खतना,
जब तक हुआ उपचार लोग डेरे में रहे,
गिलगाल में ही फसह का पर्व मना ।

यरीहो के निकट, यहोवा के सेनापति ने,
कहा, छह दिन तक करो बल प्रदर्शन,
भयभीत हो रहे हैं यरीहो के निवासी,
नगर दीवार गिरा, करो घोर गर्जन ।

जैसा कहा यहोवा ने, किया उन्होंने,
दीवार गिरा, घुस पड़े नगर में,
बच ना पाया कोई व्यक्ति जीवित,
सिवाय उस स्त्री का घर, नगर में ।

एक व्यक्ति ने किया क्रुद्ध यहोवा को,
सो हार गए वो ऐ से युद्ध में,
पहचान हुई, पाप स्वीकारा उसने अपना,
दण्ड मिला, फिर लड़ो कहा यहोवा ने ।

कुछ छोड़े पीछे, कुछ सैनिक साथ लिए,
यहोशू ने आक्रमण कर दिया ऐ पर,
जब यहोशू से लड़ रहे थे ऐ वाले,
पीछे से भी आक्रमण हो गया ऐ पर ।

दोनों ओर से घिरने से हारे,
मार दिए गए सब ऐ के लोग,
राजा भी पकड़कर लटकाया गया,
विजयी हुए ऐ पर इस्राएल के लोग ।

गिबोन को जीतना चाहते थे इस्राएली,
पर करी गिबोनियों ने संधि धोखे से,
यरूशलेम का राजा आ चढ़ा गिबोन पर,
पर आ पहुँचे इस्राएली अचानक से ।

यहोशू ने प्रार्थना करी यहोवा से,
जब तक उनके शत्रु हों पराजित,
सूर्य और चाँद स्थिर हो खड़े रहें,
ऐसा ही हुआ, घटी घटना अघटित ।

फिर यहोशू ने मक्केदा को हराया,
लिब्ना, लाकीश और गजेर भी जीते,
जीते एग्लोन, हेब्रोन और दबीर,
राजा और नागरिक छोड़े नहीं जीते ।

कादेशबर्ने से अज्जा तक के नगर,
गोशेन से गिबोन तक मिस्र में,
यहोशू ने जीते सब ये नगर,
जाकर रहे फिर गिलगाल में ।

हसोर और आस-पास के राजा,
इकठ्ठे हुए यहोशू से लड़ने,
अचानक आक्रमण कर जीत लिया,
पूरा इस्राएल प्रदेश यहोशू ने ।

बहुत वृद्ध हो चला था यहोशू,
पर कहा यहोवा ने अभी लड़ना है,
कुछ प्रदेश जो हैं औरों के पास,
हासिल उनसे अभी उन्हें करना है ।

किया यहोशू ने प्रदेशों का बँटवारा,
इस्राएल के साढ़े नौ परिवारों में,
लेवीवंशी चढ़ावे के थे हकदार,
दिए नगर उन्हें सब औरों ने ।

यहूदा परिवार के कालेब ने,
याद दिलाया मूसा का किया वादा,
यहोशू ने दिया उसे हेब्रोन नगर,
मानी यहोशू ने यहोवा की आज्ञा ।

दिए गए प्रदेश और समूहों को भी,
यहोशू को भी दिया गया प्रदेश,
सुरक्षा नगर, लेवीवंशियों को भूमि,
पूरा किया गया यहोवा का आदेश ।

रुबेन, गाद और मनश्शे समूहों को,
बुलाकर आशीर्वाद दिया यहोशू ने,
लौट गए फिर वे गिलाद को,
जो प्रदेश उन्हें दिया था मूसा ने ।

बनाई गौत्र में उन्होंने वैसी ही वेदी,
तो क्यों बनाई वेदी, मुखिया गए पूछने,
वे बोले यरदन के पूर्व में हैं वो,
भविष्य में भूल ना जाएँ लोग उन्हें ।

कहा, हमारा परमेश्वर है यहोवा,
उसकी ही हम करते उपासना,
इस वेदी पर चढ़ेंगी नहीं बलियाँ,
प्रमाण हमारे इस्राएली होने का ।

संतुष्ट किया उनकी बात ने उन्हें,
रखा उस वेदी का नाम प्रमाण,
दिया धन्यवाद सबने यहोवा को,
और लौट आए वे अपने स्थान ।

यहोशू ने बुलाए सभी मुख्य लोग,
बोला, मदद करी हमारी यहोवा ने,
पर जीत पाए हैं अभी कुछ ही भाग,
जिसका वादा किया था यहोवा ने ।

कहा, यहोवा के सब आदेशों का,
पूर्ण सावधानी से करो पालन,
और व्यवस्था की किताब में लिखे,
निर्देशों का भी हो अनुपालन ।

कुछ गैर-इस्राएली हमारे बीच में हैं,
मित्र बनाओ ना उन लोगों को,
ना सेवा उनके देवताओं की करना,
बस याद रखो परमेश्वर यहोवा को ।

फिर सभी लोगों को बुलाया उसने,
कहा, यहोवा के मैं वचन कह रहा,
बतलाया क्या-क्या किया यहोवा ने,
कैसे यहोवा का हरदम साथ रहा ।

यहोवा के वचन सुन लोगों ने कहा,
हम यहोवा का ही अनुसरण करेंगे,
उसने ही साधे हमारे सब काम,
हम यहोवा की ही सेवा करेंगे ।

एक सौ दस वर्ष जिया यहोशू,
एप्रैम की पहाड़ी में दफनाया गया,
युसूफ की अस्थियाँ जो लाए थे साथ,
शकेम में उन्हें दफनाया गया ।

न्यायियों

कौन नेतृत्व करेगा यहोशू के बाद,
यहूदा परिवार समूह, कहा यहोवा ने,
करूँगा मैं तुम लोगों की सहायता,
कनानियों के विरुद्ध तुम्हें लड़ने में ।

यहोवा और शिमोनियों की मदद से,
हराए कनानी और परिज्जी लोग,
बेजेक और येरूशलेम वाले भी हारे,
मारे गए राजा और हजारों लोग ।

कालेब ने अपनी पुत्री अकसा का,
दबीर विजेता ओलीएल से ब्याह कराया,
केनी[22] लोगों ने छोड़ा यरीहो को,
यहूदा के साथ मरुभूमि को अपनाया ।

कई नगर यहूदा ने किए विजित,
यहोवा था उन लोगों के साथ,
जीती पहाड़ी प्रदेश की भूमि उन्होंने,
पर घाटी की भूमि लगी ना हाथ ।

हेब्रोन के निकट भूमि मिली,
जैसा कालेब को कहा मूसा ने,
येरूशलेम में यबूसियों के साथ,
रहना स्वीकारा बिन्यामिनियों ने ।

हराया युसूफ परिवार ने बेतेलवालों को,
पर कनानियों को इस्राएली हरा ना सके,
दासों की तरह रहने लगे कनानी,
इस्राएली उन्हें वहाँ से भगा ना सके ।

वक्त बीता, नई पीढ़ी आ गयी,
भूल गयी जो यहोवा को,
करने लगे बाल और अशेरा[23] की सेवा,
क्रोधित किया उन्होंने यहोवा को ।

बार-बार हुए शत्रुओं से पराजित,
मेसोपोटामिया के राजा से भी हारे,
रो-रोकर पुकारा जब यहोवा को,
ओलीएल द्वारा यहोवा ने उबारे ।

[22] केनी- केनी लोग मूसा के समूह के परिवार से थे ।
[23] बाल और अशेरा-कनानियों के देवता ।

फिर से इस्राएली करने लगे पाप,
फिर से कष्टों का पड़ा साया,
फिर पुकारा रो-रोकर यहोवा को,
एहूद[24] भेज यहोवा ने उन्हें बचाया ।

करने लगे फिर पाप इस्राएली,
हासोर नगर के राजा ने हराया,
दबोरा, इस्राएल की न्यायाधीश ने,
यहोवा का संदेशा पा, उसे हराया ।

फिर से इस्राएलियों ने दोहराई करतूत,
मिद्‌दानियों से हारे, बहुत गए सताए,
गिड़गिड़ाए, तब यहोवा ने भेजा दूत,
कहा, योआश का पुत्र गिदोन बचाए ।

कहा दूत ने तो बाल और अशेरा की,
पिता की बनाई वेदी नष्ट करी उसने,
तब यहोवा ने दी गिदोन को शक्ति,
इस्राएली समूहों से लोग बुलाये उसने ।

माँगा प्रमाण सहायता का यहोवा से,
यहोवा ने सूखी ऊन से पानी निकाला,
फिर बाकी जमीन पर ओस पड़ी पर,
ऊन को यहोवा ने सूखा ही निकाला ।

कहीं सैनिक बल का न हो अभिमान,
सो तीन सौ ही व्यक्ति साथ लो, कहा,
थी मिद्‌दानियों की संख्या बहुत अधिक,
पर तीन सौ से ही उन्हें दिया हरवा ।

सुक्कोत के लोगों को भी हराया,
और गिराई मीनार पनूएल नगर की,
मार डाला राजाओं को उन्होंने,
और इस्राएलियों ने विजय प्राप्त की ।

युद्‌ध में जीते हुए कुछ सोने से,
गिदोन ने एक एपोद बनवाया,
पूजने लगे, एपोद जाल बन गया,
इस्राएलियों से जिसने पाप करवाया ।

गिदोन का रखैल से पुत्र अबीमेलेक,
सत्तर भाइयों को मार राजा बना,
जीता शकेम और तेबेस नगर भी,
पर चक्की का पाट गिरने से मरा ।

बार-बार इस्राएली यहोवा को भूलते,
और अन्य देवताओं को लगते पूजने,
मिलता उनको जब दण्ड पाप का,
लगते यहोवा को रो-रोकर पुकारने ।

गिलाद परिवार का योद्‌धा यिप्तह,
लड़ा अम्मोनियों से हिम्मत से,
यहोवा की कृपा थी यिप्तह पर,
अम्मोनियों पर विजय मिली उसे ।

समय गुजरा, कई न्यायाधीश हुए,
इस्राएली फिर से करने लगे पाप,
चालीस वर्ष तक पलिश्तियों ने,
किया इस्राएली लोगों पर राज ।

[24] एहूद-बिन्यामिन परिवार से था ।

तब एक इस्राएली बाँझ स्त्री को,
दर्शन हुए यहोवा के दूत के,
कहा, दोगी एक नाजीर[25]को जन्म,
सो रहो शुद्ध आचरण में अपने ।

दिया पुत्र शिमशोन को जन्म,
बड़ा वीर, एक सिंह को मारा,
पसन्द आई एक पलिश्ती कन्या,
विवाह करना उसने स्वीकारा ।

बहुत दिनों बाद विवाह करने लौटा,
मार्ग में सिंह कलेवर में छत्ता देखा,
शहद निकाल दावत दी दूल्हे ने,
और इस पहेली का हल उनसे पूछा ।

कहा उन्होंने उसकी पत्नी को,
जाने पहेली का हल वो उससे,
रो-पीटकर जाना जो हल उसने,
रुष्ट हो गया शिमशोन पत्नी से ।

छोड़ पत्नी को शिमशोन चल दिया,
एक पलिश्ती ने रख लिया उसको,
जाना जो घटा, उन्हें अपराधी मान,
निश्चय किया उन्हें दण्डित करने को ।

लोमड़ियों को पकड़, उनकी पूँछ बाँध,
खेतों में दौड़ा, खड़ी फसल जलवा दी,
क्रोधित हो पलिश्तियों ने उसकी,
पत्नी और ससुर की हत्या कर दी ।

क्रोधित हुआ पलिश्तियों पर शिमशोन,
और मार डाले बहुत से पलिश्ती उसने,
निकले जो पलिश्ती यहूदा से लड़ने,
सौंपा शिमशोन पलिश्तियों को उन्होंने ।

यहोवा की शक्ति उतरी शिमशोन पर,
मार डाला हजारों पलिश्तियों को उसने,
बीस वर्ष रहा वो न्यायाधीश बनकर,
फिर दलीला से विवाह किया उसने ।

बार-बार दलीला ने जिद कर,
राज उससे उसकी शक्ति का पूछा,
तंग आ शिमशोन ने बतलाया,
शक्ति का राज लम्बे बालों में छिपा ।

धोखा किया दलीला ने उससे,
लालच में आ काट लिए बाल,
साधारण व्यक्ति हो रहा शिमशोन,
उसे जीतना हो सका मुहाल ।

पकड़ ले गए उसे अज्जा नगर,
आँखे निकाल मन्दिर में बाँधा,
हँसी उड़ाई, छत पर चढ़ गए,
यहोवा से उसने करी प्रार्थना ।

फिर एक बार शक्ति माँगी,
गिरा दिया मन्दिर को उसने,
तीन हज़ार पलिश्तियों की जान,
अपनी मृत्यु के साथ ली उसने ।

[25] नाजीर-विशेष कृपा प्राप्त व्यक्ति ।

एप्रैम की पहाड़ियों में बसा मीका,
उसके पास में थीं कुछ मूर्तियाँ,
दान समूह ने लैश नगर जीता,
और हड़प ली मीका की मूर्तियाँ ।

लैश नगर का रखकर नया नाम,
करी नगर में मूर्तियाँ की स्थापना,
बनाया योनातान को अपना याजक,
और करने लगे मूर्तियाँ की उपासना ।

गिबा नगर था बिन्यामीन लोगों का,
एक लेवीवंशी रुका पत्नी के साथ,
मारकर फेंक दिया नगर वासियों ने,
उसकी पत्नी को कुकर्म के बाद ।

बारह टुकड़ों में काट शव को,
लेवीवंशी ने इस्राएलियों को भेजा,
चार लाख सैनिक इस्राएलियों के,
हुए तैयार उन्हें देने को सज़ा ।

पहले हारे, लेकिन इस्राएलियों ने,
युक्ति से जीता गिबा नगर,
मार डाला सब जीवित लोगों को,
और जला डाला सारा नगर ।

सोचा इस्राएलियों ने अपनी पुत्रियाँ,
ब्याहेंगे ना बिन्यामिनियों के साथ,
पर दुखी थे बिन्यामिनियों के लिए,
छूट रहा अपने ही समूह का साथ ।

यहोवा के समक्ष मिले सब समूह,
पर 'यावेश गिलाद' शामिल ना हुआ,
भेजे मार डालने को सब स्त्री-पुरुष,
लेकिन बचा लें वो उनकी पुत्रियाँ ।

करी संधि बिन्यामिनियों के साथ,
और सौंपी कन्याएँ विवाह के लिए,
इसके अलावा भी युक्ति से उन्होंने,
और कन्याएँ जुटाई विवाह के लिए ।

शीलों में उत्सव में भाग लेने हेतु,
आई कन्याओं को वो ले जाते साथ,
भाई-बंधुओं को समझा-बुझा देते,
निभ गई ऐसे प्रतिज्ञा की भी बात ।

तोड़ी ना प्रतिज्ञा पुत्रियाँ ब्याहने की,
खुद कर लीं वे स्त्रियाँ प्राप्त उन्होंने,
फिर लौट गए बिन्यामीन अपने देश,
और सुख से जीवन बिताया उन्होंने ।

रूत

अकाल पड़ने से एक व्यक्ति एलीमेलेक,
यहूदा का बेतलेहेम छोड़ मोआब गया,
साथ में ली पत्नी नाओमी और पुत्र,
पुत्रों का मोआब में ही विवाह रचाया ।

एलीमेलेक मरा, फिर पुत्र भी मरे,
ओर्पा और रूत थीं जिनकी पत्नियाँ,
सुना नाओमी और बहुओं ने,
यहोवा ने फिर यहूदा आबाद किया ।

यहूदा लौटने की ठानी नाओमी ने,
मायके लौट जाएँ, बहुओं को कहा,
ओर्पा मानी बहुत मुश्किल से,
पर रूत नाओमी संग आई यहूदा ।

बेतलेहेम में एक धनी व्यक्ति बोएज,
था एलीमेलेक के परिजनों में से,
छोड़ा जो ना रूत ने साथ नाओमी का,
प्रसन्न था यह जान वो रूत से ।

एक और खास रिश्तेदार था उनका,
पर रूत को रखने में असमर्थ था वो,
मुखियाओं के बीच रख यह मसला,
बोएज ने पाया विवाह हेतु रूत को ।

जन्मा रूत को एक पुत्र ओबेद,
नाओमी ने उसे पाला-पौसा,
यिशै का पिता बना ओबेद,
और यिशै राजा दाऊद का पिता ।

1. शमूएल

एप्रैम परिवार के एल्काना की थीं,
हन्ना, पनिन्ना नामक दो पत्नियाँ,
हन्ना को कोई संतान ना थी,
पनिन्ना को जन्में बेटे और बेटियाँ ।

करी प्रार्थना हन्ना ने यहोवा से,
दे बेटा, नाजीर बनाएगी वो उसे,
हुआ बेटा, शमूएल नाम रखा उसका,
शीलो में एली[26] के पास रखा उसे ।

एली के बेटे थे बुरे व्यक्ति,
याजक के अयोग्य, एली के बाद,
एक दिन पुकारा शमूएल को यहोवा ने,
बतलाया क्या करेगा एली के साथ ।

फिर आए पलिश्ती इस्राएलियों से लड़ने,
बहुत इस्राएली और एली के पुत्र मरे,
एक बिन्यामीन से सुनी जो खबर,
एली ने भी अपने प्राण तजे ।

पवित्र सन्दूक ले गए साथ पलिश्ती,
पर उसके कारण मचा भयानक उत्पात,
बंद गाड़ी में रख भेजा वापस सन्दूक,
रखा अबीनादाब में विशेष पूजा के बाद ।

मिस्पा में हुए सब इस्राएली इकठ्ठा,
जानकर पलिश्ती फिर चढ़ आए,
यहोवा से प्रार्थना की शमूएल ने,
हारे पलिश्ती, भागे, बच ना पाए ।

[26] एली-शीलो के मन्दिर में यहोवा का याजक ।

माँग करी एक राजा की इस्राएलियों ने,
जो राज करे राजा बन उन पर,
पुछा यहोवा से तो यहोवा ने कहा,
विश्वास नहीं इस्राएलियों को मुझ पर ।

मिला संकेत, बिन्यामीन का शाऊल,
यहोवा की आत्मा उतरी उस पर,
करने लगा नबियों सा भविष्यवाणी,
इस्राएलियों ने स्वीकारा, राजा उन पर ।

एकत्र कर सब इस्राएलियों को शाऊल,
लड़ा वीरता से अम्मोनियों के साथ,
किया पराजित, भगा दिया उन्हें,
यहोवा ने शाऊल का दिया साथ ।

किया दो वर्ष शाषन शाऊल ने,
फिर यहोवा के विरुद्ध किया पाप,
प्रतीक्षा कर ना सका शमूएल की वो,
यहोवा को बलियाँ चढ़ा दी अपने-आप ।

पुत्र योनातन पर कृपालु था यहोवा,
अकेले पलिश्तियों का किला जीता उसने,
जो हिब्रू सैनिक थे पलिश्ती सेना में,
इस्राएलियों का साथ दिया उन्होंने ।

करवाई प्रतिज्ञा भूखा रहने की शाऊल ने,
सन्ध्या या युद्ध जीत लें जब तक,
जानकारी ना थी योनातन को इसकी,
थकान के मारे उसने चख लिया शहद ।

उधर इस्राएलियों ने जानवरों को मारा,
खा गए खून रहते, इतने भूखे थे वो,
पाप किया, सज़ा देने वाला था शाऊल,
पर लोगों ने बचा लिया योनातन को ।

सभी शत्रुओं को हरा शाऊल ने,
किया पूरा इस्राएल अधिकार में अपने,
अमालेकियों के पशु रखने के कारण,
क्रोधित किया यहोवा को उसने ।

बेतलेहेम भेजा शमूएल को यहोवा ने,
राजा बनाए यिशै के पुत्र को,
सात पुत्र यिशै के नकार कर,
यहोवा ने चुना सबसे छोटे दाऊद को ।

यहोवा ने त्याग दिया शाऊल को,
और एक दुष्टात्मा भेजी उस पर,
दाऊद[27] को बुलवाया शाऊल ने तब,
कहा, शांत करे उसे वीणा बजाकर ।

पलिश्तियों ने किया फिर से आक्रमण,
एक सैनिक गोलियत नौ फीट लम्बा था,
अजेय योद्धा, कहा, उसे हरा दे कोई तो,
पलिश्ती स्वीकारेंगे इस्राएलियों की दासता ।

और यदि वह इस्राएली हार जाय,
तो दास बनेंगे सब इस्राएली,
इस तरह मजाक बनाया उसने,
भयभीत थे उससे सब इस्राएली ।

[27] दाऊद- दाऊद को वीणा बजाने में महारत हासिल थी और उसके वीणा बजाने से राजा शाऊल को राहत मिलती थी ।

शाऊल ने किया घोषित पुरस्कार,
धन देगा उसे, बेटी ब्याह देगा,
गोलियत से लड़कर जो व्यक्ति,
उसे हरा देगा और मार देगा ।

दाऊद चराता था जंगल में भेड़ें,
बचाता था उन्हें शेरों से लड़कर,
कहा उसने वो गोलियत से लड़ेगा,
शाऊल माना, उसका साहस देखकर ।

गुलेल और पत्थर ले चला दाऊद,
गोलियत हँसा उसे बच्चा समझकर,
निशाना साध मारा पत्थर दाऊद ने,
गिरा गोलियत, मारा सिर काटकर ।

भागे पलिश्ती, शाऊल खुश हुआ,
पास रख लिया उसने दाऊद को अपने,
घनिष्ट मित्र बन गए योनातन और वो,
युद्ध में जाने लगा दाऊद भी लड़ने ।

बहादुरी की उसकी बजने लगे डंके,
लगने लगा शाऊल को वो दुश्वार,
तरह-तरह से रचकर षड्यंत्र,
चाहा किसी तरह दे दाऊद को मार ।

कहा, देगा पुत्री मीकल विवाह में,
पर सौ पलिश्ती मारने होंगे उसे,
लड़ने गया, दो सौ पलिश्ती मारे,
तब विवाह हुआ उसका मीकल से ।

दाऊद से मित्रता के कारण,
शाऊल योनातन से भी हुआ खफ़ा,
याजक अहीमेलेक से मिला दाऊद,
शाऊल ने दिया उसे भी मरवा ।

करता रहा शाऊल दाऊद का पीछा,
छिपता रहा दाऊद यहाँ-वहाँ,
जा पहुँचा एक गुफा में शाऊल,
छिपा हुआ था दाऊद वहाँ ।

पहुँचाई ना कोई हानि दाऊद ने,
बस काटा एक टुकड़ा लबादे का,
बाहर निकल कहा शाऊल को उसने,
नही बुराई का मेरा कोई ईरादा ।

लज्जित बहुत हुआ तब शाऊल,
मानी गलती और रुदन किया,
उसके वंशजों की हानि ना करेगा,
दाऊद से शाऊल ने वचन लिया ।

पारान मरुभूमि चला गया दाऊद,
माँगी मदद वहाँ नाबाल[28] से उसने,
पर कर दिया नाबाल ने मना,
तो उसे सज़ा दे, सोचा दाऊद ने ।

पर नाबाल की पत्नी अबीगैल ने,
समझा-बुझा दाऊद को शांत किया,
मरा नाबाल दिल का दौरा पड़ने से,
तो दाऊद ने अबीगैल से विवाह किया ।

[28] नाबाल- नाबाल के पास बहुत पशु थे और उसे दाऊद का संरक्षण मिला हुआ था ।

फिर बहकाया शाऊल को लोगों ने,
फिर वो दाऊद के पीछे आया,
मार सकता था दाऊद शाऊल को,
फिर शाऊल करनी पर पछताया ।

ना मानेगा शाऊल यह सोचकर,
दाऊद चला गया आकीश[29] के पास,
दिया आकीश ने उसे सिकलग नगर,
जो हो रहा यहूदाओं का उसके बाद ।

फिर पलिश्तियों ने करी सेना एकत्र,
पूछा दाऊद से क्या उनका देगा साथ,
कहा दाऊद ने मैं लड़ूँगा, लेकिन,
पलिश्तियों ने ना किया विशवास ।

उधर अमालेकियों ने जला डाला सिकलग,
और बंदी बनाया दाऊद के घरवालों को,
छह सौ लोगों के साथ लड़ा उनसे दाऊद,
और छुड़ा ले आया सब घरवालों को ।

लड़े पलिश्ती, इस्राएलियों से जीते,
मार डाला शाऊल के पुत्रों को,
घायल हो गिर पड़ा शाऊल,
और मार डाला उसने स्वयं को ।

2. शमूएल

हेब्रोन नगर को गया दाऊद,
यहूदा के लोगों ने बनाया राजा,
उधर शाऊल के सेनापति अब्नेर ने,
बनाया उसके पुत्र ईशबोशेत को राजा ।

हेब्रोन में जन्में छह पुत्र दाऊद को,
संधि हुई अब्नेर के साथ,
मीकल जो दे दी थी लेश के पुत्र को,
फिर दाऊद को हुई वो प्राप्त ।

ईशबोशेत को मारा सेनापतियों ने ,
दाऊद ने दण्ड दिया उनको,
सब इस्राएलियों ने मिल किया फैसला,
और राजा बना दिया दाऊद को ।

जलसुरंग के मार्ग से घुसकर,
यरूशलेम में यबूसी हराए उसने,
बार-बार युद्ध करने आए पलिश्ती,
हराया, उन्हें बहुत दूर भगाया उसने ।

[29] आकीश-एक पलिश्ती राजा ।

लाया गया सन्दूक यरूशलेम में,
दाऊद ने भवन बनवाना चाहा,
पर यहोवा ने इनकार कर दिया,
कहा, तम्बू में ही रहता आया ।

तुम्हारा पुत्र बनवाएगा मेरा मन्दिर,
बनेगा वह राजा तुम्हारे बाद,
बना रहूँगा उस पर मैं कृपालु,
सदा प्रेम करूँगा उसके साथ ।

लड़े बहुत से दाऊद ने युद्ध,
सब में दी विजय यहोवा ने,
शाऊल के परिवार पर रहा कृपालु,
सम्पत्ति लौटा दी उन्हें दाऊद ने ।

राजमहल की छत से दाऊद ने,
एक स्त्री बतशेबा को नहाते देखा,
मन आ गया दाऊद का उस पर,
तो दाऊद ने उसे बुलवा भेजा ।

जब जाना वह माँ बनने वाली है,
युद्ध में भेज मरवा दिया पति को,
पसन्द ना आया यहोवा को यह पाप,
मार दिया उनके नवजात शिशु को ।

दाऊद के एक पुत्र अम्मोन ने,
किया कुकर्म सौतेली बहन तातार से,
तो तातार के भाई अबशालोम ने,
घर बुलवाकर मार डाला उसे ।

फिर उसने षडयंत्र रच मिलाया,
दाऊद के सलाहकार अहीतोपेल को,
छोड़ पत्नियों को चल दिया दाऊद,
लेकर साथ में छह सौ लोगों को ।

यहोवा से प्रार्थना कर दाऊद ने,
मित्र हूशै को यरूशलेम भेजा,
विफल करे सलाह अहीतोपेल की,
और देता रहे समाचार वहाँ का ।

शुभचिंतक बन मिला अबशालोम से,
और विफल करी सलाह अहीतोपेल की,
फाँसी लगाकर अहीतोपेल मर गया,
मानी ना गई जो सलाह उसकी ।

अबशालोम ने जो बनाई थी योजना,
हूशै ने दाऊद को खबर भिजवा दी,
युद्ध हुआ दाऊद, अबशालोम के बीच,
हार हुई अबशालोम की सेना की ।

फिर से राजा बना दाऊद,
लौटा वो अपने घर यरूशलेम में,
फिर तीन वर्ष तक रही भुखमरी,
गिबोनियों को मारना था, जड़ में ।

शाऊल ने गिबोनियों को मारा था,
बदले में सात पुत्र उसके माँगे उन्होंने,
मपीबोशेत के सिवा दे दिए सात पुत्र,
फाँसी दे दी गिबोनियों ने जिन्हें ।

1. राजा

बहुत वृद्ध हो चला था दाऊद,
चालीस वर्ष उसने राज किया,
फिर बतशेबा से पुत्र सुलैमान को,
प्रतिज्ञानुसार दाऊद ने राज्य दिया ।

कहा, दण्ड देना योआब और शिमी को,
योआब साथी था अदोनिय्याह[30] का,
और शिमी[31] ने स्वयं दाऊद के साथ,
बहुत बुरा व्यवहार किया था ।

बनायाह को किया सेनापति नियुक्त,
योआब की जगह सुलैमान ने,
और सादोक को बनाया महायाजक,
एब्यातार की जगह सुलैमान ने ।

कहा शिमी को सुरक्षित हो तुम,
जब तक तुम यरूशलेम में हो,
तीन वर्ष बाद जब वो गत गया,
मृत्युदण्ड दिया सुलैमान ने उसको ।

परात नदी से पलिश्ती प्रदेश तक,
निष्कंटक हुआ सुलैमान का राज,
बलियाँ चढ़ा प्रसन्न किया यहोवा को,
यहोवा ने की सपने में बात ।

कहा यहोवा ने माँगों जो चाहो,
माँगा सुलैमान ने बुद्धि का वरदान,
यहोवा ने सम्पत्ति और प्रतिष्ठा भी दी,
और कहा तुम होंगे राजा महान ।

बहुत अच्छा प्रशासक था वह,
बहुत न्यायप्रिय और बहुत विद्वान,
दूर-दूर से आते थे लोग यरूशलेम,
और सुलैमान से पाते थे ज्ञान ।

यहोवा का मन्दिर बनवाने के लिए,
सोर के राजा हीराम से मदद माँगी,
कहा, अपने बढईयों को भेजो लाबानोन,
करें मदद देवदारु की काटें लकड़ी ।

देवदारु और चीड़ के पेड़ काट,
भेजते रहे समुद्र में बहा के वो,
बदले में गेहूं और जैतून का तेल,
प्रतिवर्ष पाते थे सुलैमान से वो ।

मिस्र छोड़ने के 480 वर्ष बाद,
आरम्भ किया बनाना मन्दिर को,
निश्चित नाप-जोख और तरीके से,
लाखों लोगों ने बनाया मन्दिर को ।

[30] अदोनिय्याह- दाऊद का एक पुत्र जो स्वयं राजा बनना चाहता था ।

[31] शिमी-बिन्यामीन परिवार से था, जिसने दाऊद के बारे में बुरी बातें की थी लेकिन दाऊद ने प्रतिज्ञा की थी कि वह शिमी को नही मारेगा ।

चीड़, देवदारु और जैतून की लकड़ी,
सोना भी मढ़ा गया प्रचुर मात्रा में,
उकेरे करूब, वृक्ष और फूलों के चित्र,
सात वर्ष लगे भव्य मन्दिर बनने में ।

बनवाया अपने लिए भी एक महल,
'लबानोन का वन' भी बनवाया,
और बहुत सी चाजें बनवाईं,
दाऊद का सामान भी वहाँ लाया ।

दाऊदनगर से यरूशलेम में,
साक्षीपत्र का सन्दूक मँगवाया,
अति पवित्र स्थान पर रखा सन्दूक,
तब बादल मन्दिर के भीतर भर आया ।

करी प्रार्थना और भेटें चढ़ाई,
कहा, मैं सेवक तू परमेश्वर यहोवा,
तुम्हारा वंश पाएगा राजा का सम्मान,
जो अनुसरण करोगे, बोला यहोवा ।

नगर बनाए, चहारदीवारी बनवाई,
जहाज भी बनवाए सुलैमान ने,
वैभव और सम्पदा के बारे में सुन,
शीबा की रानी आई उससे मिलने ।

सात सौ पत्नियाँ थीं सुलैमान की,
यहोवा से उन्होंने उसे दूर हटाया,
करी अवज्ञा, पर दाऊद के प्रेमवश,
यहोवा ने राजपद से नही हटाया ।

एप्रैम परिवार समूह से था यारोबाम,
नबी अहिय्याह ने कहा उससे,
इस्राएल के दस परिवार समूहों का,
राज्य मिलेगा यहोवा से उसे ।

बस एक ही परिवार समूह पर,
करेगा सुलैमान का बेटा राज,
दाऊद के कारण यरूशलेम पर,
रहेगा सुलैमान के वंश का राज ।

चालिस वर्ष राज कर मरा सुलैमान,
उसका बेटा रहूबियाम बना राजा,
लोगों ने उकसाया, कठोरता बरती,
विद्रोह हुआ, वह यरूशलेम भागा ।

राजा बना, किया अपराध यारोबाम ने,
सोने के बछड़े बना करी उपासना,
बहुत क्रुद्ध हुआ यहोवा उससे,
और उससे उसके पुत्र को छीना ।

पाप किए यहूदा ने, मिस्र ने घेरा,
लूटे मन्दिर और ख़जाने महल के,
लड़े ताउम्र रहूबियाम और यारोबाम,
सारी उम्र करते रहे दोनों पाप वे ।

फिर बनते रहे नए-नए राजा,
इस्राएल पर राज्य किया उन्होंने,
'शोमरोन' नगर बसाया पहाड़ी पर,
ओम्री जब राजा था, तब उसने ।

फिर उसका बेटा अहाब बना राजा,
बाल और अशेरा को पूजा उसने,
तीन वर्ष तक सूखा पड़ेगा,
नबी एलिय्याह से कहाया यहोवा ने ।

सूखा पड़ा, तब फिर यहोवा ने कहा,
एलिय्याह कहे जाकर अहाब से,
कि शीघ्र ही यहोवा वर्षा भेजेगा,
पर बहस करने लगा अहाब उससे ।

कर्म्मेल पर्वत पर हुआ मुकाबला,
एलिय्याह और अहाब के नबियों में,
हारे वे नबी, एलिय्याह ने मार डाला,
घनघोर वर्षा शुरू हो गई पल में ।

अहाब की रानी ने करी प्रतिज्ञा,
मार डालेगी भोर तक एलिय्याह को,
भाग गुफा में छिप गया एलिय्याह,
यहोवा ने कहा उसे दमिश्क जाने को ।

कहा एलीशा का करो अभिषेक,
तुम्हारे बाद नबी बनेगा वो,
खोज उसे अपना अंगरखा पहनाया,
चल दिया एलीशा उसके साथ हो ।

अराम के राजा बेन्हदद और अहाब,
लड़े फिर करी संधि दोनों ने,
क्रोधित हुआ अहाब से यहोवा,
छोड़ा जो बेन्हदद को अहाब ने ।

यहूदा के राजा यहोशापात से मिल,
अरामियों से लड़ने की सोची अहाब ने,
नबियों में एक मीकायाह भी था,
कहा, तुम्हें मरवाने की ठानी यहोवा ने ।

साधारण सैनिक सा बन अहाब,
यहोशापात संग गया लड़ने उनसे,
अरामी सेना तो ढूँढ ना पाई पर,
एक सैनिक का तीर बींध गया उसे ।

अहाब के बाद अहज्याह बना राजा,
यहोशापात के बाद उसका पुत्र यहोराम,
पूजा असत्य देवताओं को अहज्याह ने,
किया यहोवा को क्रुद्ध करने का काम ।

2. राजा

हो गया इस्राएल से मोआब अलग,
राजा अहाब की मृत्यु के बाद,
नीचे गिर चोटिल हुआ अहज्याह,
भेजे सेनापति एलिय्याह के पास ।

दो सेनापतियों ने कठोरता दिखाई,
पहुँच सके ना वे एलिय्याह के पास,
फिर एक ने विनम्रता से की विनती,
ले गया वो उसे अहज्याह के पास ।

बतलाया एलिय्याह ने अहज्याह को,
मरेगा वह कुछ समय के बाद,
कोई पुत्र नही था अहज्याह को,
यहोराम बना राजा उसके बाद ।

एलिय्याह और एलीशा गए गिलगाल,
एलिय्याह को बुला लिया यहोवा ने,
अग्नि सा रथ और घोड़े उतरे,
चला गया एलिय्याह बैठ उसमें ।

गिरा एलिय्याह का अंगरखा भूमि पर,
फिर एलिय्याह को देखा ना किसी ने,
एलीशा ने उठा लिया वो अंगरखा,
उतरा एलिय्याह का आत्मा उसमें ।

अहाब के पुत्र यहोराम ने राजा बन,
किए यहोवा के प्रति बुरे काम,
पूछा यहोशापात से मोआब के विरुद्ध,
क्या आएगा वह उसके काम ।

यहूदा, एदोम और इस्राएल के राजा,
मरुभूमि में उनको मिला ना पानी,
मिला एलीशा, कहा गढ़ढे खोदो,
भरेगा घाटी और गढ़ढ़ों में पानी ।

कहा, हरा दोगे मोआबियों को तुम,
यहोवा दिलाएगा विजय तुमको,
पानी में सूरज की लालिमा देख,
खून का भ्रम हुआ मोआबियों को ।

सोचा दोनों राजा आपस में लड़ पड़े,
सो लूट ले आएँ सामान उनका,
पर छिपे हुए इस्राएली निकल आए,
और कर दिया काम तमाम उनका ।

की मदद एक विधवा की एलीशा ने,
भरा रहा मटका जैतून तेल से,
छुड़ा लिए दास बने जो पुत्र,
तेल बेच हुई मुक्त ऋण से ।

एक स्त्री को आशीर्वाद दिया पुत्र का,
बड़ा हुआ, मर गया सिर-दर्द से,
करी एलीशा ने यहोवा से प्रार्थना,
तो बख़्शी जान फिर यहोवा ने उसे ।

किए और कई चमत्कार एलीशा ने,
जहरीला शोरवा दोषरहित कर दिया,
अराम के प्रमुख सेनापति नामान का,
विकट चर्मरोग भी ठीक कर दिया ।

अराम के राजा की युद्ध की योजना,
विफल कर बचाया इस्राएल को उसने,
अरामी फिर ना लौटें लड़ने इस्राएल से,
प्रार्थना कर यहोवा को मनाया उसने ।

फिर बेन्हदद ने शोमरोन को घेरा,
भोजन सामग्री तक जाने ना दी,
पर एलीशा ने कुछ ऐसा किया कि,
भ्रमित अरामी भागे, छोड़ सामग्री ।

बेन्हदद को मार हजाएल राजा बना,
यहोशापात पुत्र यहोराम भी बना राजा,
हो गया एदोम यहूदा से स्वतंत्र,
चुना उन्होंने अपने लिए नया राजा ।

इस्राएल का राजा बना योराम[32],
अहज्याह[33] बना यहूदा का राजा,
योराम को साथ ले गया युद्ध करने,
पर अरामियों ने उन्हें दिया भगा ।

[32] योराम-अहाब के परिवार से था ।
[33] अहज्याह- यहोराम का पुत्र ।

यहोशापात के पुत्र येहू का अभिषेक,
करने को एलीशा ने एक नबी भेजा,
यिज्रैल में था घायल योराम तब,
येहू भी वहीं पर जा पहुँचा ।

मारे गए योराम और अहज्याह,
येहू और उसकी सेना ने मारा,
यिज्रैलवालों और शोमरोनवालों से मिल,
उन दोनों के परिजनों को भी मारा ।

मरवाए उसने 'बाल' के उपासक,
पूजागृह, स्मृति पाषाण किए नष्ट,
यहोवा ने कहा, तुम्हारे वंशज,
राज करेंगे चार पीढ़ी तक ।

तभी आरम्भ कर दिया यहोवा ने,
अलग करना इस्राएल के हिस्सों को,
और अराम के राजा हजाएल ने,
हर सीमा पर हराना इस्राएलियों को ।

येहू के बाद उसका पुत्र यहोआहाज,
इस्राएल का बना नया राजा,
और अहज्याह के कई वर्ष बाद,
उसका पुत्र योआश बना राजा ।

करवाई उसने मन्दिर की मरम्मत,
यहोवा की आज्ञा का किया पालन,
योजना बना मार डाला अधिकारियों ने,
उसके पुत्र अमस्याह को बनाया राजन ।

युद्ध के लिए ललकारा योआश[34] को,
और हारा अमस्याह योआश के हाथों,
बना लिया उसने अमस्याह को बंदी,
मन्दिर और राजमहल लुटे उसके हाथों ।

फिर होते रहे नए, नए राजा,
यहूदा में भी और इस्राएल में भी,
लूटे मन्दिर और महल उन्होंने,
करते रहे कुछ बुरे काम सभी ।

फिर बना अहाज यहूदा का राजा,
और एला का पुत्र होशे, इस्राएल का,
लेकिन अश्शूर के राजा शल्मनेशेर ने,
हराकर बना लिया उसे दास अपना ।

किया कब्जा अन्य प्रदेशों पर भी,
शोमरोन पर भी किया कब्जा उसने,
हुआ यह सब इसलिए क्योंकि,
यहोवा के विरुद्ध पाप किए उन्होंने ।

भेजे दृष्टा और नबी यहोवा ने,
इस्राएली और यहूदाओं को चेताने,
पूजे असत्य देवता, जादू-टोने किए,
यहूदा के सिवा और कोई ना माने ।

फिर यहूदा का राजा बना हिजकिय्याह,
दाऊद की तरह अच्छे काम किए उसने,
उच्च स्थान, स्तम्भ आदि किए नष्ट,
मिटा दिया झूठे देवताओं का नाम उसने ।

[34] योआश- यहोआहाज का पुत्र ।

यहोवा का भक्त, बड़ा प्रतापी था,
स्वतंत्र हो गया अश्शूर से वो,
पराजित किए सब पलिश्ती नगर,
यहूदा में ना हुआ कोई जैसा था वो ।

फिर सन्हेरीब बना अश्शूर का राजा,
यहूदा से लड़ने भेजी एक विशाल सेना,
याशायाह नबी को पूछा हिजकिय्याह ने,
कहा, अफवाह सुन भाग जाएगी सेना ।

सुनी अफवाह जैसे कहा याशायाह ने,
अश्शूर के राजा ने संदेश भिजवाया,
कहा छोड़ दें वे लोग यहोवा को,
पर हिजकिय्याह ने यहोवा को मनाया ।

अश्शूरी डेरे पहुँच यहोवा के दूत ने,
मार डाला लाखों अश्शूरी लोगों को,
लौट गया सन्हेरीब, नीनवे पहुँचा,
वहाँ मारा उसके पुत्रों ने उसको ।

हिजकिय्याह के बाद उसका पुत्र मनश्शे,
यहूदा का राजा बना, किए पाप,
अपने पुत्र की भी बलि चढ़ाई,
यहोवा के प्रति किए अपराध ।

मनश्शे का पुत्र, फिर उसका पुत्र,
योशिय्याह बना यहूदा का राजा,
दिया मन्दिर की मरम्मत का आदेश,
और उसके लिए की धन की व्यवस्था ।

मिली व्यवस्था की पुस्तक मन्दिर में,
योशिय्याह ने ध्यान से सुना उसे,
दुखी हुआ योशिय्याह यह जानकर,
पूर्वज अनजान बन रहे उससे ।

यहोवा का अनुसरण किया योशिय्याह ने,
नष्ट किए अन्य देवता और स्थान,
फसह पर्व मनाने के दिए आदेश,
साक्षीपत्र का किया उसने सम्मान ।

किन्तु यहोवा ने छोड़ा ना क्रोध,
कहा, यरूशलेम ना स्वीकार उसे,
नाम रहेगा वहाँ यहोवा का लेकिन,
मन्दिर नष्ट करेगा यरूशलेम से ।

योशिय्याह मरा, वंशज राजा बने,
बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर आया,
लिया ख़जाना मन्दिर और महल का,
राजपरिवार और प्रमुखों को बंदी बनाया ।

घेरा यरूशलेम को नबूकदनेस्सर ने,
भीषण भुखमरी फैली यरूशलेम में,
मन्दिर, महल, घर जला दिए,
सब लोगों को बंदी बनाया उन्होंने ।

1. इतिहास व 2. इतिहास

इन अध्यायों में वर्णित है,
इतिहास और कृत्य राजाओं के,
सो ये अध्याय शामिल ना किए,
सार रूप इस लघु पुस्तक में ।

एज्रा

ले गया था नबूकदनेस्सर लोगों को,
यहूदा और यरूशलेम से बंदी बनाकर,
फारस के सम्राट कुस्रू ने उन्हें,
मुक्त किया नबूकदनेस्सर को हराकर ।

परमेश्वर यहोवा का भक्त था कुस्रू,
चाहता था मन्दिर बने यरूशलेम में,
लौटे यहूदा और बिन्यामीन के लोग,
पड़ोसियों ने दी अनेक भेंटें उन्हें ।

लूट लाया था जो नबूकदनेस्सर,
कुस्रू ने दीं वे सब चीजें मन्दिर की,
मन्दिर और नियमानुसार वेदी बना,
होमबलि उस पर यहोवा को दी ।

निवासी वहाँ के विरुद्ध हुए,
तो कुछ काल तक रुका रहा काम,
प्रोत्साहित किया यहूदियों को नबियों ने,
तो फिर शुरू हुआ मन्दिर का काम ।

फारस के राजा दारा को मिला,
बाबेल के पास कुस्रू का आदेश,
सोना, चाँदी, सारा व्यय वहन किया,
अधिकारी सहयोग करें दिया आदेश ।

जब पूरा हुआ मन्दिर का निर्माण,
लौटे यहूदियों ने फसह पर्व मनाया,
हारून का एक वंशज एज्रा तब,
बाबेल से यरूशलेम को आया ।

बाबेल के राजा ने एज्रा से कहा,
बहुत सी भेंटे यहोवा हेतु ले जाए,
कर को बाध्य ना हों यहोवा के सेवक,
यहोवा क्रोधित ना उनसे हो जाए ।

मन्दिर में सेवा करने के लिए,
इद्दो के पास प्रमुखों को भेजा,
दो सौ बीस सेवकों के साथ,
लेवीवंशियों को इद्दो ने भेजा ।

बारह याजक नियुक्त किए उनमें से,
रखवाली करने को सोने-चाँदी की,
सौंप दें उन्हें पहुँचकर यरूशलेम,
मन्दिर में सुरक्षित रखें अधिकारी ।

किए विवाह अन्यों से इस्राएलियों ने,
इस तरह दोगले इस्राएली हो गए,
पाप स्वीकार कर एज़्रा रोया,
दुविधा में इस्राएली पड़ गए ।

नहेमायाह

हकल्याह के पुत्र नहेयामाह की जुबानी,
मिलने आए लोग उससे शूशन में,
बताया बन्धुआपन से जो आए,
वे यहूदी यहूदा में हैं विपत्ति में ।

ढह गया यरूशलेम का परकोटा,
जल गए प्रवेश द्वार आग में,
हो गया बहुत ही व्याकुल यह सुन,
करता रहा प्रार्थना और उपवास मैं ।

यहोवा को याद दिलाया उसका वादा,
कहा, राजा को मेरे अनुकूल कर दे,
बसाने दे मुझे मेरे पूर्वजों का नगर,
अधिकारी करें सहायता आदेश दे ।

यरूशलेम पहुँच शुरू कर दिया,
चुपचाप परकोटा बनाने का काम,
याजक, महायाजक ने साथ दिया,
अनेक लोग जुटे करने में काम ।

हुआ अकाल से जीना दूभर,
निर्धनों को बनना पड़ा दास,
बुलाया हाकिमों और धनिकों को,
मनाया गरीबों का देंगे साथ ।

जब तक यहूदा का राज्यपाल रहा मैं,
कड़ी मेहनत की, सबके जैसे रहा,
कुछ लोग जो मेरे दुश्मन थे,
राजा को मेरे विरुद्ध लिखा ।

षडयंत्र हुए, पर परकोटा बना,
टूट गई हिम्मत शत्रुओं की,
हाकिम और किलेदार बनाए,
नियुक्ति की इमानदार लोगों की ।

फिर व्यवस्था की किताब पढ़ी एज़्रा ने,
लोग द्रवित हो करने लगे रुदन,
करी परमेश्वर से फिर एक वाचा,
करेंगे परमेश्वर के विधान का पालन ।

यहूदा, बिन्यामीन और लेवीवंशी,
और याजक भी बसे यरूशलेम में,
कुछ ही लोग बस पाए वहाँ,
अन्य बसे अन्य नगरों में ।

समर्पित की यरूशलेम की दीवार,
स्तुति की, यहोवा का धन्यवाद किया,
किए लोग, द्वार और परकोटा शुद्ध,
मूसा की पुस्तक का पाठ किया ।

जब मैं गया हुआ था बाबेल,
लोगों ने किए कुछ बुरे काम,
समझाया और दवाब डाला,
करें लोग नियम से काम ।

एस्तेर

क्षयर्ष राजा था जब शूशन का,
वशती, अति सुन्दर थी महारानी,
भोज के दौरान राजा ने बुलाया,
पर वशती ने आज्ञा ना मानी ।

रुष्ट हुआ क्षयर्ष अवज्ञा से,
सलाह कर महारानी पद से हटाया,
नई महारानी चुनने के लिए,
कुँवारी कन्याओं को महल में बुलाया ।

एक यहूदी मोर्दकै की बहन एस्तेर,
महल में लाई गई लडकियों में थी,
बहुत सुंदर शरीर रचना थी उसकी,
राजा ने चुना उसे, वो महारानी बनी ।

महल के पास घूमता था मोर्दकै,
एक षडयंत्र का उसे पता चला,
एस्तेर को बता, विफल किया षडयंत्र,
राजा को मोर्दकै का पता चला ।

उन्हीं दिनों एक अधिकारी हामान का,
राजा ने सम्मान कर पदौन्नत किया,
सब मुखिया उसका आदर करते थे,
पर मोर्दकै ने उसे अनदेखा किया ।

बदला लेना चाहता था हामान,
मोर्दकै यहूदी है उसे पता चला,
सोचा मोर्दकै अकेला ही क्यों,
सभी यहूदियों को मरवा ले बदला ।

राजा को भड़का, आदेश निकलवाया,
खत्म कर दिए जाएँ यहूदी सभी,
त्राहि-त्राहि मच गई यहूदियों में,
मोर्दकै ने एस्तेर से करी विनती ।

उपवास रखा, राजा को प्रसन्न किया,
राजा ने पूछा क्या चाहती है वो,
कहा राजा और हामान दोनों को,
देना चाहती है एक दावत वो ।

राजा के साथ उसे ही बुलाया,
यह सोच फूला हामान गर्व से,
मोर्दकै को फाँसी देने के लिए,
ऊँचा खम्भा बनवाये, सूझा उसे ।

उधर राजा ने सुनी इतिहास की पुस्तक,
उस षडयंत्र का विवरण था उसमें,
मोर्दकै की हो आई याद राजा को,
सोचा क्या मिला मोर्दकै को इसमें ।

किया मोर्दकै का सम्मान राजा ने,
मोर्दकै घोड़े पर, हामान चला आगे,
उधर एस्तेर ने राजा को बताया,
कोई यहूदियों को बना रहा अभागे ।

पूछा राजा ने कौन है वो,
एस्तेर ने लिया नाम हामान का,
क्रोधित हो राजा जो गया बाहर,
हामान माँगने लगा रानी से क्षमा ।

तभी जो राजा भीतर को आया,
देखा हामान को बिछौने पर झुका,
सोचा उसने हमला किया रानी पर,
चीखा, सैनिकों द्वारा दिया पकड़ा ।

खम्भा जो बनाया मोर्दकै के लिए,
उसी पर हामान गया लटकाया,
क्रोध शांत हुआ जब राजा का,
मोर्दकै भाई है, एस्तेर ने बतलाया ।

बदल गए यहूदियों के दिन,
शत्रुओं पर पाई विजय उन्होंने,
मनाया फिर पूरीम का त्योंहार,
मोर्दकै को दिया सम्मान उन्होंने ।

अय्यूब

यह अध्याय अय्यूब के बारे में,
यहोवा का भक्त, नेक और सच्चा,
ताकि फैले उसका यश दुनिया में,
यहोवा ने कहा, ले ले शैतान परीक्षा ।

शैतान सोचता था अय्यूब करता है,
यहोवा की उपासना केवल इसलिए,
धन, सम्पत्ति और सन्तान बख़्शी उसे,
और यहोवा रक्षक है उसका इसलिए ।

करी उसकी धन, सम्पत्ति नष्ट,
और मार दी सब सन्तान भी,
दुखी और व्याकुल हुआ अय्यूब,
पर करता रहा उपासना फिर भी ।

और भी कष्ट उसे देने के लिए,
भर दिया उसका शरीर फोड़ों से,
खुजलाता रहता था वो सारे दिन,
पर डिगा ना विश्वास यहोवा से ।

एलीपज, बिलदद और सोपर,
उसके तीन मित्र मिलने आए,
एलीपज बोला, अय्यूब भरोसा रख,
विपत्ति से सज्जन निकलते आए ।

बोला बिलदद, किसी निर्दोष को,
त्यागेगा नहीं कभी भी परमेश्वर,
बोला अय्यूब, ठहराया गया अपराधी,
ना चैन मिलेगा, मुझे मरकर ।

बोला सोपर, तुम कहते रहे निष्कलंक,
पर कोई बुराई छिपती नहीं उससे,
बोला अय्यूब, उड़ाते मित्र हँसी,
करता था विश्वास, कहते वो मुझसे ।

मुझे पता है मैं निर्दोष हूँ,
पर क्यों 'वो' बच रहा मुझसे,
मर जाता, फिर ना उठता मनुष्य,
दुनिया का नाता टूट जाता उससे ।

पाप छिपाने की कोशिश,
एलीपज बोला, अय्यूब मत कर,
हुआ है पैदा मनुष्य स्त्री से,
करता रहता बुराई उम्र भर ।

बोला अय्यूब, जो किया है तूने,
हे परमेश्वर ! मैं दिखता अपराधी,
रुकने मत देना मेरे न्याय की विनती,
शायद कोई ले मेरा पक्ष भी ?

बिलदद बोला, गुस्सा करना छोड़,
बुरे जन को दण्ड भुगतना पड़ेगा,
बुझा दिया जाएगा उसका प्रकाश,
कोई उसके घर जीवित ना बचेगा ।

बोला अय्यूब, मेरे कष्टों के कारण,
दोषी सिद्ध करते रहोगे कब तक,
पर कोई एक है जो मुझे बचाता,
काश पहुँच सकता मैं 'उस' तक ।

बोला सोपर, तेरे विचार विफल हैं,
उगलना पड़ता दुष्ट ने निगला जो,
जब होता सब उसके पास भरपूर,
ले लेता सब उसके पास से 'वो' ।

बोला अय्यूब, तू मुझे देख,
बुरों की सफलता पर स्तब्ध हो,
अपना नहीं सकता पर उनके विचार,
मर कर माटी में सब जाते सो ।

एलीपज बोला, पाप किए हैं तूने,
हुआ है तुझसे कोई बड़ा अपराध,
स्वयं को अर्पित कर परमेश्वर को,
कर दूर अपने घर से पाप ।

बोला अय्यूब, मैं नेक व्यक्ति हूँ,
रखता मुझ पर निगाह परमेश्वर,
जब ले चुका होगा मेरी परीक्षा,
खरा सोना सा पाएगा मुझे परमेश्वर ।

पर क्यों नहीं करता है परमेश्वर,
तय समय सीमा न्याय करने की,
लोग जो मानते हैं परमेश्वर को,
क्यों उन्हें प्रतीक्षा करनी पड़ती ?

अन्यायपूर्ण है परमेश्वर मेरे प्रति,
पर मैं दोषी हूँ मानूँगा ना कभी,
तौले मुझे खरी तराजू से परमेश्वर,
भटकें हो कदम यदि मेरे कभी ?

ना मानेगा अय्यूब, जाना मित्रों ने,
मानता है दोषरहित वो ख़ुद को,
छोड़ दिया तब उसे समझाना,
सोचा नुक्सान पहुँचा रहा ख़ुद को ।

वहीं एलीहू नामक था एक व्यक्ति,
बहुत क्रोधित हुआ वो अय्यूब से,
कहा, दोष सब परमेश्वर पर मढ़ा,
क्या कोई कुछ छिपा सकता उससे ?

बुरे लोग होते हैं अभिमानी,
ध्यान नहीं देता परमेश्वर उन पर,
भेजी गई हैं तुझ पर विपत्तियाँ,
ताकि पाप करने से तू जाए उबर ।

तभी तूफ़ान में से बोला यहोवा,
ये कौन कर रहा मूर्खतापूर्ण बात,
फिर कहा यहोवा ने अय्यूब से,
मेरे प्रश्नों का दो तुम जवाब ।

बता कहाँ से सूरज उगता,
या कहाँ से वर्षा जल आता,
क्या बाँध सकता सप्तर्षि को,
क्या मृगशिरा तू खोल पाता ?

और भी बहुत सी दिव्य क्रियाएं,
परमेश्वर ने पूछा राज उनका,
कहा, किया तूने परमेश्वर से तर्क,
ठहराया दोषी मुझे बुरा करने का ।

क्या तू सोचता मैं न्याय ना करता,
या तू मुझ जैसा कुछ कर सकता,
रखता मुझसी शक्ति और सामर्थ्य,
तो न्याय कर तू दुष्ट लोगों का ।

तब कहा अय्यूब ने, मैं असमर्थ,
और तू सर्वशक्तिशाली है, हे यहोवा !
देखा तुझे आज अपनी आखों से,
धन्य हुआ तुझसे बात कर, हे यहोवा !

तब यहोवा ने तीनों मित्रों से कहा,
अनुचित मेरे बारे में किया संवाद,
कहा अय्यूब ने उचित बातों को,
कहो उससे करे तुम्हारे लिए अरदास ।

कड़ा दण्ड मिलना चाहिए था तुमको,
पर रहम करूँगा अय्यूब के कारण,
किया आज्ञा का पालन तीनों ने,
क्षमा मिली उन्हें, अय्यूब के कारण ।

करी कृपा अय्यूब पर यहोवा ने,
पहले से भी ज्यादा दिया उसे,
धन-दौलत, घर, पुत्र और पुत्रियाँ,
सुख से भरपूर कर दिया उसे ।

भजन संहिता

इस अध्याय में भजनों का संग्रह,
यहोवा परमेश्वर का स्तुति गान,
श्रुद्धा सहित जो गाता दिल से,
पाता शांति, सुरक्षा और सम्मान ।

नीतिवचन

नीतिवचन ये राजा सुलैमान के,
बुद्धि, ज्ञान और विवेक से भरे,
लिखे गए ये वचन इसलिए ताकि,
मनुष्य अच्छे-बुरे की पहचान करे ।

हे मेरे पुत्र पिता की शिक्षा और,
भूल ना जाना नसीहत माता की,
बनेंगे वे तेरे गले का हार,
सही राह दिखाएँगे तुझे जीने की ।

मत अवज्ञा कर कभी पिता की,
माता की सीख ना टाल कभी,
उनकी शिक्षा तेरे जीवन का दीपक,
सोचते हमेशा वो तेरा हित ही ।

बरबादी ही मिलेगी उस व्यक्ति को,
जो अपने घराने पर विपत्ति लाएगा,
और जो कोसता अपने माता-पिता को,
गहन अन्धकार में वो खो जाएगा ।

ना आना पापी की बातों में,
ना देना कभी बुराई का साथ,
ना ज्ञान की कभी उपेक्षा करना,
ना श्रम से जी चुराने की बात ।

बुद्धि और विवेक के लिए प्रयासरत,
प्रेम और विश्वसनीयता बनाए रखता,
मन में रखता विश्वास यहोवा पर,
पात्र होता वो दिव्य ज्ञान पाने का ।

सोना, चाँदी और मणि, माणिक,
अनेक रत्न हैं इस दुनिया में,
लेकिन वो अधर जो ज्ञान बांटते,
सबसे दुर्लभ वो रत्न दुनिया में ।

मान ले तू यहोवा का अनुशासन,
बुरी मत लगा उसकी फटकार,
डांटता है वो उन्हीं को केवल,
जिनसे यहोवा करता है प्यार ।

ना जमानत, ना वचन बिना समझे,
बच इससे जाल में फँसे हिरन जैसे,
आलस्य मत कर निद्रा से जाग,
देख चींटी को, सबक ले उससे ।

गर्वीली आँखें, झूठी वाणी,
और हृदय कुचक्रों से भरा,
झूठे गवाह, फूट डलवाने वाले,
करता है यहोवा उनसे घृणा ।

सृष्टि से पहले बुद्धि को रचा,
दिया यहोवा ने उसे पहला स्थान,
ज्ञान ख़जानों से भी बढ़ कर,
ज्ञानीजन पाते हर जगह सम्मान ।

प्रेम ढक लेता सब दोषों को,
निंदा करना मूढ़ों का काम,
दुष्ट की आशा व्यर्थ रह जाती,
सयंम रखना बुद्धिमानों का काम ।

बुझाता है जो प्यास औरों की,
उसकी प्यास तो ख़ुद बुझ जाती,
भलाई का इच्छुक यश पाता है,
बुरों के हाथ बुराई ही आती ।

कृपा किसी गरीब पर करना,
यहोवा को उधार देने जैसा,
जो कोई देता कुछ गरीब को,
कई गुणा फल पाता उसका ।

शोषण मत कर तू गरीब का,
मजबूर को ना खींच कचहरी में,
परमेश्वर उनकी सुनवाई करेगा,
लूटेगा उन्हें, जो लूटते उन्हें ।

दूर ही रहना सदा पराई स्त्री से,
उसकी मीठी बातें कर सकती हानि,
प्रेम व्यवहार, आनन्द, पत्नी संग,
अपने ही जलकुंड से पी पानी ।

उत्तम पत्नी होती गर्व पति का,
लज्जाहीन, जैसे बीमारी शरीर की,
भाग्यवान पाते हैं गुणवंती पत्नी,
पति की विश्वासी, लक्ष्मी उसकी ।

दान देती वह दीन दुखियों को,
करती हमेशा सहायता सबकी,
पूरे घर को खुशियाँ देती वह,
ख़ुद रूखा-सूखा खाती-पीती ।

जो दण्ड ना देता कभी पुत्र को,
करता नहीं वह प्रेम पुत्र से,
किन्तु जो करता पुत्र से प्रेम,
अनुशासित करता यत्न से उसे ।

कभी मत रोक छड़ी को अपनी,
बच्चे को अनुशासित करने से,
बचा ले नरक से उसका जीवन,
जहाँ उचित हो दण्ड देकर उसे ।

नाती-पोते होते वृद्धों का मुकुट,
माता-पिता उनके बच्चों का मान,
अनुपम उपहार एक अच्छी पत्नी,
यहोवा का दिया बेहतर ईनाम ।

जिनके बैल बंधे रहते हैं,
खाली रहते हैं उनके खलिहान,
बैलों के बल पर ही पाता है,
उत्तम खेती और फसल किसान ।

ऋतु आने पर हल ना जोतता,
ताकता रहता वो कटनी के वक्त,
ऐसा अदूरदर्शी आलसी व्यक्ति,
बगले झाँकता जब आता वक्त ।

जो व्यक्ति शीघ्र क्रोधित हो जाता,
कर जाता बेवजह बेवकूफी के काम,
और वह जो होता छल-छंदी,
लोगों की घृणा पाता सुबह-शाम ।

शांत मन देता शरीर को जीवन,
पर इर्ष्या सड़ा देती हड्डियाँ भी,
कठोर वचन भड़काते हैं क्रोध,
पर मन शांत करती कोमल वाणी ।

घृणा के साथ पेट भर भोजन से,
प्रेम सहित अल्प भोजन ही उत्तम,
बेईमानी से कमाए प्रचुर धन से,
नेक कमाई का थोड़ा धन उत्तम ।

मनुष्य बनाता अपनी ही योजनाएं,
पर उसमें सफलता देता है यहोवा,
लगती उसे अपनी राहें पाप-रहित,
पर उसकी नियत परखता यहोवा ।

सुनता नहीं जो बात ठीक से,
और सुनने से पहले उत्तर देता,
अपनी ही मूर्खता दर्शाता है वो,
और अपयश ही उसको मिलता ।

वृद्ध हो जाएँ जब माता-पिता,
तू उनकी सुन, निरादर मत कर,
खरा सौदा है उनकी सेवा करना,
खरीद ले उसे कुछ भी देकर ।

विश्वास योग्य हो यदि तेरा पड़ोसी,
मत रच षडयंत्र तू उसके खिलाफ,
पड़ोसी को वापस देने में ना झिझक,
यदि कुछ रखा हो उसका तेरे पास ।

कभी अपने मित्रों को मत भूल,
विपत्ति में उनका सहारा अच्छा,
दूर भाई की राह तकने से,
निकट पड़ोसी का होना अच्छा ।

ऊँचे स्वर में भोर से पहले,
पड़ोसी को अपने जगाया मत कर,
चाहे वो मुँह से कुछ ना कहे,
पर झेलेगा उसे वो शाप मान कर ।

जो गरीबों को दान देता है,
कुछ भी अभाव नहीं रहता उसे,
पर जान-बूझकर जो आँख मूंदता,
शाप ही बस मिलता है उसे ।

बोल उनके लिए, जो बोल ना पाते,
और उनके लिए भी जो हैं अभागे,
न्याय और निष्पक्षता के लिए डटकर,
खड़ा हो गरीबों की रक्षा के लिए ।

बड़ाई ना बखानों राजा के सामने,
महापुरुषों के बीच ना चाहो स्थान,
उत्तम यह है वे बुलाएँ तुझको,
बजाए इसके की तेरा हो अपमान ।

बड़ी-बड़ी बातें जो करते,
पर करते धरते कुछ भी नहीं,
वो होते गरजते मेघों समान,
गरजते, पर बरसते कभी नहीं ।

पूरा करो पहले खेतों का काम,
फिर बनाना बाद में घर अपना,
आलस करोगे तो दरिद्रता रहेगी,
पूरा हो ना सकेगा कोई सपना ।

सावधान रहो विचारों के बारे में,
विचार जीवन को नियंत्रित करते,
सीधी राह पर जो चलना चाहते,
बुरा काम करने से बचते रहते ।

सभोपदेशक

उपदेशक के शब्द, इस अध्याय में,
यरूशलेम का राजा, पुत्र दाऊद का,
हर वस्तु अकारण और अर्थहीन है,
क्या कोई प्रयोजन मेहनत से सधता ?

सूरज उगता, दिन ढल जाता,
संसार यूँ ही बस चलता जाता,
विचार व्यक्त ना कर पाते लोग,
लेकिन संवाद यूँ ही चलता जाता ।

दुनिया में कुछ नया नही है,
जैसा होता आया, होता रहेगा,
जो बातें पहले घट चुकी हैं,
लोगों को याद नहीं रहेगा ।

मैंने जानी व्यर्थता सब की,
धन-दौलत, महल, सोना-चाँदी,
किए इकठ्ठा मैंने जीवन भर,
लेकिन समय की बस बर्बादी ।

किया विवेकी बनने का प्रयास,
जाना मूर्खता से बुद्धि उत्तम,
लेकिन एक सा अंत दोनों का,
लोगों को याद रहते हैं कम ।

ना कुछ साथ जाएगा मरने पर,
कोई और उसका स्वामी बनेगा,
जीवन व्यर्थ किया जिसके लिए,
उससे मुझे कुछ भी ना मिलेगा ।

अच्छा से अच्छा बस इतना है,
खाना पीना और मन पसन्द काम,
परमेश्वर जिनसे प्रसन्न होता है,
देता उन्हें बुद्धि, आनन्द और ज्ञान ।

उचित समय होता हर बात का,
परमेश्वर की लीला हम नहीं जानते,
जैसा 'वो' चाहता होकर रहेगा,
करता 'वो' न्याय, हम नहीं समझते ।

एक अकेले से किसीका साथ अच्छा,
साथी होने से मिल सकती मदद,
मिलकर हो जाते गुँथी रस्सी से,
शक्ति बढ़ जाती जिससे कई अदद ।

धन से कभी संतुष्टि नहीं होती,
मित्र धनी के पास मंडराते रहते,
लेकिन अंत में सब व्यर्थ ही जाता,
धनी बस चिंता ही करते रहते ।

खाली हाथ ही सब आते जाते,
कुछ नहीं जाता किसी के साथ,
वक़्त हाथ से फिसल जाता यूँ ही,
अंत में मलते रह जाते हाथ ।

मनुष्य के वश में केवल कर्म,
जो मिल जाए उसे करे स्वीकार,
होता नहीं जो संतुष्ट कभी भी,
उसका जीवन चला जाता बेकार ।

जब सरल हो, रस लो जीवन का,
कठिन समय हो तो रखो याद,
वो ही देता अच्छा या बुरा,
किसे मालूम कल क्या हो बात ।

श्रेष्ठ मध्य मार्ग को अपनाना,
अनुचित करना ख़ुद को हलकान,
लोग तो कुछ भी कहते रहते हैं,
मत विचलित हो, दो ना ध्यान ।

परमेश्वर तो सबको नेक बनाता,
पर ढूँढ लिए बुराई के साधन,
प्रयत्न किया पर मालूम ना हुआ,
जो भी होता, होने का कारण ।

करना चाहिए राजाज्ञा का सम्मान,
परमेश्वर को दिया था वचन ऐसा,
बुद्धिमान व्यक्ति यह जानता है,
कब उसे करना चाहिए कैसा ?

कोई नहीं रोके रख सकता,
आत्मा को देह छोड़ जाने से,
ऐसी शक्ति किसी में भी नहीं,
कि बच सकता हो वो मृत्यु से ।

अच्छों से बुरा, बुरों से अच्छा,
होता है कभी-कभी ऐसे भी,
परमेश्वर की क्या मर्जी है,
समझ नहीं सकता बुद्धिमान भी ।

जो पास में है आनन्द लो उसका,
हर चीज को दो उचित सम्मान,
मरा हुआ सिंह किस काम का,
बेहतर उससे एक जीवित श्वान ।

सम्मान पाते देखा मूर्खों को,
बुद्धिमान यूँ ही घूमते रहते,
असंगत बातें होती रहती हैं,
तेज धावक सदा नहीं जीतते ।

कुछ व्यक्ति जो सुस्त होते हैं,
बैठे रहते हैं, हाथ पर हाथ रखे,
उनका घर टपकना शुरू कर देगा,
देर ना लगेगी उनकी छत गिरते ।

राजा या सम्पन्न लोगों के लिए,
लाओ ना मन में बुरे विचार,
शायद कोई चिड़िया बतला दे,
या बतला दे कोई दीवार ?

उत्तम काम, ख़जाना तुम्हारा,
जहाँ भी जाओ रहेगा साथ,
जीवन समाप्त हो इसके पहले,
कर अपने परमेश्वर को याद ।

नुकीली छड़ियों जैसे होते हैं,
वचन जो कहते विवेकी जन,
चुभते, चोट भी पहुँचाते मगर,
सही राह पर लाने का जतन ।

आती हैं ये सभी शिक्षाएं,
गड़रिए रूपी उस परमेश्वर से,
जानता है वो तुम्हारी हर बात,
सदा न्याय करेगा वो तुम से ।

श्रेष्ठगीत

गीतों का संग्रह, यह अध्याय,
सुलैमान के श्रेष्ठ गीत इसमें,
प्रेम-अनुराग से रचे-बसे,
आनन्द का सोत्र छिपा इनमें ।

यशायाह

यशायाह एक नबी यहोवा का,
यहोवा ने उसे एक दर्शन करवाया,
विद्रोही और अपराधी हुए इस्राएली,
यहोवा से किया वादा ना निभाया ।

यरूशलेम नही करता अनुसरण,
विश्वास योग्य रहे ना लोग,
भ्रष्ट हो गए सब शासक तुम्हारे,
दूर करूँगा अब मैं यह खोट ।

परमेश्वर नेक है और करता उचित,
इसलिए सिय्योन की रक्षा करेगा,
कर देगा नाश वह पापियों का,
पर नेक लोगों की रक्षा करेगा ।

फिर देखा यहोवा का मन्दिर,
शोभायमान सबसे ऊँचे पर्वत पर,
जाएँगे वहाँ सब देशों के लोग,
कहेंगे जाना चाहिए हमें वहाँ पर ।

सिय्योन पर्वत पर यरूशलेम में,
उपदेशों का सन्देश प्रारम्भ होगा,
सब विवादों का करेगा निपटारा,
शांति से फिर वहाँ रहना होगा ।

यहूदा, यरूशलेम ने जो किया बुरा,
विपत्ति बुलाई, दण्ड पाएँगे वो,
घमण्डी हो गयीं स्त्रियाँ सिय्योन की,
दुर्भाग्य पाएँगी इसके बदले में वो ।

उस समय मार दिए जाएँगे योद्धा,
और उसके बाद बचेंगे जो लोग,
उस समय प्रमाणित करेगा यहोवा,
उस पर भरोसा कर सकते लोग ।

फिर गाया एक गीत यशायाह ने,
दण्ड देगा, इस्राएली मृत्यु पाएँगे,
घने बादलों में ढक जाएगी रोशनी,
बस अंधेरा और दुःख रह जाएँगे ।

फिर यशायाह ने किए यहोवा के दर्शन,
सिंहासन आरूढ़, देवदूतों से घिरा,
दहकते कोयले से होठों को छुआकर,
यशायाह को पापों से मुक्त किया ।

करी यहोवा ने यशायाह से बात,
उजाड़ करेगा, नष्ट करेगा यहोवा,
फिर भी कुछ लोग जो बचे रहेंगे,
नष्ट करेगा फिर से उन्हें यहोवा ।

और दिए कुछ संकेत यशायाह को,
बताया क्या प्रमाण होगा उनका,
लिखा यशायाह ने एक तख्ती पर,
दो नबियों ने[35] मुझे लिखते देखा ।

इस्राएलियों को नष्ट करेंगे शत्रु,
हो गए वे बड़बोले और अभिमानी,
जब यहोवा की योजना होगी समाप्त,
इस्राएलियों पर फिर चमकेगी रोशनी ।

यिशै के वंश में होगा एक पुत्र,
यहोवा की आत्मा उसमें होगी,
दीन-हीनों का होगा वो सहायक,
नेकी और सच्चाई की शक्ति होगी ।

आएगा तब मेरा स्वामी परमेश्वर,
यहूदा और इस्राएल को साथ लाएगा,
ना बचेगा शत्रु, ना कोई कष्ट,
दोनों में परस्पर सहयोग लाएगा ।

फिर दिया संदेश परमेश्वर ने,
बाबुल, अश्शूर, मोआब आदि को,
दिया उन्होंने यहूदा को कष्ट,
भुलाया उद्धारकर्ता परमेश्वर को ।

दण्ड दिया जाएगा उन सबको,
वैभव नष्ट किया जाएगा उनका,
करेगा इस धरती को यहोवा नष्ट,
लोगों ने कर दिया इसे गन्दा ।

अंत में होगा न्याय सभी का,
सिय्योन पर्वत पर यहोवा राज करेगा,
इतनी भव्य होगी महिमा उसकी,
जिसकी तुलना क्या कोई करेगा ?

गीत गाएँगे यहूदा के लोग,
यहोवा उन्हें नया जीवन देगा,
होंगे इस्राएल के लोग सुदृढ़,
धरती को फिर उनसे भर देगा ।

गर्व करता एप्रैम शोमरोन पर,
पहाड़ी पर बसा मुकुट सा नगर,
एक वीर व्यक्ति भेजेगा यहोवा,
शोमरोन रुपी मुकुट जाएगा उतर ।

यहोवा दण्ड देगा अवज्ञाकारियों को,
समाप्त किए जाएँगे सब बुरे लोग,
देखेगा वो अपनी सब संतानों को,
यहोवा पवित्र है कहेंगे इस्राएली लोग ।

[35] दो नबी- उरिय्याह और जकर्याह ।

देख रहे हैं ये मिस्र की ओर,
नहीं मानते ये नबियों की बात,
पर यहोवा तुम्हारी बाट जो रहा,
करना चाहता करुणा की बरसात ।

निश्चित किया दण्ड का समय उसने,
जो सिय्योन के विरुद्ध अपराधी थे,
उजड़ जाएगी पूर्णतया धरती एदोम की,
करेंगे जंगली पशु राज एदोम में ।

परमेश्वर सृजनहार है सारी सृष्टि का,
समस्त ज्ञान का वो है भण्डार,
शाश्वत, सच्चा, अतुलनीय है वो,
जो कुछ है, वह सब का आधार ।

मैं ही हूँ सच्चा एक परमेश्वर,
था नहीं कोई परमेश्वर मुझसे पहले,
ना ही कोई मेरे बाद में होगा,
बस मैं ही हूँ, पीछे और पहले ।

झूठी मूर्तियाँ बनाकर लोग पूजते,
वो नहीं जानते क्या कर रहे हैं वो,
जिस लकड़ी को जला पकाते भोजन,
उसी लकड़ी को पूज रहे हैं वो ।

कर नहीं सकते तुम मेरी तुलना,
समझ नहीं सकते मेरी हर बात,
बतला रहा अपनी योजनाएं तुम्हें,
कोई नहीं कर सकता बदलाव ।

चुने यहोवा ने इस्राएल के वंशज,
और थामा यहोवा ने उनका हाथ,
करते नहीं जो उसका अनुसरण,
निराशा ही लगेगी बस उनके हाथ ।

कहा सिय्योन को यहोवा ने,
तेरे बच्चे तेरे पास लौट आएँगे,
किया पराजित तुझे जिन लोगों ने,
अकेला तुझे छोड़ वो चले जाएँगे ।

राजा तेरे बच्चों के शिक्षक होंगे,
और राजकन्याएँ ध्यान रखेंगी उनका,
जानेगा तू कि मैं यहोवा हूँ जब,
तेरी चरणधूल बनेगी उनका टीका ।

यहोवा का क्रोध विष का प्याला,
दुर्बल हो गए तुम पीकर जिसे,
पर उसका क्रोध अब दूर हो रहा,
तुम्हारे शत्रु सहेंगे अब इसे ।

कष्ट देते देह को उपवास रख,
मदद कुछ करते नहीं लोगों की,
सहारा बनो, बोझ बांटों औरों का,
यहोवा को प्रसन्न करेगी नेकी ।

पर्याप्त है यहोवा तुम्हारी रक्षा को,
पर तुम्हारे पाप तुम्हारे आड़े आते,
आपस में बुराई करते हो तुम,
सो तुम शांति का मार्ग नहीं पाते ।

हे यरूशलेम ! सचेत हो, उठ जा,
चमकेगी तुझ पर यहोवा की महिमा,
ढका अंधेरे ने सारे जग को,
तेरे प्रकाश को समझेगी सारी दुनिया ।

कर्मों का भुगतान हुण्डी की तरह,
करना होगा भुगतान सबको जिसका,
अपने पापों के अपराधी हो तुम,
भोगना ही होगा तुम्हें दण्ड जिसका ।

यहोवा कहता है मैं रचना करूँगा,
एक नए स्वर्ग और धरती की,
आनन्द से परिपूर्ण होगा यरूशलेम,
होगी ना उसमें कभी कोई कमी।

यरूशलेम ने कष्ट सहे थे पहले,
पर अब यरूशलेम वैभवशाली होगा,
तुम स्वतंत्र हो घास से बढ़ोगे,
यहोवा की शक्ति का परिचय होगा।

एक नए संसार को रचूँगा मैं,
तुम्हारे वंशज जिसमें मेरे साथ रहेंगे,
किन्तु जिन्हौंने मेरे विरुद्ध पाप किए,
अपने पापों का दण्ड अवश्य भुगतेंगे।

यिर्मयाह

बिन्यामिन्यों का याजक यिर्मयाह,
शुरू करी बातें उससे यहोवा ने,
जब कहा उसने बालक हूँ मैं,
उसके मुँह को छुआ यहोवा ने।

कहा, अपने शब्द तुम्हें दे रहा हूँ,
बनाया तुम्हें राष्ट्रों का अधिकारी,
जो चाहो उनके साथ कर सकते हो,
विनाश या निर्माण, मर्जी तुम्हारी।

बना रहा हूँ तुम्हें एक लौहपुरुष,
ताकि कह सको विरुद्ध यहूदा के,
बाल न बाँका कर सकेंगे तुम्हारा,
क्योंकि मेरे साथ हो तुम अब से।

यहोवा कहता है हितैषी था तुम्हारा,
निकाल के लाया तुम्हें मिस्र से,
पर करने लगे तुम बुरे काम,
रंगे हैं तुम्हारे हाथ खून से।

करने लगे मिथ्या देवताओं की पूजा,
इस्राएल और यहूदा ने किया दगा,
यदि बदलते नहीं तुम लोग,
तो मैं कभी ना करूँगा क्षमा।

कहा यिर्मयाह ने मेरी चेतावनी सुनो,
भरा हूँ मैं यहोवा के क्रोध से,
दण्ड देने को है तुम्हें यहोवा,
छीन लिए जाएँगे तुम्हारे घर तुमसे।

यहोवा ने कहा, दो यह उपदेश,
अपना जीवन बदलो, अच्छे काम करो,
विधवा और अनाथों की करो सहायता,
अन्य देवताओं का अनुसरण ना करो।

यिर्मयाह कहो यहूदा के लोगों से,
तुम्हारे पूर्वजों ने मिस्र को छोड़ा जबसे,
भेजे मैंने नबी, पर की तुमने अनसुनी,
बुराई में पूर्वजों को भी छोड़ा पीछे।

यहोवा ने दुत्कारा इस पीढ़ी को,
किया उन्होंने मन्दिर को गन्दा,
देवमूर्तियाँ वहाँ की स्थापित,
तोपेत में दी बच्चों की बलियाँ ।

कहा यहोवा ने वो समय आ रहा,
दूँगा दण्ड, जो खतना शरीर से कराए,
पर जैसा परमेश्वर के लोगों को चाहिए,
हृदय से खतना ग्रहण ना कर पाए ।

यहोवा अतुलनीय, शक्तिशाली, महान,
सारी सृष्टि का वो ही एक राजा,
करना चाहिए हरेक को तेरा सम्मान.
पालन करें जो की थी उससे वाचा ।

यिर्मयाह के विरुद्ध योजनाएँ बनाते,
दिया यहोवा ने सन्देश सूखे का,
मृत्यु दरवाजे पर दे रही दस्तक,
सिर पर मंडरा रहा भय शत्रु का ।

दिया सन्देश यहोवा ने यिर्मयाह को,
करना नहीं चाहिए तुम्हें विवाह,
पैदा होंगे जो बच्चे यहाँ पर,
भयंकर मृत्यु की तकेंगे राह ।

दफनाने वाला मिलेगा ना कोई,
ना कोई पीछे रोने वाला बचेगा,
शत्रु ले जाएँगे यहूदा को पकड़कर,
हर पाप का दूना दण्ड मिलेगा ।

यहोवा का सन्देश जो लोग पूछते,
कहा यिर्मयाह जाए कुम्हार के पास,
जैसे वो बर्तन के दोष मिटाता,
यहोवा भी कर सकता, उनके साथ ।

पर हठी हैं वो ना मानेंगे,
कोशिश तुम्हारी व्यर्थ होगी,
यिर्मयाह जाकर उनसे कह दो,
अब तुम्हारी बर्बादी ही होगी ।

तभी यिर्मयाह को पिटवाया गया,
काठ में फँसा रखा गया रात भर,
बोला यिर्मयाह मजाक बन गया मैं,
पर यहोवा का विश्वास भरा भीतर ।

किया निवेदन राजा सिदकिय्याह[36] ने,
यहोवा से हमारे लिए प्रार्थना करे,
बोला यिर्मयाह यहोवा क्रोधित है,
दण्ड निश्चित, जो बुरे कर्म करे ।

राजा यहोशाहाज[37] और यहोयाकीम[38],
इनके विरुद्ध करेगा यहोवा न्याय,
किए जाएँगे पापों के लिए दण्डित,
अपना लाभ देखते, करते अन्याय ।

कहा, यहूदा के नबी और याजक,
पापी हैं, भ्रमित करते रहते,
नहीं स्वर्गीय परिषद में शामिल वो,
कहा नहीं कुछ मैंने उनसे ।

[36] सिदकिय्याह-यहूदा (राजधानी यरूशलेम) का राजा सिदकिय्याह ।
[37] यहोशाहाज-पिता योशिय्याह की मृत्युपरांत यहूदा का राजा ।
[38] यहोयाकीम- राजा योशिय्याह का पुत्र ।

कहता है यहोवा मैं परमेश्वर हूँ,
यहाँ हूँ, वहाँ हूँ, और हूँ सर्वत्र,
दूर नहीं हूँ कहीं से भी मैं,
कुछ छिपा ना मुझसे, सब प्रत्यक्ष ।

यिर्मयाह ने कहा, कहता है यहोवा,
जहर के प्याले सा क्रोध उसका,
मना किया वो ही काम किए,
मरण होगा अब उन सबका ।

कहो पूजा करने आने वालों से,
माननी चाहिए उन्हें मेरी आज्ञा,
बार-बार भेजे तुम्हारे पास नबी,
पर करते रहे तुम उनकी अवज्ञा ।

करोगे ना यदि मेरी आज्ञा का पालन,
उजाड़ दूँगा मन्दिर, तुम्हें दण्ड दूँगा,
सुना सभी ने यिर्मयाह को यह कहते,
कैसे हिम्मत की उसने पकड़ के पूछा ।

राजा के महल तक पहुँची बात,
यिर्मयाह बोला यह सन्देश यहोवा का,
यदि मारना चाहते मुझ निरपराध को,
सिद्ध होगा अपराध सारे नगर का ।

सोचा यदि चोट पहुँचाएँगे उसको,
तो बुलाएंगे हम विपत्तियाँ ख़ुद पर,
कुछ ने किया समर्थन यिर्मयाह का,
टला संकट जो आया था उस पर ।

फिर आया सन्देश यहोवा का, कहो,
एदोम, मोआब आदि के राजाओं को,
चाहे जिसे मैं दे सकता हूँ धरती,
दिए तुम्हारे देश अब नबूकदनेस्सर[39] को ।

हनन्याह नामक नबी हुआ उन दिनों,
झूठी घोषणा की यहोवा के नाम से,
यिर्मयाह को मालूम चला तो कहा,
उठा लेगा यहोवा, मृत्यु आएगी उसे ।

बाबुल में बन्दी बने यहूदियों को,
यिर्मयाह ने पत्र में लिख भेजा,
तुम जहाँ हो वहीं समृद्ध बनो,
यहोवा निभाएगा अपनी प्रतिज्ञा ।

सत्तर वर्ष रहेगा बाबुल शक्तिशाली,
फिर यरूशलेम ले जाएगा तुम्हें,
और जो रह गए अभी यरूशलेम में,
अपमान मिलेगा, जहाँ जाएँगे उन्हें ।

यहोवा कहता है इस्राएल के लोगों से,
करता हूँ प्रेम, सवारूँगा मैं तुम्हें,
पहले उन्हें फटकार लगाईं थी मैंने,
अब ध्यान दूँगा बनाने में उन्हें ।

समय आ रहा है जब करूँगा मैं,
इस्राएल और यहूदा से नयी वाचा,
रखूँगा अपनी शिक्षा उनके दिल में,
और हृदय पर उनके लिखूँगा वाचा ।

---

[39] नबूकदनेस्सर-बाबुल का राजा ।

मैं उनका परमेश्वर क्षमा कर दूँगा,
कर दिया उन्होंने जो बुरा काम,
फिर बनेगा यरूशलेम यहोवा के लिए,
ना कभी लेगा नष्ट होने का नाम।

यहोवा कहता है वो समय आ रहा,
पूरा करूँगा जब मैं वचन अपना,
दाऊद परिवार सिंहासन ग्रहण करेगा,
लेवी परिवार से याजक का चुनना।

फिर मिला यहोवा का सन्देश,
कहा यिर्मयाह बुलाओ रेकाबियों को,
और मन्दिर में उन्हें ले जाकर,
कहो उन्हें दाखमधु पीने को।

मना कर दिया पीने से उन्होंने,
कहा, कुछ काम मना किए थे उन्हें,
यहोवा ने कहा लो इनसे सबक,
पूर्वजों का अनुसरण पसन्द इन्हें।

फिर यहोवा ने कहा सब सन्देश,
पत्रकों पर लिख सुनाओ यहूदा को,
मन्दिर में जा बारुक ने सुनाया,
खबर लगी इसकी अधिकारियों को।

राजा यहोयाकीम ने भी सुने सन्देश,
सुनकर चाकू से काटा पंक्तियों को,
वहीं अंगीठी पास में रखी थी उसमें,
यहोयाकीम ने जला दिया पत्रकों को।

जब सिदकिय्याह यहूदा का राजा था,
कहा अपने लिए उसे प्रार्थना को,
पर यहोवा ने दिया यह सन्देश,
हराएगी बाबुल की सेना उसको।

काम से बाहर जा रहा था यिर्मयाह,
बाबुल से मिला समझ पकड़ा गया,
पहले कूपगृह में डाला उसे फिर,
महल के प्रांगण में बन्दी रखा गया।

फिर उपदेश सुन अधिकारियों ने,
डाल दिया हौज में यिर्मयाह को,
राजा से पूछ एबेदमेलेक ने,
बाहर निकलवाया कीचड़ से उसको।

सिदकिय्याह ने पूछा यहोवा का सन्देश,
यिर्मयाह को निर्भय रहे, वचन दिया,
कहा उसे जीवित बच सकेगा वो यदि,
बाबुल की सेना को आत्मसमर्पण किया।

उधर यिर्मयाह को मिला एक सन्देश,
एबेदमेलेक पर करी कृपा यहोवा ने,
घटी घटनाएँ यहोवा ने कहा जैसे,
यिर्मयाह आज़ाद किया नबूजरदान ने।

गदल्याह बना यहूदा का प्रशासक,
मारा उसे इश्माएल नामक व्यक्ति ने,
कोरह के पुत्र योहानान ने पकड़ा,
पर भाग गया अम्मोनियों के पास में।

योहानान भी भाग गया मिस्र को,
सोचा कसदी[40] क्रोधित होंगे उससे,
रास्ते में दोनों ने यिर्मयाह से कहा,
उनके बारे में वो पूछे यहोवा से ।

सन्देश मिला यहूदा में ही रहें,
मारे जाओगे मिस्र में, कहा उनसे,
हठी और घमण्डी, ना माने वो,
सोचा, चाहता मिले दण्ड बाबुल से ।

उधर यिर्मयाह को सन्देश मिला,
मिस्र में बसे यहूदाओं के लिए,
यहूदा, यरूशलेम के लोगों के जैसे,
दण्ड मिलेगा बुरे कर्मों के लिए ।

करी असत्य देवताओं की पूजा,
तुम्हारे पूर्वजों ने किए अपराध,
भूख और तलवार से मरते जाएँगे,
जब तक हो ना जाते समाप्त ।

कुछ थोड़े से जो बच निकलेंगे,
मिस्र से यहूदा वे वापस लौटेंगे,
तब जानेंगे वे यहोवा सत्य है,
पर तब वे कुछ कर ना सकेंगे ।

दिया सन्देश राष्ट्रों के बारे में,
मिस्र, पलिश्ती आदि के लिए कहा,
असत्य देवताओं के कारण हारेंगे,
हो जाएगा बाबुल मरुभूमि सा ।

मेरे लोग हो गए खोई भेड़ से,
अश्शूर और बाबुल ने खाया जिसे,
क्षमा कर रहा यहूदा व इस्राएल को,
परमेश्वर ने कभी ना छोड़ा इन्हें ।

यिर्मयाह ने भिजवाया संदेश बाबुल को,
भयंकर घटनाएँ जो उसके साथ घटेंगी,
डूबेगा नदी में पत्थर सा बाबुल,
फिर किसीको उसकी खबर ना लगेगी ।

युद्ध हुआ यहूदा और बाबुल में,
यरूशलेम के सैनिक गए भाग,
पकड़ लिया गया राजा सिदकिय्याह,
और निकाल ली गयी उसकी आँख ।

नबूज़रदान ने जला डाला मन्दिर,
सब सामान तहस-नहस कर डाला,
बना लिए बचे हुए लोग बन्दी,
फिर सिदकिय्याह को भी मार डाला ।

यहूदा का राजा यहोयाकीम रहा,
सैंतीस वर्ष बाबुल के बन्दीगृह में,
एबीलमरोदक बना बाबुल का राजा,
तब छोड़ दिया यहोयाकीम को उसने ।

[40] कसदी-बाबुल के लोग ।

विलापगीत

रोते है यरूशलेम और यहूदा,
जाता रहा सब सुख उनका,
दुःख से भरी सिय्योन की राहें,
शत्रुओं ने लूटा वैभव उसका ।

क्रोधित हो नष्ट किया यहोवा ने,
यरूशलेम, यहूदा और सिय्योन को,
उसको ज़रा भी दया ना आई,
खुशी से उसने भरा दुश्मनों को ।

पर याद रखना चाहिए लोगों को,
बिसारता नहीं यहोवा सदा के लिए,
रखता है कृपा दण्ड देने में भी,
वह अपने प्रेम और दया के लिए ।

आती हैं बुरी-भली सब बातें,
यहोवा ही सबका परम नियन्ता,
जब देता वो पापों का दण्ड,
कैसे कोई शिकायत कर सकता ?

आओ करें प्रार्थना परमेश्वर से,
हमने पाप किए और हठी बने,
भयभीत हो गिरे गर्त में हम,
क्षतिग्रस्त हो हम टूट चुके ।

हे यहोवा ! मैं विलाप करता रहूँगा,
जब तक तू देखे ना हमको,
जब-जब दी तेरी दुहाई मैंने,
बचाता रहा सदा ही तू हमको ।

बहुमूल्य थे सिय्योन के निवासी,
और समर्पित थे यहूदा के लोग,
पर आज कोई पहचानता नहीं,
घोर विपत्तियाँ सह रहे वे लोग ।

बुरे काम किया करते थे याजक,
और पाप किए उनके नबियों ने,
नेक लोगों को देते थे तकलीफ,
सब उल्टे ही काम किए उन्होंने ।

हे यहोवा ! हम अनाथ हो गए,
परदेशियों के हाथों हुए मजबूर,
बोझ उठाते कन्धों पर जुए का,
राहत से हुए हम कोसों दूर ।

हो रहे भूख से हम बेहाल,
बेइज्जत की जाती हैं स्त्रियाँ,
चढ़ाए गए राजकुमार फाँसी पर,
मन में बची ना कोई खुशियाँ ।

रहम कर हम पर, हे यहोवा !
मोड़ ले हमें तू अपनी ओर,
प्रसन्नता से लौट आएँगे तेरे पास,
बिसरा ना हमें, देख हमारी ओर ।

यहेजकेल

बूनी का पुत्र था याजक यहेजकेल,
स्वर्ग का द्वार खुला उस पर,
मिला उसे यहोवा का सन्देश,
उतरी यहोवा की शक्ति उस पर ।

देखी बादल में आग चमकती,
चार विचित्र प्राणी बादल के भीतर,
चार-चार अलग-अलग सिर उनके,
और चारों के ही थे चार-चार पर ।

द्रुत गति से दौड़ते थे वो,
जैसे बिजली कोई चलती हो,
चक्र देखे उन प्राणियों के साथ,
चक्रों के साथ ही चलते थे वो ।

उल्टे कटोरे सा कुछ उनके सिर पर,
जिसके ऊपर एक सिंहासन था,
मनुष्य सा कोई बैठा था उस पर,
एक ज्वाला सा जो चमक रहा था ।

दिखा वो यहोवा की महिमा सा,
कहा मुझे इस्राएल को कहने को,
नबी बना तुम्हें भेज रहा हूँ मैं,
कुछ ना बिगाड़ सकेंगे तुम्हारा वो ।

दिया गोल पत्रक, कहा खा जाओ,
और जाकर इस्राएलियों को सुनाओ,
मीठा था वो शहद के जैसे,
कहा, बताओ निष्कासित लोगों को ।

उठा ले जाया गया मैं तेलाबीब,
कहा, अपना सन्तरी बना रहा हूँ तुम्हें,
बताऊँगा तुझे जो बुरी बातें घटेंगी,
उनकी चेतावनी देनी होगी तुम्हें ।

बदल ले आचरण तो वो बच जाएगा,
वरना मरेगा अपने पाप के कारण,
गर तुमने ना दी चेतावनी उसे तो,
होंगे तुम भी उत्तरदायी, उस कारण ।

फिर यहोवा की शक्ति आई मुझ पर,
कहा उसने मुझे घर जाने को,
तालू से मेरी जीभ चिपका दी जाएगी,
ताकि कुछ कह ना सकूं मैं उनको ।

इशारों में बताऊँ, यरूशलेम घिरेगा,
और यहूदा भी[41] दण्डित होगा,
निश्चित किया क्या खाऊँगा-पीऊँगा,
जो अपवित्र अग्नि पर पका होगा ।

[41] यहूदा भी-इस्राएल 390 वर्ष और यहूदा 40 वर्ष दण्ड भुगतेगा ।

अपवित्र अग्नि पर पकायी वह रोटी,
और तीन प्याले पानी, दिन का भोजन,
संकेत था अपना देश इस्राएल छोडकर,
इस्राएली करेंगे वहाँ अपवित्र भोजन ।

फिर कहा बाल और दाढ़ी को काटो,
बताएँगे यरूशलेम के लोगों का हाल,
कुछ नगर में, कुछ बाहर जाकर मरेंगे,
और कुछ की करूँगा मैं देखभाल ।

मिलेगा यरूशलेम को अवज्ञा का दण्ड,
भयानक विपत्तियाँ लाऊँगा उन पर,
देता रहा बार-बार उन्हें चेतावनी,
पर क्रोध दिलाया मुझे उन पर ।

अचानक यहोवा की शक्ति उतरी,
ले गई मुझे वो यरूशलेम को,
दिखलाया लोग और प्रमुख पूज रहे,
देवमूर्तियाँ और पशु-पक्षियों को ।

तभी वहाँ पर आए छह व्यक्ति,
एक के पास स्याही और कलम थी,
कहा, भयंकर कामों से हैं जो दुखी,
उनके माथों पर लगाए वो एक बिंदी ।

तब परमेश्वर ने बाकी पाँचों से कहा,
करो अनुसरण पहले व्यक्ति का,
और जिनके ललाट पर चिन्ह नहीं,
कर दो वध तुम उन लोगों का ।

फिर सिंहासन पर बैठे व्यक्ति ने,
कहा, अंगारे यरूशलेम पर फेंक दो,
बनाते रहते ये बुरी योजनायें,
बहलाते रहे झूठ से ये ख़ुद को ।

फिर आत्मा ने मुझे हवा में उठाया,
बाबुल में आ मैंने लोगों को बताया,
बातें की मैंने निर्वासित लोगों से,
बताया वो जो यहोवा ने दिखाया ।

यहोवा के विरुद्ध करते जो राष्ट्र,
कहा यहोवा ने दण्ड दूँगा उन्हें ,
लज्जित होंगे पापों को याद कर,
तब मैं फिर से अपनाऊँगा उन्हें ।

यहूदा के साथ क्या करेगा बाबुल,
और कैसे क्या हश्र होगा उसका,
छड़ी का प्रयोग किया अब तक,
प्रयोग करूँगा अब शमशीर का ।

कहा, यरूशलेम के नबी और याजक,
करते नहीं मेरे आदेश का पालन,
किये नबियों ने कई जीवन नष्ट,
याजकों का बिगड़ गया आचरण ।

तब यहोवा का वचन मिला मुझे,
कर रहा दूर तुम्हारी पत्नी तुमसे,
लोगों को बताया, अचरज से भरे,
पत्नी चल बसी, मुझे कहा जैसे ।

कहा यहोवा ने, अम्मोनियों से कहो,
तुम प्रसन्न थे इस्राएल नष्ट हुआ,
यहूदा और यरूशलेम के वक्त भी,
तुम थिरके, मन प्रसन्न हुआ ।

दूँगा तुम्हें मैं पूर्व के देशों को,
डेरा डालेंगी सेनाएँ तुम्हारे देश में,
पाओगे दण्ड जो तुमने किया,
यहोवा हूँ मैं तब आएगा समझ में ।

फिर यहोवा ने कहा क्या करेगा,
वो मोआब और सेईर[42] के साथ,
पलिश्तियों व सोर को नष्ट करेगा,
और ऐसा ही करेगा सीदोन के साथ ।

रोकेंगे राष्ट्र इस्राएल पर हँसना,
बुरा घटेगा उन राष्ट्रों के साथ,
बिखरे इस्राएली एकत्र करूँगा,
रखूँगा उन्हें सुरक्षा के साथ ।

कहो मिस्र और फिरौन के विरुद्ध,
उठाएगा ना कोई, भूमि पर गिरोगे,
इस्राएलियों की पीठ को तोड़ा-मरोड़ा,
चालीस वर्ष तक तुम उजड़े रहोगे ।

नबूकदनेस्सर सोर जीत ना सकेगा,
पर दूँगा उसे मिस्र पुरस्कार में,
होगा मिस्र के सहायकों का पतन,
हर प्रकार से दण्ड मिलेगा उन्हें ।

यहोवा ने यहेजकेल को चुना,
सौंपी इस्राएल परिवार की पहरेदारी,
कहा, कहो जाकर यह उनसे,
नहीं देखना चाहता मृत्यु तुम्हारी ।

आनन्दित नहीं होता मैं देख कर,
पापी व्यक्तियों को भी मरता,
चाहता हूँ बदलें वे अपना जीवन,
छोड़ दें बुरे कामों का रस्ता ।

फिर कहा यहोवा ने, मनुष्य के पुत्र,
मेरे लिए इस्राएल के पर्वतों से कहो,
जिन राष्ट्रों से तुम्हें अपमान मिला,
अपमान का कष्ट अब सहेंगे वो ।

जब इस्राएलियों ने देश गन्दा किया,
दण्ड दिया, देशों में बिखराया,
बदनाम किया मेरा नाम वहाँ भी,
अब रोकूँगा उन्हें, मन बनाया ।

इकठ्ठा कर वापस देश लाऊँगा,
धो डालूँगा तुम्हारे सब पापों को,
भरूँगा नई आत्मा भी तुम में,
और आबाद करूँगा तुम लोगों को ।

फिर सूखी हड्डियों का दर्शन कराया,
किया नवजीवन का उनमें संचार,
कहा, इसी तरह से इस्राएलियों को,
लूँगा उन्हें उनके कष्टों से उबार ।

फिर दो अलग-अलग छड़ी देकर,
उन्हें जोड़ मुझे सन्देश दिया,
यहूदा, इस्राएल और एप्रेम,
पूरे इस्राएल को जोड़ एक किया ।

फिर गोग और सेना के विरुद्ध,
मिला मुझे सन्देश यहोवा से,
नष्ट किए जाएँगे वे सब लोग,
इस्राएल की माटी होगी शुद्ध इससे ।

[42] सेईर-एदोम ।

बन्दी बनाए जाने के पचचीसवें वर्ष में,
यहोवा की शक्ति उतरी मुझ पर,
परमेश्वर मुझे इस्राएल देश ले गया,
दिखाया विशाल भवन पर्वत पर ।

दिखा मुझे एक चमकता व्यक्ति,
नाप जोख करी उसने मन्दिर की,
बाहर, भीतर, पवित्र स्थान और कमरे,
बारीकी से माप करी प्रत्येक की ।

तब उतरी परमेश्वर की महिमा,
झुककर मैंने उसे प्रणाम किया,
कहा, मैं यहाँ मन्दिर में रहूँगा,
और बतलाई मुझे सब विधियाँ ।

कहा, बतलाओ इस्राएलियों को सब,
लेकिन जो उन्होंने किया अतीत में,
लेवीवंशी[43] नहीं, पर सादोक के वंशज,
भेंट लाएँगे मेरे लिए अब मन्दिर में ।

फिर यहोवा ने सब शिक्षाएँ दोहराईं,
पालन करना होगा जिन्हें याजकों को,
भूमि का विभाजन, फसह पर्व आदि,
किस तरह क्या करना इस्राएलियों को ?

दानिय्येल

जब यहूदा को नबूकदनेस्सर ने हराया,
हथिया लिया मन्दिर का सामान उसने,
अशपनज नामक खोजों के प्रमुख को,
इस्राएली युवकों हेतु दिए आदेश उसने ।

कहा, चुस्त और बुद्धिमान युवकों को,
कसादी भाषा की शिक्षा दी जाए,
तीन वर्ष खिला-पिला व प्रशिक्षण दे,
राजा की सेवा में उन्हें लिया जाए ।

दानिय्येल नामक एक युवक था इनमें,
सादा भोजन ही उसने करना चाहा,
मना किया उत्तम भोजन और दाखमधु,
क्योंकि अशुद्ध ना उसने होना चाहा ।

और तीन युवक थे साथ में उसके,
परमेश्वर ने करी कृपा उन पर,
उन चारों को दी विशेष योग्यताएँ,
दानिय्येल को दी बुद्धि प्रखर ।

[43] लेवीवंशी- लेवीवंशी याजक तो रहेंगे लेकिन बलियाँ चढ़ाने और यहोवा के समक्ष भेंट लाने का अधिकार नहीं होगा ।

हर प्रकार के दिव्य दर्शनों को,
और स्वप्नों को समझ सकता था,
बना दिए गए चारों वो सेवक,
दानिय्येल राजा की सेवा में रहा ।

फिर नबूकदनेस्सर ने देखा स्वप्न,
अर्थ पूछा स्वप्न को बिना बताए,
बुलवाए गुणी और ओझा लोग,
स्वप्न जाने बिना, बता ना पाए ।

राजा क्रोधित हुआ उन सब पर,
दानिय्येल को भी यह खबर लगी,
रात एक दर्शन में अर्थ समझाया,
करी उसने जो यहोवा से विनती ।

बताया राजा को क्या देखा उसने,
और करी उसने व्याख्या स्वप्न की,
संतुष्ट हुआ नबूकदनेस्सर सुन कर,
सर्वोपरिता स्वीकार करी यहोवा की ।

राजा ने स्थापित की थी एक प्रतिमा,
सभी बाध्य थे उसके आगे झुकने को,
पर शद्रक, मेशक और अबेदनगो[44] ने,
स्वीकारा ना उसके आगे झुकने को ।

दण्ड स्वरुप वे तीनों के तीनों,
फेंके गए बाँध धधकती भट्टी में,
पर राजा नबूकदनेस्सर को दिखे,
चार लोग चलते-फिरते भट्टी में ।

वे चारों व्यक्ति खुले हुए थे,
कुछ बिगाड़ ना पाई आग उनका,
राजा नबूकदनेस्सर को चौथा व्यक्ति,
दिखलाई दिया एक स्वर्गदूत सा ।

आश्चर्यचकित था नबूकदनेस्सर देख,
कहा उन्हें भट्टी से लाओ बाहर,
हे परम प्रधान परमेश्वर के सेवकों,
तुरंत भट्टी से निकल आओ बाहर ।

आग से निकल आए वो सुरक्षित,
स्वर्गदूत भेज की रक्षा उनकी,
कहा यहोवा इनका परम परमेश्वर,
जो विरोध करेगा सज़ा पाएगा उसकी ।

फिर नबूकदनेस्सर ने देखा सपने में,
जंगल में एक घना विशाल पेड़,
एक स्वर्गदूत के आदेश पर काटा गया,
बस जड़ें और तना भर रह गया पेड़ ।

दानिय्येल ने अर्थ बताया सपने का,
कहा, वो विशाल पेड़ हैं स्वयं आप,
विवश होंगे दूर जाने के लिए और,
सात वर्ष बाद फिर राज पाएँगे आप ।

घटा वैसे ही जैसे बताया दानिय्येल ने,
नबूकदनेस्सर को जाना पड़ा जंगल में,
सात वर्ष बाद जानी यहोवा की महत्ता,
अहंकार मिटा, पाया राज्य वापस उसने ।

---

[44] शद्रक, मेशक और अबेदनगो- दानिय्येल के साथ राजा की सेवा में लिए गए तीन युवक ।

वक्त बीता, उसके पोते बेलशस्सर ने,
किया मन्दिर के पात्रों का दुरूपयोग,
उन पात्रों में उसने दाखमधु डलवाई,
कहा, उस दाखमधु को पिएँ लोग ।

तभी अचानक एक हाथ प्रकटा,
और शुरू किया दीवार पर लिखना,
भयभीत हो काँपने लगा बेलशस्सर,
जो लिखा गया, समझ सका ना ।

कहा माँ ने दानिय्येल को बुलाए,
पढ़ा उसने जो लिखा दीवार पर,
मने, मने तकेल और उपसींन,
लिखा गया था यह दीवार पर ।

कहा, गिने गए तेरे राज के दिन,
और तू तराजू पर तौला गया,
छीना जा रहा है तेरा राज्य क्योंकि,
तू तौल में पूरा ना पाया गया ।

सम्मान किया उसने दानिय्येल का,
उपहार और बड़ा पद उसे दिया,
लेकिन उसी रात राजा बेलशस्सर को,
'दारा' द्वारा मार दिया गया ।

हाकिम बनाया दानिय्येल को दारा ने,
करने लगे कुछ लोग इर्ष्या उससे,
तीस दिन दारा की ही पूजा करें,
लिखवा लिया उन्होंने दारा से ।

फेंका जाएगा शेरों की माँद में,
वो जो उल्लंघन करेगा इसका,
लेकिन दानिय्येल दिन में तीन बार,
करता था यहोवा से प्रार्थना ।

करी शिकायत दारा से उसकी,
शेरों की माँद में वो डाला गया,
दारा चाहता था बचा रहे दानिय्येल,
करी प्रार्थना, उससे सोया ना गया ।

भोर होते ही उठ दौड़ा वो,
दानिय्येल को सकुशल पाया,
कहा परमेश्वर ने स्वर्गदूत भेज,
शेरों का मुँह बन्द कर बचाया ।

बहुत प्रसन्न हुआ राजा दारा,
दानिय्येल को निकलवाया उसने,
शिकायतकर्ताओं को परिवार सहित,
शेरों के आगे फेंकवाया उसने ।

बेलशस्सर के राज के पहले वर्ष,
मुझ दानिय्येल ने विचित्र सपना देखा,
चार पशु और दस सींग देखे,
और एक छोटा सींग उगते देखा ।

शक्ति छीन ली गयी तीन पशुओं की,
और मार दिया गया चौथे पशु को,
उखाड़े तीन सींग उस छोटे सींग ने,
और डींगे मारता था छोटा सींग वो ।

बतलाया गया वे पशु चार राज्य हैं,
उभार होगा धरती से जिनका,
और वो चौथा पशु चौथा राज्य है,
सब कहीं विनाश करेगा जो सबका ।

एक अलग राजा होगा बाद में,
फिर होगा अंत इन सबका,
अमर राज्य पाएँगे परमेश्वर के लोग,
अटल रहेगा वो राज्य सदा ।

एक और दर्शन मिला दानिय्येल को,
शुशन नगर में एक मेढ़े को देखा,
दो लम्बे-लम्बे सींग, बहुत बलशाली,
जिन्हें इधर-उधर उसे मारते देखा ।

फिर पश्चिम से आता एक बकरा देखा,
उसकी आँखों के बीच था लम्बा सींग,
क्रोधित हो उसने मेढ़े को ललकारा,
और तोड़ डाले उस मेढ़े के सींग ।

बहुत शक्तिशाली हो गया वो बकरा,
पर फिर टूट गया उसका वो सींग,
चार सींग निकल आए उसकी जगह,
निकला उनमें से एक छोटा सींग ।

बढ़ते-बढ़ते वो बहुत बड़ा हो गया,
रोकी परमेश्वर को अर्पित बलियाँ,
उजाड़ दिए सब उपासना स्थल,
और स्वयं को उसने स्थापित किया ।

अभी मैं विचार में ही डूबा था,
कि सामने आया कोई मनुष्य सा,
कहा, इस व्यक्ति को जिब्राएल,
अर्थ समझा दो इसके दर्शन का ।

जिब्राएल ने बताया उस मेढ़े के,
मादी और फारस हैं वो सींग,
वह बकरा है राजा यूनान का,
पहला राजा है वो बड़ा सींग ।

उसके बाद चार राज्य होंगे,
पर पहले जैसे मजबूत नहीं,
फिर एक क्रूर भयंकर राजा,
चारों ओर जो मचाएगा तबाही ।

फिर होगा उसकी शक्ति का अंत,
पर मनुष्य के हाथों नहीं होगा,
इस दर्शन पर मुहर लगा रख दे,
अभी बहुत समय यह नही होगा ।

फिर हिद्देकेल नदी के किनारे,
दानिय्येल ने दिव्य पुरुष देखा,
कहा भविष्य में जो घटने वाला,
तुझे बतलाने को मुझे भेजा ।

बतलाया क्या होगा फारस में,
उत्तर और दक्षिण में क्या होगा,
लड़ते रहेंगे आपस में बहुत वक़्त,
परस्पर हानि पहुँचाने का मन होगा ।

लड़ मरेंगे आपस में ये राजा,
अंत उनका बुरा ही होगा,
आएगा एक अतीव घोर समय,
तब मीकाएल[45] उठ खड़ा होगा ।

लिखा नाम जीवन की पुस्तक में,
हर वह व्यक्ति बच जाएगा,
मर चुके जो असंख्य लोग,
उनका फैसला भी किया जाएगा ।

[45] मीकाएल-प्रधान स्वर्गदूत, यहूदियों का संरक्षक ।

मेरे लिए कहा उस व्यक्ति ने,
तुझे तेरा विश्राम प्राप्त होगा,
अंत में अपना भाग पाने हेतु,
मृत्यु से तू फिर उठ खड़ा होगा ।

होशे, योएल, आमोस, ओबद्याह, मीका

इन अध्यायों में वर्णित है,
वे बातें जो पहले कही जा चुकी,
यहूदा, इस्राएल का दण्डित होना,
और फिर उनके पुनरुत्थान की ।

योना

यहोवा ने कहा नीनवे जाए योना,
क्योंकि नीनवे ने किए हैं बुरे काम,
जाकर कहे वो वहाँ के लोगों से,
छोड़ दे वे करना वो बुरे काम ।

पर सुनना नहीं चाहता था योना,
सोचा चला जाऊँ दूर यहोवा से,
तर्शीश जा रही एक नौका में बैठ,
योना चल दिया दूर यहोवा से ।

पर यहोवा ने तूफ़ान ला दिया,
प्रबल तूफ़ान, मल्लाह डर गए,
कोशिश में लगे, नाव बचा लें,
देवताओं को वो पुकारने लग गए ।

फेंके पासें क्यों आया तूफ़ान जानने,
जाना योना था कारण इसका,
पूछा जो योना से बताया उसने,
यहोवा से दूर जाना कारण इसका ।

बोला शान्त करना चाहते तूफ़ान,
तो समुद्र में तुम मुझे फेंक दो,
चाहते नहीं थे वो ऐसा करना,
पर कुछ नहीं कर सकते थे वो ।

सो लोगों ने पुकारा यहोवा को,
और फेंक दिया योना को पानी में,
कहा, किसी निरपराध के वध का,
दोषी ना ठहराना, हे यहोवा ! हमें ।

तूफ़ान रुका, समुद्र शान्त हो गया,
लोगों की आई जान में जान,
उधर योना को मछली ने निगला,
यहोवा ने बचा लिए उसके प्राण ।

तीन दिन रहा मछली के पेट में,
यहोवा से करी विनती उसने,
जब-जब मुझ पर विपत्ति आई,
मेरी पुकार सुनी, यहोवा तूने ।

अब जब मैं समुद्र में डूब रहा था,
प्राण बचने के ना थे आसार,
तब मैंने तेरा स्मरण किया,
और तू बना मेरा जीवन आधार ।

विनती सुनी योना की यहोवा ने,
और कहा यहोवा ने मछली से,
सूखी धरती पर ले जाकर,
योना को उगल दे अपने पेट से ।

फिर आज्ञा दी उसे यहोवा ने,
कि जो यहोवा कह रहा उससे,
नीनवे नगर को जाए योना,
और जाकर वह कहे उनसे ।

सो चल दिया योना नीनवे नगर,
तीन दिन तक उसे पड़ा चलना,
चालीस दिन बाद होगा नगर तबाह,
कहा, यहोवा ने कहा था, कहना ।

मानी लोगों और राजा ने बात,
सोचा प्रायश्चित करें पापों का,
भोजन छोड़ शोकवस्त्र पहनकर,
करें केवल भजन यहोवा का ।

परमेश्वर ने देखा उनका आचरण,
सो बदल दिया उसने मन अपना,
लेकिन योना को अच्छा ना लगा,
बोला तेरा काम बस दयालु रहना ।

मार डाल मुझे, हे यहोवा ! कह,
चला गया वो बाहर नगर से,
उधर रेंड का एक पौधा उगा,
योना पर छा गया जो तेजी से ।

छाया पा बहुत खुश हुआ योना,
पर एक कीड़े ने पेड़ खा लिया,
जब तपाया सूरज ने योना को,
बोला, बेहतर था तूने मरने दिया ।

यहोवा बोला एक पौधे के लिए,
जो ख़ुद ही उगा और सूख गया,
क्या तेरा क्रोध करना उचित है,
क्यों इससे इतना दुखी हो गया ?

गर तुझे यह व्याकुल कर सकता,
तो क्या अनुचित है यह मुझको,
बहुत लोग और पशु हैं नीनवे में,
क्यों करुणा ना दर्शाऊं मैं उनको ?

नहूम

एल्कोश प्रदेश से था नहूम,
यह उसके दर्शन की वाणी,
नीनवे से कुपित है यहोवा,
दुर्जनों को दण्ड देने की ठानी ।

सबका नियन्ता है यहोवा,
उसका हुक्म चलता सब पर,
जो रहते हैं उसके भरोसे,
यहोवा कृपा करता उन पर ।

यहोवा ने यहूदा से कहा था,
काटे जाएँगे सैनिक अश्शूर के,
तोड़ दूँगा अब जजीरें तुम्हारी,
मुक्त होंगे तुम अश्शूर से ।

यहोवा ने कहा, अश्शूर के राजा,
नष्ट कर दूँगा तेरी सब मूर्तियाँ,
सुसन्देश आ रहा यहूदा के लिए,
निपटारा होगा सब दुर्जनों का ।

तैयारी कर ले लड़ाई की नीनवे,
यहूदा को मिल रही वापस महिमा,
ठोकर खा रहे अश्शूर के सैनिक,
खतरे में पड़ चुकी है सुरक्षा ।

अब नीनवे का सब लुट गया है,
खो दिया लोगों ने साहस अपना,
अब यहोवा है विरुद्ध उसके,
मिलेगी ना उसे अब कोई सफलता ।

झूठों और हत्यारों का नगर,
इकठ्ठा किया लूट का माल उसने,
अधिक और अधिक चाहिए था उसे,
अतृप्त वेश्या सा किया उसने ।

अमोन से क्या तू उत्तम है,
उसके चारों ओर भी पानी था,
शक्तिशाली देश सहायक थे उसके,
देख उसका क्या हश्र हुआ था ।

नशे में धुत्त व्यक्ति के समान,
ऐ नीनवे ! तेरा भी पतन होगा,
शत्रु तैयार हैं तेरे विरुद्ध, नीनवे,
कुछ भी बचना सम्भव ना होगा ।

तेरे व्यापारी लूटखोर हो गए,
और हाकिम हो गए स्वार्थी,
नींद में गाफिल हैं तेरे मुखिया,
परवाह नहीं करते जो प्रजा की ।

बुरी तरह घायल हुआ तू नीनवे,
कुछ नहीं ऐसा जो भरे घाव,
प्रसन्न है सब तेरे विनाश पर,
तूने भी दिए थे उन्हें घाव ।

हबक्कूक

हबक्कूक ने पूछा यहोवा से,
हे यहोवा ! तू कब मेरी सुनेगा,
हिंसा और हानि कर रहे लोग,
लोगों को कब न्याय मिलेगा ?

तब मिला सन्देश उसे यहोवा से,
करूँगा तेरे जीते जी कुछ ऐसा,
कहने से भरोसा होगा ना तुझे,
सो तुझे यह देखना ही होगा ।

बलशाली जाति बनाऊँगा बाबुल को,
दुष्ट हैं वे और ताकतवर योद्धा,
अधिकार कर लेंगे और नगरों पर,
खूँखार होंगे भेड़ियों से भी ज्यादा ।

कहा हबक्कूक ने सब तूने रचा,
क्यों दुष्ट सज्जनों पर विजयी होते,
मछलियों सा बनाया तूने लोगों को,
शत्रुओं के काँटे में जो फँसे होते ।

यहोवा ने कहा, तू उसे लिख ले,
जो कुछ मैं दर्शा रहा हूँ तुझे,
अन्त समय से सम्बन्धित है यह,
यह सत्य सिद्ध होगा, जान इसे ।

अहंकार बना देता व्यक्ति को मूर्ख,
शान्ति और तृप्ति मिलती ना उसे,
करता है जो बुरे काम और अन्याय,
उन सबका दण्ड मिलता है उसे ।

जान जाएँगे लोग यहोवा की महिमा,
सब ओर फ़ैल जाएगा समाचार इसका,
जो औरों पर करता है क्रोध,
जान जाएगा वो क्रोध यहोवा का ।

निंदा होगी तेरी, अरे दुष्ट शासक,
लबानोन में तूने बहुत हत्याएँ की,
डर जाएगा, भयभीत हो उठेगा,
जुल्मों की अति जो उन पर की ।

रक्षा उसकी कर सकते नहीं,
चाँदी या सोने से गढ़े देवता,
लेकिन यहोवा परम परमेश्वर,
चाहिए सब करें आदर उसका ।

बोला हबक्कूक, सुना जो मैंने,
हे यहोवा ! तेरी महिमा अपरम्पार,
क्या कोई उसका वर्णन कर सकता,
क्या कोई कर सकता विचार ?

तू जब चाहे तब वैसा कर दे,
सूरज, चाँद का मिटा दे उजाला,
धरती रौंद, सागर को उलट दे,
सारी सृष्टि नियंत्रित करने वाला ।

कांपने लगा मैं वह महानाद सुन,
विनाश के दिन की बाट जो रहा,
वे जो करते हैं हम पर हमला,
उनके लिए वो दिन उतर रहा ।

चाहे लगें ना पेड़ों पर फल,
चाहे अन्न ना उपजे खेतों में,
फिर भी यहोवा में मग्न रहूँगा,
मेरा स्वामी बल भरता मुझमें ।

सपन्याह

यह सन्देश मिला सपन्याह[46] को,
हर चीज नष्ट कर देगा यहोवा,
पापी और उसमें प्रवर्त जो करती,
सब चीजें नष्ट कर देगा यहोवा ।

यहूदा और यरूशलेम के निवासी,
पूजते वे अब झूठे देवताओं को,
और हुए जो यहोवा से विमुख,
दण्ड मिलेगा अब उन सबको ।

यहोवा के न्याय के विशेष दिन,
चीखों भरे स्वर लोग सुनेंगे,
मार डाले जाएँगे अनेक लोग,
जमीं पर पड़े सड़ते रहेंगे ।

इससे पहले कि फूलों से मुरझाओ,
बदल डालो अपना ढंग जीने का,
बुराई छोड़, आओ यहोवा के पास,
सम्भव है ईरादा बदल जाए उसका ।

अज्जा नगर में बचेगा ना कोई,
छोड़ना पड़ेगा लोगों को अशदोद,
एक्रोन, कनान, पलिश्ती नष्ट होंगे,
खाली भूमि पाएँगे यहूदा लोग ।

वापस लाए जाएँगे बन्दी यहूदा,
उनके शत्रु नष्ट किए जाएँगे,
पाएँगे दण्ड नीनवे, अश्शूर आदि,
उल्लू और कौवे वहाँ राज करेंगे ।

यरूशलेम कलंकित हो पाप से तुम,
पर परमेश्वर न्यायपूर्ण बना रहा,
बुरे लोग लज्जित नहीं होते,
परमेश्वर भलाई पर डटा रहा ।

परमेश्वर कहता है कुछ शिक्षा लो,
कैसे राष्ट्र नष्ट किए हैं उसने,
यदि लौट आते हो सही राह पर,
तो वो दण्ड नहीं देगा तुम्हें ।

[46] सपन्याह-हिजकिय्याह के पौत्र का पौत्र और कुशी का पुत्र ।

कहा, लज्जित न होगा अब यरूशलेम,
निकाल बाहर करूँगा बुरे लोगों को,
दूर कर दूँगा सब घमण्डी लोग,
अपने पर्वत से दूर करूँगा उनको ।

बचेंगे बस सीधे और विनम्र लोग,
वे यहोवा के नाम में विश्वास करेंगे,
बोलेंगे ना झूठ, करेंगे ना बुरा,
और शान्ति से वो लोग रहेंगे ।

आनन्द मनाओ, यरूशलेम और इस्राएल,
रोक दिया यहोवा ने दण्ड तुम्हारा,
तुम्हारे साथ है और प्रेम करता है,
बन्दी लौटेंगे वापस देश दोबारा ।

हाग्गै

राजा दारा के शासन के दूसरे वर्ष,
हाग्गै द्वारा दिया सन्देश यहोवा ने,
करते नहीं मन्दिर बनाने की परवाह,
पर लोग बनाने में लगे घर अपने ।

पर्वत पर चढ़ो, लकड़ी लाओ,
और उससे बनाओ मन्दिर को,
प्रसन्न और सम्मानित हूँगा,
मन्दिर बनने से जानों इसको ।

यहोवा कहता है, नहीं मिलता तुम्हें,
उम्मीद करते हो तुम जितने की,
क्योंकि मेरा मन्दिर है खंडहर,
पर तुम्हें पड़ी अपने घर की ।

यह सब हो रहा तुम्हारे कारण,
सूखा पड़ने का आदेश दिया है मैंने,
अनाज वैगरह सब नष्ट हो जाएगा,
खाने-पीने को ना मिलेगा तुम्हें ।

किए हाग्गै के वचन स्वीकार,
राजा और महायाजक यहोशू ने,
यहोवा ने कहा वो साथ है,
लगे लोग मन्दिर को बनाने ।

फिर कहा यहोवा ने लोगों से पूछो,
क्या पहले का मन्दिर देखा किसी ने,
सब राष्ट्र सम्पत्ति लेकर आएँगे,
भर दूँगा मन्दिर को गौरव से मैं ।

नीवं तैयार हुई, यहोवा ने कहा,
अब कमी ना होगी आगे तुम्हें,
राजा जरुब्बाबेल सम्मानित होगा,
क्योंकि उसको चुना है मैंने ।

जकर्याह

सन्देश मिला जकर्याह को यहोवा से,
दारा के राज के दूसरे वर्ष में,
क्रोधित है वो पूर्वजों के काम पर,
नबियों की एक ना सुनी उन्होंने ।

फिर जकर्याह ने घोड़ों को देखा,
यहोवा ने भेजा इधर-उधर घूमने,
कहा घोड़ों ने हम घूम चुके,
सब ओर शान्ति देखी है हमने ।

यरूशलेंम और सिय्योन का विनाश,
जब यहोवा क्रोधित था, बहुत किया,
जिन राष्ट्रों को वे भेजे गए थे,
दिखाई ना उन्होंने कोई दया ।

अब पुनःनिर्माण होगा यरूशलेम का,
सिय्योन को भी आराम मिलेगा,
चुनुँगा यरूशलेंम को विशेष नगर,
और कहाँ उसमें मन्दिर बनेगा ।

फिर एक दर्शन में देखे सींग,
जो उन राष्ट्रों के प्रतीक थे,
यहूदा पर जिन्होंने किया आक्रमण,
अब नष्ट होने की कगार पर थे ।

तब देखी मापने की एक रस्सी,
जो यरूशलेम को नापने को थी,
पर यरूशलेम बहुत विशाल है,
यहोवा करता है रक्षा उसकी ।

प्रतिष्ठा दे रहा यरूशलेम को यहोवा,
फिर से अपना विशेष नगर चुनेगा,
अपने पवित्र घर से आ रहा यहोवा,
और अब वो तुम्हारे नगर में रहेगा ।

तब दूत ने मुझे यहोशू को दिखाया,
पहने हुए थे उसने गन्दे वस्त्र,
दाएँ ओर उसके शैतान खड़ा था,
पर दूत ने दिए उसे नए वस्त्र ।

एक नई पगड़ी बाँधी सिर पर,
कहा, उच्चाधिकारी मन्दिर के बनोगे,
घूमोगे आजादी से स्वर्गदूतों के बीच,
मेरी आज्ञा सुन, मेरी बात मानोगे ।

फिर उस दूत ने जगाया मुझको,
और मुझे एक दृश्य दिखाया,
दीप, दीपाधार, जैतून के पेड़,
पूछने पर उसने मुझे अर्थ बताया ।

कहा, सन्देश है जरुब्बाबेल के लिए,
यहोवा की आत्मा से मदद पाएगा,
ऊँचे पर्वत पर स्थित होगा मन्दिर,
अति सुन्दर वो उसे बनाएगा ।

और भी दर्शन देखे जकर्याह ने,
कहा, कुछ लोगों से[47] सोना-चाँदी लो,
बनवाओ उस सोने-चाँदी से मुकुट,
और मुकुट यहोशू को पहना दो ।

फिर बेतेल वासियों ने साथियों को,
यहोवा से पूछने भेजा एक प्रश्न,
वर्षों मनाया ध्वस्त मन्दिर का शोक,
क्या रहना चाहिए उसमें संलग्न ?

उत्तर मिला क्या मेरे लिए था शोक,
नहीं, तुमने सब अपने लिए किया था,
करना चाहिए जो हो सत्य और उचित,
यही कहने तब नबियों को भेजा था ।

किन्तु अनसुनी करी उन लोगों ने,
तब यहोवा ने क्रोधित हो कहा,
नष्ट हो जाएगा यह सुहावना देश,
उनके विरुद्ध राष्ट्र आएँगे यहाँ ।

वापस ले आया सिय्योन का प्रेम,
यरूशलेम अब फिर फले-फूलेगा,
तुम्हारे पूर्वजों ने किया था क्रोधित,
पर अब मेरा आशीर्वाद मिलेगा ।

पर तुम भी अपना आचरण सुधारो,
सच्चाई और भलाई से निर्णय करो,
करता हूँ मैं जिन बातों से घृणा,
उन बातों से तुम दूर रहो ।

भविष्य में लोग यरूशलेम आएँगे,
पल्ला पकड़ किसी यहूदी को कहेंगे,
क्या तुम्हारे साथ आ सकते हैं हम,
तुम्हारे परमेश्वर की उपासना करेंगे ।

सन्देश मिला और देशों के बारे में,
जिनका यहोवा विनाश करेगा,
बचा रहेगा जो पलिश्ती या एक्रोनी,
हमारे ही लोगों का हिस्सा बनेगा ।

सिय्योन और यरूशलेम के लोगों,
आनन्दित हो, आनन्द घोष करो,
तुम्हारे पास आ रहा राजा तुम्हारा,
सागर-से-सागर तक राज करेगा वो ।

स्वतंत्र कर दिए सब तुम्हारे बन्दी,
तूफ़ान सी बढ़ेगी सेना तुम्हारी,
बचाएगा यहोवा अपने लोगों को,
रक्षा करेगा तुम्हारी भेड़ों सी ।

करो बसन्त में यहोवा से प्रार्थना,
वह बिजली भेजेगा और वर्षा होगी,
खेतों में फसल देगा परमेश्वर,
उसकी कृपा से खुशहाली होगी ।

[47] कुछ लोगों से-हेल्दै, तोबिय्याह और यदायाह जो बाबुल में बन्दियों में से थे ।

यहूदा के लोग यहोवा की रेवड़,
उनकी देखभाल करता है यहोवा,
सभी यहूदा एक साथ आएँगे,
युद्ध में साथ रहेगा यहोवा ।

बिखेर रहा हूँ मैं अपने लोगों को,
पर फिर मैं वापस लाऊँगा उन्हें,
तोड़ी जो अपनी वाचा राष्ट्रों ने,
यहोवा को क्रोधित किया उन्होंने ।

टूटी यहूदा और इस्राएल की एकता,
राष्ट्रों के जाल में यहूदा फँसेगा,
भारी चट्टान बनाऊँगा यरूशलेम को,
जो उठाने लगेगा, घायल हो रहेगा ।

पर रक्षा करता रहूँगा यहूदा की,
हमारा परमेश्वर है यहोवा वे कहेंगे,
यहोवा कहता है यरूशलेम के विरुद्ध,
जो राष्ट्र आएँगे, नष्ट हो रहेंगे ।

यहोवा कहता है, उस समय मैं,
हटा दूँगा झूठे लोग और नबियों को,
मरेंगे दो-तिहाई लोग देश के,
आग में तपे से निकलेंगे, बचेंगे जो ।

पुकारेंगे तब वे मुझे सहायता हेतु,
और मैं उनकी मदद करूँगा,
वे कहेंगे, ‘यहोवा मेरा परमेश्वर है’,
‘तुम मेरे लोग हो’, मैं कहूँगा ।

रखता यहोवा विशेष निर्णय का दिन,
लाऊँगा सभी राष्ट्र यरूशलेम के विरुद्ध,
नष्ट करेंगे घर, स्त्रियों से कुकर्म,
तब यहोवा लड़ेगा उन राष्ट्रों के विरुद्ध ।

खड़ा होगा वो जैतून के पर्वत पर,
फट पड़ेगा अंजीर का पर्वत तब,
गहरी घाटी उभरेगी, तुम दूर भागोगे,
सूना होगा, यरूशलेम के बाहर तब ।

किन्तु यरूशलेम का पूरा नगर,
फिर से बनेगा एक नया नगर,
लोग वहाँ अपने घर बनाएँगे,
और सुरक्षित रहेगा फिर वो नगर ।

यरूशलेम के विरुद्ध लड़े जो,
दण्ड पाएँगे वे राष्ट्र यहोवा से,
यहूदा लोग यरूशलेम में लड़ेंगे,
धन पाएँगे वो अन्य राष्ट्रों से ।

तब हर चीज परमेश्वर की होगी,
उन पर ‘यहोवा का पवित्र’ सूचक होगा,
तब यहोवा के पवित्र मन्दिर में,
कोई क्रय-विक्रय करने वाला ना होगा ।

मलाकी

यह सन्देश मलाकी को मिला,
यहोवा प्रेम करता इस्राएल को,
कहा उसने एसाव की अपेक्षा,
चुना उसके भाई याकूब को ।

नष्ट किया एसाव का नगर एदोम,
यदि वे बनाएँगे फिर नगरों को,
तो मैं उन्हें पुनः नष्ट करूँगा,
बसा ना पाएँगे वो उनको ।

पर याजक सम्मान नहीं करते,
वेदी पर लाते अशुद्ध रोटी,
अंधे जानवर बलि के लिए,
सुनेगा ना तुम्हें, तुम्हारी गलती ।

सम्मान करो मेरे नाम का याजकों,
वरना ना मिलेगी तुम्हें सफलता,
तुम तो दोगे आशीर्वाद किसी को,
पर बन जाएगा काँटा गले का ।

लेवी ने दिया सम्मान नाम को,
सच्ची शिक्षा दी लोगों को उसने,
जीने दिया जीवन शान्ति के साथ,
अपनी प्रतिज्ञा अनुसार उसे मैंने ।

यहूदा के लोगों ने ठगा औरों को,
वाचा को दिया नहीं सम्मान,
तुम्हारे बुरे कामों को देखा उसने,
पत्नी का भी नहीं रखा मान ।

परमेश्वर चाहता है पति और पत्नी,
एक शरीर एक आत्मा हो जाएँ,
ताकि इससे उनके बच्चे पवित्र हों,
यह आध्यात्मिक एकता बच पाए ।

जलती आग सा आएगा यहोवा,
लेवीवंशियों को वह पवित्र करेगा,
तब वे यहोवा को भेंट लाएँगे,
और यहोवा भेंट स्वीकार करेगा ।

मैं यहोवा हूँ, मैं बदलता नहीं,
पर तुम ने निभाया ना वाचा को,
देना था चीजों का दसवाँ भाग,
पर तुमने चुराया मुझसे उसको ।

अर्पित करोगे यदि दसवाँ भाग,
बहुत कुछ तुम पाओगे मुझसे,
भले बने रहेंगे अन्य राष्ट्र,
भरे रहोगे तुम धन-धान्य से ।

सम्मान करते यहोवा के नाम का,
यहोवा सदा उन पर कृपालु रहेगा,
आ रहा है न्याय का समय निकट,
दुष्टों को दण्ड मिल के रहेगा ।

किन्तु मेरे भक्तों तुम पर अच्छाई,
उगते सूरज के समान चमकेगी,
तुम स्वतंत्र और प्रसन्न होओगे,
दुष्टों को तुमसे सज़ा मिलेगी ।

याद करो मेरे सेवक मूसा को,
पालन करो 'मूसा की व्यवस्था' का,
वे नियम हैं सब लोगों के लिए,
पर्वत पर उन्हें मैंने उसे दिया था।

कहा यहोवा ने मैं नबी एलिय्याह को,
न्याय के समय से पहले तुम्हें भेजूँगा,
बच्चों को लाएगा माता-पिता के पास,
यह घटेगा, या मैं देश नष्ट कर दूँगा।

....

नया नियम

मत्ती

यीशु जन्मा यिशै के वंश में,
जो याकूब के वंश से था,
याकूब था इब्राहम का वंशज,
जो यहोवा का एक बन्दा था ।

यूसुफ से सगाई हुई मरियम की,
गर्भवती है वो, पता चला उसको,
सोच रहा था जब सगाई तोड़ने की,
तब एक दर्शन मिला उसको ।

दर्शन में देवदूत ने कहा उससे,
डर मत पत्नी बनाने से उसको,
क्योंकि जो बच्चा है उसके गर्भ में,
है पवित्र आत्मा की ओर से वो ।

जन्म देगी एक पुत्र को मरियम,
तू यीशु नाम रखना उसका,
क्योंकि वह अपने लोगों का,
उनके पापों से उद्धार करेगा ।

हुआ है यह सब कुछ इसलिए कि,
प्रभु ने जो कहलवाया, वह पूरा हो,
‘एक कुँवारी कन्या गर्भवती होकर,
जन्मेगी एक पुत्र इम्मानुएल[48] को’ ।

जब यूसुफ नींद से जागा,
जैसा दूत ने कहा, किया उसने,
जब तक यीशु का जन्म हुआ,
छुआ नहीं मरियम को उसने ।

बैतलहम में जन्म लिया यीशु ने,
पूर्व से विद्वान उसे खोजते आए,
सुना जब यह राजा हेरोदेस ने,
चिंता के भाव चेहरे पर आए ।

क्योंकि भविष्यवक्ताओं के अनुसार,
एक शासक प्रकट होगा बैतलहम से,
इस्राएली लोगों का होगा वो रक्षक,
सो हेरोदेस ने मरवा देना चाहा उसे ।

कहा विद्वानों को उसे भी बताएँ,
ताकि वो भी उपासना कर सके उसकी,
पर सावधान कर दिया परमेश्वर ने,
सो लौटने की उन्होंने राह बदल ली ।

तब दूत ने यूसुफ से कहा,
चला जाए परिवार सहित मिस्र को,
जब तक राजा हेरोदेस जीवित है,
वापस ना आए वो बैतलहम को ।

[48] इम्मानुएल-अर्थात परमेश्वर हमारे साथ है ।

फिर हेरोदेस की मृत्यु के बाद,
आदेश मिला, वो गलील चला जाए,
रहने लगा 'नसारत' नगर में ताकि,
यीशु नासरी कहलाएगा, सच हो पाए ।

उन्हीं दिनों यहूदियों के मरुस्थल में,
बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना आया,
करने लगा प्रचार कि 'मन फिराओ',
क्योंकि स्वर्ग का राज्य बस आया ।

कहा, मैं तो बपतिस्मा देता जल से,
पर वो जो है मेरे बाद आने को,
पवित्र आत्मा और अग्नि से देगा,
बपतिस्मा वो तुम लोगों को ।

उस समय यीशु यर्दन के किनारे,
बपतिस्मा लेने आया यूहन्ना से,
वो बोला तू क्यों आया मेरे पास,
बपतिस्मा लेनी चाहिए मुझे तुझसे ।

जैसे ही बपतिस्मा ली यीशु ने,
परमेश्वर की आत्मा उतरी उस पर,
आकाशवाणी हुई, यह मेरा प्रिय पुत्र,
अति प्रसन्न हूँ मैं जिस पर ।

तब ली गई परीक्षा यीशु की,
आत्मा उठा ले गया उसे वन में,
चालीस दिन भूखा उसे रखा,
पर उफ़ तक भी ना करी यीशु ने ।

कहा, मनुष्य रोटी से ही नहीं जीता,
परमेश्वर का शब्द सम्बल है उसका,
परीक्षा ली शैतान ने तरह-तरह से,
पर यीशु उसके आगे नहीं झुका ।

फिर जब यूहन्ना पकड़ा गया,
यीशु वहाँ से गलील लौट आया,
फिर जैसा कहलवाया यशायाह से,
यीशु कफरनहूम को चला आया ।

फिर उसके बाद से यीशु ने,
सुसंदेश का प्रचार शुरू कर दिया,
कहने लगा यीशु 'मन फिराओ',
क्योंकि निकट है राज्य स्वर्ग का ।

गलील की झील के पास यीशु ने,
शमौन[49] और भाई अंद्रियास को कहा,
मछली छोड़ो, मेरे पीछे आ जाओ,
बताऊँगा मनुष्यों को कैसे पकड़ा जाता ?

हो लिए वो यीशु के पीछे,
चल दिए साथ में जाल छोड़ कर,
आगे याकूब और यूहन्ना[50] दिखे,
वो भी साथ हो लिए सब छोड़ कर ।

गलील क्षेत्र और यहूदी प्रार्थनालय में,
देने लगा यीशु उपदेश सुसमाचार का,
रोग और संताप दूर किए लोगों के,
समस्त सीरिया में होने लगी चर्चा ।

[49] शमौन-शमौन जो बाद में पतरस कहलाया, वो और उसका भाई अंद्रियास दोनों मछुआरे थे ।
[50] याकूब और यूहन्ना-दोनों भाई जब्दी के बेटे थे जो नाव और पिता को छोड़ यीशु के बुलाने पर उसके साथ चल दिए ।

फिर पीछे आती भीड़ को देख,
यीशु एक पर्वत पर जा बैठा,
कहा, धन्य हैं दीन और विनम्र,
परमेश्वर की वे ही पाते कृपा ।

नीति और मानवता के लिए कटिबद्ध,
स्वर्ग का राज्य है उनके ही लिए,
मेरे लिए लोग जब झूठी बात कहें,
प्रसन्न हो सब सह लेना मेरे लिए ।

प्रकाश हो तुम जगत के लिए,
लोगों में तुम्हारा प्रकाश चमके,
देखें वे तुम्हारे अच्छे काम,
परमपिता की महिमा को समझें ।

नष्ट नहीं, पर पूरा करने आया हूँ मैं,
मूसा के नियम और नबियों के कथन,
महान जाना जाएगा पालन करने वाला,
स्वर्ग के राज्य का आधार धर्म-आचरण ।

क्रोध का उत्तर क्रोध से नहीं,
बेहतर है तुरंत सुलह कर लो,
व्याभिचार पहले मन से होता है,
बेहतर है अपनी आँख फोड़ लो ।

यदि पत्नी का आचरण खराब ना हो,
तो तलाक देना, व्याभिचार करवाने सा,
दूसरा विवाह जब वह स्त्री करेगी,
तो दूसरा पति भी जिम्मेदार इसका ।

सुना होगा तुमने, तू शपथ पूरी कर,
पर मैं कहता हूँ तू शपथ ही ना ले,
यदि तू हाँ चाहता है तो हाँ कह,
यदि ना चाहता है तो ना कह दे ।

अंग, अंग के बदले लेने से बेहतर,
मैं कहता हूँ तू विरोध ही मत कर,
बल्कि यदि कोई तुझे थप्पड़ मारे,
तो दूसरा गाल भी उसकी तरफ कर ।

सुना होगा तुमने, पड़ोसी से प्रेम कर,
पर तू लगा अपने दुश्मन को भी गले,
प्रेम के बदले प्रेम तो कर वसूलने सा,
परिपूर्ण बन अपने स्वर्ग-पिता जैसे ।

दिखावा व्यर्थ कर देता सत्कर्म,
सो मदद करो तो ढोल मत पीटो,
तेरा बायाँ हाथ यह ना जानने पाए,
क्या दिया दाहिने हाथ ने किसी को ?

मत करो प्रार्थना करने का दिखावा,
सब जानता है तुम्हारा परमपिता,
हे ईश्वर ! तेरी इच्छा पूरी हो,
पवित्र रहे तेरा नाम, सर्वदा ।

हमारे अपराधों को क्षमा दान कर,
हमारी भारी कठिन परीक्षा मत ले,
प्रतिष्ठित कर अपनी महिमा में,
जो बुरा है हमको उससे बचा ले।

वो क्षमाशील, क्षमा करता सबको,
सो क्षमा करो तुम भी औरों को,
लेकिन क्षमा-दान ना देने पर,
तुमको भी क्षमा ना करेगा वो ।

जब उपवास करो तुम तो,
मुँह लटकाए कपटी से ना दिखो,
जान ना पाए कोई तुम्हारा उपवास,
तुम्हारे किया सब जानता है वो ।

भरो मत भण्डार तुम धरती पर,
कीड़े खा जाएँगे, या चोर ले लेंगे,
तुम्हारे भण्डार संग रहता है मन,
सो भरो स्वर्ग में भण्डार अपने लिए ।

एक साथ दो स्वामियों की सेवा,
कोई भी सेवक कर नही सकता,
इसी तरह परमेश्वर और धन में,
तू एक साथ मन लगा नहीं सकता ।

छोड़ो चिंता तुम जीने के लिए,
चिंता कर कुछ कर नहीं सकते,
अपने जीवन की एक घड़ी भी,
अपनी इच्छा से बढ़ा नहीं सकते ।

पशु-पक्षियों की भी करता फ़िक्र,
तो क्या तुम्हें यूँ ही रहने देगा,
वो जानता है तुम्हारी जरूरतें,
जब ठीक समझेगा, पूरी कर देगा ।

मत दोष लगाओ ओरों पर तुम,
जो अपने लिए, वही न्याय हो उनका,
तेरी आँख में तो लठ्ठा पड़ा है,
तू देखता भाई की आँख का तिनका ।

पवित्र वस्तुएं नहीं श्वानों के लिए,
ना सूअरों के समक्ष बिखेरो मोती,
कुत्ते उड़ा देंगे तुम्हारी धज्जियाँ,
और पैरों तले सूअर रौंदेंगे मोती ।

परमेश्वर दाता है, माँगते रहो तुम,
मिल ही जाएगा मनचाहा उपहार,
पा जाओगे यदि खोजते रहोगे,
खटखटाते रहो, खोला जाएगा द्वार ।

तुम में से कौन पिता ऐसा जो,
रोटी की जगह पत्थर दे दे पुत्र को,
सो चाहे कितने ही बुरे हो तुम,
अच्छी चीजें ही देगा परमेश्वर तुम को ।

सो जैसा चाहते हो तुम अपने लिए,
औरों के साथ हो वैसा ही व्यवहार,
व्यवस्था के विधि और भविष्यवक्ता,
उनके लिखे हुए का यही है सार ।

चौड़ा द्वार और बड़ा मार्ग,
तय करते बहुत विनाश की राह,
सँकरा द्वार और सीमित मार्ग,
कम चलते यह जीवन की राह ।

भेष से नहीं, कर्मों से पहचानों,
बचो धोखेबाजों, झूठे नबियों से,
परमपिता की इच्छा पर जो चलते,
स्वर्ग का राज्य बस मिलेगा उसे ।

मेरे कहे अनुसार जो चलता,
मानों बनाता चट्टान पर मकान,
जो मुझे सुन अमल नहीं करता,
रेत पर बनाया उसने मकान ।

जब यीशु ने अपनी बात पूरी की,
बहुत अचरज उस पर हुआ भीड़ को,
क्योंकि यहूदी धर्मनेता की अपेक्षा,
अधिकारी जैसे कह रहा था वो उनको ।

फिर जब वह नीचे उतरा पर्वत से,
एक कोढ़ी को ठीक किया उसने,
अपने एक सेवक के लिए यीशु से,
रोमी सेनानायक ने की विनती उससे ।

कहा जो यीशु ने, तेरे घर आऊँगा,
वो बोला प्रभु मैं नहीं इस लायक,
तू तो यहीं से आज्ञा भर दे दे,
सेवक को ज्यों हुक्म देता नायक ।

चकित हुआ इस दृढ़ विशवास से यीशु,
कहा, जा जैसा तेरा विशवास, वैसा हो,
और यीशु ने जैसे ही यह कहा,
तत्काल ही ठीक हो गया रोगी वो ।

फिर बहुतों को ठीक किया यीशु ने,
दिया बहुतों को दुष्टात्माओं से उबार,
एक भारी भीड़ इकठ्ठा हो गयी,
कहा चले जाएँ वो झील के पार ।

तब जा बैठा एक नाव पर यीशु,
झील में उठा भयंकर तूफ़ान,
डरे लोग, जगाया यीशु को,
डाँट कर, कर दिया शांत तूफ़ान ।

झील के उस पार यीशु को मिले,
कब्र से निकले, प्रेतग्रस्त दो लोग,
क्या तू निश्चित समय से पहले,
देगा हमें दण्ड, बोले वो लोग ?

वहीं चर रहा था सुअरों का एक रेवड़,
सो दुष्टात्माओं ने करी विनती,
यदि तुझे हमें निकालना ही है तो,
इस रेवड़ में दे इजाजत जाने की ।

यीशु ने दी अनुमति तो वे आत्माएँ,
जा मिली सूअरों के उस रेवड़ में,
समूचा रेवड़ ढ़लान से लुढ़कते,
दौड़ता हुआ जाकर गिरा झील में ।

फिर यीशु लौट आया अपने नगर,
एक लकवे का रोगी ठीक कर दिया,
लोग विस्मय से भर गए जब देखा,
वो बिस्तर उठा घर को चल दिया ।

फिर एक व्यक्ति, मत्ती, मिला यीशु को,
यीशु उसके घर भोजन करने गया,
उसके साथ चूंगी वसूलने वाले पापी थे,
वहाँ फरीसियों[51] ने उसे देख लिया ।

पूछा यीशु से क्यों वहाँ खाना खा रहा,
बोला यीशु चिकित्सक चाहिए किसको,
वह जो स्वस्थ है, उसे नहीं चाहिए,
चिकित्सक की जरूरत होती रोगी को ।

कहा, तुम जाओ और समझो कि,
क्या अर्थ है शास्त्र के इस वचन का,
मैं बलिदान नहीं दया चाहता हूँ,
धर्मी नहीं पापियों को बुलाने आया ।

फिर यूहन्ना के शिष्य गए,
यीशु के पास और पूछा उससे,
हम और फरीसी उपवास करते है,
तेरे अनुयायी क्यों नहीं करते ?

[51] फरीसी-एक कट्टर यहूदी धार्मिक समूह ।

कहा यीशु ने, दूल्हे के साथी,
जब तक दूल्हा है शोक ना करेंगे,
किन्तु जब छीन लिया जाएगा दूल्हा,
तब वे दुखी होंगे, उपवास करेंगे ।

फट जाती हैं पुरानी मशकें,
नया दाखरस भरने से उनमें,
इसलिए नया दाखरस भरते हैं,
लोग केवल नयी मशकों में ।

फिर यीशु ने रोगी ठीक किए,
ज़िंदा किया एक मृत लडकी को,
किन्तु फरीसी लोग कह रहे थे,
शैतान से सहायता पाता है वो ।

परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार,
देता घूमता था यीशु नगर-नगर,
भर जाता लोगों के प्रति करुणा से,
सताए हुए असहायों को देखकर ।

यीशु ने बारह शिष्यों को बुलाया,
शमौन और आंद्रियास भाई उसका,
फिलिप्पुस, बरतुल्लै, थोमा, मत्ती,
जब्दी के बेटे याकूब और यूहन्ना ।

हलफै का बेटा याकूब और तद्दै,
शमौन जिलौती[52]और यहूदा इस्करियोती,
ये थे वो बारह शिष्य यीशु के,
जिन्हें यीशु से शक्तियाँ मिली थीं ।

दी उन्हें बाहर जाने की आज्ञा,
कहा, जाएँ इस्राएल परिवार के पास,
दें उपदेश खोई हुई भेड़ों को वे,
बदले में कुछ मिले, रखें ना आस ।

यदि कोई तुम्हारी करे अनदेखी,
छोड़ दो तुम वो घर या नगर,
मैं सत्य कहता हूँ न्याय के दिन,
वो नगर होगा बद से भी बदतर ।

दी उन्हें चेतावनी यीशु ने,
कहा, सावधान रहना लोगों से तुम,
बंदी बना कष्ट देंगे वे तुम्हें,
कहेंगे मेरे विरुद्ध गवाही दो तुम ।

पर कोई चिन्ता ना करना तुम,
परमेश्वर की आत्मा बोलेगी तुममें,
घृणा करेंगे लोग तुमसे मेरे कारण,
उद्धार होगा जो टिकेंगे अन्त में ।

परमेश्वर के सिवा डरो ना किसी से,
तुम्हारे सर्वस्व पर अधिकार है उसका,
उसकी इच्छा बिना पत्ता भी नहीं हिलता,
तुम्हारे सिर का है एक-एक बाल गिना ।

जो अपनाएगा या ठुकराएगा मुझे जैसे,
परमेश्वर के सामने मैं भी करूँगा वैसे,
तुम्हें अपनाने वाला मुझे अपनाएगा,
और परमेश्वर को वो, जो अपनाता मुझे ।

[52] जिलौती-एक कट्टर पंथी राजनीतिक दल का नाम था, जिसका वह सदस्य हुआ करता था ।

जो जान बचाने की करता चेष्टा,
खो देगा वो अपने प्राणों को,
किन्तु जो देगा मेरे लिए जान,
एक नया जीवन पाएगा वो ।

फिर यूहन्ना के बारे में कहा,
पैदा हुआ नहीं कोई उससे बड़ा,
फिर भी स्वर्ग के राज्य में है,
छोटे से छोटा भी यूहन्ना से बड़ा ।

उन नगरों को धिक्कारा यीशु ने,
जहाँ किए थे चमत्कार उसने,
त्यागा नहीं उन्होंने पाप करना,
ना ही मन को फिराया उन्होंने ।

फिर कहा, नमन हे परमपिता !,
ये बातें ज्ञानियों से छिपाए रखी,
लेकिन भोले-भाले लोग हैं जो,
उन पर आपने ये बातें प्रकट की ।

सौंपा सब मुझे मेरे परमपिता ने,
मेरे पास आओ दूँगा सुख-चैन तुम्हें,
सीखो मुझसे क्योंकि मैं सरल हूँ,
सुख-चैन मिलेगा अपने लिए तुम्हें ।

सब्त के दिन खेत से बालियाँ तोड़,
खाई जो यीशु के कुछ शिष्यों ने,
गलत कर रहे वे फरीसियों ने कहा,
तो दाऊद की बात, बताई यीशु ने ।

कहा, जब उन लोगों को लगी भूख,
पवित्र रोटियों को खाया उन्होंने,
जो जानते तुम सही अर्थ शास्त्रों का,
जो निर्दोष है, दोषी ठहराते ना उन्हें ।

यहाँ कोई है जो बड़ा है,
परमेश्वर के मन्दिर से भी,
हाँ, मनुष्य का पुत्र है स्वामी,
सब्त के पवित्र दिन का भी ।

फिर सब्त के दिन यीशु ने,
ठीक किया सूखा हाथ एक का,
फरीसी उसे फँसा ना सके,
ढूँढने लगे कोई और तरीका ।

एक भीड़ चल पड़ी उसके पीछे,
एक गूंगा, अंधा किया अच्छा उसने,
फरीसी बोले शैतान सहायक है,
पर चुप कर दिया उन्हें यीशु ने ।

अच्छा फल मिलता अच्छे पेड़ से,
जिसका जैसा मन, वह व्यक्ति वैसा,
देना होगा हिसाब हर व्यक्ति को,
तेरी बातों पर होगा तेरा फैसला ।

तब माँगा गया उससे कोई आश्चर्यचिन्ह,
कहा, अब कोई और चिन्ह नही मिलेगा,
जैसे योना मछली के पेट में रहा वैसे ही,
मनुष्य का पुत्र धरती के भीतर रहेगा ।

मिलने आए यीशु की माँ और बंधु,
यहाँ कौन पराया, कहा यीशु ने,
मेरे पिता का जो अनुसरण करता,
वो मेरे भाई-बंधु हैं, कहा उसने ।

दिया उसने दृष्टान्त बीज का,
जो इधर-उधर गिरे, व्यर्थ गए,
लेकिन जो गिरे अच्छी धरती पर,
वो बीज उगे, फसल बन गए ।

यीशु के शिष्यों ने पूछा उससे,
क्यों करता प्रयोग दृष्टान्त कथा का,
कहा, स्वर्ग के राज्य का भेद,
जानने का अधिकार बस उनका ।

क्योंकि जिसके पास कुछ है,
उसे और भी अधिक दिया जाएगा,
किन्तु कुछ नही है जिसके पास,
उससे जो भी है ले लिया जाएगा ।

यीशु ने कहा स्वर्ग का राज्य,
होता छोटे से राई के बीज समान,
उपज कर एक बड़ा वृक्ष बन जाता,
पक्षियों का बन जाता शरण स्थान ।

खमीर की तरह भी है वो राज्य,
मिलाया गया हो जो आटे में,
तब तक उसे रख छोड़ा गया,
बदला आटा जब तक खमीर में ।

यीशु ने कहा सब दृष्टान्तों द्वारा,
ताकि पूरा हो भविष्यवक्ताओं का कहा,
'मैं दृष्टान्त कथाओं द्वारा मुँह खोलूँगा',
ताकि उजागर हो जो आदिकाल से छिपा ।

स्वर्ग का राज्य खेत में गड़े धन सा,
जिसे जिसने पाया, वहाँ गाड़ दिया,
फिर प्रसन्न हो सब बेचकर उसने,
उस पैसे से खेत खरीद लिया ।

और वो है उस व्यापारी जैसा भी,
जिसने खोजा एक मोती अनमोल,
फिर अपना सब बेच के जिसने,
ले लिया हो वो मोती मोल ।

मछली पकड़ने के जाल जैसा भी है,
पकड़ी गयी जिसमें सब मछलियाँ,
अच्छी मछलियाँ भर ली टोकरी में,
और फेंक दी गयी बेकार मछलियाँ ।

फिर यीशु लौटा अपने देश को,
सब चकित हुए उसके ज्ञान पर,
जाना उसे बस मरियम का बेटा,
मिल ना पाया उसे वो आदर ।

जब गलील के शासक हेरोदेस ने,
सुना यीशु के बारे में तो कहा,
यह बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना है,
जो मरे हुओ में से फिर जी उठा ।

यह वही हेरोदेस था जिसने यूहन्ना को,
हिरोदियास[53] के षड्यंत्र में फँस मरवाया,
कटवा दिया यूहन्ना का सिर जेल में,
धड़ बिना सिर के ही गया दफनाया ।

पता चला तो अकेला चल दिया यीशु,
पर एक भीड़ चल पड़ी यीशु के पीछे,
शाम हुई तो शिष्यों ने उससे कहा,
सुनसान जगह है, इन्हें विदा कर दे ।

[53] हिरोदियास- हिरोदियास पहले हेरोदेस की भाभी थी जिससे बाद में हेरोदेस ने शादी कर ली लेकिन यूहन्ना हेरोदेस को उसके साथ रहने से मना करता था ।

यीशु बोला इन्हें कुछ खाने को दो,
पर थी पाँच रोटी और दो मछलियां,
मँगवाकर शिष्यों से अपने पास उन्हें,
परमेश्वर का किया उसने शुक्रिया ।

फिर किए रोटी के टुकड़े-टुकड़े,
और बटवा दिया भीड़ में उसे,
पाँच हजार से अधिक तृप्त हो रहे,
जो बचा, बारह टोकरी भरी उससे ।

भेजा शिष्यों को नाँव पर चढ़ा,
ख़ुद पहाड़ पर चला प्रार्थना करने,
भोर तक बहुत दूर निकल गई नाँव,
देखा किसी को झील पर चलते उन्होंने ।

पूछा तो कहा यीशु ने, ये मैं हूँ,
पतरस बोला मुझे भी कह आने को,
कहा यीशु ने चला आ, ओ पतरस,
तो पानी पर चलकर आने लगा वो ।

तेज हवा देखी तो घबराया पतरस,
डूबने लगा, चिल्लाया प्रभु रक्षा कर,
ओ अल्प विश्वासी, क्यों संदेह किया,
कहा यीशु ने उसे सम्भाल कर ।

फिर कुछ फरीसी और यहूदी धर्मशास्त्री,
यरूशलेम से आए यीशु के पास,
पूछा क्यों नही पालन करते,
तेरे अनुयायी, पूर्वजों के रीति-रिवाज ?

यीशु बोला ओ ढोंगियों तुम्हारे लिए,
ठीक ही कहा था यह यशायाह ने,
ये मेरा केवल ओठों से आदर करते,
पर दूर रहते हैं सदा मन इनके ।

कहा यीशु के शिष्यों ने उससे,
फरीसियों ने माना है बहुत बुरा,
यीशु बोला, उखाड़ा जाएगा हर पौधा,
जो परमेश्वर की ओर से नही लगा ।

फिर कहा यीशु ने छोड़ो उन्हें,
अंधों के नेता वो ख़ुद हैं अंधे,
राह दिखाए यदि अंधा, अंधे को,
दोनों ही जाकर गढ्डे में गिरते ।

अपवित्र बनाती है मुँह की बात,
क्योंकि वो निकलती है मन से,
सभी बुरे विचार, हत्या, दुराचार,
सभी बुराईयाँ आती सब मन से ।

एक कनानी स्त्री करने लगी विनती,
उसकी पुत्री पर सवार थी दुष्टात्मा,
उस स्त्री का विशवास देख कर,
यीशु ने करी उसकी सहायता ।

फिर यीशु एक पहाड़ पर चढ़,
देने लगा उपदेश लोगों को,
बड़ी भीड़ अपंगों को ले आ गयी,
यीशु ने चंगा कर दिया उनको ।

फिर पहले की तरह यीशु ने,
सात रोटी और कुछ मछलियों से,
भरा पेट चार हजार से ज्यादा का,
सात टोकरियाँ भरी बचे टुकड़ों से ।

फरीसी और सदूकियों[54] के खमीर से,
कहा यीशु ने शिष्यों को बचे रहें वो,
जब समझाया यीशु ने तो समझे,
कहा उनकी शिक्षाओं से बचने को ।

कैसरिया फिलिप्पी में यीशु ने पूछा,
कौन है वो, लोग उनसे क्या कहते,
कुछ शिष्य बोले, वो कहते यूहन्ना,
कुछ बोले वो तुझे एलिय्याह कहते ।

शिष्यों से जो पूछा, पतरस बोला,
साक्षात् परमेश्वर का पुत्र मसीह है तू,
कहा यीशु ने पतरस तू धन्य है,
स्वर्ग के राज्य का कुंजीदार है तू ।

फिर शिष्यों से कहा यीशु ने,
किसी को ना बताएँ वो ये बात,
कि यीशु है मसीह, जानते हैं वो,
सबसे छिपाए रखें वो ये राज ।

कहा, जाना चाहिए उसे यरूशलेम,
जहाँ पहुँचाई जाएँगी यातनाएँ उसे,
मरवाया जाएगा याजकों आदि द्वारा,
पर फिर जी उठेगा मरे हुओं में से ।

फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा,
यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे,
तो वह अपने आप को भुलाकर,
अपना क्रूस स्वयं अपने हाथों उठाए ।

छह दिन बाद एक पहाड़ पर यीशु,
एलिय्याह और मूसा के साथ दिखा,
वस्त्र प्रकाश से लगे चमचमाने,
मुख सूरज सा चमक रहा दिखा ।

तभी एक बादल ने ढक लिया उनको,
और आकाशवाणी सुनाई दी उससे,
यह मेरा प्रिय पुत्र है, 'इसकी सुनो',
और बहुत प्रसन्न हूँ मैं इससे ।

सहम कर औंधे मुँह गिर पड़े शिष्य,
तब यीशु ने आकर छुआ उनको,
जब तक फिर जिला दिया ना जाए,
कहा, बतलाना ना यह तुम किसीको ।

पूछा जो एलिय्याह के बारे में,
कि निश्चित है उसका पहले आना,
कहा यीशु ने एलिय्याह आ चुका,
पर लोगों ने उसे नही पहचाना ।

जैसा चाहा उन्होंने उसको सताया,
सताएँगे वैसे ही मनुष्य के पुत्र को,
तब समझे यीशु के शब्दों को शिष्य,
इंगित कर रहे थे वे यूहन्ना को ।

[54] सदूकियों-सदूकी: एक प्रमुख यहूदी धार्मिक समूह जो पुराना धर्म नियम की केवल पहली पाँच पुस्तक ही को स्वीकार करता है, और मृत्युपरांत उसका पुनरुत्थान नहीं मानता ।

एक व्यक्ति ने बेटे के लिए कहा,
यीशु कृपा कर ठीक कर दे उसको,
चंगा कर ना सके उसके शिष्य,
ले गया था उनके पास वो उसको ।

यीशु के कहते ही दुष्टात्मा भागी,
फिर यीशु ने कहा अपने शिष्यों को,
कब तक मैं तुम्हारे साथ रहूँगा,
दूर करो विश्वास की कमी को ।

यदि तुममें हो राई भर भी विश्वास,
तो पहाड़ भी कहने से चल पड़ेगा,
होगा वही जो विश्वास से कहोगे,
तुम्हारे लिए असम्भव कुछ ना रहेगा ।

गलील में शिष्यों से यीशु ने कहा,
पकड़वाया जाएगा मनुष्य के पुत्र को,
मारा जाएगा उसे मनुष्यों द्वारा ही,
पर तीसरे दिन फिर जी उठेगा वो ।

मन्दिर के कर वसूलने वालों ने,
पतरस से पूछा यीशु के लिए,
क्या तेरा गुरु दो दरम का कर,
देता नही मंदिर के लिए ?

कहा पतरस ने वह देता है कर,
और लौटा वापस वह अपने घर,
उसके बोलने से पहले यीशु बोला,
क्या अपने बच्चों से कोई लेता कर ?

फिर कहा पतरस से झील पर जा,
और पहली मछली जो आए पकड़ में,
चार दरम मिलेंगे उसके मुँह से,
दे देना उसे तू कर के रूप में ।

पूछा कौन स्वर्ग के राज्य में बड़ा,
कहा जो विनम्र बच्चों के समान,
जो स्वीकारता ऐसे व्यक्ति को,
वो मुझे स्वीकारने के समान ।

आया है मनुष्य का पुत्र यहाँ,
भटके हुओं के उद्धार के लिए,
नहीं चाहता स्वर्ग में स्थित पिता,
उसका कोई बच्चा कहीं भटके ।

यदि सौ भेड़े हों किसी के पास,
और भटक जाए कोई एक उनमें,
तो क्या निन्यानवें को वहीं छोड़,
जाएगा नहीं वह खोई भेड़ ढूँढने ?

और जब वह उसे मिल जाएगी,
होगा अधिक प्रसन्न उसे पाकर,
बजाए उनके जो खोई नहीं थीं,
ले जाएगा उसे काँधे पर चढ़ाकर ।

यदि कोई बंधु बुरा व्यवहार करे,
तो अकेले में आपस में दोष बता,
यदि वो तेरी सुन ले तो समझ ले,
तूने अपने बंधु को फिर जीत लिया ।

पतरस ने पूछा अपने भाई का अपराध,
क्या करना चाहिए माफ़ सात बार मुझे,
यीशु ने कहा सात बार ही नहीं,
सत्तर बार करना चाहिए उसे माफ़ तुझे ।

ख़ुद के लिए तो जो चाहता माफ़ी,
पर माफ़ करता नहीं ख़ुद किसी को,
परमपिता कहेगा वैसा किया ना,
जैसा तू चाहता तेरे साथ हो ।

कुछ फरीसियों ने पूछा यीशु से,
क्या उचित है पत्नी को तलाक,
यीशु बोला माता-पिता को छोड़,
एक हो रहती वो पति के साथ ।

सो पति-पत्नी दोनों दो नहीं रहते,
बल्कि वो दोनों एक रूप हो जाते,
सो जिसे परमेश्वर ने जोड़ा उसे,
किसी को अलग नहीं करना चाहिए ।

पूछा फरीसियों ने फिर मूसा ने क्यों,
निर्धारित किया विधान तलाक का,
यीशु बोला उस विधान की जड़ में,
है तुम लोगों के मन की जड़ता ।

कुछ बच्चे लाए गए यीशु के पास,
तो उसके शिष्यों ने रोका उन्हें,
पर यीशु ने उन्हें पास बुलाकर,
अपना आशीर्वाद दिया उन्हें ।

तब एक युवक ने पूछा यीशु से,
क्या करूँ अनन्त जीवन पाने को,
कहा यीशु ने आदेशों का पालन कर,
सदाचारी बन, प्यार कर पड़ोसी को ।

युवक बोला यह सब किया है मैंने,
अब किस बात की कमी है मुझमें,
यीशु ने कहा सम्पूर्ण बनने के लिए,
अपना धन बाँट मेरे पीछे हो ले ।

कठिन है किसी धनी व्यक्ति का,
स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाना,
इसके अपेक्षा है आसान ऊँट का,
सूई के नकुए से निकल जाना ।

स्वर्ग का राज्य उस जमींदार सा,
रखे मजदूर सुबह, दोपहर, शाम,
पर जब दी उन्हें दिन की मजदूरी,
सब को दिए उसने एक से दाम ।

शिकायत की जब सुबह वाले ने उससे,
बोला, कोई अन्याय किया ना मैंने,
जो मजदूरी तुम्हारी तय की थी,
उतनी मजदूरी तुम्हें दे दी मैंने ।

क्यों जलता है तू औरों से,
जो चाहे करूँ मैं अपने धन का,
इस प्रकार पहले होंगे अंतिम,
और अंतिम लेंगे स्थान पहले का ।

फिर दिया संकेत यीशु ने,
उसे मृत्युदण्ड दिया जाएगा,
चढ़ा दिया जाएगा वो क्रूस पर,
फिर जीवित हो खड़ा हो जाएगा ।

फिर जब्दी के बेटों की माँ ने कहा,
कि उसके बेटे बैठें यीशु के साथ,
यीशु बोला, यातनाओं का प्याला,
गर पी सकते तो वे बैठ सकते साथ ।

हाँ सुन बिगड़े बाकी शिष्य दोनों पर,
तब उन्हें पास बुलाकर कहा यीशु ने,
सेवक बने वो जो बड़ा बनना चाहे,
और जो बनना चाहे पहला, दास बने ।

होना चाहिए मनुष्य के पुत्र जैसा तुम्हें,
जो सेवा करने आया, सेवा कराने नहीं,
और जो बहुतेरों के छुटकारे के लिए,
देने आया है फिरौती अपने प्राणों की ।

यरीहो में दी दो अंधों को आँखें,
फिर यरुशलेम में कहा शिष्यों से,
एक गर्दभी और बछेरा बँधा मिलेगा,
बाँध कर ले आओ मेरे पास उन्हें ।

यह हुआ इसलिए कि भविष्यवक्ता का,
कहा हुआ यह वचन पूरा हो,
गर्दभ के बछेरे पर सवार विनयपूर्ण राजा,
देख सिय्योन तेरे पास आ रहा वो ।

बछेरे पर सवार मन्दिर आया यीशु,
खरीद-बेच करने वालों को खदेड़ा उसने,
कुछ अंधे, लंगड़े, लूले जो मौजूद थे,
कर दिया चंगा उन्हें यीशु ने ।

"होशन्ना ! धन्य है दाऊद का वह पुत्र",
कहने लगे बच्चे ऊँचे स्वर में,
क्रोधित हुए याजक और धर्मशास्त्री,
अच्छा ना लगा यीशु का कृत्य उन्हें ।

फिर जब यीशु उपदेश दे रहा था,
किसने दिया अधिकार पूछा उससे,
यीशु बोला पहले तुम बताओ कि,
यूहन्ना को बपतिस्मा मिला था किससे ?

सोचने लगे परमेश्वर से कहें तो पूछेगा,
फिर क्यों उस पर विशवास नहीं करते,
गर कहें मनुष्य से तो लोगों का डर,
क्योंकि वे उसको एक नबी मानते ।

सो उत्तर में यीशु से कहा उन्होंने,
पता नहीं हमें तेरे प्रश्न का उत्तर,
उस पर यीशु बोला फिर मैं भी,
बाध्य नहीं तुम्हें देने को उत्तर ।

दो बेटों का दृष्टान्त दिया यीशु ने,
जिनसे खेत में काम को पिता ने कहा,
बड़ा बोला इच्छा नहीं, पर चला गया,
छोटा बोला जी हाँ, पर नही गया ।

यीशु ने पूछा उन दोनों में से,
किसने किया जो पिता ने चाहा,
लोगों ने उत्तर दिया बड़े ने,
तब यीशु ने उनसे ये कहा ।

कहा, यूहन्ना सही राह दिखाने आया,
पर तुमनें उसमें विश्वास किया नहीं,
कर वसुलकों और वेश्याओं ने किया,
पर तुमने मन का फिराव किया नहीं ।

कहा, बटाई पर दे अंगूर का बगीचा,
एक जमींदार यात्रा पर निकला,
अंगूर उतारने के समय उसने,
अपना हिस्सा लेने दासों को भेजा ।

किन्तु किसानों ने मारा पीटा उन्हें,
तो जमींदार ने भेजा अपने बेटे को,
मार दिया उसको भी किसानों ने,
तो सज़ा ना देगा क्या जमींदार उनको ?

कहा यीशु ने इसलिए कहता हूँ,
परमेश्वर का राज्य छीना जाएगा तुमसे,
और वह उन्हें दे दिया जाएगा,
जो बरताव करेंगे परमेश्वर के चाहे जैसे ।

फिर यीशु ने एक कथा सुनाई,
स्वर्ग का राज्य है उस राजा जैसा,
बेटे के ब्याह पर बुलवाए मेहमान.
पर दावत पर कोई ना पहुँचा ।

पीटा दासों को जो बुलाने आए,
तो सैनिकों को भेजा राजा ने,
मारा उन्होंने, नगर जला दिया,
बुला लाए वो जो मिला उन्हें ।

भरा मेहमानों से शादी का महल,
पर जब राजा उन्हें देखने आया,
उसने वहाँ एक ऐसा व्यक्ति देखा,
विवाह के वस्त्र जिसे पहने ना पाया ।

पूछा उससे जो कारण राजा ने,
कोई उचित उत्तर वो दे नहीं पाया,
सेवकों से कह, हाथ-पैर बंधवा,
राजा ने उसे अंधेरे में फेंकवाया ।

इस दृष्टान्त कथा का सारभूत,
स्पष्ट होता इन शब्दों से है,
"क्योंकि बुलाये तो बहुत गए हैं,
पर चुने हुए थोड़े से हैं ।"

फिर फरीसियों ने सोचा यीशु को,
किसी अपनी ही कही बात पर फँसाए,
सो पूछा, सम्राट कैसर को कर चुकाना,
क्या उचित है, वो विचार कर बताए ?

यीशु ने मँगवाई एक दीनारी,
पूछा उस पर मूरत है किसकी,
किसके उस पर लेख खुदे है,
मुद्रा उस पर अंकित है किसकी ?

'महाराज कैसर के', जो कहा उन्होंने,
यीशु बोला, जो जिसका है उसको दे दो,
महाराज कैसर को दो जो उनका है,
और जो परमेश्वर का वो उसको दो ।

पुनर्जीवन के नहीं मानने वाले,
कुछ सदूकियों ने पूछा यीशु से,
एक स्त्री क्रम से पत्नी बनी,
सात भाईयों की जो मरे क्रम से ।

फिर निस्संतान मर गयी वो स्त्री,
पत्नी बन कर उन सातों की,
सो अब तू बता अगले जन्म में,
पत्नी बनेगी वो किस भाई की ?

यीशु ने कहा तुम नहीं जानते,
शक्ति शास्त्रों की या परमेश्वर की,
देवदूत सम होंगे पुनर्जीवन में,
उस जीवन में ना होगी कोई शादी ।

कहा था उसने, मैं परमेश्वर हूँ,
इब्राहीम, इसहाक और याकूब का,
मरे हुए का नहीं है वो परमेश्वर,
वो परमेश्वर है जीवित लोगों का ।

पूछा उससे तो कहा यीशु ने,
सबसे पहला और आदेश बड़ा सबसे,
कर तू अपने परमेश्वर से प्रेम,
सम्पूर्ण आत्मा, मन और बुद्धि से ।

फिर दूसरा है कि पड़ोसी से अपने,
कर तू प्रेम करता जैसा स्वयं से,
सम्पूर्ण व्यवस्था और समस्त ग्रन्थ,
हैं इन्हीं दो आदेशों पर टिके ।

फिर यीशु ने फरीसियों से पूछा,
क्या सोचते, मसीह है किसका बेटा,
निरुतर कर दिया, 'दाऊद का' कहने पर,
क्योंकि दाऊद ने उसे 'प्रभु'[55] कहा था ।

कहा, फरीसी और धर्मशास्त्रियों ने,
लाद दिया बस लोगों पर बोझ,
कहते लोगों को, ख़ुद नहीं करते,
जो भी करते, दिखावे की सोच ।

और भी बहुत कुछ कहा यीशु ने,
बाहर धर्मात्मा, भीतर कपट भरा,
बातें तो बनाते बहुत बड़ी-बड़ी,
पर करते नहीं कुछ भी काम ज़रा ।

लेकिन तुम कभी ऐसा मत करना,
कहलवाना ना ख़ुद को रब्बी कभी,
सच्चा गुरु और पिता बस वो है,
कहलवाना ना गुरु या पिता कभी ।

उजड़ जाएगा यरूशलेम का मन्दिर,
देखोगे नहीं तुम मुझे तब तक,
'धन्य है जो प्रभु के नाम आ रहा',
कहोगे नहीं तुम जब तक ।

बैठा था जैतून पर्वत पर जब यीशु,
शिष्यों ने आकर पूछा यह उससे,
हमें बता तू कब वापस आयेगा,
कैसे संकेत होंगे अन्त होने के ?

बहुत आएँगे जो कहेंगे मसीह हूँ,
सावधान, तुम्हें कोई छलने ना पाए,
ठगेंगे लोगों को झूठे नबी आकर,
उद्धार होगा जो अन्त तक टिक पाए ।

मनुष्य के पुत्र के आने का संकेत,
होगा उस समय प्रकट आकाश में,
शक्ति और महिमा संग प्रकट होते,
स्वर्ग के बादलों में देखेंगे उसे ।

ऊँचे स्वर की तुरही के साथ,
भेजेगा वह अपने दूतों को,
फिर वे स्वर्ग में सब कहीं से,
एकत्र करेंगे चुने लोगों को ।

जब तुम यह घटित होते हुए देखो,
समझ लेना वह समय आ पहुँचा,
घटेगा यह इस पीढ़ी के जीते जी,
मेरा यह वचन कभी नहीं मिटेगा ।

कोई नहीं जानता उस समय के बावत,
बस जानता उसके बावत परमपिता,
सो सावधान रह करो आज्ञा का पालन,
अवज्ञा करने वालों को दण्ड मिलता ।

---

[55] प्रभु-देखें भजन सहिंता 110:1

दृष्टान्त दिया दस कन्याओं का उसने,
जिन्हें दूल्हे से मिलने का था अरमान,
पाँच सजग और पाँच लापरवाह थीं,
उन पाँचों ने लिया ना पूरा सामान ।

आधी रात जब दूल्हा आया,
सजग कन्याएँ चल दीं साथ उसके,
लापरवाह कन्याएँ हाथ मलती रह गयीं,
चल दिया दूल्हा अनदेखी करके ।

फिर दृष्टान्त दिया तीन दासों का,
जिन तीनों को धन दिया स्वामी ने,
दो ने धन से धन और कमाया,
पर तीसरे ने गाड़ दिया जमीं में ।

जब स्वामी ने सब जाना जो हुआ,
कहा तीसरे को बुरा और आलसी,
फिर उससे वो धन वापस लेकर,
दिया उसे जिसने ज्यादा कमाई की ।

क्योंकि दिया जाएगा उसे और,
जिसने चीजों का किया सदुपयोग,
लेकिन छीन लिया जाएगा उससे,
जिसने किया ना उचित उपयोग ।

न्याय करेगा मनुष्य का पुत्र,
जब वह सिंहासन पर बैठेगा,
पेश किए जाएँगे सब उसके समक्ष,
भेड़ों को बकरियों से अलग करेगा ।

किया जो मेरे दीन अनुयायियों संग,
वो सब तुमने मेरे साथ ही किया,
बुरा किया जिन्होंने वे दण्ड पाएँगे,
अनन्त जीवन, जिन्होंने दिखाई दया ।

यीशु बोला दो दिन बाद फसह पर,
पकड़वाया जाएगा शत्रुओं द्वारा उसे,
पर डर रहे थे याजक और यहूदी नेता,
दंगे-फसाद ना हो जाएँ इस कारण से ।

शमौन कोढ़ी के घर यीशु पर,
बहुमूल्य इत्र उंडेला एक स्त्री ने,
कहा शिष्यों ने, बर्बाद कर दिया,
पर सुंदर काम किया, कहा यीशु ने ।

दीन दुखी तो सदा तुम्हारे साथ रहेंगे,
पर नहीं रहूँगा मैं तुम्हारे साथ सदा,
तैयारी कर दी उसने मेरे गाड़े जाने की,
सुसमाचार संग इसकी भी होगी चर्चा ।

यीशु के बारह शिष्यों में से एक,
यहूदा[56] विरोधियों में जा मिला,
चाँदी के तीस सिक्कों के बदले,
यीशु का उसने कर लिया सौदा ।

फसह पर शिष्यों संग भोजन करते,
यीशु बोला, तुममें से एक देगा दगा,
पूछा जो यहूदा ने वह मैं तो नहीं,
कहा, हाँ है वैसा ही, जैसा तूने कहा, ।

[56] यहूदा-यहूदा इस्करियोती ।

फिर रोटी के टुकड़े शिष्यों को दिए,
कहा यह मेरी देह है, खाओ इसे,
फिर प्याला उठा धन्यवाद दे कहा,
तुम सब थोड़ा-थोड़ा पिओ इसे ।

फिर कहा क्योंकि ये मेरा लहू है,
करता स्थापना एक नये वाचा की,
और बहाया जा रहा बहुतों के लिए,
ताकि मिल सके उन्हें क्षमा पापों की ।

फिर यीशु ने कहा आज रात में मुझसे,
तुम सब का विश्वास डिग जाएगा,
क्योंकि लिखा है 'मैं गड़ेरिये को मारूँगा',
और पूरा रेवड़ तितर-बितर हो जाएगा ।

पतरस बोला चाहे सब खो दे,
मैं तुझसे विश्वास खोऊँगा ना कभी,
यीशु बोला मुर्गे की बांग से पहले,
तीन बार नकार चुकेगा, मुझे आज ही ।

पतरस और जब्दी के बेटों के साथ,
फिर यीशु गतसमने को गया,
प्रार्थना की उसने परमेश्वर से,
और 'उसकी' इच्छा पूरी हो कहा ।

हो सके तो टाल दे यातना,
पर परमेश्वर की इच्छा ही पूरी हो,
कहा शिष्यों को मनुष्य के पुत्र को,
सौंपा जाएगा अब पापियों के हाथों ।

तभी यहूदा ले आया एक भीड़,
चूम यीशु को, हे नबी ! कह बुलाया,
फिर भीड़ ने यीशु के पास जा कर,
यीशु को दबोच, उसे बंदी बनाया ।

एक पक्षधर ने विरोध किया तो,
यीशु ने कहा तुम क्या समझते,
बुला सकता परमेश्वर की बारह सेना,
और भेज देगा वो पलक झपकते ।

भाग खड़े हुए यीशु के बारह शिष्य,
यीशु ले जाया गया कैफा[57] के सामने,
कोई अभियोग ढूँढने का किया यत्न,
पर कुछ भी ऐसा मिला ना उन्हें ।

अन्त में दो व्यक्ति आगे आ बोले,
उसने कहा था ऐसा कर सकता हूँ,
कर सकता हूँ, मन्दिर को नष्ट,
फिर तीन दिन में बना सकता हूँ ।

क्या तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है,
कैफा ने पूछा तो हाँ कहा यीशु ने,
और कहा मनुष्य के पुत्र को देखोगे,
शीघ्र ही बैठे परमेश्वर के दाहिने ।

इतना क्रोधित हुआ कैफा यह सुन,
लगा वो अपने कपड़े फाड़ने,
बोला यह तो परमेश्वर की निंदा है,
तुम सबने सुना जो बोला इसने ।

[57] कैफा-महायाजक ।

उधर पतरस से एक दासी ने पूछा,
'तू भी तो गलीली यीशु के साथ था',
नकार दिया उसने, फिर दो और बार,
तभी मुर्गे ने बाँग दी, जैसा कहा था ।

अल्ल सुबह उन सबने मिलकर,
षडयंत्र रचा मरवाने का यीशु को,
ले गए वो यीशु को बांधकर,
सौंपा राज्यपाल पिलातुस को ।

निरापराध को पकड़ाया यहूदा ने,
आत्मग्लानि से वो भर गया,
फेंके मन्दिर में चाँदी के सिक्के,
फिर फाँसी लगा वो मर गया ।

क्या तू यहूदियों का राजा है,
पूछा पिलातुस ने तो हाँ बोला यीशु,
यह कहकर वो मौन हो गया,
फिर उससे कुछ ना बोला यीशु ।

एक कैदी छोड़ा जाता था फसह पर,
पर भीड़ ने यीशु को छोड़ने ना दिया,
कहा क्रूस पर इसे चढ़ा दिया जाए,
जिम्मा खून का भीड़ ने सिर लिया ।

छोड़ा गया एक दूसरा खूँखार कैदी,
पिलातुस ने भीड़ ने जो कहा, किया,
सिपाही ले गए यीशु को पकड़कर,
तरह-तरह से उसका उपहास किया ।

फिर चढ़ा दिया यीशु को क्रूस पर,
और बाँट लिए उसके वस्त्र आपस में,
फिर लिखकर उसका अभियोग पत्र,
टांग दिया उसके सिर पर उन्होंने ।

करने लगे लोग उसका अपमान,
बोले यदि तू है पुत्र परमेश्वर का,
दिखा उतर कर क्रूस से नीचे,
माने तुझे इस्राएल का राजा ।

फिर छाया रहा समूची धरती पर,
दोपहर से तीन बजे तक अँधियारा,
तब 'एली, एली, लमा शबकतनी[58]',
ऊँचे स्वर में यीशु ने पुकारा ।

फिर एक बार ऊँचे स्वर में पुकार,
त्याग दिए यीशु ने अपने प्राण,
तभी फट पड़ा मन्दिर का पर्दा,
धरती काँपी, फट पड़ीं चट्टान ।

पिलातुस से आज्ञा ले एक धनी ने,
यीशु के शव को कब्र में दफनाया,
चट्टान काट बनवाई थी वो कब्र,
एक बड़े पत्थर से उसे ढकवाया ।

कहा था तीसरे दिन वो जी उठेगा,
सो पहरेदार कर रहे थे चौकसी,
उधर गलील से आयीं दो स्त्रियाँ[59],
पौ फटने से पहले पहुँच चुकी थीं ।

[58] एली, एली, लमा शबकतनी-मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों बिसरा दिया ।

[59] दो स्त्रियाँ-मरियम मगदलीनी और याकूब व योसेस की माता मरियम । इनके साथ एक तीसरी स्त्री जब्दी ले बेटों की माँ भी गलील से आई थी ।

उतरा था वहाँ एक स्वर्गदूत,
मरणासन्न सिपाही लगे थे काँपने,
कहा स्वर्गदूत ने उन दोनों को,
वहाँ नहीं है वो, देख आओ कब्र में ।

फिर तुरंत जा उसके शिष्यों से कहो,
जिला दिया गया उसे मरे हुओ में से,
अब उसे गलील में देखोगे तुम.
जहाँ जा रहा है वो पहले तुमसे ।

आनन्द से भरी जब जा रही थीं वो,
अचानक यीशु आ मिला उनसे,
कहा, जा कर मेरे बंधुओं से कहो,
गलील जाओ, वहीं मिलूँगा उनसे ।

बताया याजकों को पहरेदारों ने,
तो मिलकर एक योजना बनाई उन्होंने,
धन दे सिपाहियों को चुप कर दिया,
फैला दिया शव चुरा लिया शिष्यों ने ।

ग्यारह शिष्य गलील में मिले उससे,
यीशु को देख सन्देह था कुछ को,
यीशु बोला, मिले दोनों जहाँ के अधिकार,
मेरे अनुयायी बनाओ, सब लोगों को ।

परमपिता, पुत्र और पवित्र आत्मा,
यह काम करना है उनके नाम में,
बपतिस्मा दे कर उन लोगों को,
पूरा करना है यह काम तुम्हें ।

वे सभी आदेश जो दिए तुम्हें,
उन पर चलना सिखलाओ उन्हें,
मैं सृष्टि रहने तक साथ रहूँगा,
याद रखो यह मन में अपने ।

मरकुस[60]

शिष्यों के सामने प्रकट हो यीशु ने,
कहा, जाओ सुसमाचार का उपदेश दो,
उद्धार होगा विश्वासी लोगों का,
दोषी ठहराया जाएगा अविश्वासी को ।

बात कर चुका जब यीशु उनसे,
स्वर्ग पर उसे उठा लिया गया,
फिर जैसा कहा था उसने वो,
परमेश्वर के दाहिने बैठ गया ।

[60] मरकुस- मरकुस और लूका इन दो अध्यायों में मत्ती से बहुत अधिक समानता है, अतः इस सार रूपी पुस्तक में इन अध्यायों की वे ही बातें दी जा रही हैं जो मत्ती में नहीं हैं । इसी प्रकार अध्याय 'यूहन्ना' में भी ऐसे प्रसंगों को नहीं दोहराया गया है ।

काम कर रहा था प्रभु उनके साथ,
जब बाहर जा शिष्यों ने आदेश दिया,
आश्चर्य कर्म की शक्ति से युक्त कर,
प्रभु ने वचन को सिद्ध किया ।

लूका

यहूदिया पर था जब हेरोदेस का राज,
जकरयाह नाम का एक याजक था,
इलीशिबा नाम की उसकी पत्नी थी,
पर दोनों का कोई बच्चा ना था ।

धूप जला रहा था जब मन्दिर में,
जकरयाह ने देखा एक देवदूत को,
कहा, सुन ली गयी है तेरी प्रार्थना,
जन्मेगी तेरी पत्नी एक पुत्र को ।

यूहन्ना रखेगा तू उसका नाम,
पवित्र आत्मा से वो परिपूर्ण होगा,
एलिय्याह की शक्ति, आत्मा में स्थित,
प्रभु के लिए लोगों को तैयार करेगा ।

विश्वास ना हुआ जो देवदूत पर उसको,
कहा, गर्भ ठहरने तक गूँगा हो रहेगा,
थोड़े दिन बाद गर्भवती हुई उसकी पत्नी,
पाँच महीनों तक अलग रही इलीशिबा ।

तब मरियम से देवदूत जिब्राईल ने कहा,
परमेश्वर की शक्ति तुझे छाया में लेगी,
गर्भवती हो तू जन्मेगी परमेश्वर का पुत्र,
होगा महान, तू उसका नाम यीशु रखेगी ।

तुम्हारे ही वंश की इलीशिबा भी,
जन्मेगी बुढ़ापे में एक पुत्र को,
कहते थे लोग उसे बाँझ पर,
असम्भव नही कुछ परमेश्वर को ।

सगाई हो चुकी थी तब तक उसकी,
यूसुफ से जो दाऊद के वंश से था,
गयी मिलने मरियम इलीशिबा से,
वो बोली, होकर रहेगा प्रभु का कहा ।

यूहन्ना का जन्म होने पर जकरयाह,
अभिभूत हो उठा पवित्र आत्मा से,
बोल उठा, हे बालक ! तू कहाएगा नबी,
राह तैयार करेगा प्रभु के आगे-आगे ।

उन्हीं दिनों मंगेतर मरियम के साथ,
यूसुफ बैतलहम को गया हुआ था,
तभी आ गया प्रसव का समय,
मरियम ने प्रथम पुत्र को जन्म दिया ।

क्योंकि सराय में कोई जगह ना थी,
चरनी में रख दिया बच्चे को उसने,
स्वर्गदूत ने प्रकट हो गड़रियों से कहा,
तुम्हारा मसीह लेटा है एक चरनी में ।

जब आया खतने का आठवाँ दिन,
यीशु नाम रखा गया बालक का,
सूतक के बाद यरूशलेम गए, जहाँ,
पवित्र आत्मा का एक कृपा पात्र था।

प्रेरणा पाकर वह आया मंदिर में,
और उठा लिया गोदी में यीशु को,
कहा, शान्ति के साथ मुझे मुक्त कर,
देख चूका हूँ मैं अब तेरे मसीह को।

गैर यहूदियों के लिए तेरे मार्ग को,
उजागर करने का स्रोत है यह बालक,
और तेरे अपने इस्राएलियों के लिए,
तेरी ही अपनी महिमा है यह बालक।

वहीं हन्नाह एक महिला नबी थी,
धन्यवाद दिया उसने परमेश्वर को,
यरूशलेम की मुक्ति को जो आतुर थे,
बालक के बारे में बताया उनको।

हर वर्ष फसह पर माता-पिता,
ले जाते थे यरूशलेम यीशु को,
बारह वर्ष का जब हुआ यीशु,
यरूशलेम में ही पीछे रह गया वो।

ढूँढते उसे माता-पिता यरूशलेम लौटे,
तीन दिन बाद मिला यीशु उन्हें,
उपदेशकों के बीच प्रश्न पूछता,
मंदिर में बैठा मिला यीशु उन्हें।

उसकी समझ बूझ और प्रश्नोत्तर ने,
कर रखा था आश्चर्यचकित सबको,
वो बोला मैं अपने पिता के घर था,
ढूँढ रहे थे क्यों तुम मुझको ?

हेरोदेस के राज में, नबी यूहन्ना को,
संदेश मिला, वो बपतिस्मा हेतु पुकारे,
"प्रभु के लिए मार्ग तैयार करो,
और उसके लिए करो सीधी राहें।"

दाऊद, यिशै, याकूब द्वारा यीशु,
इब्राहीम और आदम का वंशज था
उसने जब सेवा कार्य शुरू किया,
तो वह लगभग तीस वर्ष का था।

की प्रार्थना पवित्र आत्मा में स्थित हो,
तूने चतुरों से छिपाया, शिशु जानें,
कहा, जानते पिता और पुत्र परस्पर,
या जिसको पुत्र जनाना चाहे, जाने।

यीशु की परीक्षा लेने के लिए,
एक न्ययाधीश ने पूछा उससे,
धर्मशास्त्रों ने किसे कहा पड़ोसी,
प्रेम करना चाहिए, लिखा है, जिससे ?

कहा यीशु ने एक यात्री को मार्ग में,
लूटा और मार दिया डाकुओं ने,
याजक और लेवी अनदेखी कर गए,
पर उसकी मदद की एक सामरी[61] ने।

[61] सामरी-कुछ परदेसी जो इस्राएल में आकर बस गए थे। इनकी कुछ शिक्षाएं यहूदी धर्म से बिलकुल अलग थीं।

प्रत्युत्तर में पूछा यीशु ने बता,
तेरे विचार से कौन इनमें पड़ोसी,
उत्तर में उस न्यायाधीश ने कहा,
वही जिसने उस यात्री पर दया की ।

एक स्त्री मार्था के घर गया यीशु,
उसकी बहन मरियम बैठी चरणों में,
सहायता जो चाही मार्था ने उससे,
उत्तम अंश चुना उसने, कहा यीशु ने ।

पूछा एक शिष्य ने कैसे करें प्रार्थना,
यीशु बोला, प्रार्थना करो तो कहो,
हे पिता ! पवित्र हो तेरा नाम,
और सर्वत्र ही तेरा ही राज्य हो ।

आहार दे तू हमें दिन-प्रतिदिन,
और हमारे अपराध क्षमा कर,
क्षमा किए अपने अपराधी हमने,
कठिन परीक्षा से रख तू बचाकर ।

फिर यीशु ने कहा शिष्यों से,
निस्संकोच माँगों, दिया जाएगा तुम्हें,
खोजोगे यदि तो पा जाओगे तुम,
खटखटाओ, भीतर आने देगा वो तुम्हें ।

फिर कहा, लोभ को रखो दूर,
जीवन का आधार संग्रह मत समझो,
तुम्हारी हर जरूरत की 'उसे' फ़िक्र है,
तुम बस उसके राज्य की चिन्ता करो ।

यदि बुलाया जाए तुम्हें कहीं पर,
सबसे नीचे का स्थान ग्रहण करो,
बढ़ेगा सम्मान जब मेजबान कहे,
हे मित्र उठो, आकर ऊपर बैठो ।

दावत दो तो धनिकों की जगह,
बुलाओ तुम दीन-दुखी लोगों को,
बदले में वो देंगे आशीर्वाद तुम्हें,
प्रतिफल मिलेगा प्रभु से तुमको ।

नमक उत्तम है, पर स्वाद खोने पर,
नही किया जा सकता उसका उपयोग,
ना मिट्टी, ना खाद की कुड़ी लायक,
बस यूँ ही फेंक देंगे उसको लोग ।

फिर दिया दो बेटों का दृष्टान्त,
बँटवारा करा छोटा दूर चल दिया,
नष्ट कर दिया सारा धन उसने,
होश ठिकाने लगे, समझा पाप किया ।

सोचा लौट जाऊँगा पिता के पास,
पर मन ही मन था बहुत शर्मिन्दा,
देखा जो पिता ने उसे लौटते,
आगे बढ़ उत्सव का प्रबन्ध किया ।

बड़ा बेटा रुष्ट हुआ पिता से,
उसके लिए तो कभी कुछ ना किया,
कहा, प्यार लुटाया तूने उस पर,
जो छोड़ गया, धन बर्बाद किया ।

तब पिता ने यह कहा उससे,
मेरे पास है बेटे तू तो सदा से,
और जो कुछ भी है मेरे पास,
वह सब तो तेरा है सदा से ।

पर प्रसन्न हों, हम मनाएँ उत्सव,
तेरा यह भाई जो मर गया था,
अब जीवित हो वापस आया है,
हमें अब मिला, जो खो गया था ।

एक दीन हीन व्यक्ति लाजर,
पड़ा रहता था एक धनी के द्वार,
विलासिता का जीवन था धनी का,
लाजर था हर तरह से लाचार ।

फिर एक दिन मर गया लाजर,
बैठाया गया इब्राहीम की गोद में,
फिर मरा वो धनी भी एक दिन,
पर उसको पहुँचाया गया नरक में ।

पुकारा इब्राहीम को तो उत्तर मिला,
हे पुत्र ! तूने जीवन में सब पा लिया,
लेकिन लाजर को मिली बुरी वस्तुएँ,
सो उसे यहाँ आनन्द दिया गया ।

उत्तम सेवक को चाहिए काम करे,
नहीं रखे वो किसी बड़ाई की चाहना,
दास किसी बड़ाई का हकदार नहीं,
उसने तो कर्तव्य निभाया बस अपना ।

जब यीशु चढ़ाया गया क्रूस पर,
तब यीशु ने कहा, हे परम पिता !
ये नहीं जानते, ये क्या कर रहे हैं,
किन्तु तू कर देना उन्हें क्षमा ।

यीशु जब तीसरे दिन जी उठा,
मिला वो अपने दो शिष्यों को,
नबियों और शास्त्रों में जो कहा गया,
व्याख्या कर सब समझाया उनको ।

खाने की मेज पर रोटी उठाई उसने,
और धन्यवाद कर देने लगा टुकड़े,
तभी दोनों की आँखें खोल दी गईं,
और यीशु को पहचान लिया उन्होंने ।

किन्तु वह अदृश्य हो गया,
तो यरूशलेम को वो चल दिए,
बतलाया ग्यारह प्रेरितों को उन्होंने,
कैसे यीशु ने उन्हें दर्शन दिए ।

यूहन्ना

आदि में बस केवल शब्द[62] था,
परमेश्वर यही और उसके साथ था,
सारी सृष्टि शब्द से उपजी,
यही प्रकाश और उसमें जीवन था ।

फिर आया परमेश्वर का भेजा यूहन्ना,
बता सके जो प्रकाश के बारे में,
देने आया था वह प्रकाश की साक्षी,
आगे आने वाला था जो जगत में ।

[62] शब्द-मूल में यूनानी भाषा का शब्द है लोगोस जिसका अर्थ है सन्देश ।

परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार,
दिया उसे, उसे अपनाया जिसने,
वह स्वयं नही था देह जनित,
बल्कि जन्म दिया उसे परमेश्वर ने ।

उस आदि शब्द ने देह धारण कर,
हम सबके बीच निवास किया,
परमपिता के एकमात्र पुत्र रूप में,
उसकी महिमा का दर्शन हमने किया ।

अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त किये हमने,
उसकी करुणा और सत्य की पूर्णता से,
व्यवस्था विधान देने वाला मूसा था,
करुणा और सत्य मिले हमें यीशु से ।

जब पूछा यूहन्ना से कौन है वो,
उसने कहा, मैं आवाज़ हूँ उसकी,
जो पुकार रहा है जंगल में,
प्रभु के लिए बनाओ राह सीधी ।

अगले दिन यीशु को देख कहा,
यह वो है जिसके लिए कहा था मैंने,
स्वर्ग से कबूतर के रूप में आत्मा,
उतरकर उस पर टिकती देखी मैंने ।

जिसने मुझे बपतिस्मा देने भेजा,
कहा था मुझसे तुम देखोगे उसको,
पवित्र आत्मा से देता है बपतिस्मा,
'परमेश्वर का पुत्र' है यही तो ।

आने लगे यीशु के पास अनुयायी,
शामिल थे इनमें शमौन और अन्द्रियास,
फिलिप्पुस और नतनएल, जिसे यीशु ने,
देखा था एक अंजीर के पेड़ के पास ।

गलील के काना में एक विवाहोत्सव में,
दाखरस खत्म होने पर माँ ने कहा,
मेरा समय अभी नही आया है,
क्यों मुझे कह रही हो, यीशु ने कहा ।

पर भरवाया मटकों को उसने पानी से,
और वो पानी दाखरस बन गया,
यह पहला चमत्कार कर यीशु ने,
अपनी महिमा को प्रकट किया ।

मन्दिर में यहूदियों ने पूछा उससे,
तू क्या चमत्कार हमें दिखा सकता,
वो बोला, इस मन्दिर को गिरा दो,
तीन दिन में फिर इसे बना सकता ।

किन्तु यीशु के कहे का ईशारा,
मन्दिर के रूप में अपना तन था,
लेकिन अपने अज्ञान के कारण,
लोगों ने इसे तब समझा ना था ।

एक फरीसी नीकुदेमुस ने यीशु से,
कहा, जानता तुझे परमेश्वर ने भेजा,
क्योंकि उसकी सहायता बिना कोई,
तुझ जैसे चमत्कार कर नहीं सकता ।

यीशु बोला, नया जन्म लिए बिना,
परमेश्वर का राज्य असम्भव देखना,
होता है माँस से तो पैदा बस माँस,
जल और आत्मा से जो ना जन्मा ।

परमेश्वर का राज्य चाहते जो पाना,
लेना होगा जन्म एक नए सिरे से,
जाना नहीं जाता हवा कहाँ से आती,
आत्मा से जन्मा व्यक्ति भी है ऐसे ।

धरती की बात पर विश्वास ना करते,
स्वर्ग की बात पर करोगे कैसे,
स्वर्ग में ऊपर गया ना कोई,
सिवाय मानव पुत्र जो आया उतर के ।

इतना प्रेम था परमेश्वर को जगत से,
कि दे दिया अपना एक मात्र पुत्र उसे,
ताकि जो उसमें विश्वास रखता है,
नष्ट ना हो, अनन्त जीवन मिले उसे ।

भेजा दुनिया के उद्धार के लिए,
ताकि विश्वासी ठहराया जाए ना दोषी,
पर जो उसमें विश्वास नहीं रखता,
वो तो ठहराया जा चुका है दोषी ।

करता है प्यार अपने पुत्र को पिता,
सौंप दिया सब उसके हाथों में,
इसलिए अनन्त जीवन वह पाता,
जो करता विश्वास उसके पुत्र में ।

गलील जाते हुए सूखार में,
थककर बैठा यीशु एक कुँए के पास,
एक सामरी स्त्री से जल माँगा उसने,
मैं सामरी हूँ उसने दिया जवाब ।

वो बोला जो तू बस इतना जानती,
ये कौन तुझसे माँग रहा है जल,
तो तू उससे माँगती और वो तुझको,
करता प्रदान स्वच्छ जीवन जल ।

फिर यीशु ने उसे कुछ बातें बतलाईं,
और कहा अराधना के बारे में,
परमेश्वर आत्मा है सो उसकी अराधना,
करनी होगी आत्मा और सच्चाई में ।

समझ गहराई यीशु की बात की,
बोली, मैं जानती ख्रीष्ट है आने वाला,
तब यीशु ने ख़ुद को जाहिर किया,
कहा वही हूँ मैं, तुझसे बोलने वाला ।

सुनकर उस स्त्री से सब बातें,
बहुत सामरी आ गये मिलने उससे,
और जब सुना यीशु को उन्होंने,
भर गए उसके प्रति विश्वास से ।

फिर कुछ चमत्कार किए यीशु ने,
किया लोगों को स्वस्थ उसने,
अपने पिता को जो करते देखता,
पुत्र वही करता, कहा उसने ।

करता नहीं जो पुत्र का आदर,
अनादर करता वह पिता का,
जैसे पिता जीवन का स्रोत है,
वैसे ही उसने पुत्र को रचा ।

कहा यहूदियों को, जो सौंपे गए हैं,
उन्हीं कामों को मैं पूर्ण कर रहा,
और वे काम ही हैं मेरी साक्षी,
कि भेजा गया हूँ उसके ही द्वारा ।

आया हूँ मैं अपने पिता के नाम से,
फिर भी तुम मुझे स्वीकार नहीं करते,
कैसे करोगे मेरे वचन में विश्वास,
जब मूसा का लिखा भी नहीं मानते ?

बहुतों की भूख मिटाई यीशु ने,
कहा, पिता की सच्ची रोटी हूँ मैं,
भूखा-प्यासा ना रहेगा कभी वो,
जो विश्वास करता है मुझमें ।

फिर कहा मैं सत्य कहता हूँ तुमसे,
जो विश्वासी है, अनन्त जीवन पाता,
और मैं ही वह रोटी हूँ जिसे,
जो खाता, वो अनन्त जीवन पाता ।

आत्मा ही है जो जीवन देता,
नहीं है कोई उपयोग देह का,
ये वचन जो मैंने तुमसे कहे,
ये ही आधार हैं जीवन का ।

यीशु की बातों को सुन यहूदी,
तरह-तरह की बातें आपस में करते,
कोई भला, कोई बुरा कह रहा,
पर यहूदी नेताओं से डरते-डरते ।

खेमों के पर्व पर मन्दिर में,
यीशु ने लोगों को उपदेश दिया,
कहा, परमपिता का भेजा आया हूँ मैं,
उसकी ओर से है जो मैंने कहा ।

फिर कुछ यरूशलेम वालो ने कहा,
क्या कोई इतने चमत्कार कर पाएगा,
गर ये नहीं, तो जब आएगा मसीह,
क्या इससे अधिक कुछ कर पाएगा ?

पर्व के अंतिम दिन कहा यीशु ने,
जो प्यासा हैं, आए, पिए मुझसे,
स्वच्छ जीवन जल फूट पड़ेगा,
मुझमें विश्वासी के अन्तर से ।

सुनी भीड़ ने जब यीशु की बातें,
बोले, निश्चय ही है यह नबी वही,
कुछ बोले यह आया गलील से,
शास्त्र कहते बैतलहम, गलील नहीं ।

प्रमुख अधिकारी और फरीसियों ने,
भेजे सिपाही बंदी बनाने उसे,
पर चकित थे वे उसकी बात सुन,
लौट गए बिना बंदी बनाए उसे ।

व्याभिचार के अभियोग में पकड़,
एक स्त्री लायी गयी यीशु के पास,
कहा, विधान संगसार करने को कहता,
तू बता क्या किया जाए इसके साथ ?

चाहते थे कोई बहाना यीशु के खिलाफ,
पर वो बोला, मार सकते पत्थर इसको,
लेकिन तुम में से जो पापी नहीं है,
वही मारे सबसे पहला पत्थर इसको ।

खिसकने लगे एक-एक कर वो लोग,
रह गया बस अकेला यीशु ही,
ठहराया स्त्री को किसी ने ना दोषी,
कहा उसे अब वो पाप करे ना कभी ।

फिर यीशु बोला जगत का प्रकाश हूँ,
जीवन का प्रकाश पाएगा अनुयायी मेरा,
उचित है देना मेरा अपने लिए साक्षी,
जानता उद्गम और गन्तव्य मेरा ।

मेरा पिता भी है मेरा साक्षी,
विधान अनुसार काफ़ी है इतना,
कहा लोगों ने उसे ढूंढें कहाँ,
यीशु बोला तुम जानते कितना ?

पूछा उन्होंने, “तू कौन है” तो,
उत्तर में यीशु ने उनसे कहा,
मैं वही हूँ, जैसा कि प्रारम्भ से,
तुमसे कहता मैं चला आ रहा ।

और वह जिसने भेजा है मुझे,
साथ में मेरे सदा वो रहता,
क्योंकि जो भाता है उसको,
मैं तो सदा बस वही करता ।

दास हो जाता है पापी, पाप का,
जो सदा परिवार में रह नहीं सकता,
मुक्त होगा पुत्र के मुक्त करने से,
यदि पुत्र के उपदेश वो सुनता ।

और सत्य कहता हूँ मैं तुमसे,
करेगा जो मेरे उपदेशो को धारण,
उनको सुनने, उन पर चलने वाला,
कभी करेगा ना मृत्यु का वरण ।

नबी भी मर गए, कहा उन्होंने,
तू कैसे कहता, मृत्यु ना होगी,
बड़ा नहीं है तू इब्राहीम से,
अपने बारे में क्या सोच तेरी ?

यीशु बोला मैं ठहरूँगा झूठा,
यदि मैं कहता, मैं नहीं जानता,
मैं जानता हूँ 'उसे' अच्छी तरह,
जो 'वह' कहता, मैं पालन करता ।

जाते हुए एक जन्मान्ध देखा यीशु ने,
अनुयायियों ने पूछा कारण इसका,
वो बोला, ताकि उसे यीशु अच्छा करे,
परमेश्वर की शक्ति की हो चर्चा ।

क्योंकि वह दिन था सब्त का दिन,
फरीसियों ने ठहराया यीशु को पापी,
लेकिन ख़ुद ही विस्मय में पड़ गए,
कैसे चमत्कार कर सकता कोई पापी ?

पूछा जब उन्होंने ख़ुद उससे ही,
वो बोला मैं तुम्हें बता चुका,
लेकिन तुम समझना नहीं चाहते,
परमेश्वर ने अपने समर्पित को सुना ।

यीशु ने कहा, भेड़ों का चरवाहा,
घुसता द्वार से और देता आवाज़,
चल देतीं वो उसके पीछे-पीछे,
पर ना समझे वे यीशु की ये बात ।

कहा, भेड़ों के लिए द्वार हूँ मैं,
रक्षा होगी जो इसमें हो प्रवेश करेगा,
मैं भेड़ों को और भेड़े मुझे जानतीं,
जो उनके लिए जान दे देगा ।

फिर कहा मेरी और भेड़ें भी हैं,
जो नहीं हैं इस बाड़े की,
मुझे उन्हें भी लाना होगा,
यहाँ आकर वो एक हो रहेंगी ।

परमपिता प्रेम करता है मुझसे,
क्योंकि मैं अपना जीवन देता हूँ,
ताकि मैं उसे फिर वापस ले सकूँ,
मैं उसे अपनी इच्छा से देता हूँ ।

भ्रमित हो गए यहूदी नेता इससे,
करने लगे वे तरह-तरह की बातें,
कोई कह रहा दुष्टात्मा से ग्रसित,
पर दुष्टात्मा दे नहीं सकती आँखें ।

फिर घेर लिया यहूदियों ने उसको,
समर्पण उत्सव के दिन मन्दिर में,
पर यीशु ने उन्हें निरुत्तर कर दिया,
और बच गया वो बन्दी बनने से ।

पर बहुत से लोग आ कहने लगे,
जो कहा यूहन्ना ने इसके बारे में,
वह सब वास्तव में सच निकला,
और हो गए विश्वासी वो यीशु में ।

मरियम और मारथा दो बहनें थीं,
लाजर उनका भाई हुआ बहुत बीमार,
इन बहनों ने खबर भेजी यीशु को,
कि रोगी है भाई जिसे तू करता प्यार ।

यह वही मरियम थी जिसने यीशु पर,
इत्र डाला और पाँव पौछें थे बालों से,
कहा यीशु ने लाजर बीमार है ताकि,
परमेश्वर की महिमा प्रकट हो इससे ।

मर गया लाजर, उसे दफनाया गया,
यीशु पहुँचा इसके चार दिन बाद,
गिर पड़ी मरियम यीशु के चरणों में,
व्याकुल यीशु की भी भर आईं आँख ।

चल दिया यीशु उसकी कब्र की ओर,
जो एक गुफा थी चट्टान से ढकी,
देख पाएगी तू परमेश्वर की महिमा,
कहा मारथा से, अगर विश्वास करेगी ।

चट्टान हटवा, उसे पुकारा यीशु ने,
कहा, अरे ओ लाजर, बाहर आ,
और जो मर चुका था जीवित होकर,
बाहर आ गया, कफन में लिपटा ।

फिर फरीसी महायाजक से मिल,
रचने लगे कुचक्र मारने का उसे,
साथ ही मारना चाहते थे लाजर को,
लोग प्रेरित हो रहे थे देख उसे ।

तब कहा यीशु ने, मानव-पुत्र का,
समय आ गया महिमावान होने का,
दाना जब तक ना मिलता मिट्टी में,
तब तक उससे कुछ ना उपजता ।

कहा पुकार कर फिर यीशु ने,
वह जो करता है मुझमें विश्वास,
मुझमें नहीं बल्कि जिसने भेजा मुझे,
वह प्रकट करता है उसमें विश्वास ।

जो देखता मुझे, देखता भेजने वाले को,
प्रकाश रूप, मैं अंधकार मिटाने आया,
जगत को दोषी ठहराने के लिए नहीं,
बल्कि उद्धार जगत का करने आया ।

फिर फसह पर्व से पहले यीशु ने,
यह देख कि उसका वक्त आ पहुँचा,
शाम का खाना खाते वक्त उसने,
शिष्यों के चरणों को धोकर पौंछा ।

कहा एक दास स्वामी से बड़ा नहीं,
ना सन्देशवाहक उससे जिसने भेजा,
तुम्हारे समक्ष मैंने रखा उदाहरण,
ताकि कर सको औरों के साथ वैसा ।

फिर कहा, तुम्हें आज्ञा देता हूँ,
कि करो प्रेम तुम एक-दूजे से,
जानेंगे वे तुम्हें मेरा अनुयायी जब,
तुम आपस में प्रेम रखोगे, मेरे जैसे ।

कहा फिलिप्पुस ने, हे प्रभु हमें,
परम पिता के करा दे दर्शन,
यीशु ने कहा, जिसने देखा मुझे,
कर लिए परम पिता के दर्शन ।

और जो मुझमें विश्वास करता है,
वह भी कर सकेगा मुझ जैसे काम,
वास्तव में तो वह उन कामों से भी,
दे सकेगा बड़े कामों को अंजाम ।

क्योंकि जा रहा मैं परम पिता के पास,
मेरे नाम से जो माँगोगे वो करूँगा,
महिमावान होगा पिता पुत्र के द्वारा,
मुझसे मेरे नाम में जो माँगोगे करूँगा ।

पर छोड़ूंगा ना मैं तुम्हें अनाथ,
पाओगे तुम मुझे अपने पास ही,
जगत नहीं पर तुम मुझे देख सकोगे,
मैं जीवित हूँ, रहोगे जीवित तुम भी ।

कहा यीशु ने मैं दाखलता हूँ,
और परमपिता है मेरा माली,
तुम दाखलता की शाखाएँ हो,
जो जुड़ी रहती, वो फलती डाली ।

अब से तुम मेरे दास नहीं हो,
मेरे मित्र हो, चुना मैंने जिनको,
और तुम्हें चुन नियत किया है,
जाओ और जाकर सफल बनो ।

मुझे यातना देने वाले लोग,
निश्चय ही यातना देंगे वे तुमको,
मेरे कारण करेंगे वो ऐसा क्योंकि,
वे नहीं जानते जिसने भेजा मुझको ।

कुछ ही समय बाद मुझे तुम,
और अधिक नहीं देख पाओगे,
लेकिन फिर उसके कुछ समय बाद,
तुम मुझे फिर से देख पाओगे ।

समझे नहीं वो तो यीशु ने कहा,
तुम्हारा शोक बदल जाएगा आनन्द में,
जैसे किसी माँ की प्रसव पीड़ा,
बदल जाती प्रसव के बाद ख़ुशी में ।

परमपिता तुम्हें करता है प्यार,
क्योंकि किया है तुमने प्यार मुझे,
तुमने माना मैं परमपिता से आया,
अब जाना है उसके पास मुझे ।

अधिकार दिया पुत्र को सब पर कि,
जिसे चाहे दे सके वो अनन्त जीवन,
परमेश्वर और उसका भेजा यीशु मसीह,
उन दोनों को जानना है अनन्त जीवन ।

फिर शिष्यों के लिए करी प्रार्थना,
अपनी शक्ति से रक्षा कर उनकी,
तूने मुझे, मैं उन्हें भेज रहा जगत में,
अर्पित हो वे सेवा कर सकें जगत की ।

सृष्टि की रचना से भी पहले,
कहा, 'तूने' मुझसे प्रेम किया है,
हे पिता ! ये जग तुझे नहीं जानता,
पर मैंने तुझको जान लिया है ।

फिर जैसा पहले अध्यायों में लिखा है,
चढ़ा दिया गया यीशु को क्रूस पर,
और तीन दिन बाद जैसा उसने कहा,
मरे हुओं से उठा दिया जीवित कर ।

जब शिष्य दरवाजे बन्द किए बैठे थे,
यीशु उनके बीच आ खड़ा हुआ,
कहा उसने उन पर फूँक मार कर,
लो ग्रहण करो तुम पवित्र आत्मा ।

क्षमा मिलती है उनके पापों को,
क्षमा करो तुम पापों को जिनके,
और मिल नहीं पाती क्षमा उन्हें,
पाप क्षमा नहीं करते तुम जिनके ।

पर थोमा वहाँ उन शिष्यों में ना था,
विश्वास ना हुआ पुनरुत्थान का उसे,
जब तक हथेली में ऊँगली ना डाले,
विश्वास ना होगा यीशु आने का उसे ।

आठ दिन बाद जब थोमा साथ था,
यीशु आ खड़ा हुआ शिष्यों के बीच,
कहा मेरे हाथ देख और ऊँगली डाल,
धन्य जो करते विश्वास आँखें मीच ।

इसके बाद तिबिरियास झील पर,
जब मछली पकड़ रहे थे शिष्य उसके,
किनारे पर उन्हें खड़ा दिखा यीशु,
बहुत मछलियाँ मिली कहने पर उसके ।

कुछ मछलियाँ ले उनसे यीशु ने,
दीं उन्हें रोटी और मछलियाँ,
यह तीसरी बार था जब यीशु,
मरे हुओं में से प्रकट हुआ ।

फिर कहा यीशु ने पतरस से,
यदि तू करता है अधिक प्रेम मुझसे,
मेरी भेड़ और मेमनों की कर रखवाली,
और मेरी भेड़ें चरा, कहा उससे ।

प्रेरितों के काम[63]

जब यीशु शिष्यों के साथ था,
उसे स्वर्ग में ऊपर उठा लिया गया,
दो स्वर्गदूत आ खड़े हुए बगल में,
कहा, लौटेगा वो, जैसे उठाया गया ।

पतरस ने कहा यहूदा के विषय में,
जो खेत खरीदा था उस धन से उसने,
वहीं सिर के बल गिरा, आंतें फटीं,
‘लहू का खेत’ कहलाया वो लोगों में ।

शिष्यों ने सोचा उसकी जगह,
चुना जाए किसी और व्यक्ति को,
प्रार्थना कर उन्होंने पर्ची डाली,
और इस तरह चुना मतियाह को ।

फिर जब पिन्तेकुस्त का दिन आया,
आँधी के से शब्द सुने उन्होंने,
आग की फैलती लपटों जैसी जीभें,
आकर छू लिया उन्हें जिन्होंने ।

[63] यह लूका की लिखी दूसरी पुस्तक है जिसे उसने थियुफिलुस को सम्बोधित कर लिखा है ।

हो उठे पवित्र आत्मा से वे भावित,
बोलने लगे अलग-अलग भाषाओं में,
बहुत से देशों के लोग थे जमा वहाँ,
सुना उन्हें बोलते उनकी भाषाओं में ।

कुछ विस्मित थे चमत्कार से,
कुछ दाखरस का प्रभाव समझे इसे,
खड़ा हुआ पतरस साथियों के साथ,
कहा, नहीं हैं ये लोग कुछ पिए ।

नासरी यीशु परमेश्वर का भेजा था,
जिसे तुम्हारे हवाले किया गया,
और तुमनें नीच लोगों से मिल,
उसे सूली पर चढ़ा दिया ।

किन्तु वेदना से मुक्त कर प्रभु ने,
फिर से जिला दिया उसे,
क्योंकि यह सम्भव ही नहीं था,
कि मृत्यु वश में रख पाती उसे ।

फिर कहा उसने जो कहा दाऊद ने,
कि उसका वंशज सिंहासन पर बैठेगा,
छोड़ा जाएगा नहीं वो अधोलोक में,
बल्कि वो फिर से जी उठेगा ।

पुनर्जीवित किया परमेश्वर ने उसे,
साक्षी हैं हम सब इस तथ्य के,
पवित्र आत्मा को पाया यीशु ने,
जिसे उड़ेल दिया भीतर हम सबके ।

क्योंकि स्वर्ग में नहीं गया दाऊद,
सो कहता है वो स्वयं इसलिए,
परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा,
तेरे शत्रु कर दूँगा तेरे चरणों तले ।

सो समूचा इस्राएल ये जान ले,
कि परमेश्वर ने इस यीशु को,
चढ़ा दिया जिसे क्रूस पर तुमने,
ठहराया था प्रभु और मसीह दोनों ।

व्याकुल हो पूछने लगे लोग,
अब हमें क्या करना चाहिए,
कहा मन फिरा, यीशु के नाम,
बपतिस्मा तुम्हें लेना चाहिए ।

तब जिन्होंने ये सन्देश ग्रहण किया,
बपतिस्मा दिया गया उन सब को,
सो जुड़ गए कोई तीन हज़ार लोग,
समर्पित हुए जो उस दिन को ।

करते रहे आश्चर्य कर्म प्रेरित,
बाँट लेते थे सब आपस में,
करते रहे औरों की सहायता,
मिलते रहते थे मन्दिर में ।

यीशु के नाम से पतरस ने,
कर दिया एक लंगड़े को ठीक,
कहा, जो विश्वास यीशु से मिलता,
उसी ने कर दिया इसको ठीक ।

मसीह को यातनाएँ भोगनी पड़ेंगी,
कहलवा दिया गया था पहले ही,
मूसा और अन्य नबियों ने भी,
बातें करी थी इन्हीं दिनों की ।

तभी कुछ याजक, मुखिया और सिपाही,
बन्दी बना कर ले आए उन्हें,
पर उस लंगड़े के सच के सामने,
अपराधी ठहरा सके ना उन्हें ।

लौट गए वे अपने लोगों के पास,
सब ने मिल करी प्रभु से प्रार्थना,
जब हो गयी उनकी प्रार्थना पूरी,
समा गया उनमें पवित्र आत्मा ।

हनन्याह और सफ़ीरा नामक दम्पत्ति ने,
सम्पत्ति बेच रख लिया कुछ हिस्सा,
कहा पतरस ने क्यों शैतान को तूने,
तेरे मन को वश में करने दिया ?

पवित्र आत्मा से झूठ जो बोला,
पछाड़ खा, तुरन्त हनन्याह मर गया,
सफ़ीरा भी मरी यही बात दोहराकर,
लोगों पर गम्भीर भय छा गया ।

उधर प्रभु पर विश्वास करने वाले,
लोग दिनों-दिन बढ़े जा रहे थे,
परिणामस्वरूप दीन-दुखी जो आते,
वो सभी अच्छे होते जा रहे थे ।

महायाजक और उसके साथियों ने,
पकड़वा बन्दी बनवाया प्रेरितों को,
लेकिन एक स्वर्गदूत ने द्वार खोल,
कर दिया स्वतंत्र उन सबको ।

कहा उन्हें मन्दिर में जाकर वे,
बताएँ उस नये जीवन के विषय में,
सो देने लगे वे मन्दिर में उपदेश,
बुलाए गए वो सर्वोच्च यहूदी सभा में ।

पर पतरस और अन्य प्रेरित,
निर्भीक हो सभा को लगे कहने,
परमेश्वर से प्राप्त हुआ नवजीवन,
जिस यीशु को मरवा डाला तुमने ।

आग बबुला हो उठे वो लोग,
और मार डालना चाहा उनको,
पर एक फरीसी ने समझा-बुझा,
रोक लिया उन सभासदों को ।

कहा मनुष्य की बनायी योजनाएँ,
तितर-बितर हो जाती उसके बाद,
पर जो होता परमेश्वर की ओर से,
कोई कदापि नहीं कर सकता बर्बाद ।

फिर मन्दिर और घर-घर में प्रेरित,
देने लगे यीशु का सुसमाचार,
उपदेश देते, कहते यीशु मसीह है,
और जारी रखा उन्होंने प्रचार ।

फिर चुना उन्होंने सात लोगों को,
बनाया हर काम का अधिकारी उन्हें,
वचन की सेवा में लगें प्रेरित,
व्यवस्था के कामों में ना वे उलझें ।

स्तिफनुस एक था उन सात में से,
षडयंत्र रचा गया उसके विरोध में,
पर उसके चेहरे का आलौकिक नूर,
देख वे लोग कुछ कर ना सके ।

पर जब यीशु की महिमा बखानी,
क्रोधित हो गए बहुत वो उससे,
करने लगे संगसार वो उसको.
सो गया वो चिरनिद्रा में ।

समर्थन किया उसकी हत्या का,
शाऊल नाम के एक युवक ने,
शुरू कर दिए कलीसिया पर जुल्म,
डालने लगा उन्हें पकड़ जेल में ।

सामरिया नगर में जा कर फिलिप्पुस,
करने लगा मसीह का प्रचार लोगों में,
बहुत से दुष्टात्मा ग्रसित और रोगी,
होने लगे अच्छे उसके सान्निध्य में ।

शमौन, एक जादू-टोना करने वाला था,
उसने फिलिप्पुस से बपतिस्मा लिया,
रहने लगा उसके साथ निकटता से,
महान कार्य देख दंग रह गया ।

सामरिया में अनुयायियों की संख्या देख,
भेजे गए वहाँ पतरस और यूहन्ना,
जब उन्होंने हाथ रखा लोगों पर,
प्राप्त हुआ उन्हें भी पवित्र आत्मा ।

फिलिप्पुस को मिला एक दिव्य सन्देश,
दक्षिण की ओर जाने को कहा उसे,
इथोपिया का कोषपाल, एक खोजा,
यशायाह का ग्रन्थ पढ़ता मिला उसे ।

पर समझ ना आ रहा था वो अंश,
जो अंश यीशु से संदर्भित था,
फिलिप्पुस ने इस शास्त्र से लेकर,
यीशु के सुसमाचार तक उसे कहा ।

जल में उतर, फिलिप्पुस के हाथ,
उस खोजा ने लिया बपतिस्मा,
जब वे जल से बाहर निकले,
फिलिप्पुस को उठा ले गया आत्मा ।

उधर फिलिप्पुस ने अपने आपको,
पाया वह था अशदोद नगर में,
सुसमाचार का प्रचार करता वह,
वापस पहुँचा कैसरिया नगर में ।

उधर शाऊल ने अधिकार ले लिया,
यदि कोई इस पंथ का अनुयायी मिले,
तो दमिश्क से उसे बंदी बनाकर,
फिर वापस यरूशलेम ला सके ।

सो जब वो पहुँचा दमिश्क के निकट,
अचानक आकाश से प्रकाश आ उतरा,
पुछा जो शाऊल ने, तू कौन है प्रभु,
वह बोला, यीशु, जिसे तू सता रहा ।

बंद हो गया दिखना शाऊल को,
तीन दिन उसने कुछ खाया ना पिया,
लगा हुआ था प्रार्थना में शाऊल,
तब एक ऐसा दर्शन उसे मिला ।

कि हनन्याह ने छुआ उसे आकर,
ताकि वह फिर से देख सके,
उधर दमिश्क में हनन्याह को यीशु ने,
कहा यहूदा के घर जा शाऊल से मिले ।

कहा यीशु ने चुना शाऊल को मैंने,
मेरा नाम लेने का एक साधन,
तब हनन्याह ने शाऊल के पास जा,
किया यीशु की आज्ञा का पालन ।

तुरंत छिलकों जैसा कुछ ढलका,
और फिर से लगा उसे दिखाई देने,
फिर यहूदी सभागार में पहुँच,
यीशु का प्रचार वो लगा करने ।

चकित थे सब यह परिवर्तन देख,
यीशु का विरोधी अनुयायी बन गया,
षडयंत्र रचा यहूदियों ने उसके विरुद्ध,
पर शाऊल को पता चल गया ।

शाऊल के शिष्यों ने टोकरी में बैठा,
उसे नगर के पार कर दिया,
पहले यरूशलेम, वहाँ से कैसरिया,
फिर उसे तरकुस पहुँचा दिया गया ।

उधर लिद्धा में पतरस ने,
किया स्वस्थ एक लकवे के रोगी को,
और याफा में किया फिर से जीवित,
पतरस ने मरी हुई एक शिष्या को ।

कुरनेलियुस नामक एक भक्त ने,
देखा साफ़ यह एक दर्शन में,
स्वीकार हुए उसकी प्रार्थना और दान,
पतरस को बुला ले पास वो अपने ।

उधर पतरस को भी समाधि में,
मिला सन्देश यह परमेश्वर का,
तुच्छ नहीं कोई भी वस्तु क्योंकि,
परमेश्वर ही है रचेता सबका ।

जब पतरस पहूँचा कुरनेलियुस के घर,
चरणों में गिर प्रणाम किया पतरस को,
पतरस बोला, मैं एक मनुष्य मात्र हूँ,
और उठा लिया उसने कुरनेलियुस को ।

फिर कुरनेलियुस ने बताया उसको,
जो स्वर्गदूत ने कहा था उसे,
और पतरस से करी उसने विनती,
कह सुनाए जो प्रभु ने कहा उसे ।

कहा पतरस ने मैं समझ गया हूँ,
कि परमेश्वर कोई भेदभाव नहीं करता,
जो डरता उससे और करता नेकी,
हर उस व्यक्ति को स्वीकार करता ।

तभी पवित्र आत्मा उतर आया सब पर,
गैर यहूदियों ने भी पाया यह वरदान,
पहले तो आलोचना हुई पतरस की,
फिर वे समझ गए सब हैं एक सामान ।

स्तिफनूस के समय यातनाओं के कारण,
जो लोग तितर-बितर हो गए थे,
दूर-दूर तक फ़ीनीक, साइप्रस और,
अंताकिया तक वे जा पहुँचे थे ।

यूनानियों को भी मिला सुसमाचार,
तो प्रभु की ओर वो मुड़ने लगे,
बरनाबास और शाऊल वहाँ आये,
लोगों को उपदेश वो देने लगे ।

उधर लगभग उसी समय हेरोदेस[64] ने,
पतरस को क़ैद कर दिया जेल में,
चाहता था फसह पर्व के बाद,
लाया जाए लोगों के सामने ।

लेकिन जब वो बाहर लाए जाने को था,
अचानक एक देवदूत आ प्रकट हुआ,
जंजीरें और फाटक सब खुल गए,
और पतरस जेल से स्वतंत्र हुआ ।

[64] हेरोदेस-हेरोदेस प्रथम जो हेरोदेस महान का पोता था ।

हार गया हेरोदेस उसे खोजकर,
तो मरवा दिया उसने पहरेदारों को,
एक देवदूत ने उसे बीमार कर दिया,
कीड़े खा गए उसे और मर गया वो ।

साइप्रस पहुँचे बरनाबास और शाऊल,
राज्यपाल को उपदेश सुनाए प्रभु के,
एक जादूगर ने बाधा डालनी चाही,
पर रह गया वो अंधा हो के ।

कुछ समय बाद पौलुस[65] और साथी,
पहुँचे पिसिदिया के अंताकिया में,
अधिकारियों के कहने पर उसने,
सब कथा सुनाई विस्तार से उन्हें ।

उनकी उन बातों को सुन कर,
उमड़ पड़े पूरे नगर के लोग,
उस विशाल जन समूह को देख,
विरोध करने लगे यहूदी लोग ।

धिक्कारा उन यहूदियों को उन्होंने,
करते रहे प्रचार प्रभु के वचन का,
पर लोगों को भड़काते रहे यहूदी,
निर्णय लिया इकुनियुम जाने का ।

जगह-जगह जा कर वे लोग,
करते रहे प्रचार सुसमाचार का,
अपनाए गए विधर्मी लोग भी,
और विश्वास किया स्थिर उनका ।

फिर कुछ लोग यहूदिया से आये,
‘खतना’ को ले विवाद हो गया,
सो पौलुस, बरनाबास और कुछ अन्य,
उन्हें यरूशलेम को भेजा गया ।

यरूशलेम में पतरस ने कहा,
मत डालो अनचाहा बोझ लोगों पर,
उद्धार होगा सभी विश्वासियों का,
प्रभु यीशु का अनुग्रह होगा उन पर ।

एक पत्र लिख भेजा उन्होंने,
मूर्तियों को अर्पित भोजन ना करें,
रक्त और गला घोटे पशु का माँस,
और व्याभिचार से दूर ही रहें ।

मरकुस कहाने वाले यूहन्ना पर,
मतभेद हुआ पौलुस और बरनाबास में,
अलग हुए विवाद के कारण वे दोनों,
चले गए अलग-अलग जगह में ।

तिमुथियुस नामक एक शिष्य था,
विश्वासी यहूदी महिला थी उसकी माँ,
साथ ले लिया पौलुस ने उसको,
यहूदियों के कारण किया उसका खतना ।

फिर एक दिव्यदर्शन में पौलुस ने,
सुनी एक व्यक्ति की प्रार्थना,
मैसिडोनिया बुला रहा था वो उसे,
सो वहाँ जाने का निश्चय ठाना ।

[65] पौलुस-शाऊल को पौलुस भी कहा जाता था ।

आत्मा[66] समाई थी वहाँ एक दासी में,
लोगों को भाग्य बता करती थी कमाई,
पड़ी वो पौलुस और सिलास[67] के पीछे,
तो यीशु का नाम ले आत्मा भगाई ।

उस दासी के स्वामियों ने उन दोनों को,
शिकायत कर जेल में बंद करा दिया,
कड़ा पहरा और काठ में पैर कसे,
पर एक भूचाल ने सब हिला दिया ।

खुल गए जेल के सब फाटक,
बेड़िया ढीली हो नीचे गिर पड़ी,
जेल अधिकारी आ गिरा पैरों पर,
बपतिस्मा देने की विनती करी ।

छोड़ दिए गए पौलुस और सिलास,
और वे दोनों थिस्सलुनिके जा पहुँचें,
उनकी सफलता से कुपित हो,
कुछ यहूदियों ने करा दिए दंगे ।

पहले बिरिया फिर एथेंस गया पौलुस,
देखा एथेंस को मूर्तियों से भरा,
यहूदियों और यूनानी भक्तों के साथ,
हर दिन विवाद वो करता रहा ।

फिर कुरिन्थियुस चला गया वो,
जहाँ यीशु ने स्वप्न में कहा,
चुप मत हो, मैं तेरे साथ हूँ,
कोई हानि नहीं पहुँचा सकता ।

यरूशलेम और अन्य जगह होते,
फिर पौलुस इफ़िसुस में आ पहुँचा,
एशिया-निवासी, यहूदी, गैर यहूदी,
सब तक यीशु का वचन पहुँचा ।

करवा रहा था पौलुस के हाथों,
अनेक आश्चर्य भरे कर्म परमेश्वर,
बीमारियाँ और दुष्टात्माएँ दूर हो जाती,
उसके छुए कपड़े निकट पा कर ।

फिर मैसिडोनिया व यूनान गया पौलुस,
और यूनान से लौट आया मैसिडोनिया,
त्रोआस में नीचे गिर मरे युवक को,
पौलुस ने फिर से जीवित कर दिया ।

त्रोआस से मिलेतुस आया पौलुस,
और इफ़िसुस के बुजुर्गों से बात करी,
कहा, यहूदियों के षडयंत्रों के बावजूद,
लगा रहा, प्रभु की सेवा करी ।

और पवित्र आत्मा के आधीन हो,
जा रहा हूँ मैं अब यरूशलेम को,
कोई मूल्य नहीं मेरे लिए प्राणों का,
मेरा लक्ष्य फैलाना सुसमाचार को ।

रखवाली करना कलीसिया की मेरे बाद,
लोग उन भोले-भालों को ना छोड़ेंगे,
अपने ही लोग, शिष्यों को फुसलाने को,
बातों को तोड़-मरोड़ कर पेश करेंगे ।

[66] आत्मा-यह आत्मा एक शैतान की रूह थी, जिसने उस लडकी को एक विशेष ज्ञान दे रखा था ।
[67] सिलास-अलग होते वक्त बरनाबास ने मरकुस को अपने साथ ले लिया था और पौलुस ने सिलास को ।

उनसे विदा हो जब कैसरिया आ गए,
एक नबी ने कहा, अपने हाथ-पैर बाँध,
पवित्र आत्मा कह रहा है, पौलुस भी,
सौंपा जाएगा विधर्मियों को ऐसे बाँध ।

जब सुना यह तो हम[68] सबने,
विनती करी वो यरूशलेम ना जाए,
वो ना माना, कहा यीशु के नाम पर,
चाहे मेरे प्राण ही ले लिए जाएँ ।

यरूशलेम में यह जताने कि वह,
कहता नहीं मूसा की शिक्षा को त्यागने,
शुद्धिकरण समारोह में शामिल हुआ,
और शुद्ध कर लिया स्वयं को उसने ।

सात दिन बाद यहूदियों ने मन्दिर में,
पौलुस को देख हो-हल्ला कर दिया,
कहा विधर्मियों को यहाँ लाकर,
इसने मन्दिर को भी भ्रष्ट कर दिया ।

कहा उन्होंने ऐसा इसलिए कि,
त्रुफिमुस नामक एक इफिसी को,
देखा था उन्होंने उसके साथ नगर में,
सोचा साथ ले आया है वह उसको ।

पकड़ कब्जे में लिया गया वो,
रोमी सेनानायक ले उसे चल दिया,
माँगी उसने कुछ कहने की अनुमति,
और इब्रानी भाषा में कहने लगा ।

कहा, मैं भी एक यहूदी हूँ जन्म से,
परम्परागत विधान में मिली शिक्षा-दीक्षा,
बड़ा उत्साहित था मैं परमेश्वर के प्रति,
इन पंथियों पर की जुल्म की इन्तिहा ।

फिर बताया जो उसके साथ घटा,
कैसे बन्द हो गया दिखना उसे,
और फिर हन्नयाह के छूने पर,
कैसे दृष्टि फिर मिल गयी उसे ।

बपतिस्मा ले यरूशलेम लौट आया,
तब मन्दिर में मैंने समाधि में देखा,
कहा मुझसे, यरूशलेम से दूर चला जा,
दूर-दूर तक विधर्मियों को दे सन्देशा ।

अंतिम बात सुन वे चिल्लाने लगे,
भलाई नहीं इसके जिन्दा रहने में,
पर जन्मजात पौलुस को रोमी जान,
बेबात बंदी बनाया सोचा सेनापति ने ।

पेश किया अगले दिन पौलुस को,
याजकों और महासभा के सामने,
उनमें आधे सदूकी, आधे फरीसी जान,
मैं भी फरीसी हूँ कहा पौलुस ने ।

मरने के बाद जी उठने की,
मेरी इस मान्यता के ही कारण,
यह अभियोग चलाया जा रहा है,
दिया जा रहा है मुझको प्रताड़न ।

[68] हम सबने-इस शब्द के प्रयोग से स्पष्ट है कि लूका उस समय पौलुस के साथ था ।

तुरंत एक विवाद उठ खड़ा हुआ,
फरीसी और सदूकी लोगों में[69],
कर ना सके वो कोई फैसला,
ले गए उसे वो वापस छावनी में ।

भेजा गया वो राज्यपाल के समक्ष,
पर वहाँ भी निर्णय हो नहीं पाया,
फिर पौलुस की विनती पर उसने,
राजा के समक्ष मुकदमा पहुँचाया ।

पौलुस ने राजा अग्रिप्पा को बताया,
यीशु के दर्शन कैसे मिले उसे,
और कैसे यीशु ने नियुक्त किया,
अपने एक सेवक के रूप में उसे ।

वर्णित किया फिर सारा घटनाक्रम,
कहा, शास्त्र विरुद्ध कुछ ना किया,
विश्वास हो गया राजा अग्रिप्पा को,
दण्ड के लायक उसने कुछ ना किया ।

सो भेज दिया हम लोगों को रोम,
पर मार्ग में घेर लिया तूफान ने,
कठिनाई से रक्षा-नौका में बैठ कर,
घातक तूफ़ान को सहा हमने ।

फिर एक रात परमेश्वर के दूत ने,
पौलुस को दर्शन दे यह कहा उससे,
तेरे सब सहयात्री तुझे दे दिए गए,
और तू पेश होगा कैसर के सामने ।

फिर उथले पानी में जा फँसा जहाज,
और रेते से टकरा नष्ट हो गया,
सैनिकों ने सोचा मार डालें कैदी,
पर सेनानायक ने उन्हें रोक दिया ।

माल्टा द्वीप पर जा पहुँचे हम,
वहाँ जब सब सेक रहे थे आग,
आग में लकड़िया रखते समय,
पौलुस के हाथ पर डसा एक नाग ।

कहने लगे वे लोग आपस में,
निश्चय ही यह व्यक्ति है हत्यारा,
पर कहने लगे उसे देवता जब उसने,
नाग को झटक, आग में दे मारा ।

उनका प्रधान अधिकारी था पबलियुस,
उसका पिता बीमार हो बिस्तर पर था,
प्रार्थना कर जब हाथ रखे पौलुस ने,
तुरंत वह स्वस्थ हो उठ बैठा ।

फिर तो वहाँ के शेष रोगी भी,
आए और पौलुस के हाथों ठीक हुए,
लाद दिया उन्होंने उपहारों से हमें,
जब हम वहाँ से आगे को चले ।

सिकंदरिया के एक जहाज पर चढ़,
और जगह होते रोम आ पहुँचे,
सूचना पा बंधू आए मिलने,
पुलकित हो उठा पौलुस उत्साह से ।

---

[69] फरीसी और सदूकी- सदूकियों का मानना है कि पुनरुत्थान नहीं होता; ना ही स्वर्गदूत होते हैं और ना ही आत्माएं, किन्तु फरीसी इनके अस्तित्व में विश्वास रखते हैं ।

मिली अनुमति उसे अलग रहने की,
तब यहूदी नेताओं को बुला कहा,
बिना अपराध यरूशलेम में बंदी बना,
मुझे रोमियों को सौंप दिया गया ।

किन्तु जब यहूदियों ने की आपत्ति,
कैसर से पुनर्विचार करें, कहा मैंने,
यही कारण है कि तुमसे मिलने,
और बातचीत का प्रयास किया मैंने ।

निश्चित समय बड़ी संख्या में,
वे सब एकत्र हो मिले पौलुस से,
सब बातें विस्तार से उन्हें समझायी,
और समझाया यीशु के बारे में ।

सहमत हुए कुछ उनकी बातों से,
किन्तु कुछ ने विश्वास किया नहीं,
आपस में असहमत हो जब जाने लगे,
तब पौलुस ने उनसे यह बात कही ।

यशायाह के द्वारा पवित्र आत्मा ने,
ठीक कहा था तुम्हारे पूर्वजों से,
वे सुनेंगे, देखेंगे पर समझेंगे नहीं,
क्योंकि भर गया हृदय जड़ता से ।

इसलिए जान लेना चाहिए तुम्हें,
कि परमेश्वर का यह उद्धार,
भेज दिया गया विधर्मियों के पास,
वे ही सुनेंगे इसकी पुकार ।

दो साल तक वहाँ रुका पौलुस,
परमेश्वर के राज्य का करता प्रचार,
निर्भयता और बिना कोई बाधा माने,
यीशु के उपदेशों को बना आधार ।

रोमियों

पौलुस ने लिखा, यीशु मसीह का दास,
लिख रहा हूँ मैं यह पत्र तुम्हारे लिए,
परमेश्वर के प्यारे तुम जो हो रोम में,
बुलाया जिन्हें पवित्र जन होने के लिए ।

शुक्रिया परमेश्वर का तुम्हारे लिए,
हो रही तुम्हारे दृढ़ विश्वास की चर्चा,
परमेश्वर कर सकता सब का उद्धार,
सो सुसमाचार के लिए मैं नहीं शर्मिंदा ।

विश्वास पर टिका आदि से अंत तक,
जैसा कि लिखा है शास्त्रों में,
धर्मी मनुष्य विश्वास से जीवित रहेगा,
यही कहा गया है सुसमाचार में ।

जानते हैं लोग परमेश्वर को लेकिन,
नहीं देते उसे परमेश्वर का सम्मान,
मूर्ख ही रह गए लोग यद्दपि,
समझते स्वयं को बुद्धिमान ।

ढाली मूर्तियों में परमेश्वर की महिमा,
बने मन की इच्छाओं के गुलाम,
सृष्टि को बनाने वाले को छोड़,
करने लगे सृष्टि को वो प्रणाम ।

हुए संलग्न पाप और बुराई में,
अधर्म, बैर और लालच से भर गए,
परमेश्वर से वो करते हैं घृणा,
प्रेम रहित और निर्दयी हो गए ।

दूसरों को जो ठहराता है दोषी,
पर स्वयं वो ही दुष्कर्म करता,
क्या बच जाएगा तू उसके न्याय से,
या असक्षम तू उसे समझता ?

करता परमेश्वर सबका सच्चा न्याय,
कर्मों के अनुसार सबको फल देगा,
जो सत्कर्म करते, सुपथ पर चलते,
बदले में उन्हें अनन्त जीवन देगा ।

तू जो स्वयं को कहता यहूदी,
औरों को ज्ञान देने योग्य समझता,
तो करता क्यों नहीं तू स्वयं वो,
जो तू औरों को करने को कहता ?

खतने का सार है व्यवस्था का पालन,
वरना बेमानी खतना करना, ना करना,
शरीर का खतना, सच्चा खतना नहीं,
सच्चा, आत्मा द्वारा मन का खतना ।

कहता है शास्त्र कोई भी धर्मी नहीं,
सब भटके हैं, प्रभु को खोजते नहीं,
एक से खोटे हुए साथ-साथ सब,
कोई भी यहाँ दया तो दिखाता नहीं ।

क्योंकि सभी ने पाप किए हैं,
और हैं विहीन उसकी महिमा से,
किन्तु उपहार स्वरूप ठहराए गए,
धर्मी वे यीशु मसीह के अनुग्रह से ।

यीशु को दिया परमेश्वर ने हमें,
हमारे पापों से दिलाने छुटकारा,
मिल सकती हमें पापों से मुक्ति,
उसके बलिदान में विश्वास के द्वारा ।

धर्मी बनने का एक ही आधार,
बस एकमात्र विश्वास ठहराया,
ठहराता नहीं व्यवस्था को व्यर्थ,
बल्कि उसने और मजबूत बनाया ।

इब्राहीम भी गिना गया धर्मी,
परमेश्वर में विश्वास के कारण,
खतना ग्रहण किया था उसने,
उस विश्वास का करने को पालन ।

विश्वास किया इब्राहीम ने उसमें,
सभी मानवीय आशाओं के खिलाफ़,
स्वयं की देह थी मरियल और वृद्ध,
और सारा, उसकी पत्नी थी बाँझ ।

रखा विश्वास परमेश्वर के वचन में,
और उसके नाम को दी महिमा,
विश्वास था परमेश्वर के सामर्थ्य पर,
गिना गया उसका विश्वास धार्मिकता ।

यीशु, जिसे हमारे पापों के लिए,
मारे जाने को सौंपा गया,
हमें धर्मी बनाने के लिए फिर,
मरे हुओं से जीवित किया गया ।

परमेश्वर के निकट आ गए हम,
अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा,
उड़ेला परमेश्वर का प्रेम हृदय में,
दिये गए पवित्र आत्मा के द्वारा ।

जब बैरी थे तब अपनी मृत्यु द्वारा,
उसने परमेश्वर से मिलाप कराया,
तो अब उसके जीवन से हमने,
और मिलने का भरोसा पाया ।

एक व्यक्ति आदम के द्वारा,
पाप और मृत्यु आई धरती पर,
और क्योंकि सभी ने पाप किए थे,
मृत्यु भी आई सभी लोगों पर ।

यदि उस एक अपराध के कारण,
मृत्यु हुई थी सब लोगों की,
तो एक मसीह की करुणा के कारण,
क्यों ना हो भलाई सभी की ?

सो जैसे एक अपराध के कारण,
सभी लोगों को ठहराया गया दोषी,
वैसे ही एक धार्मिक काम से सबको,
अनन्त जीवनदायी धार्मिकता मिली ।

साथ रहे उसके उसकी मृत्यु में,
सो पुनरुत्थान में भी साथ रहेंगे,
चढ़ गया पुराना व्यक्तित्व क्रूस पर,
सो अब हम पाप के वश ना रहेंगे ।

मिल गया तुम्हें पापों से छुटकारा,
और सेवा का अवसर धार्मिकता का,
यीशु मसीह में अनन्त जीवन,
सेंतमेत का वरदान है परमेश्वर का ।

मसीह की देह के द्वारा तुम भी,
मर चुके हो व्यवस्था के लिए,
जोड़ सकते हो अब उससे नाता,
परमेश्वर की सेवा करने के लिए ।

व्यवस्था बताती क्या अनुचित है,
पाप ने इच्छा भर दी जिसके लिए,
व्यवस्था के साथ उभर आया पाप,
मृत्यु बन गया जो मेरे लिए ।

व्यवस्था और विधान तो उत्तम हैं,
नहीं बने वे मेरी म्रत्यु का कारण,
बल्कि पाप की पहचान हुई ताकि,
उसकी भयानकता का हो दर्शन ।

मेरे भीतर जो पाप बसा है,
करवाता वो मुझसे अनचाहे काम,
इच्छा तो है नेकी करने की,
पर होते नहीं मुझसे अच्छे काम ।

आत्मा मानती परमेश्वर की व्यवस्था,
पर शरीर आधीन दूसरे ही नियम के,
पाप की व्यवस्था का गुलाम शरीर,
पर परमेश्वर का सेवक बुद्धि से ।

अब जो यीशु मसीह में स्थित हैं,
कोई दण्ड नहीं है उनके लिए,
क्योंकि आत्मा की व्यवस्था ने,
किया मुक्त पाप की व्यवस्था से ।

भौतिक स्वभावानुसार जो जीते,
इच्छाओं के वश रहती बुद्धि उनकी,
पर वे जो जीते आत्मा के अनुसार,
आत्मा में लगी रहती बुद्धि उनकी ।

जीना भौतिक शरीर के अनुसार,
न्यौता देना है अपनी मृत्यु को,
लेकिन भौतिक व्यवहारों का अंत,
आत्मा द्‌वारा, जीवन देगा तुम को ।

परमेश्वर की आत्मानुसार जो चलते,
निश्चित वे हैं परमेश्वर की संतान,
पवित्र आत्मा हमारी आत्मा से मिल,
साक्षी देती हम हैं परमेश्वर की संतान ।

कुछ भी नहीं है मेरे विचार में,
भावी महिमा के आगे हमारी यातनाएँ,
आशा से प्रतीक्षारत है यह सृष्टि,
परमेश्वर की संतान जब आएगी सामने ।

तड़पती रही सृष्टि और हम भी,
पूर्णतया अपनाने का करते इंतज़ार,
कि हो जाएगी हमारी देह-मुक्ति,
और हो जाएगा हमारा उद्‌धार ।

बाट जोहते हम, जिसकी आशा करते,
ऐसे ही आत्मा सहायता करने आती,
करी नहीं जा सकती जिसकी व्याख्या,
आत्मा हमारे लिए वह विनती करती ।

किन्तु वह अन्तर्यामी जानता है,
कि क्या है आत्मा की मनषा,
क्योंकि परमेश्वर की इच्छा से ही,
पवित्र जनों की वो करती मध्यस्था ।

हर परिस्थिति में वह आत्मा,
मिल परमेश्वर के भक्तों के साथ,
भलाई ही करता है उन सब की,
जिन्हें बुलाया प्रयोजन के साथ ।

जिन्हें उसने पहले ही चुना उन्हें,
अपने पुत्र के रूप में ठहराया,
ताकि बहुत से भाइयों में वह,
सबसे बड़ा भाई जाए ठहराया ।

जिन्हें उसने पहले से निश्चित किया,
उन्हें भी बुला कर धर्मी ठहराया,
और उन्हें भी महिमा प्रदान की,
धर्मी जिन्हें उसने ठहराया ।

यदि परमेश्वर है पक्ष में हमारे,
कौन हमारे विरोध में हो सकता,
कौन लगा सकता उस पर दोष,
जिसे परमेश्वर निर्दोष समझता ?

कोई यातना, कठिनाई या जुल्म,
मसीह के प्रेम से हटा नही सकता,
सृष्टि की किसी भी वस्तु द्‌वारा,
प्रभु का प्रेम मिट नही सकता ।

निर्भर नहीं परमेश्वर का प्रेम,
सन्तति या वंश परम्परा पर,
परमेश्वर की दया और अनुग्रह,
निर्भर है बस उसकी इच्छा पर ।

फिरौन से परमेश्वर ने कहा था,
मैंने तुझे इसलिए खड़ा किया था,
कि अपनी शक्ति दिखा सकूं तुझमें,
और सर्वत्र हो मेरे नाम की चर्चा ।

दया करना या बना देना कठोर,
यह सब है परमेश्वर की इच्छा पर,
पूछ सकता तू, यदि हम हैं नियंत्रित,
तो फिर दोष क्यों मढ़ता हम पर ?

कौन कर सकता उसका विरोध,
तू कौन जो उलट कर उत्तर दे,
क्या रचना रचेता से कह सकती,
भला क्यों रचा तूने मुझे ऐसे ?

क्या कुम्हार को यह हक़ नहीं,
की मिट्टी से जो चाहे बना ले,
एक भाँडा विशेष प्रयोजन हेतु,
दूजे से कुछ काम ना निकले ?

क्या प्रयोग नहीं कर सकता परमेश्वर,
जिस भाँडे को वो जैसा भी चाहे,
सहता है वह धीरज के साथ,
ताकि अपनी महिमा प्रकट कर सके ।

व्यवस्था निभायी इस्राएलियों ने कर्मों से,
बिना विश्वास धार्मिक कहाने के लिए,
पर विश्वास से पायी औरों ने धार्मिकता,
बिना खोजे, बस विश्वास के जरिए ।

करते रहे बस जतन वे तो,
अपनी धार्मिकता स्थापित करने का,
स्वीकारी नहीं धार्मिकता परमेश्वर की,
सो मसीह ने अंत कर दी व्यवस्था ।

विश्वास से मिलती जो धार्मिकता,
उसका आधार है मन में विश्वास,
यह विश्वास की यीशु मसीह प्रभु है,
और उसके पुनर्जीवन में विश्वास ।

हृदय का विश्वास उद्धार कर देगा,
और उसे निराश नहीं होना पड़ेगा,
हर कोई जो प्रभु का नाम लेता है,
यहूदी या गैर यहूदी, उद्धार पाएगा ।

चुनता है जिन लोगों को परमेश्वर,
अपने अनुग्रह के कारण वो चुनता,
गर वो कर्मों का परिणाम होता तो,
उसका अनुग्रह, अनुग्रह ना ठहरता ।

सो क्या उन्होंने[70] इसलिए ठोकर खाई,
कि वे गिर कर नष्ट हो जाएँ,
नहीं, बल्कि उनके गलती करने से,
गैर यहूदी लोग छुटकारा पाएँ ।

और गैर यहूदियों के छुटकारा पाने से,
पैदा हो यहूदियों में स्पर्धा,
इस तरह लाभ मिले सारे संसार को,
और लाभकारी होगी उनकी संपूर्णता ।

यदि करता है उनका नकारना,
मेल-मिलाप जगत में पैदा,
तो क्या नहीं होगा उनका अपनाना,
मरे हुओं में से जिलाने जैसा ?

तोड़ी हुई डाली को फिर जोड़ने में,
पूरी तरह से समर्थ है परमेश्वर,
सो जब जुड़ जाएँगे गैर यहूदी,
सबका उद्धार करेगा परमेश्वर ।

[70] उन्होंने-वे इस्राएली जिन्हें परमेश्वर ने उनके अविश्वास के कारण दण्डित किया ।

परमेश्वर की करुणा, बुद्धि और ज्ञान,
पार नहीं कोई भी उसका पा सकता,
उसके रास्ते कितने गूढ़ हैं,
और कितना गहन है न्याय उसका ।

क्योंकि वही है सबका रचने वाला,
और स्थिर है सभी उसी से,
जो कुछ दिया सब उसने दिया,
उसकी महिमा हो सदा के लिए ।

मत चलो दुनिया की रीत पर,
और बदल डालो तुम जीवन अपना,
ताकि पता चल जाए क्या है,
परमेश्वर की तुम्हारे लिए चाहना ?

विश्वास पैमाना नापने का ख़ुद को,
जितना जिसको दिया, कृपा उसकी,
सो एक देह सरीखे सब जुड़े रहें,
सहयोग करें, जैसी क्षमता जिसकी ।

सच्चा हो प्रेम, घृणा बदी से,
रहो एक-दूजे के प्रति समर्पित,
आपस में एक-दूसरे को आदर से,
दो महत्त्व, अपने से भी अधिक ।

बुराई का बदला दो भलाई से,
परमेश्वर को निर्णय का अधिकार,
भूखे शत्रु को भी दो भोजन,
नेकी से बदी का हो प्रतिकार ।

सत्ता का विरोध, विरोध परमेश्वर का,
क्योंकि सत्ता का अधिकार मिलता उससे,
सत्ता का आदर करो चेतना के कारण,
और जिससे डरना चाहिए, डरो उससे ।

प्रेम के सिवाय कोई ऋण मत रख,
प्रेम का पालन, पालन व्यवस्था का,
तू कौन जो ओरों में दोष निकाले,
मत बन किसी की राह की बाधा ।

खाने-पीने या मान्यताओं के कारण,
कोई छोटा या बड़ा नहीं हो जाता,
सब चाहते परमेश्वर को आदर देना,
हममें कोई अपने लिए जीता ना मरता ।

रख तू विश्वास को अपने,
स्वयं और परमेश्वर के बीच,
जिस खाने के प्रति आश्वस्त नहीं,
दोषी होगा वो खाकर वो चीज़ ।

दोषी होगा वह क्योंकि उसका खाना,
उसके विश्वास के अनुसार नहीं,
और पाप है वह सब कुछ,
जिसकी नींव विश्वास पर टिकी नहीं ।

यीशु मसीह के उदाहरण पर चल,
आपस में तुम मिल-जुल कर रहो,
ताकि सब मिल कर एक स्वर में,
परमेश्वर को महिमा प्रदान करो ।

सभी आशाओं का स्रोत परमेश्वर,
तुम्हें आनन्द और शांति से भर दे,
ताकि भरपूर हो जाओ आशा से,
तुम पवित्र आत्मा की शक्ति से ।

मेरे मन में सदा यह अभिलाषा रही,
कि सुसमाचार का उपदेश वहाँ दूँ,
जहाँ मसीह को जानता ना कोई,
नई नींव पर नया निर्माण करूँ ।

प्रभु यीशु मसीह के द्वारा,
उस एक मात्र ज्ञानमय परमेश्वर की,
अनन्त काल तक हो महिमा,
यह प्रार्थना स्वीकार हो हम सबकी ।

1. कुरिन्थियों

कुरिन्थुस में उस कलीसिया के नाम,
जो पवित्र किए गए यीशु मसीह में,
परम पिता और यीशु की ओर से,
सब को अनुग्रह और शान्ति मिले ।

यीशु का अनुग्रह जो तुम्हें मिला,
करता मैं[71] परमेश्वर का धन्यवाद,
पर पता चला नामों को ले कर,
तुम लोगों के बीच है कुछ विवाद ।

कोई कहता पौलुस का हूँ मैं,
कोई ख़ुद को किसी और का कहता,
पर पौलुस तो नहीं चढ़ा क्रूस पर,
ना ही दिया उसके नाम का बपतिस्मा ।

हम तो बस देते हैं उपदेश,
क्रूस पर चढाए गए मसीह का ही,
यहूदियों के लिए विरोध का कारण,
और औरों के लिए मूर्खता निरी ।

परमेश्वर ने चुने तथाकथित अकिंचन,
जो नीचे थे, जिनसे की जाती थी घृणा,
ताकि अभिमान ना कर पाएँ अभिजात्य,
और दीन हीनों को मिले उसकी कृपा ।

क्रूस पर चढ़ाए मसीह का उपदेश,
परमेश्वर की शक्ति है चुने हुओं को,
गर यह विवेक शासक पा जाते,
चढाते नहीं कभी क्रूस पर मसीह को ।

ग्रहण नहीं करता साधारण मनुष्य,
परमेश्वर द्वारा प्रकाशित सत्य,
क्योंकि आत्मा का आधार पाए बिना,
निरी मूर्खता उनके लिए वे तथ्य ।

क्या पौलुस और क्या अन्य कोई,
बस केवल सेवक हैं हम लोग तो,
जिनके द्वारा तुमने विश्वास ग्रहा,
पूरा कर रहे सौंपे हुए काम को ।

---

[71] मैं-यह पत्र भी पौलुस द्वारा लिखा गया है ।

मैंने बोया, किसी अन्य ने सींचा,
किन्तु बढ़वार तो परमेश्वर ने की,
ना बोने वाला ना सींचने वाला,
बस बड़ाई इसमें है परमेश्वर की ।

तुम स्वयं परमेश्वर का मन्दिर हो,
परमेश्वर की आत्मा तुममें बसती,
नष्ट कर देगा परमेश्वर उसे जो,
पहुँचाता उसके मन्दिर को क्षति ।

एक दूसरे का विरोध करते,
अहंकार में ना तुम भर जाओ,
तेरे पास अपना ऐसा क्या है,
जो तुझे दिया ना गया हो ?

तो फिर अभिमान किस बात का,
किस बात पर बन बैठे हो राजा,
अच्छा होता जो सचमुच राजा होते,
तुम्हारे साथ हम भी हो जाते राजा ।

लिखा नहीं लज्जित करने को तुम्हें,
बल्कि पुत्रवत चेतावनी देने के लिए,
क्योंकि सुसमाचार द्वारा मसीह में,
बना हूँ मैं तुम्हारा पिता, इसलिए ।

फैला हुआ है भयंकर दुराचार तुममें,
निकाल देना चाहिए था तुम्हें ऐसों को,
क्योंकि ज़रा सा खमीर कर देता है,
खमीरमय पूरे ही आटे के लौंदे को ।

छुटकारा पाओ पुराने खमीर से,
ताकि आटे का नया लौंदा बन सको,
हमें पवित्र करने के लिए मेमने सा,
बलि चढ़ा दिया गया यीशु मसीह को ।

यदि हर दिन तुम लोगों के बीच में,
कोई ना कोई विवाद रहता ही है तो,
क्या तुम्हारे बीच ऐसा कोई नहीं है,
ये आपसी झगड़े सुलझा पाए जो ?

तुम्हारे शरीर आत्मा के मन्दिर हैं,
और वो आत्मा नहीं है तुम्हारा अपना,
खरीदा तुम्हें कीमत दे परमेश्वर ने,
सो शरीर से प्रदान करो उसे महिमा ।

विवाह बंधन बचाता अनैतिकता से,
सो त्यागें नहीं वो एक दूसरे को,
पंथ में विश्वास यदि नहीं एक का,
तो भी नहीं त्यागना चाहिए उसको ।

फिर भी यदि अविश्वासी जीवनसाथी,
अलग होना चाहता, तो हो सकता,
ऐसी स्थिति में मसीही बंधु पर,
कोई बंधन लागू नहीं हो सकता ।

जो जिस रूप में चुन लिया गया,
उसे रहना चाहिए बस वैसे ही,
खतना, ना खतना मायने नहीं रखता,
परमेश्वर की आज्ञा का पालन सर्वोपरि ।

थोड़े दिन का बसेरा नाशवान जग में,
सो प्रभु में मन लगाना अच्छा,
पर जो सोचते विवाह कर लेना चाहिए,
उनके लिए विवाह कर लेना अच्छा ।

ज्ञान भर देता अहंकार लोगों में,
पर अधिक शक्तिशाली बनाता प्रेम,
परमेश्वर के द्वारा जाना जाता है,
यदि कोई करता परमेश्वर को प्रेम ।

हमारे लिए एक ही है परमेश्वर,
हमारा पिता, सब आता उसी से,
हमारा जीवन और सबका अस्तित्व,
केवल एक प्रभु, यीशु मसीह से ।

देवताओं की मूर्तियों पर चढाया प्रसाद,
कुछ ना होता, खाने ना खाने से,
औरों के गिरने का कारण ना बने,
तुम्हारे द्वारा ऐसा प्रसाद खाने से ।

हर मनुष्य आशा रखता है कि,
जो कुछ भी वो करे उससे कुछ पाए,
पर मैंने ना चाहा ना लिखा कभी,
कि मेरे बारे में ऐसा कुछ किया जाए ।

अपने गौरव को त्यागने की अपेक्षा,
मैं मर जाना ही ठीक समझूँगा,
सुसमाचार का प्रचार मेरा कर्त्तव्य है,
जिसे निष्काम भाव से करता रहूँगा ।

लोगों का हृदय जीतने के लिए,
मैंने स्वयं को उनके अनुकूल बनाया,
कोई बंधन नहीं था मुझ पर लेकिन,
स्वेच्छा से आपका सेवक बताया ।

हर किसी के लिए उस जैसा बना,
भरसक उपाय किया उद्धार के लिए,
ताकि सुसमाचार के वरदानों में,
कुछ तो हिस्सा हो मेरे भी लिए ।

करता हूँ कठोर अनुशासन में तपा,
मैं अपना शरीर अपने वश में,
ताकि दोषी ठहराया ना जाऊँ,
मैं स्वयं परमेश्वर के सामने ।

पूर्वजों की दोहराएँ ना गलतियाँ,
प्रार्थना करें, परीक्षा में ना पड़ें,
राह दिखाता वो परीक्षा के साथ,
ताकि तुम्हें अनुतीर्ण होना ना पड़े ।

हम स्वतंत्र हैं कुछ भी करने को,
पर सोचें ना केवल अपने स्वार्थ की,
हर बात से विश्वास सुदृढ़ नहीं होता,
सोचना चाहिए हमें परमार्थ का भी ।

खाओ, पिओ या जो कुछ भी करो,
करो परमेश्वर को देने को महिमा,
बनो मत बाधा किसी के भी लिए,
रखो परमार्थ और उद्धार का अरमां ।

मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ क्योंकि,
तुम मुझे सदा याद करते रहते हो,
और जो शिक्षाएँ मैंने दी हैं तुम्हें,
सावधानी से पालन करते रहते हो ।

स्त्री का सिर पुरुष, पुरुष का मसीह,
और मसीह का सिर है परमेश्वर,
सिर ढक के प्रार्थना जो पुरुष करता,
उससे अपमानित होता है परमेश्वर ।

बिना सिर ढके जो स्त्री प्रार्थना करती,
वह अपने पुरुष का करती है अपमान,
बाल मुंडवाना यदि उसे करता लज्जित,
तो करे वो अपने पुरुष का सम्मान ।

ऐसा इसलिए कि पुरुष स्त्री से नहीं,
बल्कि स्त्री बनाई गई है पुरुष से,
पुरुष स्त्री के लिए नहीं रचा गया,
पर स्त्री रची गई पुरुष के लिए ।

फिर भी प्रभु में स्त्री या पुरुष,
स्वतंत्र नहीं वे एक दूसरे से,
क्योंकि जैसे पुरुष से स्त्री आई,
वैसे ही पुरुष जन्मते हैं स्त्री से ।

क्या प्रकृति तुम्हें नहीं सिखाती,
कि पुरुष के लिए लज्जा लम्बे बाल,
और इससे उलट एक स्त्री के लिए,
शोभा की चीज हैं उसके लम्बे बाल ।

टूट पड़ते हो खाने पर तुम लोग,
प्रभु के भोज का आदर नहीं करते,
क्या इसके लिए तुम्हारी प्रशंसा करूँ,
कि दीनों के तिरस्कार की चेष्टा करते ?

अंतिम भोज में रोटी और प्याले की,
तुलना की प्रभु ने देह और लहू से,
ताकि जब तुम खाओ और पिओ तो,
प्रचार करो प्रभु की मृत्यु का उससे ।

अत: अनुचित रीति से जो कोई,
प्रभु की रोटी या प्याला खाता-पीता,
प्रभु की देह और लहू के प्रति,
वो व्यक्ति ऐसे अपराधी ठहरता ।

हे भाइयों, जब भोजन करने एकत्र हों,
परस्पर एक दूसरे की प्रतीक्षा करो,
उसे घर पर ही खा लेना चाहिए,
जिसे सचमुच बहुत भूख लगी हो ।

अलग-अलग वरदान मिले आत्मा के,
पर उन्हें देने वाली आत्मा है एक,
अलग-अलग सेवाएँ निश्चित की गईं,
पर वो सेवा पाने वाला प्रभु है एक ।

हरेक में प्रकट होता है आत्मा,
जो होता हरेक की भलाई के लिए,
अलग-अलग विभूतियाँ देता है आत्मा,
जैसा उचित समझता है जिसके लिए ।

शरीर के अलग-अलग अंग जैसे,
तुम सब मिल मसीह का शरीर हो,
भिन्न-भिन्न विशेषताओं वाले तुम,
और बड़े वरदान को यत्नशील रहो ।

महान से भी महानतम है प्रेम,
ज्ञान और विश्वास से भी बड़ा,
लेखा-जोखा किसी बुराई का नहीं,
प्रेम तो बस सदा करता है रक्षा ।

भाषा का उद्देश्य है बात समझाना,
जो समझ ना आए क्या लाभ उससे,
अन्य भाषा में की जाए प्रार्थना तो,
बुद्धि वंचित रहती शामिल होने से ।

चुनिंदा लोग ही बोलें सभाओं में,
लोग उनसे सीखें और प्रोत्साहित हों,
स्त्रियाँ सभाओं में चुप ही रहें,
घर में पति से पूछ सकती हैं वो ।

अब याद दिलाता तुम्हें सुसमाचार की,
कि मसीह मरा हमारे पापों के लिए,
तीसरे दिन जिला कर उठा दिया गया,
और अनेक लोगों को दर्शन दिए ।

प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ मैं,
और प्रेरित कहलाने योग्य भी नहीं,
सताया करता था मैं, पर बदल गया,
उसका अनुग्रह गया व्यर्थ नहीं ।

क्यों तुममें से ऐसा कुछ कहते,
सम्भव नहीं मृत्यु के बाद जी उठना,
यदि तुम ऐसा ही समझते हो तो,
व्यर्थ है तुम्हारा विश्वास रखना।

यदि मरे हुए जिलाए नहीं जाते,
तो आओ, खाओ, पिओ, मौज करो,
क्योंकि कल तो मर ही जाना है,
क्यों फिर कल की फ़िक्र करो ?

पूछते जो कैसे जिलाए जाते मरे,
तो तुम जो बीज बोते हो,
परमेश्वर उसे जैसा चाहे देता रूप,
क्या तुम भरपूर पौधा बोते हो ?

प्राकृतिक है वह काया जिसे,
मरने पर धरती में दफनाया गया,
किन्तु वह आध्यात्मिक शरीर है,
जिस काया को पुनर्जीवित किया गया।

पहला पुरुष (आदम) मिट्टी से बना,
वैसे ही मिट्टी से बने लोग सभी,
किन्तु दूसरा (मसीह) स्वर्ग से आया,
सो स्वर्गीय हैं अन्य दिव्य पुरुष भी।

परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकार,
हमारा पार्थिव शरीर पा नहीं सकता,
और ना ही जो विनाशमान है वह,
अविनाशी का उत्तराधिकार पा सकता।

अंतिम तुरही बजने पर तुरन्त ही,
मरे हुए अमर हो जिला दिए जाएँगे,
और हम जो अभी जीवित हैं,
हम मरेंगे नहीं, बदल दिए जाएँगे।

सो डटे रहो सावधानी से भाइयों,
बने रहो अपने विश्वास में अटल,
साहसी बनो और शक्तिशाली बनो,
और प्रेम से करो तुम काम सकल।

2. कुरिन्थियों

हे भाइयों, हमें एशिया में,
बहुत सी यातनाएँ झेलनी पड़ी थीं,
यहाँ तक कि हमें जीने तक की,
कोई आशा नहीं रह गयी थी।

पर परमेश्वर ने हमें बचाया,
और वो ही हमें बचाता रहेगा,
हमारी आशा उसी पर टिकी है,
वही आगे भी सम्भाल रखेगा।

मैंने तुम्हारे पास आने की ठानी थी,
तब कोई संशय नहीं था मेरे मन में,
पर मैं कुरिन्थुस नहीं आया क्योंकि,
डालना नहीं चाहता था तुम्हें कष्ट में।

क्योंकि यदि मैं तुम्हें दुखी करूँगा तो,
फिर कौन मुझे सुखी करेगा भला,
मेरी प्रसन्नता में प्रसन्न हो तुम,
मेरा प्रेम प्रकट करती है मेरी वेदना।

यदि किसी ने मुझे दुःख पहुँचाया,
तो वह दुःख तुम तक भी है पहुँचा,
उसको जो दण्ड दिया तुम लोगों ने,
वह पर्याप्त है, अब कर दो क्षमा ।

परमेश्वर धन्य है जो मसीह के द्वारा,
अपने विजय अभियान में राह दिखाता,
और हमारे द्वारा हर कहीं वह,
अपने ज्ञान की सुगंध फैलाता ।

दम्भ नहीं, पर मसीह के कारण,
कर रहें हैं हम इस बात का दावा,
हम अपने आप से कुछ नहीं करते,
इस सामर्थ्य का परमेश्वर है दाता ।

सेवक बनने के योग्य ठहराया,
उसी ने हमें एक नए करार का,
लिखित नहीं आत्मा का वाचा है,
वो मारती, जीवन देती है आत्मा ।

व्यवस्था विधान से प्रबल यह वाचा,
क्योंकि यह है आत्मा से सम्बन्धित,
नहीं हम पर्दा डाले मूसा के जैसे,
जिसके विधान का अंत था निश्चित ।

पढ़ा जाता है जब वह मूसा का ग्रंथ,
पाठकों पर पड़ा रहता वह पर्दा,
पर परमेश्वर की ओर हृदय मुड़ने पर,
हटा लिया जाता मन पर से वह पर्दा ।

प्रभु के तेज का ध्यान करने से,
होने लगते हैं हम भी वैसे ही,
बढ़ने लगता हमारा तेज अधिकाधिक,
मिलता जो प्रभु, यानी आत्मा से ही ।

यदि सुसमाचार पर कोई पर्दा पड़ा है,
तो यह केवल उनके लिए पड़ा,
जो विनाश की राह पर चल रहे,
जिन्हें शैतान ने कर दिया है अंधा ।

हम स्वयं अपना प्रचार नहीं करते,
बल्कि मसीह यीशु का उपदेश देते,
और अपने बारे में तो कहते हैं यहीं,
हम सेवक हैं तुम्हारे, यीशु के नाते ।

किन्तु हम जैसे मिट्टी के भांडों में,
यह सम्पत्ति इसलिए रखी गयी,
कि यह अलौकिक शक्ति हमारी नही,
बल्कि सिद्ध हो परमेश्वर की ।

तब तक दूर हैं हम प्रभु से,
जब तक अपनी देह में जी रहे,
क्योंकि विश्वास के सहारे जीते हम,
प्रभु के साथ जीने को अच्छा समझते ।

हो गया नया सब, जाता रहा पुराना,
परमेश्वर मिला रहा सब अपने में,
उसे यूँ ही व्यर्थ मत जाने दो,
परमेश्वर का जो अनुग्रह मिला तुम्हें ।

हे कुरिन्थियों, पूरी तरह खुल कर,
हमनें की हैं तुम लोगों से बातें,
तुम्हारे लिए खुला है हमारा मन,
और प्यार बसा है हमारे मन में ।

किन्तु अवरुद्ध हो गया तुम्हारा प्रेम,
सो कह रहा, अपना बच्चा समझते,
उचित प्रतिदान स्वरूप अपना मन,
हमारे लिए खुला रखना चाहिए तुम्हें ।

बेमेल संगत अविश्वासियों के साथ,
जैसे नेकी ने मिलाया बदी से हाथ,
मसीह और शैतान में कैसा तालमेल,
कैसे अंधेरे का मित्र हो सकता प्रकाश ?

तुम्हारी व्याकुलता और चिंता जान,
जो व्यक्त की हमारे लिए तुमने,
उसने हमें प्रसन्न कर दिया,
गर्व और भरोसा भर दिया हममें ।

पत्र लिख तुम्हे दुःख पहुंचाने का,
ज़रा भी खेद नहीं है मुझे,
पछतावे का कारण बना यही दुःख,
मन फिराव करा दिया जिसने ।

यह दुःख, जिसे परमेश्वर ने दिया,
कितना उत्साह जगा दिया उसने,
कितना साहस, पापी को प्रताड़ना,
कितनी ही भावनाएं भर दीं तुममें ।

मैसिडोनिया क्षेत्र की कलीसियाओं पर,
जो अनुग्रह परमेश्वर ने किया,
गहन दरिद्रता में भी प्रसन्नता से,
सामर्थ्य से अधिक उन्होंने किया ।

पिछले साल तुम दान देने की चाह,
और दान देने में सबसे आगे थे,
अब दान की उस तीव्र इच्छा को,
जो कुछ पास है, पूरा करो उसी से ।

किसी व्यक्ति की क्षमतानुसार ही,
उसका दान ग्रहण करने योग्य ठहरता,
हम नहीं चाहते की औरों को सुख,
एवज में कष्ट तुम्हें पड़े सहना ।

भेज रहे हैं हम तितुस[72] के साथ,
अपने उन कुछ भाइयों को भी,
सुसमाचार प्रचार और परोपकार में,
छोड़ी नहीं है जिन्होंने कोई कमी ।

याद रखो जो बोता है छितरा,
वह काटता भी है छितरा ही,
और जिसकी बुआई होती सघन,
सघन होती है कटाई भी उसकी ।

हर कोई बिना कष्ट या दबाव के,
इतना ही दे मन में सोचा जितना,
क्योंकि परमेश्वर प्रेम करता है उससे,
जो अपनी प्रसन्नता से देता जितना ।

जो कुछ देता वो परमेश्वर ही देता,
देता है सबको वह मुक्त भाव से,
उसके प्रति धन्यवाद का भाव उपजता,
दान की इस पवित्र सेवा से ।

यद्दपि हम भी इस संसार में रहते,
पर हम उनकी तरह नहीं लड़ते,
परमेश्वर की शक्ति शास्त्रों में निहित,
हम उन शास्त्रों से युद्ध लड़ते ।

[72] तितुस-एक उत्साही प्रेरित जो पौलुस के साथ था ।

कहता है शास्त्र जिसे गर्व करना है,
वह प्रभु के करे पर गर्व करे,
क्योंकि अच्छा वही माना जाता है,
जिसे प्रभु अच्छा स्वीकार करे ।

जो नकली प्रेरित हैं, ढोंग करते हैं,
डरता हूँ, भटका ना दें मन तुम्हारा,
अचरज नहीं क्योंकि शैतान भी,
धारण देवदूत का रूप कर आता ।

सो उसके सेवक भी नकली रूप रखें,
तो इसमें क्या बात अचरज की,
किन्तु अंत में उनको भी अपनी,
करनी के अनुसार फल मिलेगा ही ।

सही हैं यातनाएँ औरों से ज्यादा,
बार-बार प्राणों पर बन आई,
बढचढ कर बातें मैं नहीं करता,
मुझ पर प्रभु ने दया दिखाई ।

अब तो मुझे गर्व करना ही होगा,
प्रभु के दर्शनों और दैवी संदेशों पर,
पर कहीं मुझे घमंड ना हो जाए,
सो प्रभु ने मुझे रखा निर्बल कर ।

प्रभु का अनुग्रह ही पर्याप्त मुझे,
निर्बलता में निहित होती शक्ति,
इसलिए गर्व करता निर्बलता पर,
ताकि मुझ में रहे मसीह की शक्ति ।

मुझे तुम्हारी सम्पत्ति की नहीं,
बल्कि मुझे चाहत है तुम्हारी,
बच्चे माता-पिता के लिए नहीं,
उनके लिए बचाते माता-पिता ही ।

मैंने तुम्हें चेतावनी दी थी पहले भी,
फिर अब मैं तुम्हें दे रहा चेतावनी,
कि यदि मैं तुम्हारे पास आया तो,
पाप करने वालों को छोड़ूंगा नहीं ।

ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूँ,
कि प्रमाण चाहते हो तुम मुझसे,
निर्बल नहीं बल्कि समर्थ है वो,
यीशु मसीह जो बोलता है मुझसे ।

यह सच है कि क्रूस पर चढ़ाया गया,
उसे उसकी दुर्बलता के कारण,
किन्तु अब वह जी रहा है,
परमेश्वर की शक्ति के कारण ।

परखो स्वयं को यह देखने के लिए,
कि क्या तुम विश्वासपूर्वक जी रहे हो,
यीशु मसीह तुम्हारे भीतर ही है,
क्या इस विश्वास पर खरे उतरे हो ?

अब हे भाइयों मैं विदा लेता हूँ,
ठीक रखो तुम आचरण को अपने,
प्रेम और शान्ति का स्रोत परमेश्वर,
रह सके तुम्हारे साथ सदा जिससे ।

गलातियों

गलातिया क्षेत्र की कलीसियों को,
यह पत्र पौलुस द्वारा लिखा गया,
तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिले,
परमेश्वर महिमावान हो सदा सर्वदा ।

मुझे अचरज है इतनी जल्दी तुम,
उस परमेश्वर से मुँह मोड़ कर,
किसी दूसरे सुसमाचार को जा रहे,
यूँ ही लोगों के बहकावे में आ कर ।

किन्तु चाहे हम हो या कोई स्वर्गदूत,
यदि सुनाता है वो भिन्न सुसमाचार,
तो मैं अपने कहे को दोहरा रहा हूँ,
वो चाहे कोई हो, उस पर है धिक्कार ।

परमेश्वर की कलीसिया को सताया,
किये उन पर मैंने पहले अत्याचार,
दैवीय रूप से जब सुसमाचार मिला,
करने लगा स्वत: मैं उसका प्रचार ।

जो सुसमाचार गैर यहूदियों को दिया,
दिया वही कलीसिया के मुखियाओं को,
परमेश्वर ने जैसा दर्शाया था मुझे,
करता रहा मैं वैसे उसी काम को ।

बरनाबास और मुझसे पतरस आदि,
साझेदारी कर सहमत हो गए इससे,
कि हम उपदेश दें विधर्मियों के बीच,
और वे यहूदियों के बीच उपदेश दें ।

पर पतरस के अनुचित व्यवहार का,
अंताकिया में मैंने विरोध किया,
जब उसने लोगों के डर से,
गैर यहूदियों से ख़ुद को दूर किया ।

ऐसा किया उसने उनके डर से,
जो चाहते थे गैर यहूदियों का खतना,
साथ दिया औरों ने भी इसमें,
और बरनाबास तक भी भटका ।

सुसमाचार में निहित सत्य के अनुसार,
जब देखा वे सही राह नहीं चल रहे,
ख़ुद गैर यहूदियों सा जीवन जीने वाले,
उन्हें कैसे यहूदियों सा जीने को कहें ?

हम जानते हैं व्यवस्था के कारण नहीं,
विश्वास के कारण ठहराए जाते नेक,
इसीलिए विश्वास धारण किया ताकि,
उसके कारण हम ठहराए जाएँ नेक ।

क्या व्यवस्था का पालन करने से,
पाया तुमने आत्मा का वरदान,
या सुसमाचार में विश्वास करने से,
पाया था तुमने यह वरदान ?

इब्राहीम और उसके 'वंशज' (मसीह) से,
जो करार परमेश्वर ने किया था,
वर्षों बाद का व्यवस्था का विधान,
उसमें कोई बदलाव नहीं कर सकता ।

दिया गया व्यवस्था का विधान,
हमें एक कठोर अभिभावक के रूप में,
ताकि नेक ठहरें विश्वास के आधार पर,
और वो ले जाए मसीह तक हमें ।

सो हम भी जब थे बच्चे,
सांसारिक नियमों के थे दास,
उचित अवसर आने पर उसने,
अपने पुत्र को भेजा हमारे पास ।

एक स्त्री से जन्मा था वह,
और व्यवस्था के आधीन जीता था,
ताकि हमें मुक्त कर बना सके,
परमेश्वर का गोद लिया बच्चा ।

और तुम परमेश्वर के पुत्र के हृदयों में,
पुत्र की आत्मा को भेजा उसने,
सो तू अब दास नहीं बल्कि पुत्र है,
पुत्र रूप में उत्तराधिकारी बनाया उसने ।

सबसे पहले सुसमाचार सुनाया तुम्हें,
क्यों तुम पुरानी राह लौटना चाहते,
अच्छा नहीं है उद्देश्य उन लोगों का,
जो व्यवस्था विधान पर चलाना चाहते ।

मेरे प्रिय बच्चों तुम्हारे लिए मैं,
झेल रहा हूँ प्रसव वेदना फिर से,
चाहता हूँ अलग तरह से बातें करूँ,
जब तक हो नहीं जाते मसीह जैसे ।

पैदा हुए थे दो पुत्र इब्राहीम को,
एक सारा से, एक दासी से,
सारा का पुत्र था वचन का परिणाम,
दासी हाजिरा का प्राकृतिक रूप से ।

इन बातों का प्रतीकात्मक अर्थ है,
प्रतीक हैं ये दो स्त्रियाँ दो वाचाओं का,
एक सिनै पर्वत में प्राप्त वाचा,
जिसने दासता के लिए लोगों को जना ।

यह वाचा सम्बन्धित है हाजिरा से,
प्रतीक अरब स्थित सिनै पर्वत का,
वर्तमान यरूशलेम को इंगित करती,
बच्चों के साथ भुगत रही दासता ।

किन्तु स्वतंत्र है स्वर्ग में स्थित यरूशलेम,
और वही है हमारी जन्मदात्री माता,
जैसा कि इस विषय में कहता है शास्त्र,
बाँझ ! आनंद मना, तूने किसी को ना जना ।

हर्षनाद कर तुझे प्रसव वेदना ना हुई,
और हँसी-ख़ुशी में तू खिलखिला,
क्योंकि परित्यक्ता की अनेक संतानें हैं,
उसकी इतनी नहीं जो है पतिव्रता ।

सो भाइयों, अब तुम इसहाक की जैसी,
संतान हो परमेश्वर के वचन की,
तुम उस दासी की संतान नहीं,
बल्कि हो तुम स्वतंत्र स्त्री की ।

स्वतंत्र किया हमें यीशु मसीह ने,
ताकि विधान के बोझ से ना दबें,
खतना कराना या ना कराना,
ऐसी निरर्थक बातों से दूर ही रहें ।

रहो आत्मा के अनुशासन में तुम,
पापपूर्ण प्राकृतिक इच्छाओं से बचो,
हमारे नए जीवन का स्रोत आत्मा है,
तो आओ उसे ही मार्गदर्शन करने दो ।

सुमार्ग पर लाओ भटके हुए को,
बरतो सावधानी स्वयं अपने लिए भी,
उठाना पड़ेगा सबको अपना बोझ,
स्वयं तुम दोगे अपनी ही साक्षी ।

जो बोयेगा अपनी काया के लिए,
वह काया से काटेगा विनाश की फसल,
किन्तु आत्मा के खेत को बोनेवाला,
काटेगा अनन्त जीवन की फसल ।

जिसके द्वारा मैं संसार के लिए,
और संसार मेरे लिए मर गया,
प्रभु यीशु के उस क्रूस को छोड़,
गर्व करूँ ना मैं किसी पर ज़रा ।

इफिसियों

पौलुस की और से इफिसुस के संतों,
और यीशु में विश्वासियों के नाम,
परमेश्वर और यीशु मसीह की ओर से,
अनुग्रह और शान्ति का मिले इनाम ।

यीशु की बलिदानी मृत्यु के कारण,
हम अपने पापों से छुटकारा पा रहे,
उसके संपन्न अनुग्रह के कारण,
हम अपने पापों की क्षमा पा रहे ।

यीशु में विश्वास और संतों से प्रेम,
सुन कर तुम्हारा, अभिभूत हूँ मैं,
खुल जाएँ तुम्हारी हृदय की आँखें,
और परमेश्वर का ज्ञान मिले तुम्हें ।

एक समय तुम पापों में लिप्त थे,
और आध्यात्मिक रूप से मरे हुए थे,
संसार के अन्य लोगों के समान,
परमेश्वर के क्रोध के तुम भी पात्र थे ।

परमेश्वर ने अपने प्रेम के कारण,
मसीह के साथ हमें भी जीवन दिया,
और यीशु में स्थित होने के कारण,
अपने अनुग्रह से हमारा उद्धार किया,

ले आए गए हो परमेश्वर के निकट,
सो अन्जान या पराए रहे ना तुम,
प्रेरितों, नबियों की नींव पर जो खड़ा,
एक ऐसा भवन हो गए हो तुम ।

जनाया जा चूका कि यहूदियों के साथ,
गैर यहूदी भी हैं सह उत्तराधिकारी,
मसीह यीशु में जो दिया गया वचन.
उस वचन में दोनों हैं सहभागी ।

प्रार्थना करता हूँ तुम्हें शक्ति मिले,
जिससे जान सको प्रेम की व्यापकता,
ज्ञान से परे, मसीह का प्रेम जिससे,
भरे तुममें परमेश्वर की परिपूर्णता ।

एक दूसरे को सहते रहो प्रेम से,
धरो धीरज, नम्रता और कोमलता,
आपस में शान्ति से उत्पन्न होती,
बनाए रखो उस आत्मा की एकता ।

एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास,
और एक ही है पवित्र बपतिस्मा,
सबका पिता परमेश्वर भी एक है,
सब में समाया, स्वामी सब का ।

अलग-अलग अनुग्रह मिला सबको,
कुछ बनें नबी, कुछ करें प्रचार,
प्रेम सहित सत्य बोलते हुए हम,
प्रभु के ज्ञान में हों एकाकार ।

त्याग दो अपने पुराने व्यक्तित्व को,
झूठ, क्रोध और अनुचित बोलना,
दयालु और करुणावान बनो तुम,
एक दूसरे के अपराधों को करो क्षमा ।

एक समय तुम अंधकार से भरे थे,
पर अब हो प्रभु के अनुयायी तुम,
इस रूप में ज्योति से परिपूर्ण हो,
सो करो प्रकाश-पुत्र सा आचरण तुम ।

पति-पत्नी हों परस्पर समर्पित,
और एक दूसरे का करें सम्मान,
पत्नी माने पति को सर्वोपरि,
पति पत्नी को अपनी देह समान ।

माता-पिता की आज्ञा माने बालक,
पिता भी बच्चों को क्रोधित ना करें,
बल्कि प्रभु से मिली शिक्षा देते,
वे बच्चों का पालन-पोषण करें ।

ऐसा ही सम्बन्ध हो सेवक स्वामी में,
स्वामी के रूप में सेवा मसीह की,
हे स्वामियों, सबका स्वामी है स्वर्ग में,
करता ना वो तरफदारी किसी की ।

प्रभु में अपनेआप को स्थित कर,
असफल शैतान की योजनाएँ करो,
सच्चरित्रता, धार्मिकता और विश्वास,
इनके साथ बदी का मुकाबला करो ।

और मेरे लिए भी प्रार्थना करो,
कि जब भी मैं अपना मुँह खोलूँ,
मुझे एक सुसन्देश प्राप्त हो,
सुसमाचार का सत्य तुमसे बोलूँ ।

हे भाइयों, परमेश्वर और यीशु का,
विश्वास, शांति और प्रेम मिले तुम्हें,
जो यीशु से अमर प्रेम रखते हैं,
परमेश्वर का अनुग्रह मिलता है उन्हें ।

फिलिप्पियों

यह पत्र यीशु मसीह के सेवक,
पौलुस और तीमुथियुस की ओर से,
मसीह यीशु में स्थित फिलिप्पी के,
सभी संतों से विनती करते ।

सहयोगी रहे तुम सुसमाचार प्रचार में,
भरोसा है परमेश्वर बनाए रखेगा इसे,
मेरे साथ अनुग्रह में सहभागी हो तुम,
तुम्हारा प्रेम और ज्ञान निरन्तर बढ़े ।

मुझे बंदी बनाए जाने के कारण,
अधिकतर भाई हुए है उत्साहित,
इससे सुसमाचार का प्रचार हो रहा,
मेरा आनन्द भी हो रहा वर्धित ।

लगा रहूँगा मैं मसीह की सेवा में,
चाहे जीवित रहूँ या चाहे मरुँ,
क्योंकि मसीह है मेरे जीवन का अर्थ,
जो भी करूँ उसकी सेवा में करूँ ।

मैं सुनना चाहता हूँ कि विरोधियों से,
तुम किसी प्रकार भी डर ना रहे हो,
यह साहस है उनके विनाश का प्रमाण,
जो मुक्ति के लिए 'उसे' मंजूर हो ।

प्रेम और सहयोग करो परस्पर,
अपना चिंतन यीशु का सा रखो,
परमेश्वर का आज्ञाकारी, सेवक बना,
सो सर्वोच्च स्थान दिया गया उसको ।

परमेश्वर के प्रति पूर्ण आदर के साथ,
करो प्रयास उद्धार के लिए अपने,
क्योंकि उसके लिए इच्छा और ताकत,
परमेश्वर ही पैदा करता है तुममें ।

सावधान रहो कुकर्म करने वालों से,
परमेश्वर की उपासना है सच्चा खतना,
शारीरिक उपलब्धियों पर भरोसा बेमानी,
सच्चा है गर्व बस यीशु पर रखना ।

मैं इस्राएली हूँ, बेंजमीन के वंश का,
व्यवस्था का समर्थक फरीसी था,
सताया था बहुत कलीसिया को मैंने,
वो लाभ असल में हानि था, समझा ।

मसीह में विश्वास से जो मिली,
उस धार्मिकता से जाना है मैंने,
सब कुछ त्याग, बस एक लक्ष्य ,
यीशु को पाना, रखा है मैंने ।

अनुभव करूँ मैं उस शक्ति का,
जिससे यीशु का पुनरत्थान हुआ था,
उसी रूप को पा लेना चाहता हूँ,
जिसे उसने मृत्यु द्वारा पाया था ।

ऐसा नहीं कि मैं सिद्ध बन चुका,
पर कर रहा उसे पाने का यत्न,
जिसे पाने को परमेश्वर ने बुलाया,
करता रहा हूँ उसे पाने का यत्न ।

मनाते रहो आनन्द सदा प्रभु में,
परमेश्वर से प्रार्थना, विनय के साथ,
इसी से उससे मिलने वाली शान्ति,
रखेगी हृदय व बुद्धि मसीह के साथ ।

कुलुस्सियों

तुम्हारा विश्वास और संतों से प्रेम,
सुसमाचार में सुनी आशा के कारण,
जो सारे संसार में सफलता पा रहा,
और जिसे किया है तुमने धारण ।

उबारा हमें अन्धकार की शक्ति से,
अपने पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया,
जिसके द्वारा हमें मिला छुटकारा,
यानि हमें पापों से माफ़ कराया ।

परमेश्वर का वह दृश्य रूप है,
और सिरमौर है सारी सृष्टि का,
उत्पन्न हुआ सब कुछ उससे ही,
और उसी के लिए गया है रचा ।

अस्तित्व था उसी का सबसे पहले,
वही है सब का मूल भूत आधार,
वही आदि है और मरों को फिर से,
जिला देने का उसे ही है अधिकार ।

उठाता हूँ तुम्हारे लिए जो कष्ट,
उसमें आनन्द का अनुभव करता हूँ,
मसीह की यातनाओं में रही जो कमी,
उसे अपने शरीर में पूरा करता हूँ ।

परमेश्वर का है यह रहस्यपूर्ण सत्य,
कि रहता मसीह तुम्हारे भीतर ही,
और परमेश्वर की महिमा पाने का,
हमारी एक मात्र आशा भी है वही ।

अपने समूचे ज्ञान का उपयोग कर,
हम शिक्षा और उपदेश देते औरों को,
ताकि मसीह में परिपूर्ण व्यक्ति बना,
परमेश्वर को पेश कर सकें उसको ।

बने रहो प्रभु यीशु मसीह में तुम,
उसमें तुम्हारी जड़े गहरी हों,
पाते रहो अपने विश्वास में दृढ़ता,
परमेश्वर के प्रति आभारी हों ।

ध्यान रखो मनुष्य के हाथों नहीं,
तुम्हारा खतना भी उसी में हुआ,
पापपूर्ण मानव प्रकृति से छुड़ा,
यह खतना मसीह द्वारा हुआ ।

जिस परमेश्वर ने उसे पुन: जिलाया,
उसके कार्य में विश्वास के कारण,
सब पापों को मुक्तता से क्षमा कर,
मसीह के साथ तुम्हें दिया जीवन ।

हमारे प्रतिकूल विधान का अभिलेख,
क्रूस पर कीलों में जड़ कर मिटाया,
और उसके अधिशासी अधिकारियों को,
बंदी के रूप में पीछे-पीछे चलाया ।

क्योंकि मर चुके तुम मसीह के साथ,
संसारी रस्मों से छुटकारा पा चुके,
फिर क्यों बंधे संसारी आचरणों से,
जैसे तुम हो इसी दुनिया के ?

सो जुड़ो स्वर्ग से जुड़ी वस्तुओं से,
नवजीवन तुम्हारा छिपा परमेश्वर में,
हमारा जीवन मसीह जब फिर प्रकटेगा,
तुम भी प्रकटोगे उसकी महिमा में ।

जो कुछ भी तुम करो या कहो,
वह सब प्रभु यीशु के नाम पर हो,
उसी के द्वारा तुम हर समय,
परमेश्वर को धन्यवाद देते रहो ।

1. थिस्सलुनीकियों

थिस्सलुनीकियों के परम पिता परमेश्वर,
और प्रभु यीशु में स्थित कलीसिया को,
पौलुस और सिलवानुस आदि की ओर से,
दिव्य अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो ।

मात्र शब्दों से ना पहुँचा सुसमाचार,
पवित्र आत्मा द्वारा तुम तक पहुँचा,
प्रसन्नता सहित ग्रहण किया तुमने,
हमारा तथा प्रभु का अनुकरण किया ।

दुर्व्यवहार और विरोध सह कर भी,
हमें सुसमाचार सुनाने का साहस मिला,
न कोई छल, ना कोई दूषित भावना,
ना कोई लोभ, ना कोई प्रलोभन दिया ।

प्रेरित का अधिकार ना जताया हमने,
माँ की तरह तुम्हारा पोषण करते रहे,
तुम और परमेश्वर है हमारा साक्षी,
पिता की तरह हम बर्ताव करते रहे ।

तुमने भी अपने देश-भाइयों से,
झेली हैं यातनाएँ बहुत सी,
यहूदिया में कलीसिया के लोगों ने,
उनके हाथों झेली थीं जैसी ।

तुम्हारे प्रेम और विश्वास को जान,
बहुत संतोष हुआ है हम को,
तुमसे मिलने को हम बेकरार हैं,
जैसे ही प्रभु मौका देता हम को ।

जीते रहो पवित्रता से जीवन तुम,
परमेश्वर चाहता है हम पवित्र बने,
इसलिए जो इस शिक्षा को नकारता,
परमेश्वर को नकारना है उसके लिए ।

इस विश्वास में जिन्होंने त्यागे प्राण,
कि यीशु मसीह जी उठा फिर से,
तो जब प्रभु स्वर्ग से उतरेगा,
वे ही उठाए जाएँगे पहले सबसे ।

उसके बाद हमें प्रभु से मिलने को,
बादलों के बीच ऊपर उठा लिया जाएगा,
और इस प्रकार हमें सदा के लिए,
प्रभु के साथ एक कर दिया जाएगा ।

सो सावधान रह प्रतीक्षा करें हम,
प्रेम सहित उद्धार की आशा रखें,
क्योंकि परमेश्वर ने यीशु के द्वारा,
मुक्ति पाने को बनाया है हमें ।

पथ प्रदर्शकों को देते रहो आदर,
शान्ति से लोगों को प्रोत्साहित करते,
बुराई का बदला बुराई से नहीं,
रहो सदा भलाई का प्रयास करते ।

छोड़ो ना कभी प्रार्थना करना,
हर हालत में 'उसका' धन्यवाद करो,
जानों मत नबियों के संदेश को छोटा,
हर बात की असलियत को परखो ।

2. थिस्सलुनीकियों

प्रेम और विश्वास बढ़ रहा तुममें,
सो हम स्वयं गर्व तुम पर करते,
परमेश्वर का न्याय सच्चा है,
उसके राज्य में तुम्हें प्रवेश मिले ।

न्यायोचित है तुम्हें जो दुःख देते,
बदले में दुःख मिले उनको,
और तुम्हारे विश्वास के कारण,
यीशु में विश्राम मिले तुमको ।

जो परमेश्वर को नही जानते,
और सुसमाचार पर नहीं चलते,
हटाए जाएँगे प्रभु के सामने से,
और अनन्त विनाश मिलेगा उन्हें ।

मत छला जाने देना स्वयं को,
किसी ऐसे से जो दम्भी होगा,
मन्दिर में जा, सिंहासन पर बैठ,
परमेश्वर होने का दावा करेगा ।

उस व्यवस्थाहीन व्यक्ति का आना,
सुनो, शैतान की शक्ति से होगा,
झूठी शक्ति, चमत्कार छल-प्रपंच,
इन सब बातों से वह भरा होगा ।

सत्य से प्रेम ना किया जिन्होंने,
परमेश्वर छली शक्ति से भर देगा,
झूठ पर विश्वास करेंगे वे लोग,
ऐसे झूठों को परमेश्वर दण्ड देगा ।

सत्य में तुम्हारे विश्वास के कारण,
उद्धार के लिए चुने गए हो तुम,
और जिन का उद्धार होना है,
उस पहली फसल का हिस्सा हो तुम ।

हे भाइयों, हमारे लिए प्रार्थना करो,
कि प्रभु का सन्देश फैले, महिमा पाए,
भटके हुए और दुष्ट लोगों के,
प्रार्थना करो, हम निकट ना जाएँ ।

दूर रहो निक्कमें, बकवादी लोगों से,
ना मेहनत करते, आदेश ना सुनते,
तुम्हारा व्यवहार उन्हें राह दिखाए,
और शत्रु ना मानों मन में उन्हें ।

1. तीमुथियुस

यह पत्र पौलुस द्वारा लिखा गया,
विश्वास में सच्चे तीमुथियुस को,
परमेश्वर और मसीह की ओर से,
अनुग्रह और शान्ति मिले उसको ।

इफिसुस में रुकने का अपना आग्रह,
दोहरा रहा हूँ इस प्रयोजन के साथ,
कि झूठी शिक्षा से बहके ना लोग,
ना आपस में करें वाद-विवाद ।

हम जानते हैं व्यवस्था विधान का,
ठीक-ठीक प्रकार से प्रयोग है अच्छा,
धर्मियों के लिए नहीं है यह विधान,
बल्कि दुराचारियों को देने को शिक्षा ।

पापियों का उद्धार करने आया यीशु,
दया की मुझ पर, पापी बड़ा सबसे,
ताकि एक उदाहरण बना वह मेरा,
अपनी असीम सहनशीलता दिखा सके ।

धन्यवाद दें हम सब पदासीनों को,
ताकि शान्ति से जी सकें जीवन,
चाहता है परमेश्वर सब का उद्धार,
और कि हमें हो सत्य की लगन ।

सब लोगों के लिए यीशु मसीह ने,
दे डाला फिरौती में स्वयं अपने को,
दी साक्षी स्वयं के मध्यस्थ होने की,
और उसके प्रचार हेतु चुना मुझको ।

सो चाहता हूँ हर कहीं सब पुरुष,
पवित्र हाथों को उठा कर ऊपर,
प्रार्थना करें, परमेश्वर को समर्पित हों,
क्रोध और मन-मुटाव मिटा कर ।

आत्म-नियंत्रित हो रहें स्त्रियाँ,
उत्तम कार्यों से सजाएँ स्वयं को,
समग्र समर्पण से शिक्षा ग्रहण करें,
और सिखाए या पढ़ाए ना पुरुष को ।

क्योंकि बनाया गया आदम को पहले,
उसके बाद बनाया गया हव्वा को,
आदम को बहकाया जा ना सका,
पर बहका लिया गया हव्वा को ।

किन्तु माँ के कर्त्तव्यों को निभाते,
रहें प्रेम, पवित्रता, समर्पण के साथ,
तो मेरा विश्वास है वो इस तरह,
उद्धार को अवश्य कर लेंगी प्राप्त ।

कलीसिया के निरीक्षकों को चाहिए,
स्वयं को सद्‌गुणों से सम्पन्न करें,
जो रख सकें ना घर नियन्त्रण में,
कैसे कलीसिया को काबू में रखें ।

सम्मानीय हों कलीसिया के सेवक,
विश्वासी, सदाचारी, नेक कमाई वाले,
केवल एक ही पत्नी हो उनकी,
घर को अच्छे से चलाने वाले ।

स्मरण रहे कि कलीसिया ही,
सत्य की नींव और आधार स्तम्भ है,
हमारे धर्म के सत्य का रहस्य,
निःसन्देह महान और महिमामय है ।

परमेश्वर की रची हर वस्तु उत्तम है,
त्यागने योग्य नहीं है कोई भी वस्तु,
धन्यवाद सहित ग्रहण करने पर,
प्रार्थना से पवित्र हो जाती हर वस्तु ।

लगे रहो साधने में स्वयं को,
मत कटु बोलो बड़ों के साथ,
विशेष ध्यान रखो विधवाओं का,
यथोचित व्यवहार स्त्रियों के साथ ।

घर-परिवार वाली विधवा स्त्रियाएँ,
उचित देखभाल करें अपने घर की,
उन्हें चाहिए कि वे बदला चुकाएँ,
माता-पिता ने जो उनकी सेवा की ।

परमेश्वर पर ही आश्रित विधवाएँ,
परमेश्वर की प्रार्थना में लगी रहतीं,
किन्तु विषय-भोग की दास विधवा,
जीते-जी ही मृत समान हो रहती ।

युवती-विधवाओं के लिए बेहतर है,
वे अपना घर फिर से बसा लें,
चलें ना भटक कर शैतान के पीछे,
ख़ुद संभलें और घर-बार संभालें ।

सद्‌वचनों और सद्‌शिक्षा से असहमत,
और पीड़ित हो झगड़ने के रोग से,
इर्ष्या, बैर, निंदा, गाली-गलौच,
और मतभेद पैदा होता है इनसे ।

सत्य से वंचित लोग करते हैं,
परमेश्वर की सेवा धन के लिए,
ऐसे लोग लालच में फँस कर,
ख़ुद गढ्ढा खोदते अपने लिए ।

क्योंकि धन का प्रेम देता है,
हर प्रकार की बुराई को जन्म,
इच्छाएँ भटका देती विश्वास से,
और महान दुःख को देती जन्म ।

किन्तु तू हे परमेश्वर के जन,
दूर रख स्वयं को इन सब से,
अपने में सद्‌गुणों को पैदा कर,
धन्य हो जा अनन्त जीवन से ।

तीमुथियुस, तुझे जो सौंपा गया है,
उसकी रक्षा कर, बच व्यर्थ बातों से,
'मिथ्या ज्ञान' जनित व्यर्थ के विश्वास,
जिसने लोगों को डिगाया बच उससे ।

2. तीमुथियुस

मेरे लिए बहाए हैं तुमने जो आँसू,
उन्हें याद कर आतुर हूँ मिलने को,
याद है तेरा वो सच्चा विश्वास भी,
जो मिला तेरी नानी ओर माँ को ।

भरोसा है मुझे वही विश्वास तुझमें है,
इसलिए मैं तुझे दिला रहा हूँ याद,
जलाए रख दिव्य वरदान की वो ज्वाला,
जो मेरे हाथ रखने से हुई थी प्राप्त ।

परमेश्वर ने दी हमें जो आत्मा,
भर देती प्रेम, सयंम और शक्ति,
मत लजा और साथ दे उसमें,
सुसमाचार हेतु जो यातना मिलती ।

सुसमाचार से मृत्यु का अंत कर,
जीवन को प्रकाशित किया उसने,
और उस सुसमाचार के प्रचार हेतु,
प्रेरित नियुक्त किया मुझे उसने ।

उस की दी शिक्षा के भरोसे,
जो उस दिन[73] तक करेगी रक्षा,
इन बातों का दुःख उठा रहा हूँ,
किंचित भी मुझे नही आती लज्जा ।

सौंपी गयी तुझे जो बहुमूल्य धरोहर,
भीतर बसी आत्मा से रखवाली कर,
हो सुदृढ़ यीशु से प्राप्त अनुग्रह से,
आ मेरे संग मिल कर काम कर ।

बन्धन रहित है परमेश्वर का वचन,
सुसमाचार द्वार अनन्त उद्धार का,
मरे हुओं से फिर जी उठा यीशु,
यही सार है उस सुसमाचार का ।

वाद-विवाद और व्यर्थ की बातें,
ले जाती हैं वे दूर प्रभु से,
बन जाता है भाँडा उपयोगी बरतन,
घड़-घड़ कर खोट मिट जाने से ।

विरोधियों को भी इस आशा के साथ,
कि परमेश्वर उन्हें भी अवसर देगा,
समझाओ उन्हें विनम्रता के साथ,
कि उन्हें भी सत्य का ज्ञान मिलेगा ।

याद रखो कि अंतिम दिनों में,
हम पर बहुत बुरा समय आएगा,
बेहतर है ऐसे बुरों से रहना दूर,
वरना उनके साथ सब बिगड़ जाएगा ।

[73] उस दिन-जब सभी लोगों का न्याय करने और अपने साथ ले जाने के लिए यीशु आएगा ।

सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र रचा गया है,
परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा ही,
लोगों को सत्य और सुधारने हेतु,
और धार्मिक प्रशिक्षण में उपयोगी ।

तुझे सुविधा हो चाहे हो कठिनाई,
अपना कर्त्तव्य करने को रह तैयार,
समझा लोगों को उनका कर्त्तव्य,
बुरा करने से पहले करें विचार ।

जहाँ तक मेरे स्वयं का प्रश्न है,
प्रभु ने ही दी है शक्ति मुझे,
ताकि मेरे द्वारा सुसमाचार का,
भरपूर तरह से प्रचार हो सके ।

तीतुस

पौलुस की ओर से जिसे,
परमेश्वर के चुने हुए लोगों को,
उनके विश्वास में सहायता देने और,
भेजा उनकी रहनुमाई करने को ।

अनादि काल से परमेश्वर ने,
दिया अनन्त जीवन का विश्वास,
सुसमाचार प्रकट किया उपदेशों द्वारा,
उसकी आज्ञा से भेजा गया मेरे पास ।

मैंने तुझे क्रेते में इसलिए छोड़ा,
कि जो रह गया वहाँ काम अधुरा,
तू उसे ठीक ठाक कर दे,
मेरे आदेश अनुसार कर दे पूरा ।

किए जाएँ निर्दोष बुज़ुर्ग नियुक्त,
हर नगर में परमेश्वर का काम करें,
सद्शिक्षा दे प्रबोधित करें लोगों को,
और उसके विरोधियों का खण्डन करें ।

क्योंकि बहुत से लोग विद्रोही होकर,
व्यर्थ बातें बना औरों को भटकाते,
दावा करते परमेश्वर को जानने का,
पर उनके कर्म कुछ ओर ही दर्शाते ।

दो उत्तम व्यवहार की शिक्षा लोगों को,
नेक और भक्तिमय जीवन जीने की,
उद्धारकर्ता यीशु की महिमा प्रकटे,
उस धन्य दिन की प्रतीक्षा करने की ।

अवज्ञा ना करें पदाधिकारियों की लोग.
रहें शांतिप्रिय और सज्जन बन कर,
प्रभु की करुणा से उद्धार हुआ हमारा,
पवित्र आत्मा उँडेला उसने हम पर ।

फिलेमोन

यीशु मसीह के लिए बंदी बने पौलुस,
और हमारे भाई तिमुथियुस की ओर से,
हमारे प्रिय मित्र और सहकर्मी फिलेमोन,
तथा अन्यों और कलीसिया के लिए ।

हमारे परमपिता परमेश्वर और,
प्रभु यीशु मसीह की ओर से,
तुम सब लोगों को उनका,
अनुग्रह और शान्ति मिले ।

करता हूँ परमेश्वर का धन्यवाद,
संतों के प्रति तुम्हारे प्रेम के लिए,
और यीशु में तुम्हारा विश्वास और,
उससे उत्पन्न सहभागिता के लिए ।

हे भाई, तेरे उन सद प्रयत्नों से,
हो गए हैं संत जनों के हृदय हरे,
इसलिए तेरे इस प्रेम से मिली है,
बहुत शान्ति और आनन्द मुझे ।

एक समय जो किसी काम का ना था,
उनेसिमुस जो मेरा धर्मपुत्र बना था,
भेज रहा हूँ उसे तेरे पास मैं,
क्योंकि बन गया है वो बहुत काम का ।

मैं उससे बहुत प्रेम करता हूँ,
तू भी बहुत प्रेम करेगा उससे,
केवल मनुष्य होने के नाते ही नहीं,
बल्कि प्रभु में स्थित एक बंधु जैसे ।

इब्रानियों

कहता है परमेश्वर अपने पुत्र के लिए,
हे परमेश्वर ! शाश्वत है सिंहासन तेरा,
तुझे धार्मिकता प्रिय, घृणा पापों से,
सब नाशवान, चिरन्तन अस्तित्व तेरा ।

कैसे बच पाएँगे उपेक्षा करने पर,
उस महान उद्धार की जो सुना हमने,
जिसकी पहली घोषणा प्रभु ने की,
और प्रमाणित किया परमेश्वर ने ।

कर दिया सब कुछ उसके आधीन,
महिमा और आदर का मुकुट पहनाया,
सबके लिए मृत्यु का अनुभव कर,
झेली उसने मृत्यु की यातना ।

सहभागी हुआ मनुष्यता में वो ताकि,
मर कर शैतान को नष्ट कर सके,
मृत्यु के भय से दासता में बिताया,
उनके जीवन को वो मुक्त कर सके ।

बनाया गया उसके भाइयों जैसा उसे,
ताकि वह उनकी सहायता कर सके,
और उनके पापों की क्षमा के लिए,
वह स्वयं अपना बलिदान दे सके ।

जैसे भवन का निर्माण जो करता,
पाता है वो भवन से ज्यादा आदर,
वैसे ही माना गया यीशु को पात्र,
मूसा से अधिक पाने को आदर ।

एक सेवक जैसा विश्वास पात्र था,
मूसा परमेश्वर के समूचे घराने में,
किन्तु परमेश्वर के घराने में यीशु,
विश्वास योग्य है एक पुत्र रूप में ।

देखते रहो कहीं तुममें से किसी के,
मन में पाप और अविश्वास ना समाये,
जो तुम्हें सजीव परमेश्वर से ही,
कहीं दूर भटका कर ले जाये ।

यदि अपने प्रारम्भिक विश्वास पर,
हम अंत तक दृढ़ता से टिके रहते,
तो फिर जैसा पहले भी कहा गया,
हम मसीह के भागीदार बन रहते ।

व्यर्थ किया जिन्होंने सुसमाचार सुन,
विश्वास सहित धारण ना किया,
क्रोधित किया परमेश्वर को उन्होंने,
विश्रान्ति से दूर उन्हें रखा गया ।

किन्तु औरों के लिए अभी भी,
खुला हुआ है द्वार विश्रान्ति का,
फिर एक विशेष दिन चुन कर,
परमेश्वर ने 'आज' रखा नाम उसका ।

जो भी हो परमेश्वर के भक्तों हेतु,
रहती ही है एक ऐसी विश्रान्ति,
सृष्टि रचना के बाद सातवें दिन,
जैसी थी परमेश्वर की विश्रान्ति ।

परख लेता मन की वृत्ति और विचार,
'उसकी' दृष्टी से कुछ ओझल नहीं,
उससे, जिसे देना है हमें लेखा-जोखा,
छिप सकता कुछ आवरण में नहीं ।

परमेश्वर ही चुनता महायाजक को,
और मनुष्यों में से वो चुना जाता,
रूहानी प्रतिनिधित्व करता है वो,
मनुष्यों की दुर्बलता भी जानता ।

महायाजक बनने की महिमा यीशु को,
बख़्शी गयी परमेश्वर की ओर से,
अनन्त छुटकारे का स्रोत बना वो,
उनके लिए जो आज्ञा पालन करते ।

जिन्हें हो चुकी प्राप्ति प्रकाश की,
स्वर्गीय वरदान का रस चख चुके,
गर भटक जाएँ तो असम्भव है,
फिर मन-फिराव की राह पा सकें ?

परमेश्वर की प्रतिज्ञा और शपथ,
शाश्वत है, कभी बदल नही सकती,
हम जो उससे सुरक्षा पाने आए,
उत्साहित हैं, जो आशा उसने दी ।

मिलिकिसिदक[74]था राजा और याजक,
परमेश्वर के पुत्र सा ही वह था,
कितना महान था वह व्यक्ति, जिसे,
इब्राहीम ने दसवाँ भाग दिया था ।

व्यवस्था अनुसार लेवी वंशज याजक,
ले सकते हैं बंधुओं से दसवाँ भाग,
पर मिलिकिसिदक ने बिना लेवी हुए,
इब्राहीम से लिया था दसवाँ भाग ।

यदि सम्पूर्णता प्राप्त की जा सकती,
लेवी सम्बन्धी याजकता के ही द्वारा,
तो दूसरा याजक जो लेवी नहीं था,
उसके आने की क्या थी आवश्यकता ?

वह दूसरा याजक वंशानुगत नहीं,
अमरता के आधार पर बना याजक,
क्योंकि घोषित किया गया था 'तू है',
शाश्वत, मिलिकिसिदक सा याजक ।

लोगों के पापों के लिए उसने तो,
स्वयं अपना बलिदान कर दिया,
परमेश्वर ने नई वाचा कर पुत्र को,
प्रमुख याजक बना नियुक्त किया ।

जिस वाचा का मध्यस्थ है यीशु,
उत्तम है वो पहली वाचा से,
पहली वाचा में जो खोट ना होता,
तो क्या वास्ता होता दूजी से ?

कहा उसने वह समय आ रहा जब,
इस्राएल और यहूदा के घराने से,
एक दूसरी नई वाचा मैं करूँगा,
होगी नहीं जो पहली वाचा जैसे ।

पहली वाचा के नियम बन्धन थे,
पापों के लिए भेंट का विधान था,
पर भेंटे चेतना शुद्ध नहीं करतीं,
अंतराल के लिए ही थी वो व्यवस्था ।

पर इस और अच्छी व्यवस्था का,
आ गया अब यीशु याजक बन कर,
दैवीय तम्बू से हो प्रवेश किया उसने,
पशुओं का नहीं, अपना लहू ले कर ।

गर यह सच है कि पशुओं का लहू,
पवित्र करता उन्हें बाहरी तौर पर,
तो मृत्योनमुखी कर्मों से छुटकारा,
दिलाया उसने अपनी बलि दे कर ।

वसीयतनामे[75] के लिए आवश्यक है,
वसीयतकर्ता की मृत्यु का प्रमाण,
पहली वाचा में पशुओं का लहू था,
दूसरी में यीशु ने दिया बलिदान ।

---

[74] मिलिकिसिदक-मेल्कीसेदेक; शालेम अर्थात धार्मिकता का राजा और एक महायाजक । (देखें 'उत्पत्ति')
[75] वसीयतनामे-यूनानी में जो शब्द वाचा है वही शब्द वसीयत का अर्थ भी देता है ।

प्रकट हुआ वह अपने बलिदान द्वारा,
लोगों के पाप हर लेने के लिए,
प्रकट होगा वह फिर दूसरी बार,
लोगों का उद्धार लाने के लिए ।

आने वाली बातों का छाया मात्र,
विधान की बातें यथार्थ नहीं,
चढ़ाई जाती रही बार-बार बलियाँ,
क्योंकि मिलती पाप से मुक्ति नहीं ।

किन्तु मसीह तो याजक के रूप में,
सदा के लिए एक ही बलि चढ़ा कर,
जा बैठा परमेश्वर के दाहिने हाथ,
अपनी बलि से उसे प्रसन्न कर ।

भरोसा रख मसीह की बलि पर,
आओ एक दूसरे को उत्साहित करें,
आ रहा है वह दिन[76] निकट,
अपनी पूरी ताकत लगा प्रतीक्षा करें ।

सत्य का ज्ञान पा लेने के बाद भी,
प्रवर्त रहता यदि कोई पाप में,
क्षमा दे नहीं सकता कोई बलिदान,
जलना ही पड़ेगा भीषण आग में ।

याद करो आरम्भ के उन दिनों को,
जब तुम लोगों ने पाया था प्रकाश,
भीषण कष्ट सहते डटे रहे तुम,
कठोर संघर्ष में दृढ़ता के साथ ।

मत त्यागो अपना वो निडर विश्वास,
इसका भरपूर प्रतिफल दिया जाएगा,
धैर्य से परमेश्वर का कहा करो तुम,
जो वचन दिया, पूरा किया जाएगा ।

विश्वास का अर्थ है सुनिश्चित होना,
जिसकी आशा करते उसके बारे में,
चाहे कोई वस्तु दृष्टिगोचर ना हो,
फिर भी उसके अस्तित्व के बारे में ।

हाबिल से ले कर मूसा तक,
विश्वास किया कितने लोगों ने,
क्या-क्या उन्होंने कर ना दिखाया,
दृढ़ विश्वास था जिनका परमेश्वर में ?

अपने विश्वास के कारण ही,
उन सब लोगों को सराहा गया,
किन्तु उसका वचन मिलने पर भी,
परमेश्वर उनके द्वारा पाया ना गया ।

परमेश्वर के पास अपनी योजनानुसार,
हमारे लिए कुछ और अधिक उत्तम था,
जिससे उन्हें भी बस हमारे साथ ही,
सम्पूर्ण सिद्ध किया जाना था ।

आओ झटक फेंके पाप का जाल,
जो उलझाता ही रहा है हमको,
पाप के विरुद्ध अपने संघर्ष में,
इतना नहीं लड़ना पड़ा है तुमको ।

[76] वह दिन-जब यीशु मसीह फिर प्रकट होगा ।

कठिनाई से उपजता है अनुशासन,
परमेश्वर जिसे देता पुत्र मान तुम्हें,
फिर कौन ऐसा पुत्र होगा जिसे,
सिधाया ना हो उसके पिता ने ।

सिधाते हैं हमें हमारे दैहिक पिता,
इसके लिए हम उन्हें देते हैं मान,
तो फिर अपनी आत्माओं के पिता को,
देना चाहिए हमें कितना अधिक सम्मान ?

जिस समय सिधाया जा रहा होता,
उस समय वो कष्ट दुखदायी लगता,
किन्तु जो भी हो, सिधाने के बाद,
वही नेकी और शान्ति भरा लगता ।

प्रयत्नशील रहो पवित्र होने के लिए,
प्रभु का दर्शन वरना ना मिलेगा,
एक बार उसे खो देने के बाद,
हाथ आया अवसर फिर ना मिलेगा ।

धरती पर चेतावनी देने वाले को,
नकार कर यदि वो बच ना पाए,
तो जो दे रहा स्वर्ग से चेतावनी,
असम्भव उसे नकार कोई बच पाए ।

नकारो मत तुम उस बोलने वाले को,
बच नहीं पाएँगे बिलकुल भी उससे,
धधकती ज्वाला है हमारा परमेश्वर,
धन्यवाद दें उसे आदर मिश्रित भय से ।

प्रेम से रहो, अतिथि सत्कार करो,
दूर रहो लालच और व्याभिचार से,
वह शान्ति दाता परमेश्वर तुम्हें,
सम्पन्न करे उत्तम धन-धान्य से ।

याकूब

आज़माईश की घड़ी को समझो,
अपने लिए एक सुनहरी मौका,
परिपूर्ण सिद्ध बन निकलते जिससे,
यदि तुम्हारा विश्वास सफल होता ।

गर्व करो आत्मा के धन पर,
धनी करे गर्व नम्रता पर अपनी,
नष्ट हो जाना है वैभव एक दिन,
बस पीछे रह जाएगी करनी ।

परमेश्वर ना लेता परीक्षा किसी की,
नहीं सरोकार 'उसे' बुरी बातों से,
बुरी इच्छाओं के भ्रम में फँस,
लोग स्वयं परीक्षा में पड़ते ।

सुनना चाहिए सबको तत्परता से,
जल्दी मत करो बोलने में तुम,
दूर रहो दुराचरण और दुष्टता से,
क्रोध में उतावले होओ ना तुम ।

जो केवल सुनता, आचरण ना करता,
वो तो छलता है स्वयं अपने को,
जो उतारता उसे आचरण में अपने,
करता है वही धन्य स्वयं को ।

भक्ति मांगती नियन्त्रण जिह्वा पर,
अनाथों और विधवाओं की सुधि लेना,
और स्वयं का आचरण ऐसा हो कि,
कोई सांसारिक कलंक कभी लगे ना ।

निर्धनों पर कृपा की परमेश्वर ने,
विश्वास में धनी, उत्तराधिकारी चुना,
सो निर्धन और धनी में भेद कर,
दर्शाना ना कभी उनके प्रति घृणा ।

जिसके हृदय में दया नहीं है,
होगा उनका न्याय भी दया बिना,
पर याद रखो न्याय और दया में,
विजयी होती है सदा करुणा ।

अर्थहीन है विश्वास बिना कर्म के,
केवल कहने से भूख नहीं मिटती,
विश्वास सक्रिय हो कर्मों के साथ,
तब ही उस विश्वास की होती पूर्ति ।

जैसे आग की एक ज़रा सी लपट,
जला सकती है समूचे वन को,
वैसे ही यह जीभ रूपी लपट,
भ्रष्ट कर सकती है पूरे तन को ।

धधकती रहती यह नरक की आग सी,
वश में इसे कोई कर नहीं सकता,
घातक विष से भरा यह ऐसा अंग है,
चैन से जो कभी रह नहीं सकता ।

इसी से करते हम प्रभु की स्तुति,
और इसी से कोसते हम लोगों को,
इसी जिह्वा से अभिशाप और आशीष,
क्या ऐसा करना उचित है हमको ?

झलकनी चाहिए सज्जनता व्यवहार में,
मत अपना ज्ञान बखानो तुम,
स्वार्थ और ईर्ष्या से भरा हो मन,
तो सत्य पर पर्दा डाल रहे हो तुम ।

हमारी आत्मा इच्छाओं से भरी है,
क्या व्यर्थ ही कहता शास्त्र यह बात,
कर दो स्वयं को परमेश्वर के आधीन,
तो शैतान सामने से जाएगा भाग ।

आओ परमेश्वर के पास आओ,
वह भी तुम्हारे पास आएगा,
प्रभु के सामने ख़ुद को नवाओ,
प्रभु तुम्हें ऊँचा उठाएगा ।

विपत्ति में प्रार्थना, ख़ुशी में स्तुति,
और अपराधों की माँगना क्षमा,
लौटा लाता जो सत्य से भटके को,
बनता कारण उसे मिलने की क्षमा ।

1. पतरस

तुम्हारा परखा हुआ विश्वास जो,
मूल्यवान है आग में तपे सोने सा,
उसे यीशु के प्रकट होने पर मिलेगी,
परमेश्वर से महिमा और प्रशंसा।

तुम अपने विश्वास के कारण,
कर रहे हो अपनी आत्मा का उद्धार,
खोजबीन की इसके बारे में नबियों ने,
बताया तुम्हें जब दिया सुसमाचार।

बनो अपने कर्मों में पवित्र तुम,
परस्पर प्रेम को लक्ष्य बना लो,
बुराई, पाखण्ड, वैर-विरोध छोड़,
आध्यात्मिक शुद्धता अपना लो।

आओ सजीव 'पत्थर' यीशु के निकट,
बहुमूल्य, परमेश्वर द्वारा चुना गया,
लजाना ना पड़ेगा उसके विश्वासी को,
पर अविश्वासियों को ठुकराया गया।

जिओ परमेश्वर के सेवक के समान,
सबका सम्मान करो और प्रेम करो,
आदर सहित परमेश्वर का भय मानो,
और अपने शासक का सम्मान करो।

अच्छे कामों के लिए सताया जाना,
परमेश्वर के समक्ष है प्रशंसा योग्य,
मसीह ने भी हमारे लिए दुःख उठा,
उदाहरण दिया अनुसरण के योग्य।

अपमान सहा पर किया ना अपमान,
दुःख झेले, क्रोध ना किया किसी पर,
हमारे पापों को वो ख़ुद पर ओढ़,
चढ़ गया हमारे लिए क्रूस पर।

कहता है शास्त्र, जो चाहे आनन्द,
और समय की सद्गति देखना चाहे,
बोले ना कभी वो बुरे बोल,
अपने अधरों को छल-वाणी से रोके।

शुद्ध रखो अपने हृदय को ताकि,
तुम्हारे उत्तम आचरण के निंदक,
गर करना चाहें तुम्हारा अपमान,
तो लज्जा से उनकी आँखें हो नत।

झेली मसीह ने, तुम भी झेलो,
यह मानसिकता धारण कर लो,
क्योंकि झेलता है जो यातनाएँ,
पापों से छुटकारा पा जाता वो।

फिर इच्छाओं का करे ना पीछा,
करे परमेश्वर की इच्छा का पालन,
बिता चुके हो बहुत वक़्त यूँ ही,
अब 'उसकी' आज्ञानुसार बिताओ जीवन।

मसीह के नाम पर यदि हो अपमान,
तो उस अपमान को सहन करो तुम,
बसती है तुममें परमेश्वर की आत्मा,
क्योंकि मसीह के अनुयायी हो तुम।

छोड़ दो अपनी सब चिंताएं ‘उस’ पर,
क्योंकि तुम्हारे लिए है वो चिंतित,
सावधान रह डटे रहो विश्वास पर,
और अपने मन को रखो नियंत्रित ।

2. पतरस

दिया है ‘उसने’ हमें वो सब कुछ,
जो चाहिए जीवन और सेवा के लिए,
क्योंकि हम जानते हैं उसको,
जिसने अपने पास बुलाया है हमें ।

धार्मिकता और महिमा के कारण उसने,
दिए हमें महान और अमूल्य वरदान,
जिन्हें देने की उसने की थी प्रतिज्ञा,
ताकि हो जाओ तुम उसके समान ।

विश्वास, उत्तम गुण, धैर्य, संयम,
प्रेम, भक्ति, भाईचारा और ज्ञान,
बढ़ाते चलो सब उदारता के साथ,
पाओगे इनसे मसीह का पूर्ण ज्ञान ।

यीशु की महानता के साक्षी हैं हम,
सुनी है हमने वह विशिष्ट वाणी,
यह मेरा पुत्र है, प्रसन्न हूँ इससे,
पर्वत पर उसके साथ सुनी वाणी ।

झूठे नबी तुम्हारे बीच प्रकट हो,
करेंगे घातक धारणाओं का प्रचार,
और जिसने उन्हें स्वतंत्रता दिलाई,
उस स्वामी तक को देंगे नकार ।

बहुत से लोग अनुसरण करेंगे,
उनकी भोग-विलासी प्रवृत्ति का,
और ऐसे ही लोगों के कारण,
होगा बदनाम मार्ग सच्चाई का ।

उनका विनाश प्रतीक्षा कर रहा,
और दण्ड निर्धारित किया जा चुका,
जानता है प्रभु भक्तों को बचाना,
और बुराई का बदला वो देता बुरा ।

ये झूठे उपदेशक सूखे जल स्रोत हैं,
सूखे मेघ जिन्हें तूफान उड़ा ले जाता,
व्यर्थ की अहंकार पूर्ण बातों से,
लोगों का मन देते हैं भटका ।

जगत में फँस बदी से हार गए थे,
उद्धारकर्ता यीशु को जानने के बाद,
उनकी यह बाद की स्थिति है,
पहली स्थिति से कहीं ज्यादा खराब ।

क्योंकि उनके लिए यही अच्छा था,
वे इस धार्मिकता को जान ना पाते,
बजाए इसके कि आज्ञा जो दी गयी,
उसे जानकार ये उससे मुँह फिराते ।

पूरी होगी अवश्य फिर आने की प्रतिज्ञा,
पर उसका एक दिन, हजार वर्ष सा,
धीरज रखता है वो हमारे प्रति,
पूरा अवसर देता मन-फिराव का ।

जब आएगा प्रभु का दिन चुपके से,
धरती आकाश सब नष्ट हो जाएगा,
तो जिओ परमेश्वर को अर्पित जीवन,
तुम्हें निर्दोष, निष्कलंक ठहराया जाएगा ।

1. यूहन्ना

यह वचन अनन्त जीवन को बताता,
जिसका ज्ञान हमें कराया गया,
हमने उसे देखा, साक्षी हैं उसके,
जो अब तुम्हें बताया गया ।

करता जो संसार की इच्छा,
उसके हृदय में संसार बस जाता,
किन्तु परमेश्वर की इच्छा का पालन,
जो करता है वो अमर हो जाता ।

हमारा परमपिता परमेश्वर प्रकाश है,
अन्धकार नहीं जिसमें ज़रा भी,
यदि बढ़ते हम प्रकाश में आगे,
तो हम होंगे परस्पर सहभागी ।

जो कहता यीशु मसीह नहीं है,
वो व्यक्ति तो है वास्तव में झूठा,
मसीह का शत्रु ऐसा व्यक्ति,
पिता और पुत्र दोनों को नकारता ।

पाप स्वीकार कर क्षमा माँग लें,
तो शुद्ध कर देता वो पापों से,
यदि कहते कोई पाप ना किया,
तो परमेश्वर को हम झूठा बनाते ।

और वह जो नकारता है पुत्र को,
पिता भी नहीं है उसके पास,
किन्तु जो मानता है पुत्र को,
पिता का भी वह पाता विश्वास ।

परमेश्वर के सामने हमारे पापों से,
यीशु ही है बस हमें बचाने वाला,
वह एक बलिदान है, हमें ही नहीं,
बल्कि सारे संसार को बचाने वाला ।

मसीह के पुन: प्रकट होने पर,
हो जाएँगे हम उसी के समान,
हर कोई जो ऐसी आशा रखते हैं,
पवित्र हो जाएँगे उसी के समान ।

जो कहता, 'वह प्रकाश में स्थित है',
पर करता है अपने भाई से घृणा,
तो निश्चित है ऐसे व्यक्ति को,
अंधेरे ने अंधा दिया है बना ।

हमारे लिए त्यागा जीवन मसीह ने,
उसी से जानते हम क्या है प्रेम,
हमें भी अपने भाइयों के लिए,
प्राण दे, जतलाना चाहिए प्रेम ।

केवल शब्दों और बातों तक,
सीमित ना रहे कभी हमारा प्रेम,
बल्कि प्रकटे वो हमारे कर्मों द्वारा,
और सच्चा हो हमारा प्रेम ।

यदि कोई काम करते समय,
हमारा मन हमें दोषी ना समझता,
तो परमेश्वर जो मन से बड़ा है,
उसके सामने विश्वास बना रहता ।

हम लोग जो परमेश्वर के हैं,
जो उसे जानता, सुनता है हमारी,
किन्तु जो व्यक्ति परमेश्वर का नहीं,
वह नहीं सुनता है बातें हमारी ।

परमेश्वर प्रेम और दाता प्रेम का,
सो प्रेमी हृदय पहचानता उसे,
पर जिसके हृदय में प्रेम नहीं,
परमेश्वर नहीं मिलता कभी उसे ।

देखा नहीं कभी परमेश्वर को किसी ने,
किन्तु यदि करते हम आपस में प्रेम,
तो परमेश्वर हममें निवास करता है,
हमारे भीतर सम्पूर्ण होता वो प्रेम ।

हमने उसे देखा और हम साक्षी हैं,
कि उद्धार हेतु उसने पुत्र को भेजा,
जो मानता, 'यीशु परमेश्वर का पुत्र है',
उसके हृदय में परमेश्वर बसता ।

नहीं होता कोई भय प्रेम में,
बल्कि प्रेम दूर कर देता भय को,
सो जिसमें भय है उसका प्रेम,
पहुँचा नहीं अभी पूर्णता को ।

मिला हमें यही आदेश मसीह से,
वह जो करता परमेश्वर से प्रेम,
परमेश्वर से प्रेम तभी सम्भव है,
करे जब वह अपने भाई से प्रेम ।

परमेश्वर द्वारा दी गयी साक्षी,
मूल्यवान है मनुष्य की साक्षी से,
साक्षी दी उसने अपने पुत्र की,
कि अनन्त जीवन मिलता उससे ।

2. यूहन्ना

यूहन्ना की ओर से उस महिला को,
परमेश्वर द्वारा चुना गया जिसे,
और उसके बालकों के नाम,
प्रेमपात्र हैं जो सभी के ।

दया, शान्ति, सत्य और प्रेम,
जीवन परमेश्वर के आदेशानुसार,
बड़ा आनन्द देता है मुझे,
हमारे हृदयों का सत्य व्यवहार ।

करना चाहिए हमें परस्पर प्रेम,
यानि हम उसके आदेशों पर चलें,
प्रारम्भ से सुना वही आदेश है यह,
कि प्रेमपूर्वक जीना चाहिए तुम्हें ।

मनुष्य बन कर आया मसीह,
भटकाने वाले इसे नहीं मानते,
टिकते नहीं सच्चे उपदेश पर जो,
वे परमेश्वर को पा नहीं सकते ।

सावधान, मसीह के विरोधियों का,
अपने घर करो ना आदर-सत्कार,
क्योंकि जो करता सत्कार ऐसों का,
उनकी बुराई में होता भागीदार ।

3. यूहन्ना

यूहन्ना की ओर से मित्र गयुस को,
उन्नति कर, स्वास्थ्य का लाभ उठा,
बहुत आनन्दित हुआ मैं जानकर,
सत्य के प्रति तुम्हारी अटूट निष्ठा ।

हम विश्वासियों को भाइयों हेतु,
जो कर सकें वो करना चाहिए,
सत्य के सहकर्मी सिद्ध होने को,
उनकी भरसक मदद करनी चाहिए ।

दियुत्रिफेस चाहता है नेता बनना,
सो दोष लगाता वो मुझ पर,
करता ना बन्धुओं का सत्कार,
आदर देने वालों को करता बाहर ।

हे प्रिय मित्र, हमें बदी का नहीं,
अनुकरण करना चाहिए नेकी का,
जो नेकी करता, परमेश्वर का है,
और उससे अनजाना, जो बदी करता ।

यहूदा

करते रहो संघर्ष उस विश्वास हेतु,
जिसे परमेश्वर ने संतजनों को बख्शा,
पर घुस आए चोरी से समूह में कुछ,
जिन्हें दण्ड हेतु शास्त्रों में लिखा ।

परमेश्वर विहीन हैं ये लोग जो,
उसके अनुग्रह का दुरूपयोग करते,
भोग-विलास का उसे बनाते हैं बहाना,
और प्रभु यीशु को नहीं मानते ।

अनाचारियों और अविश्वासियों को,
जैसे मिला था दण्ड पूर्व में,
वैसे ही ये मनमानी करने वाले,
ख़ुद ही गिरेंगे, अपने खोदे गढ्ढे में ।

अपनी प्राकृतिक इच्छाओं के दास,
उनके भीतर तो आत्मा ही नहीं,
किन्तु मित्रों तुम एक-दूसरे को,
करते रहो अपने विश्वास में धनी ।

बाट जोहते प्रभु यीशु की करुणा की,
पवित्र आत्मा के साथ प्रार्थना करो,
ले जाएगी तुम्हें अनन्त जीवन तक,
परमेश्वर की भक्ति में लीन रहो ।

दया करो उन पर जो डाँवाडोल हैं,
औरों को आगे बढ़ आग से निकालो,
पर सावधान रहो दया दिखाते समय,
उनका स्वभाव ख़ुद ना अपना लो ।

बचा सकता जो तुम्हें गिरने से,
और निर्दोष तुम्हें बता सकता,
यीशु द्वारा उस परमेश्वर की,
बनी रहे महिमा सदा-सर्वदा ।

प्रकाशित वाक्य

यह यीशु मसीह का दैवी संदेश है,
परमेश्वर द्वारा दिया गया इसलिए,
कि जो बातें शीघ्र ही घटने वाली हैं,
अपने दासों को दर्शा दिया जाए उन्हें ।

संकेत द्वारा बताया यूहन्ना को,
और यूहन्ना ने इसे आगे बताया,
धन्य हैं जो इस सन्देश को सुनते,
और जिन्होंने आचरण में अपनाया ।

सात कलीसिया एशिया प्रान्त[77] की,
सन्देश उन्हें यह यूहन्ना ने भेजा,
देखो मेघों के साथ मसीह आ रहा,
हर आँख करेगी दर्शन उसका ।

प्रभु परमेश्वर वह जो है,
जो था और जो है आनेवाला,
जो सर्वशक्तिमान है, कहता है,
मैं ही अल्फ़ा हूँ और मैं ही ओमेगा ।

[77] एशिया प्रान्त-एशिया माइनर में स्थित एक प्रान्त ।

मैं यूहन्ना तुम्हारा भाई हूँ,
पत्तमुस द्वीप से जब निकाला गया,
प्रभु के दिन, आत्मा के वशीभूत,
तुरही की सी ध्वनी से कहा गया ।

कहा गया मुझे, जो तू देखे,
एक पुस्तक में उसे लिखता जा,
और फिर उस लिखे हुए को,
सात कलीसियाओं[78] में दे भिजवा ।

देखा मैंने एक दैदीप्यमान पुरुष को,
जो मुझे 'मनुष्य के पुत्र' जैसा दिखा,
गिर पड़ा, मरा सा, उसके चरणों में मैं,
तब उस दिव्य पुरुष ने मुझसे कहा ।

मैं ही प्रथम हूँ और अंतिम हूँ,
और जो जीवित है वह मैं ही हूँ,
मैं मर गया था किन्तु अब देख,
सदा-सदा के लिए मैं जीवित हूँ ।

बतलाया रहस्य उसके हाथ में,
जो थे सात तारे और सात दीपाधार,
वे तारे सात कलीसियाओं के दूत,
और सात कलीसिया हैं वे दीपाधार ।

फिर बताया क्या-क्या लिखना[79] है,
मुझे उन सात कलीसियाओं को,
इसके बाद मैंने जो दृष्टि उठाई,
देखा स्वर्ग के खुले द्वार को ।

हो उठा मैं आत्मा के वशीभूत,
स्वर्ग का सिंहासन मेरे सामने था,
दिव्य और दैदीप्यमान आभा लिए,
उस सिंहासन पर कोई विराजमान था ।

चार प्राणी और चौबीस प्राचीन[80],
उपस्थित थे वहाँ सिंहासन के साथ,
जल रहीं थी सात लपलपाती मशालें,
जो हैं परमेश्वर की आत्माएँ सात ।

की जा रही थी 'उसकी' स्तुति, उपासना,
सर्वशक्तिशाली परमेश्वर प्रभु पवित्र है,
जो था, जो है और जो आनेवाला है,
परमेश्वर सदा सर्वदा और सर्वत्र है ।

हे हमारे प्रभु और हमारे परमेश्वर,
तू ही मालिक है सभी गुणों का,
समस्त महिमा, आदर और शक्ति,
तू ही सुयोग्य है उन्हें पाने का ।

---

[78] सात कलीसिया-ये हैं: इफिसुस, स्मुरना, पिरगुमन, थुआतीरा, सरदीस, फिलादेलफिया और लौदीकिया ।

[79] क्या-क्या लिखना है-ये वो बातें हैं जो घट चुकी या घटने वाली हैं और इस पुस्तक में यथास्थान वर्णित हैं । अत: उन्हें यहाँ पुन: नहीं लिखा जा रहा ।

[80] चौबीस प्राचीन-कदाचित उन चौबीस प्राचीन में बारह वे पुरुष थे जो परमेश्वर के संतजनों के महान शीर्षस्थ थे । हो सकता है ये यहूदियों के बारह परिवार समूहों के मुखिया हों तथा शेष बारह यीशु के प्रेरित हों ।

क्योंकि तूने ही अपनी इच्छा से,
रचना करी है सभी वस्तुओं की,
तेरी ही इच्छा से उनका अस्तित्व है,
तेरी ही इच्छा से हुई सृष्टि उनकी ।

फिर उस सिंहासनारूढ़ के हाथ में,
देखा सात मुहर लगा एक चर्मपत्र,
दोनों ओर लिखावट थी उस पर,
जिसे खोलने में नहीं कोई समर्थ ।

फिर सुना यहूदा के वंश का सिंह,
जो दाऊद का वंशज है, हुआ विजयी,
सातों मुहरों को तोड़, उस लपेटे हुए,
चर्मपत्र को पढ़ने में है समर्थ वही ।

फिर मैंने देखा एक मेमना ऐसा,
मानो उसकी बलि चढ़ाई गयी हो,
सात सींग, सात आँखे थी उसकी,
परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं जो ।

लिया उसने उस चर्मपत्र को तो उसे,
किया दण्डवत प्राणी और प्राचीनों ने,
देखा ब्रह्माण्ड के हर प्राणी को गाते,
सिंहासनारूढ़ और मेमने के सामने ।

खोलने लगा मुहरें वो मेमना,
खोला एक-एक कर सातों को,
जब उसने पहली चार मुहर तोड़ीं,
देखा आते एक-एक घोड़े को ।

पहले पर एक धनुषधारी सवार था,
पहनाया गया विजय मुकुट उसको,
दूजे पर सवार को तलवार दी गयी,
धरती पर उपद्रव और उकसाने को ।

तीजे सवार के हाथ में थी तराज़ू,
मजदूरी के बदले अल्प खाने को,
चौथे सवार का नाम था मृत्यु,
युद्ध, अकाल आदि से मारे वो ।

पाँचवी दफा उन आत्माओं को देखा,
आस्था के कारण जिन्हें मरवाया गया,
न्याय हेतु करनी होगी और प्रतीक्षा,
ताकि पूरी हो अत्याचारियों की संख्या ।

छठी मुहर तोड़ने पर देखा मैंने,
धरती डोली और अम्बर काँपा,
सिंहासनारूढ़ और मेमने के क्रोध का,
वह भयंकर दिन आ पहुँचा ।

देखी एक स्वर्गदूत के हाथों में,
परमेश्वर द्वारा दी गयी एक मुहर,
उसके सेवकों को बचाने के लिए,
लगनी थी उनके माथे पर मुहर ।

फिर जिन पर मुहर लगाई गयी थी,
वे लोग एक लाख चवालीस हजार थे,
इस्राएल के बारह परिवार समूहों से,
वे लोग बारह-बारह हजार थे ।

तब एक विशाल भीड़ को देखा,
आए जो कठोर यातनाएँ झेल कर,
स्वच्छ हो गए मेमने के लहू से,
अब रक्षा करेगा जिनकी परमेश्वर ।

फिर मेमने ने जब सातवीं मुहर तोड़ी,
सात स्वर्गदूत आ गए तुरही ले कर,
एक और स्वर्गदूत ने फेंकी जो आग,
हुआ गर्जन, तर्जन, भूकम्प धरती पर ।

फिर सातों स्वर्गदूत लगे तुरही फूँकने,
तरह-तरह के उत्पात हुए धरती पर,
फिर भी मूर्तियों की पूजा ना छोड़ी,
लगे रहे लोग बुरे काम करने पर ।

फिर एक और स्वर्गदूत देखा मैंने,
जिसके हाथ में थी एक खुली पौथी,
कहा गया, लिख मत छिपा ले इसे,
और कहा कि तू खा जा यह पौथी ।

उस स्वर्गदूत के हाथ से पौथी ले,
उस पौथी को खा लिया मैंने,
मुख में तो लगी शहद सी मीठी,
पर पेट कड़वा कर दिया उसने ।

तब वह स्वर्गदूत मुझसे बोला,
तुझे फिर भविष्यवाणी करनी होगी,
बहुत से लोगों, राष्ट्रों, भाषाओं,
और राजाओं के बारे में जो होगी ।

फिर मन्दिर की नाप जोख के लिए,
मुझे एक सरकंडा दिया गया,
पर कहा बाहरी आँगन रहने दे,
अधर्मियों को वो दिया गया ।

फिर बताया दो साक्षियों के बारे में,
खुली छूट दे दी जाएगी जिन्हें,
फूट पड़ती है उनके मुख से ज्वाला,
यदि कोई हानि पहुँचाता है उन्हें ।

उनके साक्षी दे चुकने के बाद,
महागर्त से पशु बाहर निकलेगा,
आक्रमण करेगा वह उन पर,
और उन्हें हराकर मार डालेगा ।

फिर सातवें स्वर्गदूत ने फूँकी तुरही,
तो तेज आवाजों ने किया उद्घोषण,
अब प्रभु और मसीह का राज है,
अब करेगा वो युगों-युगों सुशासन ।

फिर प्राचीनों ने परमेश्वर से कहा,
प्रतिफल देने का समय आ गया,
और जो धरती को मिटा रहे,
उनके न्याय का भी समय आ गया ।

स्वर्ग में परमेश्वर के मन्दिर में,
फिर दिखाई दी वाचा की वह पेटी,
बिजली चमकी, चकाचौंध हो गयी,
भूकम्प और साथ में ओलावृष्टि ।

फिर देखी एक महिमामयी स्त्री,
जिसे प्रसव होने ही वाला था,
तभी एक विशालकाय अजगर वहाँ,
बच्चे को निगलने आ खड़ा हुआ ।

उसने एक पुत्र को जन्मा जिसे,
परमेश्वर के सामने ले जाया गया,
भाग गयी वह स्त्री निर्जन वन में,
जो उसी के लिए तैयार किया गया ।

स्वर्ग में मीकाईल और उसके दूतों ने,
अजगर को हरा धरती पर फेंका,
हाँ, यह वही पुराना महानाग है,
दानव या शैतान नाम है जिसका ।

फिर ऊँचे स्वर में यह सुना मैंने,
यह है परमेश्वर की विजय की घड़ी,
प्रकट की अपनी शक्ति और संप्रभुता,
उसके मसीह ने दर्शायी अपनी शक्ति ।

लांछित किये जिसने हमारे बंधु,
नीचे धकेल दिया गया है उसको,
मेमने के बलिदान के लहू से और,
उसकी साक्षी से हरा दिया उसको ।

हे स्वर्गों और स्वर्गों के निवासियों,
तुम्हारे लिए है यह घड़ी ख़ुशी की,
किन्तु हाय धरती और सागर,
तुम्हारे लिए है यह बात बुरी ।

पीछा किया अजगर ने स्त्री का,
पर स्त्री को पंख दे दिए गये,
ताकि वह उस वन को उड़ जाए,
जो तैयार किया था उसके लिए ।

एक जल धारा प्रवाहित की अजगर ने,
ताकि प्राण ले ले उस स्त्री के वो,
लेकिन धरती ने अपना मुख खोल,
निगल लिया उस जल धारा को ।

तब स्त्री और उसके वंशजों के साथ,
जो परमेश्वर का आदेश मानते,
निकल पड़ा वो करने को युद्ध,
जा खड़ा हुआ सागर के किनारे ।

फिर मैंने सागर से बाहर आते,
एक विचित्र पशु को देखा,
सात सिर थे उस पशु के,
जिन पर मैंने दस सींगों को देखा ।

अपनी शक्ति और सिंहासन,
उस अजगर ने उसे दे दिया,
पूजने लगे लोग उन दोनों को,
उनकी शक्ति ने भ्रमित कर दिया ।

अधिकार मिला बयालीस महीनों का,
कि अपनी शक्ति का उपयोग कर सके,
अहंकार पूर्ण और निंदा करने की भी,
अनुमति दे दी गयी थी उसे ।

संतजनों को हराएगा वो युद्ध में,
और वे लोग उसकी करेंगे उपासना,
जिनका नाम जीवन की पुस्तक में,
आरम्भ से ही नहीं लिखा गया ।

जिसकी नियति बंदी होना, वो होगा,
असि से मारेगा वो असि से मरेगा,
यदि किसी के कान हैं तो सुने,
जो जैसा करेगा वो वैसा ही भरेगा ।

विश्वास, धैर्य और सहने की,
इसलिए होती संतों से अपेक्षा,
परमेश्वर का न्याय निश्चित है,
बस समय की थोड़ी प्रतीक्षा ।

उसके बाद धरती से निकलते,
मैंने एक दूसरे पशु को देखा,
मेमने जैसे सींग थे उसके,
और महानाग सा था बोलता ।

उसे भी वो सब अधिकार मिले,
बड़े-बड़े चमत्कार किए उसने,
पहले पशु की मूर्ती बनवाकर,
पूजें उसे लोग कहा उसने ।

फिर मैंने देखा कि मेरे सामने,
सिय्योन पर्वत पर खड़ा मेमना,
144000 लोग जिनके माथे पर,
उनका और पिता का नाम खुदा ।

उच्च स्वर में गा रहे थे वे गीत,
सिंहासन, प्राणी, प्राचीनों के सामने,
फिरौती दे छुड़ाए गए बन्धन से,
और कोई दोष नहीं था उनमें ।

फिर देखा एक स्वर्गदूत को कहते,
करो परमेश्वर की स्तुति और उपासना,
दूसरे स्वर्गदूत ने बाबुल के लिए कहा,
पतन हो चुका उस महान नगरी का ।

फिर एक तीसरा स्वर्गदूत आकर बोला,
उस पशु या उसकी मूर्ती के उपासक,
परमेश्वर की क्रोध की मदिरा पीयेंगे,
वे और उसकी छाप के धारक ।

युग-युगान्तर तक ऐसे लोगों को,
दी जाएँगी यातनाएँ तरह-तरह की,
चैन कभी भी ना पाएँगे वो,
पाएँगे सज़ा वो अपने किए की ।

फिर एक आकाशवाणी को मैंने,
'इसे लिख', मुझसे यह कहते सुना,
'अब से आगे वही धन्य होगा',
जो प्रभु में स्थित हो कर मरा ।

फिर सफेद बादल पर देखा मैंने,
एक व्यक्ति 'मनुष्य के पुत्र' जैसा,
स्वर्ण मुकुट उसके माथे पर था,
और हाथ में एक तेज हँसिया ।

एक स्वर्गदूत के कहने पर उसने,
धरती की पकी फसल को काटा,
फिर एक स्वर्गदूत ने धरती से,
पके अंगूरों के गुच्छों को उतारा ।

परमेश्वर की क्रोध की धानी में,
उन अंगूरों का रस डाला गया,
बह निकला ढेर सा लहू धानी से,
और दूर-दूर तक फ़ैल गया ।

फिर मैंने सात स्वर्गदूतों को देखा,
सात अंतिम महाविनाश लिए हुए,
खोला गया तब स्वर्ग का मन्दिर,
बाहर निकले वे कटोरे लिए हुए ।

परमेश्वर के प्रकोप से भरे वे कटोरे,
कहा, जा कर उड़ेल दो धरती पर,
एक-एक कर उड़ेले गए वे कटोरे,
उपरोक्त वर्णित अत्याचारियों पर ।

फिर एक दूत ने कहा आ और देख,
दण्ड, नदी किनारे बैठी उस वेश्या का,
किया व्याभिचार राजाओं ने उससे,
प्रजा ने पिया उसका प्याला मदिरा का ।

ले जाया गया बीहड़ वन में जहाँ,
पशु पर बैठे एक स्त्री को देखा,
हाथ में बुराइयों से भरा कटोरा,
संतों का लहू पी मतवाली देखा ।

फिर दूत ने मुझे मतलब समझाया,
पशु के सात सिर और दस सींगों का,
सात सिर प्रतीक हैं सात पर्वतों के,
जिन पर आसन है उस स्त्री का ।

यह पशु पहले जीवित था अब नहीं,
फिर भी निकलने वाला है पाताल से,
यही वह बिन्दू है जहाँ पर चाहिए,
सोचना अपनी विवेकशील बुद्धि से ।

सात सिर प्रतीक सात राजाओं के भी,
जिनमें पहले पाँच का पतन हो चुका,
एक अभी भी राज्य कर रहा है,
और एक का अभी पदार्पण ना हुआ ।

वह पशु स्वयं आठवाँ राजा है,
निश्चित है जिसका विनाश भी,
वे दस सींग अल्पकालीन राजा हैं,
जो सौंप देंगे अपना वर्चस्व उसे ही ।

करेंगे युद्ध वे मेमने के विरुद्ध,
जो हरा देगा युद्ध में उन्हें,
राजाओं का राजा, प्रभुओं का प्रभु,
बनाया मेमने को परमेश्वर ने ।

घृणा करेगे वे दस सींग और पशु,
उस स्त्री से जो तुमने देखी थी,
वह स्त्री प्रतीक है उस महानगरी की,
जो राजाओं पर शासन करती थी ।

फिर एक स्वर्गदूत ने की घोषणा,
बाबुल की नगरी के विनाश की,
बन गयी जो दुष्टों का बसेरा,
सबको मदिरा पिलायी व्याभिचार की ।

कहा, कितनी वैभवशाली थी नगरी,
पर बस घड़ी भर में नष्ट हो गयी,
जैसा दण्ड उसने संतों को दिया था,
प्रभु ने दण्ड दिया उसे ठीक वैसा ही ।

फिर सुना परमेश्वर का स्तुतिगान,
'हल्लिलुय्याह', जय हो उसकी सदा,
गा रहे थे वे समवेत स्वर में,
सर्वशक्तिमान परमेश्वर राज कर रहा ।

सो आओ, खुश हो आनन्द मनाएँ,
मेमने के ब्याह का समय आ गया,
फिर कहने लगा, लिखो धन्य हैं,
जिन्हें उस विवाह में निमंत्रण मिला ।

फिर मैंने स्वर्ग को खुलते देखा,
मेरे सामने एक सफेद घोड़ा था,
न्याय के साथ निर्णय करने वाला,
सच्चा और विश्वसनीय घुड़सवार था ।

परमेश्वर की क्रोध की धानी में,
रस निचोड़ेगा वो अंगूरों का,
राजाओं का राजा, प्रभुओं का प्रभु,
उसके वस्त्र और जाँघ पर लिखा था ।

फिर मैंने पशु और नबी को देखा,
और देखा धरती के राजाओं को.
मारा घुड़सवार और दैवी सेना ने,
उस पशु, राजाओं और झूठे नबी को ।

फिर एक दूत ने पाताल में उतर,
पकड़ लिया उस पुराने महासर्प को,
और एक हजार वर्ष के लिए,
साँकल से बाँध दिया गया उसको ।

धकेल दिया गया वो महागर्त में,
हजार वर्ष बाहर ना वो आ सकेगा,
धोखा ना दे सकेगा वो लोगों को,
फिर थोड़े वक्त वो छोड़ा जाएगा ।

फिर उनकी आत्माओं को देखा,
मारे गए थे जो सत्य के कारण,
वे फिर से जीवित हो उठे और,
हजार वर्ष किया मसीह संग शासन ।

हजार वर्ष पूरे होने पर शैतान,
छोड़ दिया जाएगा बन्दीगृह से,
निकल पड़ेगा बन्दीगृह से छूट वो,
धरती पर के लोगों को छलने ।

छलेगा वह गोग और मगोग को,
उन्हें युद्ध के लिए एकत्र करेगा,
धरती पर फैली सेना के साथ,
संतजनों के डेरे और नगरी घेरेगा ।

पर आग उतर निगल जाएगी उन्हें,
धधकती गंधक में फेंक दिया जाएगा,
जहाँ वह पशु और नबी डाले गए,
सदा के लिए उन्हें तड़पाया जाएगा ।

फिर देखा मृतकों का न्याय होते,
कर्मानुसार न्याय हुआ उन सबका,
जीवन की पुस्तक में नाम नहीं,
उन्हें भी आग में गया धकेला ।

फिर नया स्वर्ग, नई धरती देखी,
येरूशलेम की नई नगरी उतरती,
उस नगरी को ऐसे सजाया गया था,
मानों वो दुल्हन हो नई नवेली ।

फिर सुना परमेश्वर का मन्दिर,
अब मनुष्यों के बीच रहेगा,
वे उसकी प्रजा और वो परमेश्वर,
कोई उनमें से दुखी ना रहेगा ।

फिर उस सिंहासनारूढ़ ने कहा,
मैं ही अल्फा हूँ और ओमेगा,
आदि और अन्त भी मैं ही हूँ,
प्यासों के लिए स्रोत जल का ।

फिर सातों दूतों में से कहा एक ने,
आ दिखाऊँ मेमने की दुल्हन तुझे,
ले गया एक ऊँचे पर्वत पर और,
यरूशलेम का दर्शन कराया मुझे ।

बारह द्‌वार थे उसके परकोटे में,
बारह कुलों के अंकित थे नाम,
बारह नींव थी उस परकोटे की,
बारह प्रेरितों के अंकित थे नाम ।

सोने की छडी से स्वर्गदूत ने,
नगर, द्‌वार और परकोटा नापा,
बसाया गया था वर्गाकार में नगर,
एक समान लम्बा, चौड़ा और ऊँचा ।

रत्नों से बना था नगर का परकोटा,
और शुद्ध सोने से नगर बना था,
बारह द्‌वार बारह मोती से बने थे,
हर द्‌वार एक-एक मोती से बना था ।

कोई मन्दिर ना था नगर में क्योंकि,
परमेश्वर और मेमना ही मन्दिर थे,
दिव्य प्रकाश से आलोकित था नगर,
सूरज और चाँद नहीं चाहिए थे ।

और भी बहुत भव्यता थी नगर में,
जीवनदाता जल की नदी भी थी,
जीवनवृक्ष उगा था दोनों तटों पर,
हर साल बारह फसल उगा करती थी ।

वहाँ कोई अभिशाप ना होगा,
उन दोनों का सिंहासन बना रहेगा,
उनके सेवक उनकी उपासना करेंगे,
सदा-सदा उनका वहाँ शासन रहेगा ।

भविष्यवाणियाँ इस पुस्तक में जो हैं,
कहा, मत रख छिपा कर उन्हें,
क्योंकि ये घटने का समय निकट हैं,
जो जैसा कर रहे वे वैसा करते रहें।

यीशु जो इन बातों का साक्षी है,
कहता है, हाँ मैं शीघ्र आ रहा,
आमीन! हे प्रभु यीशु मसीह आ,
उसका अनुग्रह हो सबके साथ सदा।

आमीन ! आमीन ! आमीन !

....

<u>क़ुरआन सार</u>

(जन जन की भाषा में)

कुरआन सार
'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'
'लेकर तेरा नाम, करें हर काम शुरू,
तू बड़ा मेहरबान, रहमवाला है तू'

1. सूर: फ़ातिह:

सभी गुणों का तू ही ख़जाना,
सब तारीफ़ तेरी ही है,
इस दुनिया में जो कुछ है,
सब बख्शीश तेरी ही है ।

तू बड़ा मेहरबान, रहम वाला,
मालिक तू ही है जग का,
तेरी ही इबादत करते हम,
सही राह तू हमें दिखा ।

चलें नेक लोगों की राहों पर,
ना जिन पर बदबख्त चलें,
हो तेरी रहमत हम पर,
तेरी ही राह पर चले-चलें ।

2. सूर: बक़र:

पवित्र कलाम खुदा का यह,
ईमानवालों को राह दिखाता,
लाता जो इस पर यकीन,
अधिकारी वह निजात पाने का ।

जिनका ईमान ना हो स्थिर,
उनको हिदायत है बेमानी,
ख़ुद को ही धोखा देते वो,
करते घमंड, पाखंड, नादानी ।

उसने ही जमीं आसमाँ बनाया,
जल बरसा धन-धान्य उगाया,
वो ही सबका सृष्टिकर्ता,
उसकी इबादत नूर का साया ।

ईमान और नेक आमालवालों को,
दे दो खुशखबरी जन्नत की,
काफ़िर और गुमराह हैं जो,
वो राह तकेंगे दोज़ख़ की ।

कैसे नकार सकते तुम उसको,
जिसने बख़्शी तुमको जान,
वही मारता वही जिलाता,
फिर लौटोगे उसके स्थान ।

आदम-हव्वा को रचा उसने ही,
अपने रूप में उनको ढाला,
कहा, फ़रिश्तों को सज्दा करें,
पर काफिर शैतान ना माना ।

जन्नत में बसे आदम-हव्वा को,
वर्जित था एक पेड़ का फल,
बहलाया-फुसलाया शैतान ने उनको,
हुक्म हुआ जाओ यहाँ से निकल ।

कहती यह तौरात को सच्चा,
यह किताब है यकीने ईमान,
सच्ची इसकी सभी आयतें,
देतीं सबको सच्चा ज्ञान ।

नमाज़ पढ़ना, जकात देना,
फ़र्ज़ बन्दगी में साथ देना,
शुक्रिया हर हाल में उसका,
क़ियामत के दिन से डरना ।

उसने ही मूसा को बचाया,
दरिया से उन्हें राह दिलाई,
पत्थर से चश्मा बह निकला,
कौम को उनकी निजात दिलाई ।

किसी भी कौम मजहब के हों,
होगा भला नेक लोगों का,
निकल जाते जो हद से बाहर,
होता बुरा अन्त में उनका ।

नहीं जानते कुछ लोग सच्चाई,
लेते वो गुमान से काम,
अपनी मनमर्जी से कुछ लोग,
लिखते कुछ भी ख़ुदा के नाम ।

बुरे काम और गुनाहगारों को,
अन्त में दोज़ख़ होगा नसीब,
नेक काम और ईमानवालों को,
मिलेगी भलाई, जन्नत होगी करीब ।

बख़्शी किताब मूसा को उसी ने,
और भेजे नबी कई उनके बाद,
ईसा को बख़्शी खुली निशानियाँ,
मिला जिब्रील से मदद का हाथ ।

जिनको तुम्हारा जी नहीं चाहता,
झुठलाते तुम नबियों की बात,
कुछ को करते रहे कत्ल,
कुछ की मानी नहीं तुमने बात ।

काफ़िरों पर खुदा की लानत,
ग़जब उन पर ख़ुदा का अज़ाब,
नबियों और ख़ुदा के शत्रु पर,
निश्चित पड़ेगी ख़ुदा की गाज ।

क़ादिर है ख़ुदा हर बात पर,
जमीं और आसमानों का बादशाह,
कोई नहीं उसके सिवा सहायक,
सब पर रहती उसकी निगाह ।

पूरब पश्चिम सब उसका है,
मौजूद हर तरफ़ उसकी जात,
वह बा-खबर वुसअत वाला,
सबका मालिक सबसे पाक ।

ख़ुदा ही सबका सृष्टिकर्ता,
जो कुछ है सब उसका है,
जब जिसकी करता वह इच्छा,
फ़रमाना काफी बस उसका है ।

कहो उसकी हिदायत ही सच्ची,
अच्छा उसकी राह पे चलना,
कोई ख़ुश हो या नाख़ुश हो,
ईमान का दामन थामे रखना ।

खरे उतरे आज़माइश में इब्राहीम,
ख़ुदा ने उनको पेशवा बनाया,
कहा ज़ालिम ना होंगे हकदार,
नेकों पर होगा रहम का साया ।

खाना-ए-काबा किया मुकर्रर,
अम्न को पाने का स्थान,
और जहाँ खड़े हुए ईब्राहीम,
उसे नमाज़ पढ़ने का स्थान ।

हुक्म ख़ुदा का हुआ उन्हें,
रखो इस घर को पाक-साफ़,
ईमान वालों को होगी बरकत,
काफ़िरों को आख़िर में अज़ाब ।

दीने ईब्राहीम है बस एक ख़ुदा,
पसन्द उसको है पक्का ईमान,
फ़र्क नहीं करता वो नबियों में,
हिदायत है जिनकी सच्चा ईमान ।

मिलेगा सब को आमालों का बदला,
फ़र्ज़ है करना उसकी ही इबादत,
जिसे चाहता वो सच्ची राह दिखाता,
हद में रहना देता है राहत ।

हुक्म दिया काबा की तरफ़,
घूम कर पढ़ना हक़ है नमाज़,
जहाँ भी हो इबादत के वक़्त,
उधर मुँह फेर कर पढ़ना नमाज़ ।

करी मुकर्रर इबादत के लिए,
हर फ़िर्के की एक दिशा,
कण-कण की है उसको ख़बर,
उसे याद रखो, करो शुक्रिया ।

लो मदद सब्र और नमाज़ से,
ख़ुदा सब्र करने वालों के साथ,
कद्र नेक आमाल वालों की करता,
नाफ़रमानों को लानत और अज़ाब ।

जमीं और आसमाँ बनाने में,
दिन-रात का चक्र चलाने में,
छिपी हैं उसकी ढ़ेरों निशानियाँ,
मेंह बरसाने, फसल उगाने में ।

नहीं है कोई उसका शरीक,
ताकत सब ख़ुदा ही को है,
इस पर यकीन नहीं जिनको,
दोज़ख़ का अज़ाब उन्हीं को है ।

उचित है खाना हलाल चीजों का,
चलों ना शैतान के कदमों पर,
छोड़ों बातें जो ठीक ना हों,
शुक्रिया करो उसकी नेमतों पर ।

रखो ख़ुदा पर सच्चा भरोसा,
फ़रिश्तों, नबियों, किताब पर ईमान,
करो यथायोग्य सबकी मदद,
भागो ना छोड़ कभी जंग का मैदान ।

जुल्म करने वालों से निपटना,
बेहतर है लेकिन करना माफ़,
गुनहगार को यदि हो पछतावा,
वारिस को दे पूरा इंसाफ़ ।

फ़र्ज़ है तुम पर वसीयत करना,
रिश्तेदारों को दस्तूर के माफ़िक,
ना बदलो पर किसी की वसीयत,
प्रयास सुलह का करना वाजिब ।

फ़र्ज़ है रोजे तुम पर लोगों,
ताकि आ जाए तुम को सलीका,
रमजान के महीने उतरा कुरआन,
हिदायतें सिखाती जीने का तरीका ।

ऐ पैगम्बर, गर पूछे कोई,
कहो कि हूँ मैं तुम्हारे पास,
सुनता हूँ दीन-हीनों की दुआ,
ना छोड़े कोई मेरी आस ।

जायज़ है तुम पर गृहस्थ जीवन,
लेकिन उसमें भी संयम रखो,
मारो ना माल तुम औरों का,
ना औरों को तुम लालच दो ।

पूछते जो लोग तुम से,
नया चाँद क्यों घटता-बढ़ता,
कह दो यह ख़ुदा की कुदरत,
वक़्त मालूम करने का ज़रिया ।

लड़ते हैं तुम से जो लोग,
राहे ख़ुदा में लड़ो उन से,
उचित नहीं पर ज्यादती करना,
ख़ुश नहीं होता ख़ुदा इससे ।

दीन से करना गुमराह,
भारी है सभी गुनाहों पर,
जैसे को तैसा वाजिब है,
रहम ख़ुदा का दीन पर ।

हज की नीयत जो कर ले,
बरते संयम आचरण में अपने,
करे उसके हुक्म का पालन,
ज़िक्रे ख़ुदा ज़ुबाँ पर अपने ।

बाहर-भीतर होता अन्तर जिनमें,
ख़ुदा को पसन्द नहीं वो लोग,
देते जान जो नेकी में,
रहम ख़ुदा का पाते वो लोग ।

चाहत जिनको ऐशों-आराम की,
मिलती उनको धन-दौलत,
जिनको चाहत परवरदिगार की,
ख़ुश होंगे वो वक्ते रुख़सत ।

एक ही था मज़हब सब का,
फिर अल्प-ज्ञान से बदले मत,
रह दिखाने आए पैगम्बर,
उतरी किताबें मिली हिदायत ।

ख़र्च ख़ुदा की राह में अच्छा,
जिसका हक़ हो दर्जा-ब-दर्जा,
उसको खबर है पल-पल की,
रखता नहीं वो किसी का क़र्जा ।

गुनाह दीन वालों को बहकाना,
हक़ को छोड़ काफ़िर हो जाना,
दोनों जहाँ हो जाते बरबाद,
मिलता उन्हें दोज़ख़ में ठिकाना ।

जिनका ईमान ना हो पक्का,
हों उनमें कितने ही गुण,
बेहतर उनसे ईमां वाले,
चाहे उनमें कुछ हों अवगुण ।

बेकार है झूठी कसमें खाना,
जो सतही हो वो बात ही क्या,
नफ़ा ना देवे जो औरों को,
उस बात की कुछ औकात है क्या ?

रखेंगे ना ताल्लुक, जो खा लें कसम,
करें इन्तिजार वो महीने चार,
ख़ुदा मेहरबान है बख्शने वाला,
जो करते उस पर पुन: विचार ।

छिपाए ना बीबी, जो हो हामिल:,
उनके लिए बेहतर सुलह करना,
औरत का भी वैसा ही हक़,
होता हक़ जैसा मर्दों का ।

दो बार तलाक़ कहने के बाद,
क़ायम रखो निकाह या छोड़ो साथ,
जायज़ नहीं करना दख़ल मह्र में,
अच्छी नहीं हद से बाहर बात ।

तलाक़ के बाद हलाल ना बीबी,
करे ना जब तक दूसरा निकाह,
जो दूसरा भी दे देवे तलाक़,
जायज़ फिर उसे पहले से निकाह ।

इद्‌दत पूरी होने के बाद,
रोको ना निकाह दूसरे शौहर से,
नसीहत है यह यकीन वालों को,
वाक़िफ़ है ख़ुदा सब ख़बरों से ।

दूध पिलाएँ दो बरस माताएँ,
पाएँ खाना, कपड़ा बा-दस्तूर,
हक़ ना किसी का मारा जाए,
पाए ना सज़ा कोई बेकसूर ।

शौहर यदि गुजर जाए,
रुको चार महीने दस दिन,
दूसरा निकाह फिर जायज़ है,
इद्‌दत पूरी होने पर लेकिन ।

नमाज़ अदा करना है फ़र्ज़,
हाज़िर होना अदब के साथ,
जैसे हो जिस हाल में हो,
करो अपने ख़ुदा को याद ।

करता मेहरबानियाँ वो सब पर,
पर शुक्र नहीं करते सब लोग,
जानता सब वो, सब सुनता है,
हुक्म से उसके जीते-मरते लोग ।

वो ही सबको रोजी देता,
कम देता चाहे ज्यादा देता,
राह में उसकी करता जो ख़र्चा,
कई गुणा उसको वापस देता ।

वही हराता, वही जिताता,
जिसको चाहे वह यश देता,
वक़्त-वक़्त पर भेजता पैगम्बर,
सही राह भी वही दिखाता ।

आयतें ये ख़ुदा की सच्ची,
ऐ मुहम्मद, तुम हो पैगम्बर,
कुछ से उसने की बातें,
दी कुछ को फ़ज़ीलत औरों पर ।

एक वही इबादत के लायक,
सर्वश्रेष्ठ, शाश्वत, सबका मालिक,
सब उसकी मर्जी से चलता,
सब पर उसको क़ाबू हासिल ।

उसने की हिदायतें ज़ाहिर,
बच सको ताकि तुम गुमराही से,
जो उस पर लाते ईमान,
बचते औरों की इबादत से ।

सब सुनता सब जानता वो,
कर देता वो सबको पुरनूर,
जीवन-मृत्यु खेल उसी का,
हर हिक्मत से वो भरपूर ।

जो औरों की करते सेवा,
दिल से अपने फ़र्ज़ मान के,
पाते कई गुणा बदला उसका,
कमी नहीं भण्डार में उसके ।

पवित्र और बेहतर वस्तुएँ,
औरों की सेवा में खर्च करो,
मंजूर उसे खैरात ज़ाहिर में,
बेहतर खैरात यदि गुप्त करो ।

मत लो सूद किसी से तुम,
जो लेंगे सूद, दोज़ख़ जाएँगे,
बरकत नहीं लेने में सूद,
जो करते खैरात बरकत पाएँगे ।

वाजिब है असल का वापस लेना,
ना इसमें नुक्सान किसी का कुछ,
गर क़र्ज़दार तंगदस्त हो तो,
कुछ मोहलत उसको दे दो तुम ।

बेहतर इस से भी यह होगा,
गर कर दो उसका क़र्ज़ा माफ़,
एक दिन तुम जाओगे लौटकर,
पाओगे उस से तुम इंसाफ़ ।

जब लो क़र्ज़ा लिखवाकर लो,
दो मर्दों को करो गवाह,
गर दो मर्द ना हों हाज़िर,
एक मर्द, दो औरत करो गवाह ।

लिखने वाला लिखने में,
पूरा-पूरा करे इंसाफ़,
अमानतदार उसे लौटाने में,
भूले भी ना करे इंकार ।

जो किताब नाज़िल हुई,
रखते रसूल उस पर ईमान,
फ़रिश्तों, नबी और किताब पर,
मोमिन सब रखते ईमान ।

नहीं लादता बोझ किसी पर,
वह उसकी हिम्मत से ज्यादा,
फल मिलता बुरा बुराई का,
भले कामों का उम्मीद से ज्यादा ।

3. सूर: आले इम्रान

केवल उसी की करो इबादत,
सर्वश्रेष्ठ है वो, सब पर क़ादिर,
और किताबों की करती तस्दीक,
करी किताब वह तुम पर नाज़िल ।

नहीं छिपा उस से कुछ भी,
ना जमीन ना आसमान में,
वही रंग रूप देता तुम को,
जन्म तुम्हारा होने से पहले ।

करते अर्थ का वो अनर्थ,
जिनके दिल में होता खोट,
जो ईमान पर क़ायम रहते,
करते क़बूल नसीहत वो लोग ।

जो लाते ना उस पर ईमान,
कैसे बच सकते उसके अज़ाब से,
ना औलाद, ना धन-दौलत,
कुछ काम ना आते आख़िर में ।

रखते जो भरोसा उस पर,
करता ख़ुदा उनको आबाद,
जैसे बद्र के मैदान में,
दिखी दोगुना उनकी तादाद ।

दुनिया भर के ऐशो-आराम,
छूट जाएँगे सभी यहाँ,
परहेजगार जन्नत में जाकर,
पाते सभी बख्शीश वहाँ ।

जो मुश्किल में करते सब्र,
सच बोलते, इबादत करते,
गुनाह माफ़ करता वह उनके,
जो उसकी राह चला करते ।

दीन उसको मंजूर इस्लाम,
काम तुम्हारा बस देना पैगाम,
माने ना माने, उनकी मर्जी,
हाथ उसी के उनका अंजाम ।

आयतों को जो नहीं मानते,
करते ना-हक़ क़त्ल नबियों को,
होगा ना उनका कोई सहायक,
अज़ाब दुखदायी मिलेंगे उनको ।

राजा को रंक, रंक को राजा,
जिसे चाहे तू जो कर दे,
सब का मालिक, सब करने वाला,
सब भलाई है हाथ में तेरे ।

दोस्त बनाओ ना काफ़िर को,
करो पैरवी पैगम्बर की,
मानों हुक्म ख़ुदा, रसूल का,
बख्शेगा गुनाह, देगा माफ़ी ।

चुनता वह कुछ लोगों को,
जीवन जीते जो उसके नाम,
उनके घर में होते पैदा,
नबी ख़ुदा के, अहले ईमान ।

चुना है तुमको परवरदिगार ने,
कहा फ़रिश्तों ने मरयम से,
देते हम तुमको खुशखबरी,
जन्मेंगे ईसा मसीह तुम से ।

पूछा मरयम ने होगा कैसे,
मुझको बेटा बिन ब्याहे,
कहा, उसका बस फ़रमाना काफ़ी,
कर दे वह जब जैसा चाहे ।

होगा ख़ुदा का वह ख़ास,
देगा सदुपदेश वह लोगों को,
पैगम्बर बन परवरदिगार का,
सही राह दिखाएगा लोगों को ।

बनी इस्राईल से कहा ईसा ने,
इबादत एक उसी की वाजिब,
लेकिन उन्होंने बात ना मानी,
करने लगे क़त्ल की साज़िश ।

फ़रमाया तब ख़ुदा ने ईसा को,
जो साथ तुम्हारे नफ़ा पाएँगे,
लेकिन जो ईमान ना लाए,
दोनों जहाँ में वो सज़ा पाएँगे ।

आदम की तरह से ईसा की,
मिट्टी से सृष्टि की उसने,
क़ालिब बना कर मिट्टी से,
कहा 'इंसान हो जा' उससे ।

कहा, ऐ मुहम्मद, यकीन करो,
करी असलियत ज़ाहिर तुम पर,
गर कोई फिर भी करे झगड़ा,
तो लानत ख़ुदा की झूठों पर ।

कह दो कि ऐ अहले किताब,
इबादत करो ना ख़ुदा के सिवा,
ना बनाओ शरीक किसी को उसका,
कारसाज ना कोई ख़ुदा के सिवा ।

ना थे यहूदी, ना ईसाई,
सबसे बे-ताल्लुक थे इब्राहीम,
उतरी किताबें उनके बाद,
जन्म ले चुके थे पहले इब्राहीम ।

बस उसकी हिदायत ही सच्ची,
नाजिल यह किताब अनूठी है,
जिसे चाहे रहमत से नवाजे,
उसके ही हाथ बुज़ुर्गी है ।

होता कोई ईमान का पक्का,
कोई करता चोरी अमानत में,
कुछ करते झूठे कसमें-वादे,
पाएँगे अज़ाब वो आखिर में ।

मर्जी से या बेमर्जी से,
हैं सब उसके ताबे में,
जमीं-आसमाँ में जो भी है,
लौटेंगे उसी को आख़िर में ।

वाजिब नहीं फ़र्क नबियों में,
फ़रमाबरदार हैं वो सब उसके,
फिर जाते जो लाकर ईमान,
लानत में वो जकड़े रहते ।

जो चीजें तुमको हों प्यारी,
राह में उसकी ख़र्च करो,
हासिल होगी उसको नेकी,
मन में अपने यकीन करो ।

एक ख़ुदा के हो रहे इब्राहीम,
करो पैरवी उनके दीन की,
मुकर्रर किया इबादत के लिए जो,
वहाँ इबादत करते थे ख़ुदा की ।

जो इस मुबारक घर में आता,
अमन-शांति और बख़्शिशे पाता,
जिसमें सामर्थ्य हज करने की,
हुक्म उसे यह फ़र्ज़ निभाना ।

वाजिब है तुम्हें उससे डरना,
मरो जब तुम तो मुसलमां मरना,
रखो याद हिदायतें उसकी,
और जो की उसने वो मेहरबानियाँ ।

ऐ मोमिनों, तुम हो बेहतर,
करते पैरवी नेक राह की,
अहले किताब गर लाते ईमान,
होती उनकी बहुत बेहतरी ।

कुछ इनमें हैं ईमान पर कायम,
जो आयतें पढ़ते, सज्दा करते,
नेक हैं ये नेकी पर कायम,
रहते हैं ये मेरी नज़र में ।

ना बनाओ राजदार किसी गैर को,
होगा उसका परिणाम ना अच्छा,
जाहिर है दुश्मनी उनकी जुबान से,
कपट सीने में और भी ज्यादा ।

रखना चाहिए ख़ुदा पर भरोसा,
मदद करता वो ईमान वालों की,
जैसे बद्र के मैदान में उसने,
मदद भेज कर जीत दिला दी ।

ख़ुदा से डरते, सूद ना लेते,
रोकते गुस्सा, करते जो रहम,
माँगते अपने गुनाहों की माफ़ी,
करता उन पर ख़ुदा रहम ।

होते रहे पहले भी पैगम्बर,
गुजरे वो भी सख़्त राहों से,
डटे रहे, हिम्मत ना हारी,
हुए सुर्खरू वो दोनों जहाँ में ।

जो करते शिर्क ख़ुदा के साथ,
वो काफ़िर हैं, मत बात सुनो,
केवल मदद ख़ुदा की सच्ची,
आज़माइश में उसकी खरे उतरो ।

जिसकी मौत जहाँ आनी है,
निश्चित है, सब उसके हाथ,
जानता है वो सबके दिल की,
सब पर है उसको अधिकार ।

जीने-मरने का वो मालिक,
जो उसकी राह में मरते हैं,
बेहतर हैं, वो पाते रहमत,
वरना सब यूँ ही मरते हैं ।

कर लो जब ईरादा पक्का,
रखो भरोसा केवल उस पर,
रखता है भरोसा वो सबका,
छोड़ देते जो सब उस पर ।

नामुमकिन है ख़ुदा के पैगम्बर,
करें किसी चीज में भी खिनायत,
जो हों उसकी राजी में रजा,
कर सकते वो कैसे खिनायत ?

किया एहसान मोमिनों पर ख़ुदा ने,
उन्हीं में से एक भेजे पैगम्बर,
सिखाते दानाई, पढ़ाते हैं किताब,
गुमराही से बचाते दयालु पैगम्बर ।

शैतान डराता, ख़ौफ़ दिखलाता,
पर सच्चा मोमिन नहीं डिगता,
मिलती मोहलत जो काफ़िरों को,
कंकड़ से मोती वो बिनता ।

जो कहते दिखलाओ चमत्कार,
लाएँगे ईमान ना बिना उसके,
कह दो पहले भी कितने पैगम्बर,
ना हक़ किए क़त्ल तुमने ।

जाहिर ख़ुदा की क़ुदरत है,
जमीं-आसमाँ, चाँद-सूरज में,
करते हर घड़ी जो याद उसे,
जन्नत पाते वो हर सूरत में ।

4. सूर: निसा

किया है उसने ही पैदा,
तुमको आदम और हव्वा से,
फैला दिया धरती पर सारी,
रखता है नज़र वो तुम पे ।

जितने भी दुनिया में इंसान,
सब आदम-हव्वा की संतान,
अपने हाथों घड़ता सबको,
और फूँकता उनमें वो जान ।

जो जिसका है उसको लौटा दो,
बेइंसाफी है सख़्त गुनाह,
गर डरते हो रह ना सकोगे,
तो जायज़ तुमको चार निकाह ।

नादानों की धन दौलत,
वाजिब नहीं हड़प लो तुम,
करो भरण-पोषण तुम उनका,
ले सकते कुछ ख़िदमत तुम ।

मरने वालों की दौलत में,
औरत, मर्द सबका हिस्सा,
नन्हें बच्चे गर हों वारिस,
मारो ना कभी उनका हिस्सा ।

फ़रमाया इर्शाद ख़ुदा ने,
दौलत में किसका कितना हिस्सा,
लेकिन उसे बांटने से पहले,
अदा करो वसीयत और क़र्जा ।

गर बदकारी कोई करे,
मुकर्रर है उसके लिए सज़ा,
गर नादानी से हो गलती,
करता तौबा क़बूल ख़ुदा ।

मंजूर नहीं उसे जोर-जबरदस्ती,
हो भली तरह रहना-सहना,
जो दे चुके, वापस मत लो,
गर चाहो दूजी के संग रहना ।

जो बीत गया, सो बीत गया,
उचित नहीं अब वो दस्तूर,
कुछ ऐसे रिश्ते हैं जिनमें,
निकाह ख़ुदा को नहीं मंजूर ।

नाहक़ ना खाओ माल किसी का,
जायज़ रजामंदी से तिजारत करना,
ज़ुल्म जो करता औरों पर,
निश्चित है उसे जहन्नम मिलना ।

बख़्शी है ख़ुदा ने मर्दों को,
कुछ बेहतरी औरत पर,
मर्द कमाते, खर्चा करते,
घर का जिम्मा औरत पर ।

गर कोई राह भटक जाए,
समझा कर लाओ भली राह पर,
उचित दण्ड देना जायज़ है,
जो ना समझे जान-बूझकर ।

मियाँ-बीबी में जो हो अनबन,
बेहतर है सुलह करा देना,
बरकत करता उस कोशिश पर,
मकसद जहाँ बात बना देना ।

नहीं करता ख़ुदा पसंद उनको,
बड़बोले, जो करते हों घमंड,
माँ-बाप यतीमों की सेवा,
जो करते, करता ख़ुदा पसंद ।

मंजूर नहीं उसको कंजूसी,
जो भी है सब उसको दिया,
जो करते उसकी राह में ख़र्च,
मिलता कई ज्यादा उनको सिला ।

नहीं उसे पसंद ना-पाकी,
ऐसे में नमाज़ अदा ना करो,
पानी से करो या मिट्टी से,
जैसे हो, ख़ुद को पाक करो ।

नाज़िल ख़ुदा ने की यह किताब,
करती तस्दीक जो पहली की,
करते जो शिर्क ख़ुदा के साथ,
माफ़ी नहीं उसके गुनाहों की ।

बुतों और शैतान की पूजा,
जो करते उन पर है लानत,
बेहतर है सीधी राह पे चलना,
एक ख़ुदा ही इबादत के लायक ।

जब करो फैसला इंसाफ़ करो,
सब कुछ देखता, सुनता है वो,
फ़रमाबरदारी ख़ुदा और रसूल की,
उनकी भी, हुकूमत में हों जो ।

जानता ख़ुदा क्या किसके दिल में,
ना उनकी बातों का ख़्याल करो,
जब तक ना यकीं हो मानेंगे वो,
तब तक ना उनका इंसाफ़ करो ।

जो करते नसीहत का पालन,
मिलता है बड़ा बदला उनको,
सीधी राह भी वो पा जाते,
मिलता नबियों का साथ उनको ।

मोमिनों कमर कस कर निकलो,
जब निकलो उसकी राह में तुम,
धन-दौलत तो कुछ भी नहीं,
जन्नत में भी नफ़ा पाओगे तुम ।

मोमिन लड़ते हैं ख़ुदा के लिए,
बुतों के वास्ते लड़ते काफ़िर,
लड़ो बेबसों के हक़ के लिए,
करो शैतान पर जीत हासिल ।

कुछ कहते क्यों फ़र्ज़ किया,
लड़ना ख़ुदा की राह में, हम पर,
कह दो, मौत तो लाजिम है,
चाहे रहो ना तुम हक़ पर ।

कुछ कहते नफ़ा पहुँचता ख़ुदा से,
और तकलीफें, ऐ मुहम्मद, तुम से,
कह दो, दोनों रंज और राहत,
जो कुछ मिलता, मिलता उससे ।

भेजा गया है तुम को पैगम्बर,
लोगों को हिदायत देने के लिए,
गर माने तुम्हें, ख़ुदा ख़ुश होगा,
ना माने, वो जाने उसके लिए ।

फिर जाते हैं कुछ नसीहत से,
करते मश्विरे तुम्हारे खिलाफ़,
करो ना ख़्याल भरोसा रखो,
ख़ुदा ही काफ़ी है कारसाज़ ।

करते नहीं क्यों गौर कुरआन पर,
भ्रांति नहीं कोई, कलाम ख़ुदा का,
करते पैरवी शैतान की सब,
जो ना होता फ़ज़ल ख़ुदा का ।

सिफ़ारिश करता जो नेक कामों की,
पाता हिस्सा उनके सवाब का,
करता सिफ़ारिश जो बुरी बातों की,
पाता हिस्सा उनके अज़ाब का ।

जब कोई दे दुआ तुम को,
बेहतर उससे दुआ तुम दो,
रखता है वह सबका हिसाब,
सब जमा करेगा क़ियामत को ।

गुमराह और काफ़िर हैं जो,
ना बनाओ उनको साथी अपना,
नेक राह चलने का ईरादा,
गर कर लें, वाजिब सुलह करना ।

जायज़ नहीं किसी मोमिन को,
देना कष्ट अन्य मोमिन को,
निश्चित किया ख़ुदा ने बदला,
जैसे कफ़्फ़ारा, ख़ूँबहा वारिसों को ।

मोमिनों जब घर से निकलो,
छान-बीन कर लिया करो,
जो जानों-माल निछावर करते,
बख़्शी है उसने फ़जीलत उनको ।

बिता देते जो अपनी जिंदगी,
तलब में केवल दुनिया की,
उनसे बेहतर वे जो लगाते,
जान और माल, राह में उसकी ।

गुनाह नहीं सफर में अगर,
पढ़ी जाए कम कर के नमाज़,
और जो हो मैदाने जंग में,
होशियारी से पढ़ी जाए नमाज़ ।

फ़र्ज़ है हालाते अम्न में,
हर मोमिन पर पढ़ना नमाज़,
नियत समय पर पाँच वक़्त,
श्रद्धा सहित अदा करना नमाज़ ।

लोग जो करते हैं दगाबाजी,
और ख़ियानत हम जिंसो की,
उनकी करो ना तरफ़दारी,
ना बहस, ना वकालत उनकी ।

गर हो जाए किसी से गुनाह,
बख्श देता वो जो माफ़ी माँगे,
ख़ुद करता औरों पर मढ़ता,
उस के गुनाह उसी के माथे ।

बख़्शी तुम्हें किताब और दानाई,
और दिया तुम्हें उसने ज्ञान,
उल्टी राह जो जानकर चलता,
क़ियामत को उसे होगा नुक्सान ।

बख्शने वाला वो हर गुनाह,
सिवाय शिर्क गर कोई करता,
सख़्त नुक्सान भुगतेगा वो,
दोस्ती शैतान से जो करता ।

जो जैसे आमाल करता है,
पाता है वो वैसा ही बदला,
ख़ुदा ही है सच्चा मददगार,
हिमायती ना कोई, उसके सिवा ।

यतीम औरतों से निकाह करने की,
देता है इजाज़त ख़ुदा तुम को,
करो इंसाफ़ बेबस, यतीमों से,
देता यह हुक्म, ख़ुदा तुम को ।

अनबन जो हो मियाँ-बीबी में,
बेहतर सुलह गर वो कर लें,
कोई गुनाह नहीं उन पर अगर,
मददगार कोई वो मुकर्रर कर लें ।

चाहे कितनी कोशिश कर लो,
मुश्किल बीबियों में बराबरी करना,
वाजिब नहीं मगर यह भी,
फ़र्क जमीं-आसमाँ जैसा करना ।

जो कुछ जमीं-आसमाँ में है,
सब कुछ उस ख़ुदा का है,
रखता है वो सब पर क़ुदरत,
मारना-जिलाना हक़ उसका है ।

फ़र्ज़ है देना गवाही सच्ची,
क़ायम सदा इंसाफ़ पर रहना,
ख़्वाहिशें नफ़्स ना भटकाए तुम्हें,
जब देना सच्ची शहादत देना ।

ख़ुदा और उसके रसूल पर,
और नाजिल जो करी किताब,
फ़र्ज़ ईमान तुम को लाना,
काफ़िरों के लिए है अज़ाब ।

ख़ुदा की आयतों का मज़ाक,
गर देखो तुम होता कहीं,
वाजिब नहीं वहाँ पर रुकना,
हो सकते तुम भी वैसे ही ।

ख़ुद को धोखा देते पाखण्डी,
ना करते वो याद ख़ुदा को,
अधर में वो लटके रहते हैं,
मिलती ना राह कभी उनको ।

बुरा है किसी की करना बुराई,
पर गुनाह नहीं सच्चाई का कहना,
बेहतर है भलाई का करना बयान,
ख़ुदा को मंजूर उन्हें माफ़ करना ।

वाजिब नहीं कुफ़्र, ख़ुदा, नबियों से,
करना नबियों के बीच में फ़र्क,
मिलता उन्हें नेकियों का बदला,
जो लाते ईमान, करते ना तर्क ।

हुए पैगम्बर तुमसे भी पहले,
कुछ किए बयान, कुछ किए नहीं,
खौफ़े ख़ुदा और पैगाम सुनाते,
ताकि रहे कोई अनजान नहीं ।

निशानी माँगते हैं अहले किताब,
मूसा पर भी ना लाए एतबार,
तोड़े सब अहद, की नाफ़रमानी,
ख़ुदा ने किया उन्हें मर्दूद करार ।

हक़ बात लेकर आए हैं,
पास तुम्हारे ख़ुदा के पैगम्बर,
बेहतर है तुम्हारे लिए यही,
लाओ ईमान तुम उन पर ।

कहते वो क़त्ल कर दिया हमने,
मरयम के बेटे ईसा मसीह को,
ख़ुद को डाले वो भ्रम में,
क़त्ल ना सूली हुई ईसा को ।

ना कहो कुछ सिवा सच्चाई के,
बढ़ो दीन में ना हद से,
ऐ अहले किताब, मरयम के बेटे,
थे वो रसूल, ख़ुदा के भेजे ।

हलाल थीं जो कुछ पाकीजा चीजें,
कर दी गईं यहूदियों पर हराम,
करते थे जुल्म, लेते थे सूद,
बहकाते थे, ना लाने देते ईमान ।

रहते हैं ख़ुदा के बन्दे होकर,
फ़रिश्ते और रसूल सभी,
करते जो घमंड या इंकार,
पाते ना उसका फ़ज़ल कभी ।

लेकिन जो हैं इल्म के पक्के,
लाते ईमान सब किताबों पर,
देते ज़कात, पढ़ते हैं नमाज़,
ख़ुदा की रहमत होगी उन पर ।

नूर का चश्मा, रोशन किताब,
भेजी ख़ुदा ने तुम्हारे पास,
दीन की रस्सी जो थामे रहे,
सीधी राह उसे पाने की आस ।

5. सूर: माइद

पूरा करो इकरार को अपने,
एहराम पहन ना शिकार करो,
वाजिब है नेक कामों में मदद,
जुल्म और गुनाह से बचा करो ।

कुछ चीजें है तुम पर हराम,
पासों से ना किस्मत जाँचा करो,
काफ़िरों से तुम्हारा डरना कैसा,
दीने इस्लाम पर तुम डटे रहो ।

हलाल तुम को सब पाकीजा चीजें,
पाक-बीबियाँ, मह्र देने के बाद,
ना बदकारी ना छिपी दोस्ती,
निश्चित इनका है सख़्त अज़ाब ।

जानता है वो दिल की बातें,
ऐ मोमिनों उस पर यकीन करो,
पाक-साफ़ होकर पढ़ो नमाज़,
उसके एहसानों को याद करो ।

फ़रमाया उसने हूँ साथ तुम्हारे,
बनी इस्राईल से इकरार लिया,
तोड़ दिया जब अहद उन्होंने,
उसने भी मुँह मोड़ लिया ।

बतलाते हैं रसूल खोल कर,
जो बातें तुम रहे छिपाते,
नाज़िल हो चुकी रोशन किताब,
फिर ग़लत रास्ता क्यों अपनाते ?

गर कहते ईसा मसीह ख़ुदा है,
क्या चल सकती कुछ उसके आगे,
हर चीज पर क़ुदरत रखता ख़ुदा,
हर चीज नगण्य है उसके आगे ।

कहा मूसा ने अपनी कौम से,
याद करो उसके एहसान,
रखा भरोसा मूसा का उसने,
जुदा हो गए जो थे नाफ़रमान ।

नाहक़ किसी की जान ले लेना,
क़त्ल है सारी मानवता का,
जो बचाता है जान किसी की,
एहसान वो दुनिया पर करता ।

लड़ते जो ख़ुदा या रसूल से,
या मुल्क में जो करते फ़साद,
उचित दण्ड दुनिया में उनको,
क़ियामत के दिन सख़्त अज़ाब ।

वाजिब है उससे डरा करो,
करो यत्न करीबी पाने का,
जिहाद करो उसकी राह में,
मौका ये कामियाबी पाने का ।

दुनिया की सारी धन-दौलत,
ना काम आएगी क़ियामत के दिन,
कितना ही फिर चाहें काफ़िर,
भुगतेंगे अज़ाब क़ियामत के दिन ।

जो चोरी करे मर्द या औरत,
जायज़ काट देना उनके हाथ,
कर लेते जो तौबा गुनाह से,
कर देता ख़ुदा उनको माफ़ ।

जिनके दिल वो पाक ना करता,
ज़िल्लत और अज़ाब है उनके लिए,
हक़ ना उन्हें हिदायत पाने का,
कीमत ना ईमान की जिनके लिए ।

नाज़िल करी उसने ही किताबें,
मूसा को और ईसा को,
तौरात हो चाहे हो इंजील,
उतरी सही राह दिखाने को ।

करी है इंसाफ़ की तकरीर,
तौरात और दूसरी किताबों में,
जैसे को तैसा वाजिब है,
बेहतर माफ़ी उसकी निगाहों में ।

किए दस्तूर और तरीके मुकर्रर,
उसने हर एक फ़िर्के के लिए,
करे वह जो जिसके लिए जायज़,
नहीं एक शरीअत सबके लिए ।

ताकीद ख़ुदा की करो फ़ैसला,
जैसा उसने नाज़िल फ़रमाया,
ख़्वाहिशों की करो ना पैरवी,
ना कभी तुम जाओ बहकाया ।

हिदायत नहीं ज़ालिमों के लिए,
मोमिनों उनको बनाओ ना दोस्त,
जो पढ़ते नमाज़, देते ज़कात,
और रखते ईमान, वो तुम्हारे दोस्त ।

जो करते हँसी तुम्हारे दीन की,
बेहतर उनको रखो तुम दूर,
लानत, ग़ज़ब ख़ुदा का उन पर,
सीधी राह से हैं वो दूर ।

जो कहते उनका हाथ बँधा है,
बाँधें जाएँगे उनके ही हाथ,
वो रहीम, खुले हाथों वाला,
लानत उन्हें जो नकारते किताब ।

ऐ पैगम्बर, पैगाम ख़ुदा का,
पहुँचा दो सब लोगों को,
कहो, ना पाओगे राह अगर,
क़ायम ना रखोगे किताबों को ।

जो ईमान आख़िरत पर लाते,
और जो करते नेक आमाल,
चाहे जो हो उनका मज़हब,
ना ख़ौफ़ उन्हें, ना होंगे गमनाक ।

हो गए वो अंधे और बहरे,
जो झुठलाते, क़त्ल करते नबियों को,
बेशक काफ़िर हैं वो लोग,
कहते हैं ख़ुदा ईसा मसीह को ।

ईसा मसीह ख़ुद कहा करते थे,
करो इबादत परवरदिगार की,
जो करता शिर्क ख़ुदा के साथ,
उसका ना मददगार कोई कभी ।

ईसा मसीह, मरयम के बेटे,
थे वे रसूल औरों की तरह,
बदलो ना तुम दीन की बातें,
ना हो ख़ुद, ना करो गुमराह ।

जो करते बुराई और नाफ़रमानी,
होकर नाख़ुश ख़ुदा देता अज़ाब,
ईमान जो लाते हक़ बात पर,
पाते बहिश्त, नेक बन्दों के साथ ।

जो हलाल, उसे करो ना हराम,
पकड़ ना यूँ ही क़समों पर,
देना होगा उनको कफ़्फ़ारा,
जो डटें ना पुख्ता क़समों पर ।

ठीक नहीं पासें, शराब और जुआ,
लोगों में दुश्मनी करवाते ये,
नापाक काम ये इन से बचो,
करते तुम्हें दूर नमाज़ से ये ।

अम्न की वजह मुकर्रर फ़रमाया,
इज्जत के घर काबे को,
पट्टे बंधे हुए पशुओं को,
इज्जत के महीनों, क़ुरबानी को ।

पिछली बातों पर अड़े रहना,
ठीक नहीं यह ढंग बदलो,
नाज़िल हो चुकी रोशन किताब,
रूख़ रसूल की तरफ़ कर लो ।

गर हिदायत पर तुम डटे रहो,
बिगाड़ नहीं सकता कोई कुछ भी,
मिलेगा बहुत बड़ा बदला तुमको,
लौट कर जाओगे, ख़ुदा को सभी ।

गर लगे मौत का वक़्त आ गया,
दो मर्द अद्ल वाले करो गवाह,
बदला ना लें शहादत का वो,
झूठ बोलना है एक बड़ा गुनाह ।

जब जमा करेगा नबियों को,
पूछेगा क्या मिला था जवाब,
वो अर्ज करेंगे, हमें मालूम नहीं,
ज़ाहिर तुझ पर ही सब बात ।

तू ने ही सब दानाई बख़्शी,
तू ने ही नाज़िल करीं किताब,
जिब्रील को भी तू ने भेजा,
तू ने ही किए सब चमत्कार ।

पूछेगा ईसा बिन मरयम से,
क्या कहा था तुमने लोगों से,
करो इबादत मेरी, माँ की,
या कहा तुमने कुछ और उन से ?

देंगे जवाब तब ईसा उसको,
क्या मैं ऐसा कह सकता,
तू पाक, दिलों की बात जानता,
कहा ना हुक्म के तेरे सिवा ।

कहा, करो इबादत केवल उसकी,
जो मेरा और तुम्हारा परवरदिगार,
रखता ख़बर वो पल-पल की,
सब पर रखता है वो अख्तियार ।

6. सूर: अन्आम

सब तारीफ़ उसी की वाजिब,
उसने ही जमीं-आसमाँ बनाया,
सूरज, चाँद, सितारे चमकाए,
मिट्टी से इंसा को बनाया ।

जानता सब की सब बातें,
जानता है तुम्हारे आमालों को,
झूठलाते जो हक़ की बातें,
जल्द पाएँगे बुरे अंजामों को ।

क्या नहीं जानते उनसे पहले,
हलाक हो गयीं कितनी कौमें,
जिनके दिल ना लाते ईमां,
ना मानेंगे, कोई कुछ कर ले ।

कह दो नकारने वालों को,
देखो, उनका क्या हुआ अंजाम,
लाते नहीं जो ईमान दीन पर,
भारी होगा उनका नुक्सान ।

ना कोई सहायक उसके सिवा,
जमीं-आसमाँ सब का मालिक,
देता वो सब को रोजी-रोटी,
नहीं किसी से कुछ ख़्वाहिश ।

कह दो ऐ पैगम्बर तुम लाए,
इस्लाम यहाँ सबसे पहले,
उतारा गया है क़ुरआन तुम पर,
आगाह कर दो, इस के जरिए ।

कौन बड़ा उस से ज़ालिम जो,
झुठलाता ख़ुदा और आयतों को,
बेशक निजात ना उनको मिलेगी,
और पाएँगे सख़्त अज़ाब भी वो ।

जो कहते कुछ भी नहीं क़ुरआन,
बस कहानियाँ पहले लोगों की,
दोज़ख़ के किनारे मौका ना मिलेगा,
करें बयान सच्चाई आयतों की ।

जो कहते, है बस यही जिंदगी,
कुछ ना होगा, मरने के बाद,
परवरदिगार के जब होंगे सामने,
कुफ़्र के बदले वो पाएँगे अज़ाब ।

होंगे हाज़िर ख़ुदा के सामने,
जो समझते इस को झूठ,
जिस दिन आ जाएगी क़ियामत,
अफ़सोस करेंगे वो लोग बहुत ।

दुनिया की जिन्दगी खेल मश्गला,
बेहतर है आख़िरत का घर,
बोझा सब अपने आमालों का,
उठाएँगे ख़ुद अपनी पीठ पर ।

क़बूल करते हैं हिदायत वो ही,
होते हैं जिनके दिल जिंदा,
कुछ असर ना होता उन पर,
जिनके दिलों पर पड़ा है पर्दा ।

कह दो कि मैं नहीं कहता,
ख़ुदा के ख़जाने हैं मेरे पास,
ना गैब जानता, ना मैं फ़रिश्ता,
चलता उसके हुक्म की राह ।

करो नसीहत क़ुरआन के जरिए,
उनको जो ख़ौफ़ ख़ुदा का रखते,
निकालो ना उनको पास से अपने,
तलब जो उसकी जात की करते ।

कहा करो 'सलाम अलैकुम',
जब ईमान वालों से मिला करो,
कर देता वो नादानी माफ़,
गर दिल से तौबा किया करो ।

कह दो पैगम्बर मना है मुझको,
ख़ुदा के सिवा अन्य की इबादत,
ना करूँगा तुम्हारी ख़्वाहिशों की पैरवी,
वरना हूँगा ना मैं बा-हिदायत ।

कह दो मैं हूँ रोशन दलील पर,
भेजा है जिसको परवरदिगार ने,
वही तो है दिन-रात का मालिक,
लेगा हिसाब क़ियामत के दिन में ।

वो ही बख़्शता तुमको जिंदगी,
रोजी-रोटी, ऐशो-आराम भी देता,
फिर भी करते उससे तुम शिर्क,
जो निजात तुम्हें तंगी से देता ।

हर चीज पर क़ुदरत है उसको,
है सब उसके अख़्तियार में,
फ़िर्का-फ़िर्का कर तुम्हें लड़वा दे,
या फँसा दे तुम्हें अज़ाब में ।

राह दिखाई हमें सीधी ख़ुदा ने,
कहो, क्यों हम किसी को पुकारें,
हुक्म है उसका हुक्म मानना,
डरें उससे और नमाज़ अदा करें ।

जमीं-आसमाँ किए तदबीर से पैदा,
उसका फरमाना, 'हो जा' बस काफ़ी,
जानता है सब बाहर भीतर वो,
हर चीज पर उसकी है बादशाही ।

याद करो किस तरह ख़ुदा ने,
सही राह दिखाई इब्राहीम को,
इब्राहीम ने तब पूछा पिता से,
क्यों बनाते तुम माबूद बुतों को ?

नहीं है कोई शरीक ख़ुदा का,
पाते सुकुन जो लाते ईमान,
बख़्शी उसने फ़जीलत और नबूवत,
उनको जिनका था पक्का ईमान ।

नाज़िल ख़ुदा ने की मूसा को,
नूर और हिदायत भरी किताब,
मालूम ना था किसी को भी,
उन बातों का फ़रमाया ईर्शाद ।

वैसी ही किताब है यह भी,
करती तस्दीक जो पहली की,
मक्का और उसके आस-पास,
लाएँ इस पर ईमान सभी ।

ज़ालिम है जो झूठ गढ़े,
कहें आयतें अपने मन से,
दुनिया पीछे सब छूट जाएगी,
नहीं बचेंगे वो अज़ाब से ।

निशानियाँ छिपी हैं उसकी,
रोजी-रोटी, जीने-मरने में,
चाँद-सितारे, जंगल-नदियाँ,
क़ुदरत उसकी कण-कण में ।

फ़रमायी है ईर्शाद ख़ुदा ने,
आयतें यूँ बदल-बदल के,
ताकि कहे ना कोई रसूल को,
सीखी हैं आयतें किसी और से ।

ईमान ना लाएँगे कभी मुशिरक,
चाहें उतरें कितनी निशानियाँ,
जान बूझकर भटक रहे वो,
भ्रमित लोग कर रहे नादानियाँ ।

नाज़िल हुई हक़ पर तौरात,
ना कोई वजह उसमें शक की,
सच्चाई और इंसाफ़ में पूरी,
कौन बदल सकता बातें उसकी ।

कुरबान करो तुम जो कुछ भी,
वाजिब है लेना ख़ुदा का नाम,
ना बहको, ख़ुद पर काबू रखो,
जो भी खाओ, लो उसका नाम ।

वो चाहे जिसे रिसालत बख़्शे,
खोल देता है सीना उसका,
शर्तें जो रखते ईमान लाने को,
तंग कर देता सीना उनका ।

रहमत वाला है परवरदिगार,
किताबें भेजी, पैगम्बर भेजे,
ना करता जुल्म किसी पर वो,
ख़ुद ही तुम खाते हो धोखे ।

बख़्शे उसने ही खेती और बाग़,
उस का हक़ भी अदा करो,
बेजा ना उड़ाओ जो तुम्हें मिला,
नहीं यह बात पसंद उसको ।

नापाक ना जो, वो हराम नहीं,
ना वो चीज गुनाह की हो,
वो बड़ा मेहरबान, बख़्श देता है वो,
गर कोई हद से बाहर ना हो ।

करते शिर्क जो अपने से,
पर मर्जी ख़ुदा की बतलाते,
ख़ुद को भ्रम में डाले हैं वो,
अटकल के बस तीर चलाते ।

कहो, ना बनाओ ख़ुदा का शरीक,
माँ-बाप से बदसलूकी ना करो,
ना क़त्ल करो अपनी औलादें,
ना बे-हयाई के तुम काम करो ।

हड़पो ना दौलत यतीमों की,
करो नाप-तौल इंसाफ़ के साथ,
पूरा करो ख़ुदा के अहद को,
हुक्म उस का, यह सच्ची बात ।

नाज़िल की यह किताब उसी ने,
उसने ही उतारी पहले भी किताब,
आ पहुँची उसकी रहमत व हिदायत,
जो झुठलाएंगे, वो पाएँगे अज़ाब ।

ना जो तुम लाओगे यकीन,
करोगे इन्तिजार निशानी का,
होगा ना फायदा, तब तुम को,
जब भुगतोगे दण्ड आमालों का ।

जो करते दीन में फ़िर्केबाजी,
उनसे तुमको कुछ काम नहीं,
जैसा जो करेगा, वैसा ही भरेगा,
होगा किसी पर जुल्म नहीं ।

कह दो, उसने दिखलाया मुझे,
दीने-इब्राहीम का सही रास्ता,
मेरी नमाज़ और मेरी इबादत,
उसके लिए ही जीता-मरता ।

7. सूर: आराफ़

नाज़िल हुई यह किताब इसलिए,
ईमान लाओ और डरो 'उससे',
करो पैरवी इस किताब की,
लें नसीहत लोग इससे ।

हुई तबाह कितनी ही बस्तियाँ,
आया जिन पर उसका अज़ाब,
जो आयतों से करते बेइंसाफ़ी,
देना पड़ता है उनको हिसाब ।

उसने ही पैदा किया इंसा को,
मिट्टी से सूरत-शक्ल बनाई,
कहा फ़रिश्तों से करो सज्दा,
पर इब्लीस ने ना बात निभाई ।

बोला अफ़ज़ल हूँ इंसा से,
यह मिट्टी, मैं बना आग से,
सज़ा मिली घमंड की उसको,
गया निकाला वह जन्नत से ।

मुहलत मिली क़ियामत तक,
बोला करूँगा मैं भी गुमराह,
कहा ख़ुदा ने जाएँगे जहन्नम,
जो लोग चलेंगे तेरी राह ।

कहा ख़ुदा ने आदम-हव्वा से,
रहो-सहो बहिश्त में तुम,
खाओ वो जो मन चाहे,
पर एक फल खाना ना तुम ।

बहकाया शैतान ने उनको,
ललचाये वो, वह फल खाया,
हुआ ग़ज़ब, जन्नत से गिरे,
जमीं पे अपना घर पाया ।

रखता है शैतान निगाहें,
हर वक़्त तुम्हारी कमजोरी पर,
रखता है उनको वह दोस्त,
टिकते नहीं जो ईमान पर ।

करते जो बे-हयाई का काम,
और लेते हैं नाम बुजुर्गों का,
ठीक नहीं ये बातें उनकी,
ना ही ऐसा हुक्म ख़ुदा का ।

जब पढ़ो नमाज़, तन ढ़क लो,
रुख़ क़िब्ले का किया करो,
करो इबादत केवल उसी की,
बस उसी की पुकार करो ।

बख़्शी है जो उसने नेमतें,
उसकी मर्जी, स्वीकार करो,
ईमान वालों को पाकीजा चीजें,
देता है वो, शुक्र करो ।

मुकर्रर है हर फ़िर्के के लिए,
वक़्त मौत का टल नहीं सकता,
बचता वही जो ईमान पर क़ायम,
औरों पर अज़ाब बच नहीं सकता ।

जालिम जो झुठलाते आयतें,
पाएँगे लिखा अपने नसीब का,
मानेंगे बेशक थे वे काफ़िर,
वक़्त आएगा जब निर्णय का ।

ईमान वाले शुक्र अदा करेंगे,
राह दिखाई जन्नत की ख़ुदा ने,
दीवारे-आराफ़ पर जो बैठे कहेंगे,
शामिल ना कीजियो हमें जालिमों में ।

कहेंगे काफ़िरों की सूरत पहचान,
अब ना काम तुम्हें कुछ आया,
ना जमात, ना घमंड तुम्हारा,
ना कोई साथ तुम्हारे आया ।

जलते रहेंगे दोजख़ में काफ़िर,
ना पूछेगा तब कोई उनको,
भूल गए थे जैसे वो दीन,
भूल जाएगा ख़ुदा भी उनको ।

बेशक बनाए परवरदिगार ने,
जमीं-आसमाँ छह दिन में,
दिन और रात का चक्र चलाने,
सूरज-चाँद रचे उसने ।

सब मख़्लूक़ उसी की है,
वो है बड़ा बरकत वाला,
आजिज़ी से जो दुआ माँगते,
वो हाकिम, सब देने वाला ।

नापसन्द उसे जो हद से गुजरें,
नेकों पर वो करता रहम,
ना करो मुल्क में कोई खराबी,
उम्मीद पे उसकी दुनिया क़ायम ।

ख़ुशख़बरी बन पुरवैया चलती,
होती उसके हुक्म से बारिश,
पैदा होते ज्यों फल-फूल,
मुर्दे भी होंगे जिन्दा वापिस ।

नूह को बना पैगम्बर भेजा,
कहा कौम से करो इबादत,
ना कोई माबूद सिवा उसके,
चलती सभी पर उसी की हुकुमत ।

माने ना, जो लोग थे अंधे,
ठहराया उन्होंने उनको गुमराह,
काम उनका था पैगाम पहुँचाना,
कौम की अपने थे वो खैरख्वाह ।

हुए सवार एक कश्ती में,
नूह और उनके कुछ साथी,
झुठलाया था जिन्होंने उनको,
डूब गए वो सब बाकी ।

ऐसे ही कुछ और पैगम्बर,
भेजे ख़ुदा ने औरों को,
माने ना वो उनकी बातें,
ठुकराती रहीं कौमें उनको ।

आद कौम को गए हूद,
ठहराए गए वो झूठे वहाँ,
नष्ट हो गए वो इंकारी,
नाज़िल ख़ुदा का अज़ाब हुआ ।

समूद कौम को गए सालेह,
नहीं माने वो उनकी बातें,
भूचाल ने उनको आ पकड़ा,
टूटे घर, बिछ गयी लाशें ।

लूत भी लाए उसका पैगाम,
कहा, बे-हयाई के छोड़ो काम,
न माने वो लूत की बातें,
बरसे पत्थर, हुआ काम तमाम ।

शुऐब गए कौमें मदयन को,
दिया उनको पैगाम ख़ुदा का,
लूट-खसोट से बाज ना आए,
हुए बर्बाद, भूचाल ने पकड़ा ।

ना और कहीं भेजे पैगम्बर,
कौमें कुछ-कुछ फली-फूलीं,
फिर अज़ाब ने आ पकड़ा,
गुनाहों की उनको सज़ा मिली ।

लगा देता है मुहर ख़ुदा,
जो काफ़िर उनके दिल पर,
करते ना निबाह अहद का,
होते हैं बदकार वो अक्सर ।

फ़िरौन और सरदारों के पास,
मूसा को भेजा लेकर निशानी,
कहा जाने दो उसकी कौम को,
बोला फ़िरौन दिखलाओ निशानी ।

मूसा ने जब दीं निशानियाँ,
बोला फ़िरौन तुम हो जादूगर,
बुलवाए जादूगर मूसा से हारे,
हुआ ऊँचा मूसा का सर ।

फिर भी हुआ फ़िरौन ना राजी,
जुल्म करने की उसने ठानी,
था मददगार ख़ुदा मूसा का,
डुबा दिए दरिया में फ़िरौनी ।

ख़ुशहाल हुए बनी इस्राईल,
वायदा पूरा हुआ ख़ुदा का,
तबाह हो गयी कौम फ़िरौन की,
बोझ हुआ धरती का हल्का ।

पहुँचे जहाँ बनी इस्राईल,
करते थे इबादत लोग बुतों की,
गुमराह हुए बनी इस्राईल,
चाहने लगा माबूद उन्हें भी ।

तलब फ़रमाया मूसा को तूर पर,
चालीस रातों के लिए ख़ुदा ने,
और तौरात उन्हें इनायत फरमाई,
दिखला कर अपनी झलक ख़ुदा ने ।

कहा ख़ुदा ने मूसा को,
तौरात में है सब नसीहत,
तुम्हें और तुम्हारी कौम को,
वाजिब नहीं अब करना ग़फ़लत ।

जब मूसा थे तूर पर्वत पर,
लोगों ने एक माबूद बनाया,
सोने के आभूषण गला कर,
बछड़े का वो माबूद बनाया ।

मूसा और ईमान वालों पर,
बख़्शी ख़ुदा ने अपनी रहमत,
पर जो थे माबूद के क़ायल,
मिली उन्हें दुनिया की जिल्लत ।

करते पैरवी जो नबी-ए-उम्मी की,
लिखी हैं खूबियाँ जिनकी किताबों में,
करते जो नेकी, उनकी मदद करते,
शामिल होंगे मुराद पाने वालों में ।

कह दो ऐ पैगम्बर, लोगों को,
ख़ुदा का भेजा रसूल हूँ मैं,
माबूद नहीं कोई उसके सिवा,
ईमान उस पर ही लाता हूँ मैं ।

वो करता आज़माइश नाफ़रमानों की,
सज़ा मिलती बुरे आमालों की,
बर्बाद ना होता नेकी का बदला,
जो मानते बात किताबों की ।

झुठलाते जो उसकी आयतें,
तर्तीब से वो जाएँगे पकड़े,
मुहलत देता कुछ दिन की,
फिर अज़ाब में जाएँगे जकड़े ।

नहीं जुनून कोई रसूल को,
वो तो बस पैगाम सुनाते,
देगा कौन हिदायत उनको,
सरकशी में जो बहके जाते ।

जो पूछते कब होगी क़ियामत,
कह दो इल्म उसी को है,
ज़ाहिर कर देगा वक़्त आने पर,
सब पर क़ुदरत उसी को है ।

कर लो किनारा जाहिल लोगों से,
हुक्म नेक काम करने का दो,
गर कोई वस्वसा हो पैदा तो,
ख़ुदा से उसकी पनाह माँग लो ।

मोमिनों को रहमत और हिदायत,
देता है क़ुरआन, तवज्जोह दो,
याद करो उसको दिल में,
हुज़ूर में उसके सज्दा करो ।

8. सूर: अन्फ़ाल

पूछते हुक्म ग़नीमत के बारे में,
वह ख़ुदा और रसूल का माल,
आपस में सुलह, ख़ुदा से डरना,
हुक्म मानना, ईमां वालों का काम ।

मोमिन रखते ख़ौफ़ ख़ुदा का,
उन्हें भरोसा सिर्फ ख़ुदा का,
करते ख़र्चा नेक कामों में,
हक़ उनको बख़्शिश पाने का ।

करता वो अपना वादा पूरा,
क़ायम रखता है हक़ को,
वो है ग़ालिब, हिक्मत वाला,
भेजता फ़रिश्ते मदद करने को ।

करते मुख़ालफ़त ख़ुदा रसूल की,
अधिकारी वो सज़ा पाने के,
डटे रहते मोमिन जो जंग में,
अधिकारी वो विजय पाने के ।

फ़र्ज मोमिनों पर हुक्म मानना,
हक़ के लिए दे देना जान,
वो कारसाज़ भर देता दामन,
जो करते उस पर सब क़ुर्बान ।

आयतों को जो कहते कहानियाँ,
लोगों को बस वो बहकाते,
कुछ और नहीं अफ़सोस करेंगे,
जब उसकी वो सज़ा पाएँगे ।

बाज आ जाएँ कुफ़्फ़ार अगर,
मिल सकती है उनको माफ़ी,
गर फिर वो वापिस मुड़कर देखें,
ना रहने दो उनका कुछ बाकी ।

लूट के माल का पाँचवां हिस्सा,
ख़ुदा, रसूल, जरुरतमंदों का,
होकर रहता है वह काम,
जो मंजूर उसे हो करने का ।

डटे रहो काफ़िरों के सामने,
याद ख़ुदा की किया करो,
सब्र करो वो मददगार है,
ख़ौफ़ उसी का किया करो ।

पाते हैं सज़ा आमालों की,
काफ़िर चखते दोज़ख़ का मज़ा,
जो करते गुनाह होते हलाक,
वाजिब है उनको सख़्त सज़ा ।

रहो तैयार तुम हर वक़्त,
दुश्मन पर ख़ौफ़ बना रहे,
कर लो सुलह, गर राजी हों,
शंका फ़रेब की बाकी ना रहे ।

वो ही तुमको ताकत देता,
दिलों में भर देता वो उल्फ़त,
धन-दौलत से ना मिलती,
काफ़ी है तुमको उसकी क़ुदरत ।

ईमान पे क़ायम जो मोमिन,
भारी पड़ता दस काफ़िर पर,
बनो ना तालिब दौलत के,
रखो नज़र तुम आख़िरत पर ।

जो नेकी पर चलना चाहते,
कर देगा उनके वो गुनाह माफ़,
लेकिन दगा है जिनके दिल में,
ऐ नबी, करो उनका इंसाफ़ ।

ईमान लाए, हिजरत की जिसने,
उनके मददगार भी तुम्हारे साथी,
ना रखो कुछ वास्ता उनसे,
ईमान तो लाए, हिजरत बाकी ।

9. सूर: तौबा

अहद था जिन मुशिरकों से,
चार महीने जंग के बाकी,
बेहतर गर तौबा कर लें,
वरना ना रहेगा कुछ बाकी ।

अलबत्ता जिन मुशिरकों ने,
किया ना तुम्हारा कोई कुसूर,
पूरी करो अहद की मुद्दत,
फिर सज़ा दो उन्हें जरूर ।

लेकिन तौबा जो वो कर लें,
दें जकात और नमाज़ पढ़ें,
वाजिब उन्हें पनाह देना,
कलाम जो उसका सुनने लगें ।

कैसे रहें अहद पर क़ायम,
होता जिनके दिल में खोट,
वाजिब है जंग बे-ईमानों से,
तुम्हें ना उनका कोई ख़ौफ़ ।

मुनासिब नहीं मुशिरकों के लिए,
करें ख़ुदा की मस्जिद आबाद,
बेकार इन लोगों के अमल,
जाएँगे दोज़ख़, होंगे बर्बाद ।

देता है ख़ुदा बदला उनको,
ईमान पे जान निसार जो करते,
गर अपने भी करें कुफ़र,
उन्हें छोड़ अलग जो रहते ।

करी तुम्हारी मदद कई बार,
पर गुरूर ना रखता किसी का,
याद करो वादिए हुनैन में,
काम आया बस सहारा उस का ।

दीने हक़ जो क़बूल ना करते,
ना ईमान, ना यकीन आख़िरत पर,
वाजिब जंग उन अहले किताब से,
आएँ ना जब तक सही राह पर ।

कहते हैं उजैर और ईसा को,
यहूद और ईसाई, ख़ुदा के बेटे,
करते थे काफ़िर, ऐसी ही बातें,
रीस में उनकी, ये भी बहके ।

हुक्में ख़ुदा तो बस यही था,
ना करो इबादत ख़ुदा के सिवा,
वो शरीक मुकर्रर करने से पाक,
माबूद ना कोई, उसके सिवा ।

दीने हक़ देकर रसूल को,
उसने ही हिदायत देकर भेजा,
ग़ालिब करें तमाम दीनों पर,
ऐसा ही है, हुक्म ख़ुदा का ।

नाहक खाते माल लोगों का,
करते जमा जो धन-दौलत,
ख़र्च ना करते राहे ख़ुदा में,
उन्हें दुःख देगी धन-दौलत ।

बारह महीनें एक बरस में,
उनमें चार अदब के महीनें,
नाहक़ ना करो इनमें ख़ूँरेजी,
राह दीन के हैं ये महीनें ।

क्या हो गया तुमको मोमिनों,
करते कोताही उसकी राह में,
छोड़ नेमतें तुम आख़िरत की,
ख़ुश हो बैठे क्यों दुनिया में ?

ना निकलोगे गर उसकी राह में,
पैदा कर देगा वह औरों को,
पाओगे तुम तकलीफ़ों का अज़ाब,
हर चीज पर क़ुदरत है उसको ।

ना करोगे मदद, गर रसूल की,
ख़ुदा मददगार उनको काफ़ी,
याद करो सौर का गार,
वहाँ ख़ुदा था उनका साथी ।

जिनके दिल डोलते शक में,
माँगते हैं वो तुम से इजाज़त,
करे जो निछावर तन, मन, धन,
नहीं चाहिए उन्हें कोई इजाज़त ।

गिरफ्तार दिल जिनका शक में,
वफ़ा नहीं वो तुमसे करते,
बुरा लगता है सुकून तुम्हारा,
कष्टों में तुम्हारी ख़ुशी मनाते ।

कह दो, वो ही मालिक है,
कष्टों का और ख़ुशियों का,
उसके ही हाथ में है दोनों,
मोमिनों को उसका ही भरोसा ।

क़बूल ना होता नाफ़रमानों का,
ख़र्चा मर्जी या बेमर्जी से,
बेहतर होता वो ख़ुश रहते,
जो बख़्शा ख़ुदा ने मर्जी से ।

राहे ख़ुदा में सदका करना,
मुकर्रर किया यह हक़ उसने,
देते रसूले ख़ुदा को रंज,
उनको सज़ा तय की उसने ।

जो बुरा काम करने को कहते,
और करते मना नेक काम से,
भुला बैठे वो लोग ख़ुदा को,
भुला दिया उनको भी उसने ।

लानत ख़ुदा की ऐसे लोगों पर,
जलते रहेंगे जहन्नम की आग में,
सबक ना लेंगे पिछले लोगों से,
ख़ुद जिम्मेदार वो नुक्सान के अपने ।

नेक काम करने को कहते,
करते मना बुरे कामों से,
उसके हुक्म का पालन करते,
पाएँगे वो नेमतें उससे ।

करते ख़ुदा से वादा-खिलाफ़ी,
होता उनका बुरा अंजाम,
करते कुफ़र ख़ुदा रसूल से,
पाते ना हिदायत वो नाफ़रमान ।

जंगे तबूक में पीछे रह कर,
ख़ुश थे वो जान बचाने में,
चाहे अब वो कुछ हँस लें,
रोना पड़ेगा उन्हें अन्त में ।

फिर उनको लेना ना साथ,
वो शामिल हैं नाफ़रमानों में,
जब उनको आ जाए मौत,
शामिल ना होना जनाजे में ।

जब सूर: कोई नाज़िल होती है,
साथ रसूल का दो जंग में,
कुछ दौलतमंद इजाज़त माँगते,
बैठे रहें वो अपने घर में ।

लेकिन ईमान के जो पक्के,
जान और माल जिन्होंने झौका,
वो ही हक़दार भलाई के,
जन्नत का मिलेगा उनको मौका ।

बूढों और बीमारों पर,
या खाली हों जो ख़र्चे से,
उन पर कुछ इल्जाम नहीं,
जो देते साथ तहे दिल से ।

पीछे रहते जो दौलत वाले,
उज़्र करेंगे जब वापिस जाओगे,
खाएँगे ख़ुदा की वो क़समें,
पर झूठा तुम उनको पाओगे ।

कुछ बोझ समझते ख़र्चे को,
बाट तुम पर मुसीबत की तकते,
सब सुनता, सब जानता वो,
पड़ती मुसीबत उन्हीं के सर पे ।

कुछ देहाती रखते ईमान,
ख़र्च वो जो कुछ भी करते,
समझते उसको नेकी का ज़रिया,
पाते रहमत उसकी वो बन्दे ।

सबसे पहले ईमान जो लाए,
करी पैरवी भले लोगों से,
वो ख़ुश हैं ख़ुदा से अपने,
और ख़ुदा है ख़ुश उनसे ।

करते जो इकरार गुनाह का,
तौबा क़बूल होती उनकी,
दुआ तुम्हारी उनके हक़ में,
करती ख़ुदा से पैरवी उनकी ।

करते हैं फ़रेब कुछ लोग,
मस्जिदे जरार बनवाने की तरह,
वाजिब नहीं वहाँ पर जाना,
वह तो झूठों की है जगह ।

करा ख़ुदा ने उनसे सौदा,
मोमिनों की जान और माल का,
पूरा करता वो वादा अपना,
उन्हें मिलेगा बदला जन्नत का ।

मोमिन ख़ुदा को करते सज्दा,
रोजा रखते, इबादत करते,
देते हुक्म नेक कामों का,
मना बुरी बातों से करते ।

मुनासिब नहीं मांगना बख़्शिश,
मुसलामानों को मुशरिकों के लिए,
चाहें वो हों उनके रिश्ते में,
दोज़ख़ में ठिकाना उनके लिए ।

माँगी बख़्शिश वादे के कारण,
इब्राहीम ने अपने पिता के लिए,
मालूम हुआ जब ख़ुदा के दुश्मन,
तब बेजार वो उनसे हो गए ।

जब तक ना बता दे भला-बुरा,
और परहेज करें किस चीज से वो,
तब तक हिदायत देने के बाद,
गुमराह नहीं करता ख़ुदा किसी को ।

मुरारा, क़ाब और हिलाल,
जो रहे लड़ाई से पीछे,
करी उन पर भी मेहरबानी,
जिससे तौबा कर वो सके ।

मुनासिब नहीं किसी के लिए,
जां समझें अपनी रसूल से ज्यादा,
जो उसकी राह में मुसीबत उठाते,
पाते बदला उम्मीद से ज्यादा ।

मुनासिब जंग काफ़िरों के साथ,
पूरी मेहनत और ताकत से,
फिरे हुए हैं उनके दिल,
काम ना लेते वो समझ से ।

तुम्हारी भलाई के इच्छुक,
पैगम्बर तुमको राह दिखाते,
करते तुमसे बहुत मुहब्बत,
मेहरबान वो ईमान वालों पे ।

10. सूर: यूनुस

ताज्जुब क्यों करते हैं लोग,
पैगम्बर एक उन्हीं में से,
काफ़िर उसे कहते जादूगर,
ईमान वाले ख़ुशखबरी पाते ।

खुदा तुम्हारा है परवरदिगार,
दुनिया बनायी छह दिन में,
फिर जा क़ायम हुआ अर्श पर,
सब इन्तिज़ाम है उसके जिम्मे ।

उसी की केवल करो इबादत,
जाना लौट कर उसके पास,
वो ही पैदा करता ख़ल्क़त,
वो ही सबका करता इंसाफ़ ।

सूरज, चाँद में उसकी निशानियाँ,
उसकी मर्जी से दिन और रात,
जो मौजूद जमीं-आसमाँ में,
सब उसकी ही है करामात ।

दुनिया ही में रहते खोये,
ग़ाफ़िल उसकी निशानियों से,
करते रहते जो वो आमाल,
दोज़ख़ पाएँगे उसकी वजह से ।

लेकिन जो ले आए ईमान,
और करते रहते नेक काम,
मिलेगा उसका बदला उन्हें,
पाएँगे वो जन्नत में आराम ।

जल्दी ना कभी वो करता,
देने में बुराई का बदला,
उम्र पूरी हो चुकी होती,
मिल जाता जो तुरन्त बदला ।

पहुँचती जब इंसा को तकलीफ़,
पुकारता है वो ख़ुदा को,
दूर कर देता जब तकलीफ़,
भुला देता इंसान ख़ुदा को ।

किया उम्मतों ने जब जुल्म,
मिली उन्हें सज़ा, हुए हलाक,
उनको भी भेजे गए पैगम्बर,
मगर ना लाए वो ईमान ।

उन लोगों के बाद अब,
बनाए गए तुम लोग ख़लीफा,
ख़ुदा देखना चाहता है ये,
काम करते तुम अब कैसा ?

कहते जो बदल दो क़ुरआन,
या दूसरा तुम बना लाओ,
कह दो नहीं अधिकार मुझे,
हुक्म ख़ुदा का तुम भी मानो ।

गर जो ख़ुदा नहीं चाहता,
नाज़िल वो करता नहीं किताब,
एक कलिमा भी कहा ना मैंने,
जब उम्र गुजारी तुम्हारे साथ ।

कौन ज़ालिम बढ़ कर उससे,
जो झूठ गढ़े, आयत झुठलाए,
करते जो इबादत किसी और की,
कभी सफल ना वो हो पाए ।

कोई मुसीबत जब सर पड़ती,
दुआ ख़ुदा से माँगने लगते,
मिल जाती जब उनको निजात,
नाहक़ शरारत वो करने लगते ।

जिसे चाहता सीधी राह दिखाता,
सलामती के घर को बुलाता,
नेकी जो करते, पाते भलाई,
बुरा जो करता, बुरा ही पाता ।

पूछो कौन तुम्हें रोजी देता,
मालिक कौन तुम्हारे तन का,
पैदा करता जानदार बेजान से,
बेजान जानदार से पैदा करता ?

करता दुनिया का इन्तिजाम,
ख़ुदा ही मालिक है सबका,
ज़ाहिर होने पर हक़ बात,
करते सवाल क्यों गुमराही का ?

रास्ता दिखाता ख़ुदा ही हक़ का,
एक वो ही पैरवी के क़ाबिल,
बना सकता ना कोई क़ुरआन दूसरा,
पहली किताबों की इसमें तफ्सील ।

कहते क़ुरआन जो पैगम्बर का रचा,
क्या बना सकते एक भी सूरः,
पा नहीं सकते इल्म पर काबू,
इसलिए इसको कहते हैं झूठ ।

जो झुठलाते कह दो उनको,
नहीं कुछ उनसे लेना-देना,
अक्ल ना रखते अंधे, बहरे,
मुश्किल उन्हें हिदायत देना ।

जुल्म ना करता ख़ुदा किसी पर,
लोग जुल्म ख़ुद करते अपने पर,
लौटना एक दिन ख़ुदा के पास,
फिर भी ना आते लोग राह पर ।

हर उम्मत को भेजे पैगम्बर,
किया जाता सब से इंसाफ़,
हर उम्मत का वक़्त मुकर्रर,
ना जाने कब आ जाए अज़ाब ।

इस दुनिया की कोई चीज,
टाल नहीं सकती उसका अज़ाब,
जमीं-आसमाँ ख़ुदा का सब,
करता वो फ़ैसला इंसाफ़ के साथ ।

ख़ुदा का फ़जल और मेहरबानी,
उसकी रहमत, है ये किताब,
ख़ुशख़बरी मोमिनों के लिस इसमें,
ख़जानों से कीमती, है ये किताब ।

छिपा नहीं उससे कुछ भी,
प्रत्यक्ष है वह हर क्षण में,
ख़ुशनसीब हैं उसके दोस्त,
जो यकीन रखते उसमें ।

ना ख़ुदा का कोई शरीक,
ना कोई उसने बनाया बेटा,
वो बे-नियाज, सब तरह पाक,
सबसे अव्वल, सबसे अनूठा ।

सुना दो उनको नूह का किस्सा,
कि जिन लोगों ने उन्हें झुठलाया,
डुबा दिया उन सबको ख़ुदा ने,
कश्ती में सवार लोगों को बचाया ।

कई और भी भेजे पैगम्बर,
माने ना उनको झुठलाने वाले,
मूसा, हारून को ना माना फ़िरौन,
कहा उन्हें जादू करने वाला ।

लेकिन कुछ लोग जो लाए ईमान,
काफ़िरों से उन्होंने पायी निजात,
मिस्र में घर अपना बनाया,
मस्जिदें बना अदा करते थे नमाज़ ।

माँगी दुआ मूसा ने ख़ुदा से,
ना देख लें जब तक भारी अज़ाब,
गुमराह रहें, सही राह ना पाएँ,
धन और लश्कर हो जाए बर्बाद ।

लश्कर सहित फ़िरौन जब डूबा,
याद ख़ुदा उसको तब आया,
बने मिसाल दुनिया के लिए,
दरिया से उसका बदन निकाला ।

लायी ईमान यूनुस की कौम,
जिल्लत हटी, धन-दौलत पायी,
पर ख़ुदा के हुक्म बिना,
कौन कौम ईमान ला पायी ?

अगर चाहता तुम्हारा परवरदिगार,
सब इंसान ईमान ले आते,
चाह सकते हो क्या फिर तुम,
कि लोग सब मोमिन हो जाते ?

बे-अक्लों पर डालता है नजासत,
ख़ुदा कुफ़्र और जिल्लत की,
रखते नहीं जो उस पर ईमान,
निशानियाँ नहीं उनके काम की ।

कह दो मुझको है यही हुक्म,
करूँ इबादत बस एक ख़ुदा की,
उसको है अधिकार सभी पर,
फ़र्ज मेरा करूँ पैरवी उसकी ।

11. सूर: हूद

ये आयतें उतरी ख़ुदा से,
माँगो बख़्शिश, तौबा करो,
नवाजेगा नेक पूँजी से वो,
अज़ाब, गर नाफ़रमानी करो ।

जानता है वो दिलों की बातें,
पोशीदा नहीं कुछ भी उससे,
सबको रोजी देता है वो,
सब कुछ है जिम्मे उसके ।

नेमत बख़्श कर गर छीन ले,
ना-शुक्रा हो जाता इंसान,
पाता आराम गर तकलीफ़ के बाद,
तो ख़ुशियाँ मनाता है इंसान ।

लेकिन जो कर लेते सब्र,
लगे रहते नेक आमाल में,
पाते बख़्शिश ख़ुदा से वो,
और बड़ा बदला उससे ।

सोचते गर तुम कोई कहने लगे,
ना उतरा ख़जाना, ना आया फ़रिश्ता,
तुम तो केवल नसीहत कर सकते,
एक ख़ुदा ही सबका निगेहबां ।

जो कहते क़ुरआन ख़ुद तुमने बनाया,
कहो, बना लाओ कुछ सूरतें तुम,
गर ना करते क़बूल ये बात,
कहो, तब ले आओ इस्लाम तुम ।

चाहते जो दुनिया की दौलत,
आमाल का बदला वो पाते यहाँ,
सब झूठ, बरबाद होते वो आमाल,
दोज़ख़ की आग में जलते वहाँ ।

जो शक लाते क़ुरआन पर,
पाते बड़ी सज़ा उसकी,
गुनाहगार वो बच नहीं पाते,
करता पकड़ ख़ुदा उनकी ।

पैगाम ख़ुदा का लेकर नूह,
गए समझाने कौम को अपनी,
झूठा माना, ना देखी फ़जीलत,
ठुकराया सरदारों ने बात ना मानी ।

बोले नूह, ख़ुदा ने भेजी,
रोशन दलील तुम्हारे वास्ते,
बदला ना कुछ इसका चाहिए,
उसका बदला ख़ुदा के जिम्मे ।

पास मेरे ना कोई ख़जाना,
ना मैं फ़रिश्ता, ना गैब जानता,
देखते जिनको नीची नज़रों से,
मिलेगा उनको भलाई का बदला ।

कहा उन्होंने तुम जिससे डराते,
ला नाज़िल करो उसे हम पर,
कहा नूह ने, ख़ुदा ही मालिक,
नाज़िल करेगा वो ही तुम पर ।

हुक्म हुआ तब यूँ नूह को,
ना लाएँगे ईमान ये लोग,
हमारे हुक्म से एक कश्ती बना,
सवार हो जाओ उसमें तुम लोग ।

हर प्राणी का एक-एक जोड़ा,
घर वाले और ईमान जो लाएँ,
सवार हो जाओ कश्ती में तुम,
छोड़ो उनको जो मजाक उड़ाएँ ।

ऊँची- ऊँची लहरों में कश्ती,
चली ख़ुदा के जोर पर,
बेटा नूह का अपने भरोसे,
बहा ले गयी उसे लहर ।

नूह की कश्ती लगी किनारे,
तबाह हुए बाकी सब लोग,
परहेजगारों का अंजाम भला,
रहमत उसकी पाते वो लोग ।

भेजे गए हूद आद को,
लेकर गए ख़ुदा का पैगाम,
करो ना शिर्क परवरदिगार से,
इबादत करो, ले आओ ईमान ।

मानी ना कौम, कहा हूद से,
कोई ज़ाहिर दलील ना पास तुम्हारे,
छोड़ेंगे ना हम माबूदों को अपने,
केवल कहने भर से तुम्हारे ।

की नाफ़रमानी कौमे आद ने,
लानत उन पर हुए बरबाद,
हूद और ईमान वालों को,
भारी अज़ाब से मिली निजात ।

भेजे गए सालेह समूद को,
लेकन वो भी गए नकारे,
छोड़ी ऊँटनी, ख़ुदा की निशानी,
काटी कूंचे, लोग ना माने ।

वक़्त मिला तीन दिनों का,
हुआ ख़ुदा का वादा पूरा,
बचे लोग ईमान जो लाए,
बाकी मरे, चिंघाड़ ने घेरा ।

ख़ुशख़बरी लेकर फ़रिश्ते आए,
इब्राहीम के घर बने मेहमान,
तीन फ़रिश्ते, नौजवां, सुन्दर,
बोले करके दुआ सलाम ।

डरो ना हमसे, ख़ुदा ने भेजा,
कौम लूत की हलाक करने को,
हँसी जो बीबी इब्राहीम की,
बच्चे की दी ख़ुशख़बरी उनको ।

बूढ़े-बुढ़िया वो पति-पत्नी,
चकित हुए उनकी बात पर,
कहा फ़रिश्तों ने उनसे,
रखो भरोसा उसकी जात पर ।

पहुँचे फ़रिश्ते लूत के पास,
मालूम पड़ा वह दिन मुश्किल,
बे-हयाई करती थी वह कौम,
हारने लगे लूत अपना दिल ।

फ़रिश्तों ने तब कहा लूत को,
ख़ुदा के भेजे आएँ हैं हम,
पहुँच ना पाएँगे ये तुम तक,
चाहे कितना वो भर लें दम ।

चल दो तुम कुछ रात रहे,
साथ में लेकर घरवालों को,
मुड़कर पीछे देखे ना कोई,
मुश्किल होगी तुम्हारी बीबी को ।

वक़्त सुबह का था निश्चित,
अज़ाब ख़ुदा का आने का,
बरसे पत्थर, बस्ती उलटी,
नष्ट हुए सब जालिम वो ।

भेजे गए शुऐब मदयन को,
कहा, करो पूरी नाप-तौल,
ख़ुशहाल हो तुम, लाओ ईमान,
नीयत में अपनी डालो ना झोल ।

कमजोर उन्होंने ठहराया शुऐब को,
ना समझे वो शुऐब की बात,
हुक्म ख़ुदा का जब आ पहुँचा,
चिंघाड़ कर गयी उनको बरबाद ।

मूसा को भी दी निशानियाँ,
भेजा देकर रोशन दलील,
पर फ़िरौन ने बात ना मानी,
संग सरदारों के हुआ जलील ।

ये पुरानी बस्तियों के हालात,
किए गए जो तुमसे बयान,
हासिल करो इबरत इनसे,
डरो उससे, और लाओ ईमान ।

किए जाएँगे जमा आख़िर में,
ख़ुदा के सामने सब लोग,
बदबख़्त जाएँगे दोज़ख़ में,
बहिश्त पाएँगे नेक लोग ।

क़ायम रहो, हुक्म पर ऐ नबी,
जाना ना कभी हद से आगे,
जालिमों का करना ना लिहाज,
आमालों का सब बदला पाते ।

पढ़ो नमाज़ सुबह और सांझ,
रहो नेकियों पर क़ायम,
दूर हो जाते उनसे गुनाह,
इमान पे जो रहते क़ायम ।

12. सूर: यूसुफ

किया क़ुरआन नाज़िल अरबी में,
ताकि तुम इसको समझ सको,
थे बेख़बर जिससे तुम पहले,
ऐसा एक अच्छा किस्सा सुनो ।

याकूब के घर जन्में थे यूसुफ,
एक दिन देखा उन्होंने सपना,
ग्यारह सितारे, सूरज और चाँद,
कर रहे थे वो उनको सज्दा ।

सुना स्वप्न तो कहा पिता ने,
ज़िक्र न करना भाइयों से अपने,
कर सकते हैं तुमसे वो फ़रेब,
करेगा रहम ख़ुदा तुम पे ।

प्यार करते हैं यूसुफ से ज्यादा,
पिता हमारे, भाइयों ने सोचा,
यूसुफ को कुएँ में डालो,
मिलकर उन्होंने किया मश्वरा ।

बातें बनाकर वो सौतेले भाई,
साथ ले गए यूसुफ को,
एक गहरे कुएँ को देख,
गिराया उसमें यूसुफ को ।

आकर पिता को बतलाया,
खा गया भेड़िया यूसुफ को,
समझ गए पिता चालाकी,
पर रह गए बस रो कर वो ।

लेकिन देखो ख़ुदा की क़ुदरत,
क़ाफ़िला एक उधर से गुजरा,
लटकाया जब डोल कुएँ में,
यूसुफ निकले, डोल को पकड़ा ।

किस्मत उन्हें मिस्र ले गयी,
बिके वहाँ कुछ दिरहम में,
बीवी ज़ुलेख़ा से बोले अज़ीज़,
इज्ज़त इकराम से रखो इन्हें ।

वक़्त गुजरा, जवान हुए यूसुफ,
हिम्मत और इल्म उन्हें मिला,
भले लोगों को इसी तरह,
दिया करता है ख़ुदा बदला ।

सुन्दर और नौजवां ऐसे थे यूसुफ,
दिल ज़ुलेख़ा का उन पर आया,
भागे यूसुफ बाहर की तरफ़,
फटा कुरता, उन्हें पीछे से पकड़ा ।

तभी आ गया अज़ीज़ वहाँ पर,
तो यूसुफ पर इलजाम लगाया,
हुआ फ़ैसला, इंसाफ़ हो गया,
ज़ुलेख़ा की ज़ाहिर हुई खता ।

बातें बनाती थीं और औरतें,
दीदारे यूसुफ था असल मकसद,
घर ज़ुलेख़ा के वो सब आयीं,
मिला उन्हें जब पैगामे दावत ।

छाया ऐसा रौब यूसुफ का,
दीदार हुआ जब उन्हें उनका,
बोल उठीं वे सुबहानल्लाह,
आदमी नहीं, है ये फ़रिश्ता ।

कहा ज़ुलेख़ा ने यह उनसे,
गर ना होगा यूसुफ सहमत,
और ना मानी बात मेरी तो,
उठाएगा वो क़ैद की जहमत ।

माँगी दुआ यूसुफ ने ख़ुदा से,
इसके मुकाबले क़ैद पसन्द मुझे,
ना हटाएगा गर तू यह फ़रेब,
हूँगा नादानों में दाखिल मैं ।

क़बूल ख़ुदा ने करी दुआ,
ख़त्म किया मकर औरतों का,
बावजूद उसके यूसुफ को,
काटनी पड़ी क़ैद की सज़ा ।

वहाँ मिले उनको दो साथी,
ख़्वाब दिखा एक दिन उनको,
शराब के लिए अंगूर निचोड़ते,
देखा पहले ने अपने को ।

और दूसरे ने देखा यह,
रोटियाँ रखी उसके सर पर,
और उसने देखी वो रोटियाँ,
जिन्हें खा रहे थे कुछ जानवर ।

जानकर यूसुफ को नेक,
पूछी ताबीर उन्होंने ख़्वाबों की,
बोले यूसुफ ना शिर्क करो,
बस करो इबादत एक ख़ुदा की ।

फिर बोले वो पहले साथी से,
शराब पिलाओगे अपने आकां को,
और दूसरा सूली पे चढ़ेगा,
खाएँगे जानवर उसके सर को ।

यूसुफ बोले पहले साथी से,
मेरी सिफ़ारिश भी करना आकां से,
भुला दिया पर शैतान ने उसको,
यूसुफ रहे कुछ साल जेल में ।

फिर एक दिन हुई बात नई,
देखा बादशाह ने भी एक ख़्वाब,
सात हरी, सात सूखी बालियाँ,
सात मोटी और सात दुबली गाय ।

एक अनोखी बात सपने में,
बादशाह को आई नज़र,
दुबली गायें मोटी गायों को,
खाती आयी उसको नज़र ।

सरदारों से पूछा उस ने,
क्या उस ख़्वाब की है ताबीर,
कहा उन्होंने यह अजीब ख़्वाब,
बता नहीं सकते हम ताबीर ।

तब पहले साथी को आई याद,
जेल में बंद साथी यूसुफ की,
लेकर इजाज़त पहुँचा जेल में,
पूछने उनसे ताबीर ख़्वाब की ।

यूसुफ ने मतलब समझाया,
अच्छी रहेगी खेती सात बरस,
बचा रखना तुम अनाज को,
फिर पड़ेगा सूखा सात बरस ।

बादशाह ने बुलवाया यूसुफ को,
भेजा क़ासिद को जेल में,
संदेश भेज यूसुफ ने पुछवाया,
किस हाल में हैं वो औरतें ?

बादशाह ने जब पूछा उनसे,
बोली वे यूसुफ है सच्चा,
ज़ुलेख़ा ने भी मान लिया,
उसने ही करी थी वो ख़ता ।

कहा यूसुफ ने पूछी मैंने,
सबके सामने आज यह बात,
ताकि यकीन आ जाए अज़ीज़ को,
उसमें नहीं था मेरा हाथ ।

बनाया बादशाह ने खास मुसाहिब,
किया ख़जाना सुपुर्द यूसुफ के,
रहमत हुई यूँ ख़ुदा की,
चाहते जहाँ वो रहते वहाँ पे ।

उधर सौतेले भाई यूसुफ के,
आए मिस्र गल्ला खरीदने,
पहचान गए यूसुफ तो उनको,
पर वो यूसुफ को ना पहचाने ।

देकर गल्ला कहा यूसुफ ने,
जो चाहते फिर तुम गल्ला लेना,
यामीन तुम्हारा एक सौतेला भाई,
साथ जरूर तुम उसको भी लेना ।

फिर चुपके से यूसुफ ने,
की वापिस गल्ले की कीमत,
और अपने नौकरों से कह कर,
गल्ले के साथ रखवा दी दौलत ।

वापिस जाकर अपने पिता से,
बयान किया सब हाल उन्होंने,
कहा यामीन को भेजो साथ,
वरना ना मिलेगा गल्ला हमें ।

कहा पिता ने एतबार नहीं,
यूसुफ के थे तुम निगेहबान,
जो ले जाओ यामीन को तुम,
ख़ुदा ही उसका है निगेहबान ।

देखा सामान जब उन लोगों ने,
वापिस पाया अपना सरमाया,
ख़ुश होकर वो कहने लगे,
देखो अपना धन वापिस आया ।

जाएँगे फिर हम लौट कर,
और अधिक गल्ला लाएँगे,
पिता ने लिया अहद ख़ुदा का,
यामीन को सलामत वापिस लाएँगे ।

करी हिदायत याकूब ने उनको,
घुसना अलग-अलग दरवाजों से,
रोक नहीं सकता मैं तकदीरों को,
सब कुछ है ख़ुदा के ही भरोसे ।

यूसुफ ने सगे भाई यामीन को,
प्यार से अपने ही पास बैठाया,
और चुपके से सामान में उसके,
सोने का एक गिलास रखवाया ।

चोरी के इलजाम में यामीन,
एक बरस तक रोके गए,
मकसद था संग उसको रखना,
यूसुफ उसमें सफल रहे ।

करी बहुत विनती भाइयों ने,
वास्ता बूढ़े पिता का दिया,
तैयार हो गए करने को गुलामी,
गर यामीन को जाने दिया ।

ना-उम्मीदी ही पर हाथ लगी,
दिल उन सबका टूट गया,
हुक्म ना दें जब तक वालिद,
बड़ा भाई वहीं ठहर गया ।

जाकर किया बयान पिता को,
जो बीता था उनके साथ,
विश्वास ना आया वालिद को,
किया रो-रोकर हाल खराब ।

गमगीन हुआ दिल वालिद का,
आँखें सफेद हुई रो-रोकर,
बोले यामीन और यूसुफ को,
जाओ, लाओ कहीं से ढूँढकर ।

गए वो भाई यूसुफ के पास,
कठिन बड़ा समय उन पर,
थोड़ी पूँजी उस पर तकलीफें,
कहा, करो रहम हम पर ।

याद दिलाई यूसुफ ने उनको,
बीती बातें, उनकी बेवफ़ाई,
बोले फिर मैं ही यूसुफ हूँ,
और ये यामीन हमारा भाई ।

बोले भाई ख़ता की हमने,
बख़्शी ख़ुदा ने तुमको फ़जीलत,
माफ़ किया ख़ुदा ने उनको,
और बरसायी उन पर रहमत ।

यूसुफ ने दिया कुरता अपना,
ढ़कने को वालिद के मुँह पर,
वापिस पहुँच डाला जब कुरता,
आने लगा फिर पिता को नजर ।

कहा बेटों ने वालिद से अपने,
गुनाहगार हम बख़्शिश माँगते,
मेहरबान वह, बख़्शने वाला,
सीधी राह पर जो आ जाते ।

पहुँचे मिस्र जब माता-पिता,
तख़्त पर उन्हें यूसुफ ने बिठाया,
सज्दे में गिरे सब यूसुफ के,
देखा जो ख़्वाब सच हो आया ।

एहसान किए बहुत ख़ुदा ने,
भाइयों को फिर से मिलवाया,
बख़्शी हुकुमत यूसुफ को उसने,
और बहुत सा इल्म सिखाया ।

नसीहत है क़ुरआन दुनिया के लिए,
लोगों को बुलाता ख़ुदा की तरफ़,
जब नबी भी हो जाते ना-उम्मीद,
पहुँच जाती है वहाँ उसकी मदद ।

13. सूर: रअद

क़ुरआन किताब है अल्लाह की,
लाते नहीं अक्सर लोग ईमान,
चला रहा सारी सृष्टि को,
रहम वाला वो बड़ा मेहरबान ।

काफ़िर कहते क्या पैदा होंगे,
मर कर मिट्टी होने के बाद,
जलते रहेंगे दोज़ख़ में ये,
चाहते हैं ये जल्दी अज़ाब ।

और जो कहते पैगम्बर को,
नाजिल क्यों नहीं हुई निशानियाँ,
कह दो, तुम बस हिदायत करते,
होता हर कौम का जुदा रहनुमा ।

ख़ुदा जानता सब राजों को,
सबसे बुज़ुर्ग बुलंद रुत्बा,
उसका हुक्म मानते फ़रिश्ते,
करते सब उसको सज्दा ।

करते जो अहद को पूरा,
साबित अपने इकरार पे रहते,
पाते ख़ुदा की वो रहमत,
करते जो सब्र, नमाज़ पढ़ते ।

राह दिखाता ख़ुदा उनको,
रुजू उसकी तरफ़ जो होते,
याद करते दिलों में उसकी,
उम्दा ठिकाना, ख़ुशहाली पाते ।

और नबियों की तरह मुहम्मद,
भेजा तुमको इस उम्मत में,
ताकि सुना दो पढ़ कर तुम,
जो किताब भेजी है हमने ।

होता रहा रसूलों का मज़ाक,
पाते रहे काफ़िर भी मोहलत,
सब इल्म उसे, ख़बर सबकी,
देता नहीं काफ़िरों को हिदायत ।

कह दो, हुआ है हुक्म मुझे,
करूँ केवल उसकी ही इबादत,
ना शरीक बनाऊँ किसी और को,
लौटूँगा मैं उसकी ही तरफ़ ।

करता हुक्म वो जैसा चाहे,
सब पर वो रखता है क़ुदरत,
क़ायम रखे या मिटा डाले,
उसकी इच्छा, उसकी रहमत ।

14. सूर: इब्राहीम

नाज़िल की यह पुरनूर किताब,
जानों उसका तुम मकसद,
निकाल अंधेरे से लोगों को,
लाओ उन्हें रोशनी की तरफ़ ।

उतरा क़ुरआन अरबी भाषा में,
काफ़िर कहते ख़ुद ही बनाया,
बेशक यह ख़ुदा का इर्शाद,
भाषा में कौम की फ़रमाया ।

भेजा मूसा को देकर निशानियाँ,
कौम को अपनी राह दिखाएँ,
देखते वो निशानियाँ क़ुदरत में,
शुक्र करें और सब्र जो लाएँ ।

ख़बर नहीं क्या तुम्हें उनकी,
हुईं कौमें जो तुमसे पहले,
निशानियाँ लाए नबी उनको भी,
फिर भी वो ईमान ना लाए ।

कैसा शक तुम करते ख़ुदा पर,
पैदा किए जमीं-आसमाँ जिसने,
देता है एक मुद्दत तक मोहलत,
और पास बुलाता गुनाह बख़्शने ।

वो बोले हम जैसे तुम भी,
पूजें ना क्यों माबूदों को,
पुरखे हमारे रहे पूजते,
छोड़े क्यों अब हम उनको ?

बोले पैगम्बर अधिकार ख़ुदा को,
जिसे चाहे वो नबी बना दे,
मोमिनों को उस पर ही भरोसा,
चाहे वो तो निशानी भेज दे ।

कहा काफ़िरों ने नबियों से,
चले जाओ या हमारी मानों,
मंज़ूर ना था ख़ुदा को ये,
हलाक किया उसने जालिमों को ।

किया कुफ्र जिन्होंने उससे,
आंधी में राख से उड़ जाएँगे,
बस ना चलेगा आख़िर में,
हाथ मलते वो रह जाएँगे ।

हो चुकेगा जब उनका फैसला,
तब यह कहेगा उनसे शैतान,
मलामत करो तुम अपनी ही.
बात मेरी क्यों तुम गए मान ?

पाक बात, पाक पेड़ सी,
गहरी जड़ें, फल हर दम,
नापाक बात, नापाक पेड़ सी,
उखड़ी जड़ें, ना कोई दम ।

कह दो मेरे मोमिन बन्दों से,
नमाज़ पढ़ें और नेकी करें,
करें शुक्रिया उसकी नेमतों का,
इतने अहसान कि गिन ना सकें ।

दुआ इब्राहीम ने माँगी ख़ुदा से,
मक्का अम्न की जगह बना दे,
बसायी अपनी औलाद वहाँ पर,
नेकी उनके दिलों में जगा दे ।

ना करेगा ख़ुदा वादा-खिलाफ़ी,
सज़ा जालिमों को जरूर मिलेगी,
चाहे कितना तब सर पटकें,
क़ियामत में दोज़ख़ उन्हें मिलेगी ।

15. सूर: हिज्र

आरज़ू करेंगे काफ़िर किसी वक़्त,
काश हम भी होते मुसलमान,
लेने दो अभी दुनिया का मज़ा,
मालूम बहुत जल्द होगा अंजाम ।

कहते नसीहत वालों को दीवाना,
पूछते क्यों ना लाते फ़रिश्ता,
कहो, हमने ही उतारी किताब,
और हम ही हैं उसके निगेहबां ।

भेजे पैगम्बर पहले भी हमने,
उनका भी उड़ता रहा मज़ाक,
गुमराह कभी ईमान ना लाते,
मिल के ही रहेगा उन्हें अज़ाब ।

हम ही ने बुर्ज बनाए आसमाँ में,
और जमीं को भी फैलाया,
चाँद, सितारे, नदी, पहाड़ बनाए,
और रोजी का सामान उगाया ।

हर चीज के ख़जाने हमारे यहाँ,
उतारते जिन्हें जरूरत के मुताबिक़,
जिंदगी-मौत, हवा और पानी,
हम ही सारे जहाँ के मालिक ।

मालूम हमें जो गुजर चुके,
और वो भी जो आएँगे अब,
जमा करेंगे क़ियामत के दिन,
सब की ख़बर, हम जानते सब ।

पैदा किया इंसानों को हमने,
खनखनाते सड़े हुए गारे से,
और जिन्नों को उनसे पहले,
पैदा किया हमने आग से ।

फ़रमाया फ़रिश्तों को परवरदिगार ने,
बनाता हूँ गारे से एक बशर,
ठीक कर जब रूह फूँक दूँ,
सज्दे में उसके झुकाना सर ।

किया फ़रिश्तों ने उसको सज्दा,
शैतान ने पर इंकार किया,
शामिल ना हुआ वो सज्दे में,
पूछा ख़ुदा ने क्या तुझे हुआ ?

बोला शैतान नहीं मैं ऐसा,
इंसान को जो करे सज्दा,
कहा ख़ुदा ने मर्दूद है तू,
चल यहाँ से तू निकल जा ।

करी क़ियामत तक लानत,
माँगी शैतान ने कुछ मोहलत,
किए जाएँ जब फिर जिंदा,
तब तक उसे मिली मोहलत ।

जैसे अलग किया है मुझको,
मैं भी सबको बहकाऊँगा,
बोला शैतान, गुनाह लोगों को,
सजा कर मैं भी दिखलाऊँगा ।

पर जो तेरे मुख्लिस बन्दे,
मुश्किल उन पर क़ाबू चलना,
कहा ख़ुदा ने सीधा रस्ता,
बन्दे का ईमान पर चलना ।

चल पड़े जो तेरे पीछे,
जहन्नम बनी है उनके वास्ते,
जाएँगे सात दरवाजों में से,
जिसके आमाल होंगे जैसे ।

ईमान पर जो क़ायम रहते,
मिलते उनको चश्में और बाग़,
बख़्शिशें मिलती, रहमत पाते,
दिल उनका करता वो साफ़ ।

इब्राहीम के मेहमानों की दास्ताँ,
कहा सलाम जब वो आए,
हो चले थे बूढ़े इब्राहीम,
पर फ़रिश्ते ख़ुशख़बरी लाए ।

मायूस ना होते ईमां वाले,
पक्का उनका ख़ुदा पर भरोसा,
सीमा ना उसकी रहमत की,
रखते जो ख़ुदा पे भरोसा ।

पूछा उनसे तो बोले फ़रिश्ते,
भेजे गए हम कौमें लूत को,
बच ना सकेगी पत्नी उनकी,
बचा लेंगे बाकी घरवालों को ।

कहा लूत ने तुम हो अनजाने,
बतलाई उनको तब सच्चाई,
कहा, रात रहे निकल चलो तुम,
मुड़कर पीछे देखे ना कोई ।

बोले लूत तब अपनी कौम से,
डरो ख़ुदा से, रुसवा ना करना,
गुनाहगार मदहोश मस्ती में,
माने ना वो उनका कहना ।

नीचे ऊपर हुआ शहर वो,
बरसे पत्थर सब नष्ट हुआ,
नष्ट हुई कौमे शुऐब भी,
उनसे भी था गुनाह हुआ ।

इसी तरह हिज्र के वाशिन्दे,
झुठलाते थे वे भी नबियों को,
चीख ने उनको आ पकड़ा,
पलक झपकते हुए नष्ट वो ।

आके रहेगी जरूर क़ियामत,
अच्छे से दर-गुजर करो,
पैदा की तदबीर से दुनिया,
ग़ज़ब से उसके डरा करो ।

अता किया क़ुरआन ये जिसमें,
सात आयतें दुहराती नमाज़ में,
पाते काफ़िर दुनिया का फ़ायदा,
पड़ते आख़िर वो अज़ाब में ।

करो ना मुशिरकों का ख़याल,
ख़ुदा है काफ़ी उनके लिए,
करो हमेशा उसके गुणगान,
झुकाओ सर सज्दे के लिए ।

16. सूर: नहल

देकर पैगाम फ़रिश्तों को,
भेजता ख़ुदा बन्दों के पास,
माबूद नहीं कोई उसके सिवा,
बस उसकी ही रखो आस ।

नुत्फ़े से बनाया इंसा को,
रहमत से उसकी तन पाते,
पर इसकी फ़ितरत तो देखो,
उसके नाम पर झगड़े जाते ।

मिले इंसान को जिससे फ़ायदा,
चारपाये भी उसी ने बनाए,
ख़बर नहीं इंसान को जिसकी,
ऐसे कितने ही सामान बनाए ।

कुछ टेढ़े, कुछ सीधे रास्ते,
सभी रास्ते वो ही बनाता,
जाती सीधी राह ख़ुदा को,
जिसे चाहता, उस पे चलाता ।

बनायी उसने सारी कायनात,
दिये तुमको कई अधिकार,
उसकी निशानी कण-कण में,
पर नसीहत पाते समझदार ।

पैदा की उसने यह दुनिया,
क्या कुछ वो कर नहीं सकता,
बख़्शी हैं उसने इतनी नेमतें,
गिनने वाला गिन नहीं सकता ।

जिनको शरीक करते ये लोग,
कुछ भी नहीं वो बना सकते,
बेजान हैं वो कुछ होश नहीं,
उनको भी ये लोग ही रचते ।

ख़ुदा अकेला माबूद तुम्हारा,
उससे छिपी ना कोई बात,
पसन्द उसे सरकशी नहीं,
ना ही आख़िरत से इंकार ।

काफ़िर उठाएँगे अपना बोझ,
और जिनको वे करते गुमराह,
सज़ा पाएँगे गुनाहों की,
तकते हैं ये जिसकी राह ।

ना काम आएँगे शरीक इनके,
होगी आख़िर में रुसवाई,
जलील होंगे क़ियामत के दिन,
दुनिया में जो करते बुराई ।

कहते ‘सलाम अलैकुम’ फ़रिश्ते,
परहेजगारों की जब जां निकालते,
दाख़िल होते जन्नत में वो,
नेकी का बड़ा बदला वो पाते ।

ख़ुद करते पर यूँ कहते,
होता वही जो वो चाहता,
जिम्मे नबियों के हुक्म पहुँचाना,
माने ना माने, उनका फ़ैसला ।

मानी कुछ लोगों ने हिदायत,
और कुछ रहे गुमराह होकर,
अंजाम झुठलाने वालों का बुरा,
देख लो जमीं चल-फिर कर ।

ना देता हिदायत ख़ुदा उनको,
ना कोई होता मददगार,
कितना ही उनको समझा लो,
गुमराह होते वो गुनाहगार ।

खाते कितनी ही ये क़समें,
जो मर गए, वो नहीं उठेंगे,
पर वादा ख़ुदा का है सच्चा,
क़ियामत के दिन वो जी उठेंगे ।

करता जब वह कोई ईरादा,
बस करता है इतना ही,
फ़रमाता इर्शाद की ‘हो जा’,
हो जाता फ़ौरन वैसा ही ।

सहे जुल्म, जिसने वतन छोड़ा,
पाएँगे दुनिया में अच्छा ठिकाना,
रखते भरोसा करते जो सब्र,
उनका जन्न्त में पक्का ठिकाना ।

देकर दलीलें और किताबें,
पैगम्बर हमने पहले भी भेजे,
किताब तुम्हें भी की नाज़िल,
जाहिर इर्शाद जिससे हो सके ।

चलते जो बुरी-बुरी चालें,
इसका क्या ख़ौफ़ नहीं उनको,
आ घेरे उनको ऐसा अज़ाब,
ख़बर ना हो जिसकी उनको ।

क्या उनको यह मालूम नहीं,
करते ख़ुदा को सब सज्दा,
घमंड ना करते, डरते उससे,
करते अमल इर्शाद हो जैसा ।

बनाओ ना माबूद और दूसरा,
बस ख़ुदा की करो इबादत,
डरते क्यों किसी और से,
वो ही बख़्शता सारी नेमत ।

जब कोई आ पड़ती तकलीफ़,
ख़ुदा को ही तुम पुकारते,
जब दूर कर देता तकलीफ़,
शरीक ख़ुदा के करने लगते ।

करते लोग बेटों की चाहत,
होते दुखी जन्में जो बेटी,
बहुत बुरी बात है ये,
करते तज्वीज़ मौत की उसकी ।

पकड़ने लगे जो ख़ुदा जुल्म पे,
कोई जानदार ना जमीं पे बचे,
देता मोहलत नियत समय तक,
जब वक़्त आ जाए, टाले ना टले ।

नाज़िल की तुम पे जो किताब,
रहमत और हिदायत है उसमें,
जिन बातों पर नहीं सहमति,
कर दो उन बातों के फ़ैसले ।

समझदार के लिए है मौजूद,
उसकी निशानी हर शै में,
पशु से दूध, फल, मेवा,
मक्खी से शहद देता वो तुम्हें ।

रोजी-रोटी, धन-दौलत,
बेटे, पौते सब दिए उसने,
सारी नेमतें उसने बख़्शी,
पर आता ना एतिक़ाद तुम्हें ।

ना अख़्तियार किसी और को,
ना उनमें कुछ है क़ुदरत,
करते फिर क्यों उनकी पूजा,
करते क्यों तुम काम ग़लत ?

पैदा किया ख़ुदा ने तुमको,
जब थे तुम बिल्कुल अनजान,
शुक्र करो तुम बख़्शे उसने,
तुमको दिल, आँख और कान ।

वो ही थामता आसमाँ में परिन्दे,
घर भी रहने को देता वो ही,
तपती गर्मी में पेड़ों के साए,
गारें पहाड़ों में उसी ने बनायी ।

करता एहसान ख़ुदा तुम पर,
ताकि बनो तुम फ़रमाबरदार,
जानते है वो ख़ुदा की नेमतें,
पर ना-शुक्रे करते इंकार ।

देंगे गवाही जिस दिन पैगम्बर,
दूर नहीं वो क़ियामत का दिन,
भूलेंगे शरीक, कलाम रद्द करेंगे,
झुकाएँगे ख़ुदा के आगे वो सिर ।

ना मिलेगी तब उनको मोहलत,
कम ना होंगे उनके अज़ाब,
करते थे वो जो शरारत,
मिलेगा उसका उन्हें पूरा हिसाब ।

नाज़िल करी हमने जो किताब,
हर चीज का उसमें पूरा बयान,
बरसती उसमें रहमत और हिदायत,
बसारत पाते उससे मुसलमान ।

इंसाफ़ और एहसान करने का,
देता है हुक्म ख़ुदा तुम्हें,
बे-हयाई और नामाकूल कामों से,
दूर रहो, कहता ख़ुदा तुम्हें ।

पूरा करो उसे जरूर तुम,
जो ख़ुदा से पक्का अहद करो,
क़समें जो लेते उसके नाम,
क़समें पक्की उन्हें पूरा करो ।

ना बनाओ क़समों को ज़रिया,
एक-दूजे पर ग़ालिब होने का,
ना रोको ख़ुदा के रस्ते से,
चखना ना पड़े बुराई का मज़ा ?

ख़त्म हो जाता जो पास तुम्हारे,
जो पास ख़ुदा के रहता बाकी,
मिलता बड़ा अच्छा बदला उनको,
रखते जो सब्र, करते नेकी ।

पनाह माँग लो शैतान मर्दूद से,
जब तुम पढ़ने लगो क़ुरआन,
चलता जोर शैतान का उन पर,
जो लेते साथ शरीक का नाम ।

जब बदली हमने कोई आयत,
काफ़िर कहते तुम ख़ुद बना लाए,
कहो कि नाज़िल हुई ख़ुदा से,
ईमान मोमिनों का डिगने ना पाए ।

लाते नहीं ईमान आयतों पर,
ख़ुदा उन्हें हिदायत नहीं देता,
कुफ्र जो करते जान-बूझकर,
अज़ाब ख़ुदा उन्हें ही देता ।

पसंद नहीं ख़ुदा को ना-शुक्री,
देता आमालों का पूरा बदला,
करते तौबा, नेक बन जाते,
गुनाह उनके ख़ुदा बख़्श देता ।

चुने इब्राहीम नबी ख़ुदा ने,
करो पैरवी उनकी तुम,
दानिश और नेक नसीहत से,
दिखलाओ राह ख़ुदा की तुम ।

17. सूरः बनी इस्राईल

वह जात-पाक अपने बन्दे को,
एक रात मस्जिदुल हराम से,
ले गया मस्जिदे अक्सा तक,
हर तरफ़ जिसके रखी बरकतें ।

करी इनायत किताब मूसा को,
बनी इस्राईल का रहनुमा बनाया,
करेंगे वो दो दफा फ़साद,
वादा ख़ुदा ने था फ़रमाया ।

माँगता जल्दी जैसे भलाई,
वैसे ही इंसा माँगता बुराई,
है इंसान बड़ा जल्दबाज,
सब्र की थोड़ी कमी पायी ।

गले में हर इंसान के,
लटका दी आमालों की किताब,
पढ़ी जाएगी क़ियामत के दिन,
कहेंगे ख़ुद ही करो हिसाब ।

भला-बुरा वो जो करता,
ख़ुद ही उसका पाता बदला,
हो हिदायत वाला, या गुमराह,
नेकी-बदी ख़ुद वो करता ।

जिनको तमन्ना दुनिया की,
जल्दी पाते वो इच्छित भोग,
पर साथ ना वो कुछ देते,
दोज़ख़ में उनको मिलती ठौर ।

तलब जो आख़िर की करते,
और करते कोशिश जो भरपूर,
ऊपर से मोमिन हों अगर,
वो पाते उसकी बख़्शिश जरूर ।

फ़रमाया इर्शाद परवरदिगार ने,
उसके सिवा इबादत ना करो,
करो भलाई माँ-बाप के साथ,
करो अदब, कभी उफ़ ना करो ।

झुके रहो उनके आगे,
हक़ में उनकी दुआ करो,
जैसे पाला बचपन में तुम्हें,
मालिक उन पर रहम करो ।

अदा करो हक़ जिसका हो जैसा,
फ़िज़ूलखर्ची मत किया करो,
कर ना सको कुछ और अगर,
बात नरमी से कह दिया करो ।

हाथ तंग करो ना ज्यादा,
ना सभी कुछ दे डालो,
देख रहा वो बन्दों को,
उसी का भरोसा किया करो ।

मुफ़्लिसी से डर कर तुम,
अपनी औलाद ना क़त्ल करो,
ख़ुदा ही तुमको देता रोजी,
है सख़्त गुनाह, ऐसा ना करो ।

बुरी बात है जिनाँ करना,
है बे-हयाई और ग़लत राह,
करता मना ख़ुदा तुमको,
समझो इसे, ना हो गुमराह ।

गर क़त्ल जुल्म से कोई करे,
ले सकता है वारिस बदला,
ना करे पर कोई ज्यादती,
बेहतर हद के भीतर रहना ।

मिले इंसाफ़ यतीमों को,
नाप-तौल हो सही-सही,
ना अकड़ दिखाओ औरों को,
उसको यह हरकत पसन्द नहीं ।

बातें तरह-तरह की हमने,
करी हैं बयान क़ुरआन में,
मकसद है लोग नसीहत पकड़ें,
पर अक्सर लोग बिदक जाते ।

पढ़ा करते हो जब तुम क़ुरआन,
डाल देते हैं हम पर्दा,
ताकि समझ सके ना वो,
ईमान आख़िरत पर ना जिसका ।

बातें बनाते तरह-तरह की,
गुमराह हो रहे हैं वो लोग,
शक करते है क्या मर कर,
होंगे पैदा फिर से वो लोग ?

कह दो कुछ भी बन जाओ,
पत्थर हो जाओ या लौहा,
पैदा किया था जिसने पहले,
जिलाएगा तुम्हें वो ही दोबारा ।

पूछें अगर यह कब होगा,
कहो उम्मीद है जल्द होगा,
दुनिया में रहे कम मुद्दत,
ऐसा तुमको प्रतीत होगा ।

डलवा देता लोगों में फ़साद,
शैतान है दुश्मन इंसा का,
बंदे बातें ऐसी किया करें,
जो लोगों की हों पसंदीदा ।

बुला देखो माबूदों को तुम,
ना रखते वो कुछ अधिकार,
ताकते रहते ख़ुदा की तरफ़,
रहमत का करते वो इन्तिजार ।

ख़ुदा ने पहले भेजी थीं,
अगले लोगों को खुली निशानियाँ,
झुठलाया जब उन लोगों ने,
बन्द कर दी भेजनी निशानियाँ ।

करता पैरवी जो शैतान की,
पाता वो जहन्नम की सज़ा,
लेकिन जो ख़ुदा के बन्दे,
उन पर जोर शैतान ना रखता ।

कारसाज़ ख़ुदा ही काफ़ी,
चलाता वो दरिया में कश्ती,
वो ही बचाता तूफ़ानों से,
देता वो ही पाकीजा रोजी ।

था करीब तुम्हें बिचला देते,
काफ़िर मनवा लेते अपनी बात,
साबित कदम ना रखते अगर,
मिलता तुमको दोगुना अज़ाब ।

सांझ से रात अंधेरे तक,
ऐ मुहम्मद, अदा नमाज़ करो,
दिव्य सुबह में क़ुरआन पढ़ना,
क़ुरआन सुबह में पढ़ा करो ।

कहो, मदीने में मुझको,
अच्छी तरह दाखिल करियो,
दीजो जोर व कूवत की मदद,
मक्के से भला बाहर करियो ।

कह दो कि आ गया हक़,
और नाबूद हो गया बातिल,
मोमिनों को शिफा और रहमत,
होती क़ुरआन के ज़रिये नाज़िल ।

पूछते तुमसे रूह क्या है,
कहो, वह ख़ुदा की एक शान,
इल्म दिया गया लोगों को कम,
मुमकिन नहीं रूह का पूरा ज्ञान ।

चाहें तो मिटा दें दिलों से,
किताब जो हम तुम्हें भेजते,
पर रहमत तुम्हारे परवरदिगार की,
बड़ा फ़ज़्ल उसका तुम पे ।

कह दो कि मिल जाएँ अगर,
जिन्न और इंसान दोनों भी,
चाहें वो बनाना ऐसा क़ुरआन,
कर ना सकेंगे ऐसा वो कभी ।

तरह-तरह से करी है बयान,
सब बातें क़ुरआन में हमने,
पर अक्सर लोग क़बूल ना करते,
ईमान ना लाते वो इस पे ।

कहते चमत्कार कर दिखलाओ,
गर चाहते हम लाएँ ईमान,
कह दो पाक मेरा परवरदिगार,
मैं पैगाम पहुँचाने वाला इंसान ।

और हिदायत जब आ पहुँची,
पूछते क्यों हैं इंसान पैगम्बर,
कह दो फ़रिश्तों को ही भेजते,
गर फ़रिश्ते बसते धरती पर ।

दी मूसा को नौ निशानियाँ,
जादू है ये बोला फ़िरौन,
चाहा निकालना उन्हें वहाँ से,
डुबा दिया दरिया में फ़िरौन ।

थोड़ा-थोड़ा नाज़िल किया क़ुरआन,
और धीरे-धीरे उसे उतारा,
ठहर-ठहर कर पढ़ो, सुनाओ,
ख़ुशख़बरी देना काम तुम्हारा ।

पुकारो अल्लाह या रहमान,
नाम ख़ुदा के सब अच्छे,
ना बुलंद, ना मंदी आवाज,
नमाज़ पढ़ो मध्यम स्वर में ।

सब तारीफ़ ख़ुदा ही को है,
जिसने ना बनाया बेटा कोई,
ना शरीक कोई बादशाही में,
मददगार बड़ा उससे ना कोई ।

18. सूर: कहफ़

आयतें सीधी और आसान,
पेचीदगी कोई ना इसमें,
नाज़िल बन्दे पर करी किताब,
रहमत ख़ुदा की है इसमें ।

ख़्याल करो उन जवानों का,
नापसन्द जिन्हें थे और माबूद,
हो अलग कौम से वो जा बैठे,
ना माने वो कौम की झूठ ।

एक ख़ुदा था उनका माबूद,
और पक्का था उनका ईमान,
जा सो रहे एक गार में वो,
किया ख़ुदा ने काम आसान ।

उठे जब एक मुद्दत के बाद,
सोचा सोए बस कुछ ही देर,
रहे तीन सौ नौ साल वो,
वो ही जानता किया जो फेर ।

कारसाज़ उसके सिवा ना कोई,
करता ना वो शरीक किसी को,
जो किताब भेजी है उसने,
पढ़ा करो बस तुम उसको ।

सब्र करो उसकी राजी पर,
याद करो सुबह और शाम,
भागो ना दुनिया के पीछे,
आख़िर दुनिया आती ना काम ।

बयान करो उन दो का हाल,
पास एक के अंगूर के बाग,
हरे-भरे, नहर बहती उनमें,
फल देते थे खूब वो बाग ।

कहा दूसरे से उसने,
हूँ बढ़ कर मैं तुमसे,
होंगे कभी ना बाग तबाह,
पाऊँगा जन्नत मैं उनसे ।

बोला दूसरा मत कुफ्र करो,
उसने ही बनाया है तुमको,
ना जाने वो क्या कर डाले,
ख़ौफ़ ख़ुदा का जरा करो ।

बरबाद हो गए उसके बाग,
मलने लगा हसरत से हाथ,
ख़ुद के हक़ में जुल्म किया,
आया ना कोई उसके साथ ।

हुकुमत उसकी ही सच्ची,
सारे जहाँ का वो ही मालिक,
रखता ग़रूर ना कभी किसी का,
उसी का सिला रखना है मुनासिब ।

दुनिया की जिंदगी मिट्टी सी,
बरसा पानी तो लहक उठी,
हुई सूख के चूरा-चूरा,
हवा के संग में उड़ती फिरी ।

नेकियाँ ही बस बाकी रहतीं,
बदला मिलता उनका अच्छा,
हाज़िर होंगे क़ियामत के दिन,
पाएँगे किया जिसने जैसा ।

अच्छी नहीं शैतान की दोस्ती,
दुश्मन वो है इंसा का,
हुक्मउदूली ख़ुदा की करता,
करता लोगों को गुमराह ।

काम नबियों का देना पैगाम,
चाहे लाओ, ना लाओ ईमान,
पाते सज़ा जालिम गुनाह की,
ख़ुशख़बरी वो जो लाते ईमान ।

करते थे जुल्म कुफ्र से जो,
मिली थी निश्चित मोहलत उनको,
वीरान बस्तियाँ दे रहीं गवाही,
हासिल कुछ ना हुआ उनको ।

अजब है किस्सा मूसा का यह,
हुक्म हुआ मिलो ख़िज़्र से,
उन्हें ख़ुदा से मिला जो इल्म,
चाहा मूसा ने सीखना उनसे ।

कहा ख़िज़्र ने साथ में मेरे,
सब्र से तुम रह ना सकोगे,
जब तक मैं ख़ुद ना बताऊँ,
कुछ मुझसे ना पूछ सकोगे ।

ख़िज़्र ने एक कश्ती फाड़ी,
मार डाला एक लड़के को,
गिरा चाहती थी जो दीवार,
सीधा किया उन्होंने उसको ।

सब्र कर सके ना मूसा,
बार-बार मूसा को टोका,
ख़िज़्र ने तब भेद बताये,
साथ फिर मूसा का छोड़ा ।

कश्ती गरीब लोगों की थी,
छीनना जिसे चाहता था बादशाह,
फाड़ उसे ऐबदार कर दिया,
क्या करेगा अब ले के बादशाह ?

लड़के के माँ-बाप थे मोमिन,
पर लड़का होता बद-किरदार,
बहक ना जाएँ वो दोनों भी,
दिया इसलिए लड़के को मार ।

दीवार दो यतीम लड़कों की थी,
दबा था जिसके नीचे ख़जाना,
चाहा ख़ुदा ने जवां होने पर,
वो लड़के ही पाएँ ख़जाना ।

पूछते हाल जुलक़नैन का तुमसे,
कह दो सुनाता पढ़ कर हाल,
करता रहता वो सामान सफ़र का,
मदद करता था और नेक आमाल ।

जो बन्दे ख़ुदा के सिवा,
बनाते कारसाज किसी और को,
सज़ा देता ख़फ़ा होकर ख़ुदा,
काफ़िर जाएँगे वो दोज़ख़ को ।

स्याही बना कर समुन्दर का पानी,
लिखना जो चाहो उसके गुणगान,
सूख जाएँ चाहे सारे समुन्दर,
पर कर ना सकोगे पूरा गुणगान ।

19. सूर: मरयम

बयान मेहरबानी का ज़करीया पर,
माँगी दुआ दबी जुबान से,
बूढ़ा और कमजोर हो गया हूँ,
नवाजो मुझे एक वारिस से ।

क़बूल फ़रमायी दुआ ख़ुदा ने,
दी ख़ुशख़बरी एक बेटे की,
नाम उसका रखा यहया,
और कहा करेगा वो नेकी ।

माँगी निशानी तो कहा ख़ुदा ने,
तीन दिन तुम चुप ही रहोगे,
सही व सालिम होकर भी,
बात किसी से कर ना सकोगे ।

अता फ़रमायी दानाई ख़ुदा ने,
लड़कपन में ही यहया को,
परहेजगार, माँ-बाप से नेकी,
रहमत पूरी मिली उनको ।

ज़िक्रे मरयम करा किताब में,
थी वो एक पाकीजा औरत,
बख़्शिश मिली ईसा की उन्हें,
मिली ख़ुदा से जिन्हें हिदायत ।

शान नहीं ख़ुदा की यह,
बनाए किसी को अपना बेटा,
करता जब वो कोई इरादा,
हो जाती जब कहता 'हो जा' ।

और याद इब्राहीम की करो,
थे निहायत सच्चे वो पैगम्बर,
जुदा हो गए पिता से अपने,
उनके घर जन्में कई पैगम्बर ।

मूसा का भी ज़िक्र करो,
इस्माईल और इदरीस का भी,
फ़ज़ल ख़ुदा का मिला इन्हें,
सच्चे पैगम्बर थे ये लोग सभी ।

ना-ख़लफ़ कुछ जानशीन हुए,
ख़्वाहिशे नफ़्स में लिप्त रहे,
भूल गए नमाज़ को वो,
गुमराह हुए, वो भटक गए ।

पाएँगे सज़ा जो करते कुफ़्र,
वादा ख़ुदा का झूठा ना होगा,
जो कहते हैं ख़ुदा रखता बेटा,
मददगार कोई उनका ना होगा ।

20. सूर: ता हा

उतारा कुरआन इसलिए नहीं,
कि पड़ जाओ तुम मशक़्क़त में,
ख़ौफ़ जिसे ख़ुदा परवरदिगार का,
नाज़िल हुआ ये उसके लिए ।

उतरा ये उस पाक-जात से,
बनाए जमीं-आसमाँ जिसने,
ऊपर नीचे सब कुछ उसका,
भेद ना उससे कोई छिपे ।

क्या मिली ख़बर तुम्हें मूसा की,
नबी चुना था ख़ुदा ने उन्हें,
मैदाने तुवा पर चमक दिखाकर,
परवरदिगार ने बुलाया था उन्हें ।

कहा, करो इबादत बस मेरी,
पढ़ कर नमाज़ मुझे याद करो,
मानो हुक्म जो होता है तुम्हें,
कोई माबूद ना मेरे सिवा करो ।

कहा, कियामत जरूर आएगी,
पर रखा गुप्त वक़्त उसका,
ताकि हर शख़्स जो करे कोशिश,
पा सके उचित बदला उसका ।

पुछा हाथ में क्या मूसा से,
कहा उन्होंने यह मेरी लाठी,
कहने से जब डाली नीचे,
दौड़ी साँप बनकर लाठी ।

कहा ख़ुदा ने उसे पकड़ लो,
कर देंगे उसे फिर पहले सी,
और बगल में हाथ दबा लो,
पाओगे उसमें नई निशानी ।

फिर जाओ फ़िरौन के पास,
सरकश बहुत वो हो रहा,
मूसा बोले हिम्मत दे मुझे,
और खोल दे मेरी जुबाँ ।

बना कर भाई को मेरा वज़ीर,
ताकत को मेरी तू मजबूत कर,
करें बहुत सी तस्बीह हम तेरी,
उसे काम में मेरे शरीक कर ।

क़बूल की मूसा की दुआ,
फिर ख़ुदा ने उन्हें फ़रमाया,
कहते हैं हम आज तुम्हें,
माँ को तुम्हारी जो बतलाया ।

बन्द कर एक सन्दूक में,
कहा उन्हें मूसा को बहा दे,
जब किनारे सन्दूक जा लगेगा,
उठा लेगा फ़िरौन उन्हें ।

फिर तुम्हारी बहन के जरिए,
माँ का नाम उसे सुझाया,
पालन पोषण तुम्हारा करने,
माँ के पास वापिस पहुँचाया ।

गम दूर किया तुम्हारी माँ का,
पास उनके तुम को भेजा,
रहे कई साल मदयन वालों में,
अब करो तुम काम रिसालत का ।

लेकर साथ भाई को अपने,
फ़िरौन के पास जाओ तुम,
हो रहा बड़ा वो सरकश,
नरमी से उसे समझाओ तुम ।

जुल्म उसके बढ़ ना जाएँ,
बोले दोनों, डर है हमें,
कहा ख़ुदा ने हूँ मैं साथ,
कहना ख़ुदा ने भेजा है हमें ।

और कहना बनी इस्राईल को,
दो अब ना तुम और अज़ाब,
परवरदिगार ने भेजी है निशानियाँ,
जाने दो उन्हें तुम हमारे साथ ।

पहुँचे जब वो फ़िरौन के पास,
पुछा उसने ख़ुदा कौन तुम्हारा,
कहा उन्होंने वो पैदा करता है,
और राह दिखाता, ख़ुदा हमारा ।

दिखलायी सब निशानियाँ उसको,
पर फ़िरौन ने उन्हें झुठलाया,
जादू मान उन बातों को,
जादूगरों को उसने बुलवाया ।

जादूगर हारे और मूसा जीते,
करने लगे सब जादूगर सज्दा,
लाए ईमान वो परवरदिगार पर,
रह गया फ़िरौन मुँह तकता ।

उतरा फ़रमान बनी इस्राईल को,
रातों-रात निकाल ले जाओ,
लाठी मार दरिया को चीर दो,
और उस पार उन्हें ले जाओ ।

चले ना सीधे रस्ते पर,
किया गुमराह जिन्हें फ़िरौन ने,
पीछा किया लश्कर के साथ,
डूब गए सब वो दरिया में ।

गए कौम को पीछे छोड़,
मूसा तूर पर चालीस दिन,
माबूद बना सोने का कौम,
पूजने लगे उसे मूसा बिन ।

किया गुमराह उन्हें सामरी ने,
मिली उसे गुनाह की सज़ा,
जिंदगी भर कहता फिरा वो,
छू ना मुझे, हाथ ना लगा ।

पूछते पहाड़ों के बारे में,
उड़ाकर बिखेर देगा ख़ुदा,
और जमीं को कर हमवार,
मैदान बना छोड़ देगा ख़ुदा ।

फ़ायदा कुछ ना देगी सिफारिश,
कुछ ना चलेगा, उसके सामने,
करता जो जुल्म, उठाएगा बोझा,
होंगे मुँह नीचे उसके सामने ।

ताकि परहेजगार बन जाएँ लोग,
किए क़ुरआन में डरावे बयान,
मोमिन और जो करते नेकी,
उन्हें ना होगा कोई नुकसान ।

करो ना जल्दी क़ुरआन पढ़ने में,
इर्शाद पूरा होने से पहले,
किया करो यह दुआ ख़ुदा से,
दे और भी ज्यादा इल्म तुम्हें ।

याद करो आदम का निकलना,
बहकाना शैतान को उनको,
मना किया खाना जो फल,
खिला दिया वो फल उनको ।

मेहरबानी करी ख़ुदा ने,
बतलायी उनको सीधी राह,
करेगा जो हिदायत का पालन,
होगा नहीं वो कभी गुमराह ।

भुला देता है जो आयतें,
भुला देता ख़ुदा उनको,
होकर रहता जो अंधा,
अंधा उठाता ख़ुदा उनको ।

अल्लसुबह और सांझ से पहले,
याद ख़ुदा की किया करो,
बेहतर रोजी जो वो बख़्शे,
पढ़े नमाज़ घर, हुक्म करो ।

21. सूर: अंबिया

ग़फ़लत में दिल लोगों के,
बातें करते चुपके-चुपके,
आदमी यह तुम्हारे जैसा,
करता कोई जादूगरी ये ।

कहा नबी ने मेरा ख़ुदा,
जानता है सब कहा सुना,
पहले भी जो भेजे नबी,
इंसानों को ही उसने चुना ।

जालिमों की कितनी ही बस्तियाँ,
कर डाली ख़ुदा ने हलाक,
पैदा कर दिए फिर नए लोग,
भागने लगे वो देख अज़ाब ।

पैदा ना किए जमीं-आसमाँ,
और मख़्लूक़, करने को तमाशा,
ग़ालिब करता सच झूठ पर,
झूठों का मिटा देता नामों-निशाँ ।

बना बैठे धरती पर लोग माबूद,
और करते वो उनकी पूजा,
भर जाते जमीं-आसमाँ फ़साद से,
माबूद जो होता, ख़ुदा के सिवा ।

कहो, लाएँ दलील कहीं से,
बनाए जो माबूद उन्होंने,
किताब यह और पहले की,
लिखा नहीं ऐसा किसी में ।

इर्शाद किया करो मेरी इबादत,
ख़ुदा ने पहले भी नबियों को,
बेटा ना कोई बेटी ख़ुदा की,
इज्ज़त वाले सब बन्दे हैं वो ।

करते अमल हुक्म पर उसके,
बढ़ कर वो बोल नहीं सकते,
ख़ुदा जानता उनको बेहतर,
हैबत से उसकी डरते रहते ।

छिपी हैं निशानियाँ ख़ुदा की,
क़ुदरत के हर नजारे में,
लाते फिर क्यों नहीं ईमान,
माँगते क्यों निशानियाँ तुमसे ?

कहते जो हमेशा नहीं जिओगे,
क्या वो जिएँगे तुम्हारे बाद,
करते वो इन्तिजार जिसका,
काश जान वो पाते अज़ाब ?

कहो, नसीहत करता हूँ तुम्हें,
मैं ख़ुदा के हुक्म मुताबिक़,
पर बहरे सुनते ही नहीं,
घिरते अज़ाब में वो जालिम ।

मिलेगा क़ियामत के दिन को,
सबको पूरा-पूरा इंसाफ़,
रत्ती भर ना फ़र्क आएगा,
अपना-अपना सब पाएँगे हिसाब ।

हारून और मूसा को ख़ुदा ने,
अता की मुकम्मल रोशन किताब,
नसीहत मुबारक इस किताब में,
नाज़िल ख़ुदा ने की ये किताब ।

दी थी हिदायत इब्राहीम को,
हाल जानता था वो उनका,
इब्राहीम ने ये कहा कौम से,
ना करो काम तुम गुमराही का ।

कर दिए टुकड़े-टुकड़े,
इब्राहीम ने सब माबूदों के,
छोड़ दिया पर एक माबूद,
जो बड़ा था उन सबमें ।

पूछा कौम ने इब्राहीम से,
माबूदों को तोड़ा किसने,
बड़े माबूद को दिखला इब्राहीम,
बोले ये माबूद तोड़े इसने ।

बोली कौम बुत नहीं बोलते,
ना ये कर सकते कोई काम,
बोले इब्राहीम, फिर क्यों पूजते,
जो करें ना फ़ायदा या नुक्सान ?

लेने बदला, माबूद जो तोड़े,
सोचा दें इब्राहीम को जला,
सर्द कर दी आग ख़ुदा ने,
दी कौम को उसने सज़ा ।

बख़्शी नेक औलाद इब्राहीम को,
और पेशवा उनको बनाया,
देते हुक्म नमाज़, ज़कात का,
समय इबादत करने में लगाया ।

याद करो लूत और नूह को,
दाऊद और सुलेमान को भी,
बख़्शी उन्हें हिक्मत और नुबुवत,
और बख़्शे उन्हें कई इल्म भी ।

दूर की अय्यूब की इल्लत,
बाल-बच्चे भी बख़्शे उन्हें,
इस्माईल और इदरीस जुल्किफ्ल,
दाख़िल किया रहमत में उन्हें ।

क्रोधित हो जुन्नून चल दिए,
सोचा काबू कर ना सकेंगे उन्हें,
पर पुकारा जब हमें उन्होंने,
बख़्शी निजात गम से उन्हें ।

बख़्शा यहया जकरीया को हमने,
बीवी को उनकी दी औलाद,
रूह फूँक, पाक दामन मरयम को,
ईसा की दी हमने सौगात ।

बेकार ना जाएगी नेकी,
पाएँगे जालिम लोग सज़ा,
आएगी जिस दिन क़ियामत,
मिलेगा आमालों का बदला ।

पूजा करते ख़ुदा के सिवा,
काफ़िर वो और माबूद भी,
चिल्लाएँगे, सुन ना सकेंगे,
दोज़ख़ का वो ईंधन होंगे सभी ।

कर देंगे कायनात फिर पैदा,
जैसी करी थी पैदा पहले,
लिखा जबूर में, वारिसे मुल्क,
होंगे ख़ुदा के नेक बन्दे ।

भेजा ख़ुदा ने मुहम्मद को,
सारी दुनिया के लिए रहमत,
करो ख़ुदा की फ़रमाबरदारी,
और करो उसकी ही इबादत ।

22. सूर: हज्ज

बड़ा भयानक होगा वो हादिसा,
जिस दिन आ पहुँचेगी क़ियामत,
काँप उठेगी दुनिया सारी,
एक पल की मिलेगी ना मोहलत ।

शक नहीं फिर जी उठने में,
पैदा किया है सब उसने,
सूखी धरती ज्यूँ हरी कर देता,
सब पर क़ुदरत रखी उसने ।

करेगा फ़ैसला वो सबका,
सबकी ख़बर रखता है वो,
जो जालिम हैं पाएँगे अज़ाब,
सज्दा करते नेक ख़ुदा को ।

फ़रमाया इब्राहीम को ख़ुदा ने,
शरीक ना करना ख़ुदा के साथ,
नेकी जो करते उनके वास्ते,
रखो खाना-ए-काबा को साफ़ ।

करो मुनादी हज करने की,
हाज़िर हों ख़ुदा के घर में,
करें हज्ज़ वो हुक्म मुताबिक़,
याद रखें उसकी दिल में ।

जिन मुसलामानों पर होता जुल्म,
करें लड़ाई कमर कस कर,
हासिल होती मदद ख़ुदा की,
रखते महफ़ूज जो उसके घर ।

झुठलाते जो तुमको लोग,
पहले भी वो रहे झुठलाते,
देता मोहलत एक अरसे की,
फिर अज़ाब उन पर आते ।

परवरदिगार का एक दिन,
हजार वर्ष के होता बराबर,
पूरा करेगा वो वादा अपना,
अज़ाब रहेगा जल्दी आकर ।

जिनके दिल होते बीमार,
करता ख़ुदा उनकी आज़माइश,
शक में रहते काफ़िर लोग,
सीधी राह, नेकों की ख़्वाहिश ।

हिजरत करके जो मर जाते,
बेहतर रोजी ख़ुदा से पाते,
ऐसी जगह दाख़िल वो करता,
सुकून जहाँ पर वो पाते ।

मेहरबानियाँ ख़ुदा की लाखों,
पानी पे चलाता कश्ती को,
गिर ना पड़े आसमाँ जमीं पर,
थामे रखता है वो उसको ।

हर एक उम्मत के लिए,
मुकर्रर करी उसने एक शरीअत,
करें ना झगड़ा तुमसे लोग,
देते रहो तुम उन्हें हिदायत ।

जिन बातों में करते विवाद,
कर देगा क़ियामत को फ़ैसला,
जानता जमीं-आसमाँ की,
दिया किताब में ये सब लिखा ।

पुकारते जिन्हें ख़ुदा के सिवा,
मक्खी भी वो बना नहीं सकते,
जो ले जाए कोई चीज छीनकर,
उसको वो छुड़ा नहीं सकते ।

फ़रिश्तों और इंसानों में से,
कुछ को ख़ुदा चुन लेता,
पहुँचाए पैगाम औरों को वो,
काम मुबारक उनसे लेता ।

करो इबादत उसकी तुम,
रुजूअ करो और सज्दा करो,
जैसा हक़ जिहाद करने का,
राहे ख़ुदा में जिहाद करो ।

चुन लिया है तुम्हें उसने,
बख़्शा तुम्हें इब्राहीम का दीन,
करी ना कोई तंगी तुम पर,
रखो उस पर पूरा यकीन ।

23. सूर: मुअमिनून

कामियाब हो गए ईमान वाले,
उसका हुक्म जो पालन करते,
निकल जाते जो हद से बाहर,
नहीं मीरास वो हासिल करते ।

मिट्टी से किया इंसा पैदा,
एक नई सूरत दी उसको,
आख़िर एक दिन वो मर जाता,
उठते फिर क़ियामत के दिन को ।

पैदा किए सात आसमाँ उसने,
ग़ाफ़िल नहीं ख़ल्क़त से ख़ुदा,
मेंह बरसाता, बाग़ लगाता,
सबको रोजी देता ख़ुदा ।

भेजे नूह हमने कौम में,
तो कहने लगे काफ़िर सरदार,
उतारा ना फ़रिश्ता क्यों ख़ुदा ने,
दीवाना है ये, करो कुछ इन्तिजार ।

जब कौम ने उन्हें झुठलाया,
मदद माँगी ख़ुदा से उन्होंने,
हुक्म ख़ुदा ने तब उन्हें दिया,
बनाओ एक कशती हमारे सामने ।

और चढ़ आए जब पानी,
कश्ती में बैठा लो सब जोड़े,
करो शुक्र परवरदिगार का,
मुबारक जगह वो तुम्हें छोड़े ।

भेजे कितने ही और पैगम्बर,
झुठलाती जिनको रहीं उम्मतें,
बस अफ़साने बन के रह गईं,
हो गईं हलाक वो उम्मतें ।

डरते जो ख़ौफ़े ख़ुदा से,
लाते आयतों पर ईमान,
करते नहीं शरीक और को,
नेक हैं वो सच्चे इंसान ।

लेकिन दिल जिनके ग़फ़लत में,
करते बेहूदा जो बकवास,
भटक गए वो सीधी राह से,
पाएँगे वो सख़्त अज़ाब ।

जीने मरने का वो मालिक,
जमीं-आसमाँ सब उसके हैं,
जान-बूझकर जो फिर जाते,
भटक रहे वो सब झूठे हैं ।

ना कोई उसका है बेटा,
ना कोई माबूद उसके साथ,
जो बयान करते ये लोग,
है ख़ुदा सब उससे पाक ।

सबसे बुलंद शान उसकी,
कोई नहीं उसका मुकाबला,
सबका मालिक, सब जानता वो,
ज़ाहिर हो, या हो पोशीदा ।

कहो, कि गर दिखाए तू अज़ाब,
रखियो मुझको महफ़ूज उससे,
करियो ना जालिमों में शामिल,
दुआ माँगता मैं, ऐ ख़ुदा तुझसे ।

जवाब में बुरी बात के,
कहो बात बहुत अच्छी,
शैतान और उसके वस्वसों से,
कहो, माँगता पनाह मैं तेरी ।

रहेंगे लोग ग़फ़लत में यूँ ही,
पर मौत आएगी जब सिर पर,
कहेंगे भेज दे दुनिया में वापिस,
ताकि चलूँ मैं नेक राह पर ।

पर यह बात हरगिज ना होगी,
जुबाँ पे कुछ, अमल कुछ होगा,
फिर जब फूँका जाएगा सूर,
ना रिश्ते रहेंगे, ना कोई पूछेगा ।

कहेंगे वो बख़्श दे हमको,
ग़ालिब थी कमबख़्ती हम पर,
पर भूले वो जैसे ख़ुदा को,
भुला देगा उन्हें ख़ुदा वहाँ पर ।

24. सूर: नूर

यह एक सूर: क़ुरआन की,
नाज़िल ख़ुदा ने जिसको की,
खुली मतलब वाली आयतें,
फ़र्ज़ मुकर्रर लोगों पर की ।

बदकारी करने वाली औरतें,
और बदकारी करे जो मर्द,
मारो सौ-सौ दुर्रे उनको,
आए तुम्हें कतई ना दर्द ।

बदकार या मुशिरक औरत, मर्द,
मोमिनों पर हैं ये हराम,
अस्सी दुर्रे उनको मारो,
जो नेक औरत पर लगाए इल्ज़ाम ।

बाँधा ख़ुदा पर जब बुहतान,
क्यों ना कहा लाने को गवाह,
समझते जिसे तुम हल्की बात,
हक़ीक़त में था वो बड़ा गुनाह ।

करता है नसीहत ख़ुदा तुमको,
मोमिनों फिर ऐसा काम ना करना,
चाहते जो मोमिनों में फैले बे-हयाई,
अज़ाब दुखदायी पड़ेगा उन्हें भुगतना ।

ख़ुदा जानता सच क्या है,
बन्दे क्या जाने क्या है सच,
ना जाने क्या हो जाता,
होती ना जो उसकी रहमत ?

मानों ना शैतान की बात,
दिखलाता वो ग़लत राह,
ख़ुदा बचाता रहमत से अपनी,
वरना हो जाते सब गुमराह ।

मुनासिब मदद लोगों की करना,
जैसी जरूरत जिसकी हो,
बेहतर माफ़ी, दरगुजर करना,
बख़्श देता ख़ुदा भी तुमको ।

तोहमत लगाते परहेजगारों पर,
रहेगी उन पर हमेशा लानत,
गवाही देंगे उनके सब अंग,
क़ियामत को ज़ाहिर होगा हक़ ।

नापाक औरतें और नापाक मर्द,
बने हैं नापाकों के लिए,
पाक औरतें और पाक मर्द,
बने हैं पाक लोगों के लिए ।

भीतर ना जाओ दूसरों के घर,
बिना इजाज़त या सलाम किए,
लौट आओ वापिस मुड़ कर,
गर वो लौटने को तुमसे कहें ।

मोमिन मर्द और मोमिन औरतें,
रखें अपनी नज़रें नीची,
मोमिन औरतें ओढें ओढनियाँ,
जीनत ज़ाहिर करें ना अपनी ।

मुनासिब निकाह करना बेवाओं का,
गुलामों, लौंडियों पर रहम करना,
हो ना अगर ब्याह की ताकत,
तो पाक दामनी से जीते रहना ।

जमीं-आसमानों का नूर है ख़ुदा,
चाहता जिसे सीधी राह दिखाता,
नेकी करते, ज़िक्रे ख़ुदा करते,
रहमत उन पर वो अपनी बरसाता ।

कुछ ना पाते कुफ्र करने वाले,
प्यासा ज्यूँ मरुस्थल में भटके,
या घोर अंधेरे दरिया में,
ज्यूँ हाथ को हाथ नहीं सूझे ।

कुछ फिर जाते लाकर ईमान,
पक्का उनका ईमान नहीं,
क्या सोचते जुल्म करेंगे रसूल,
लोग ये ज़ालिम है ख़ुद ही ।

करते बन्दगी उसकी प्राणी,
सब तरीके से अपने-अपने,
बादशाह वो सारी कायनात का,
कुदरत रखता वो सब पे ।

मुनासिब है ये मोमिनों के लिए,
हुक्म सुनें और माने उसको,
होंगे कामयाब बस वो ही लोग,
ख़ौफ़े ख़ुदा का डर जिनको ।

लाते ईमान, नेकी पर चलते,
करता वादा ख़ुदा उनसे,
बना देगा मुल्क का हाकिम,
जैसे बनाए पहले उनसे ।

किए इजाज़त के वक़्त मुकर्रर,
तीन वक़्त जो पर्दे के,
बड़ों की तरह लें वो इजाज़त,
जब हो जाएँ लड़के बड़े ।

जब हाज़िर हो रसूल के पास,
उनकी इजाज़त का रखो अदब,
पड़ ना जाए मुसीबत में कहीं,
हुक्म की जो करते मुख़ालफ़त ।

25. सूरः फ़ुर्क़ान

बड़ी बरकत वाला है ख़ुदा,
किया नाज़िल जिसने कुरआन,
बादशाह वो सारे जहान का,
पाक जात ना कोई सन्तान ।

माबूद बनाए जो औरों के,
ना उनको कोई अधिकार,
कहते कुरआन को जो मनगढ़ंत,
करते हैं वो बातें बेकार ।

कहते हैं ये कैसा पैगम्बर,
खाना खाता, चलता-फिरता,
क्यों ख़ुदा ने नहीं उतारा,
कोई ख़जाना या कोई फ़रिश्ता ?

हो गए हैं ये गुमराह,
पा नहीं सकते जो रस्ता,
बना देता गर ख़ुदा चाहता,
बेहतर जन्नत से भी गुलिस्ता ।

ये जो क़ियामत को झुठलाते,
तैयार है दोज़ख़ उनके लिए,
चीख पुकार करेंगे तब ये,
दोज़ख़ में जब जाएँगे डाले ।

पूछो यह बेहतर या जन्नत,
परहेजगारों से जिसका वादा,
मिलेगा वो जो वो चाहेंगे,
पूरा होगा ख़ुदा का वादा ।

भेजे थे पहले जो पैगम्बर,
वो भी थे ऐसे ही इंसान,
खाते-पीते, चलते-फिरते,
इसी दुनिया के वो थे इंसान ।

अफ़सोस करेंगे जालिम एक दिन,
क्यों दिया ना साथ रसूल का,
बहकाया नसीहत आने के बाद,
शैतान ने हमसे दगा किया ।

झुठलाया जिस-जिस कौम ने,
कर दिया उनको हलाक,
फ़िरौन, नूह, समूद की कौमें,
ना जाने ऐसी कितनी मिसाल ।

देखो उस शख़्स को जिसने,
ख़्वाहिशे नफ़्स को माबूद बनाया,
हो नहीं सकते तुम निगेहबां,
बेहतर उससे तो है चौपाया ।

बख़्शी उसने कितनी नेमतें,
और क़ुरआन नसीहत के लिए,
करते ना जो लोग क़बूल,
हिदायत नहीं है उनके लिए ।

मानो ना कहा काफ़िरों का तुम,
लड़ो उनसे हुक्म मुताबिक़,
बेकार माबूदों की करते पूजा,
विरोध ख़ुदा का करते काफ़िर ।

पानी से किया इंसा पैदा,
और पैदा किया रिश्ता-नाता,
छह दिन में बनाया जमीं-आसमाँ,
फिर अर्श पर वो जा ठहरा ।

सूरज-चाँद बना कर उसने,
दिन और रात का चक्र चलाया,
निशानियाँ छिपी उसकी इसमें,
जो समझा उसने किया शुक्रिया ।

ख़ुदा के बन्दे जो होते,
चलते जमीं पर धीरे से,
बातें ज़ाहिलाना भी जो करते,
करते सलाम वो उनसे ।

करते सज्दा ख़ुदा के आगे,
रातें बिताते उसकी याद में,
ख़र्चा करते जरूरत के मुताबिक़,
लगे रहते उसकी इबादत में ।

किया हराम ख़ुदा ने जो,
क़त्ल नहीं उसे करते वो,
करते नहीं वो बदकारी,
शरीअत का पालन करते वो ।

करते नहीं लेकिन जो ऐसा,
दो गुना अज़ाब पाएँगे वो,
और जो कर लेते तौबा,
बख़्शता गुनाह उनके वो ।

देते नहीं जो झूठी गवाही,
सुनते हैं नसीहत गौर से,
दिल का चैन और परहेजगारी,
माँगते यही दुआ उससे ।

ऊँचे-ऊँचे महल मिलेंगे,
उनको सब्र के बदले में,
मुलाक़ात करेंगे वहाँ फ़रिश्ते,
और होगी दुआ सलाम उनमें ।

कह दो गर नहीं पुकारते,
तुम मेरे परवरदिगार को,
परवाह नहीं कुछ वो करता,
सज़ा झूठ की मिलेगी तुमको ।

26. सूर: शुअरा

करो हलाक ना अपने आपको,
लाते ना जो लोग ईमान,
फेर लेते नसीहत से मुँह,
झुठला चुके हैं ये कुरआन ।

जिसकी हँसी उड़ाते ये,
होगी हक़ीक़त अब मालूम,
छिपी निशानी हर शै में,
चाहें तो कर लें मालूम ।

हुक्म दिया मूसा को जाओ,
डरते नहीं क्या जालिम लोग,
बोले मूसा डरता हूँ मैं,
झूठा ना समझे, मुझे वो लोग ।

तंग होता है मेरा दिल,
और रूकती है मेरी जुबान,
साथ चले हारून भी मेरे,
कर इर्शाद तू ऐसा फ़रमान ।

और हुई जो मुझसे खता,
क़त्ल हुआ एक हाथ से मेरे,
डरता हूँ कहीं मिले ना सज़ा,
मार ना डाले फ़िरौन मुझे ?

फ़रमाया यह हरगिज ना होगा,
जाओ दोनों लेकर निशानियाँ,
साथ तुम्हारे हूँगा मैं हर दम,
दिखलाना उन्हें मेरी निशानियाँ ।

कहा फ़िरौन ने भूल गए क्या,
उम्र बितायी जो साथ हमारे,
गुनाह किया तुमने सो किया,
लगता है तुम हो ना-शुक्रे ?

हुई अचानक थी वो ख़ता,
बोले मूसा मैं भाग गया,
बख़्शा इल्म, नुबुवत ख़ुदा ने,
और तुमको यह पैगाम दिया ।

बनी इस्राईल को तुमने,
रखा है बना कर अपना गुलाम,
जाने दो साथ उन्हें मेरे,
मानों ख़ुदा का तुम फ़रमान ।

ख़ुदा है मालिक सारे जहाँ का,
माना फ़िरौन ये बात नहीं,
कहा मूसा को दिखलाओ निशानी,
देखीं, पर लाया यकीन नहीं ।

सरदारों से फिर बोला फ़िरौन,
मूसा तो है एक जादूगर,
चाहता मुल्क से तुम्हें भगाना,
अपने जादू के बल पर ।

करने मुकाबला मूसा का,
सब जादूगर उसने बुलवाए,
डाला उन्होंने अपना जादू,
पर मूसा से जीत ना पाए ।

उनकी रस्सी और लाठी सब,
जो भी था उनका जादू,
निगल गयी लाठी मूसा की,
चला ना उनका कुछ जादू ।

गिरे सज्दे में सब जादूगर,
लाए ख़ुदा पर सब ईमान,
धमकाया फ़िरौन ने उनको,
डिगा ना सका उनका ईमान ।

फ़रमाया ख़ुदा ने मूसा को,
बनी इस्राईल को ले लो साथ,
किया जाएगा पीछा तुम्हारा,
निकल जाओ तुम रातों-रात ।

पीछा करते दौड़े फ़िरौनी,
निकल-निकल अपने घर से,
पलटी बाजी, बनी इस्राईल,
बन गए वारिस उनके ।

निकल सुबह को पीछा किया,
पहुँच गए वो उनके पास,
डरी बनी इस्राईल, पकड़े गए,
लेकिन ख़ुदा था उनके साथ ।

हुक्म हुआ तब मूसा को,
दे मारो तुम दरिया पर लाठी,
पार उतर गयी बनी इस्राईल,
दो हिस्सों में बँट गया पानी ।

जब पहुँची फ़िरौन की सेना,
डूब गए सब वो पानी में,
बच गए मूसा और साथी,
बड़ी निशानी छिपी इसमें ।

इब्राहीम का भी हाल सुना दो,
नूह, हूद के किस्से सुना दो,
ऊँची मीनारे बनाते थे आद,
क्या हश्र हुआ इन्हें बतला दो ।

समूद और कौम लूत की,
ईमान ना लाते थे जो लोग,
काम गुनाह का करते थे,
बरबाद हो गए सब वो लोग ।

झुठलाया ऐसे ही शुऐब को,
बन वालों ने बात ना मानी,
अज़ाब ने उनको आ पकड़ा,
ख़ुदा की इस किस्से में निशानी ।

नाज़िल किया क़ुरआन ख़ुदा ने,
फ़रिश्ता ले कर इसे उतरा,
करते रहो नसीहत लोगों को,
दिल पे तुम्हारे किया है इल्का ।

पहले उतरी हैं जो किताबें,
बात लिखी है यह उनमें,
क्या सनद यह काफ़ी नहीं,
जानते इसे जो उलेमा इनमें ।

शैतान लेकर नाज़िल ना हुआ,
यह पवित्र किताब क़ुरआन,
ना ताकत, ना उसे मुनासिब,
ना सुन सकता वो क़ुरआन ।

झूठ बोलते, गुनाह करते,
उन पर उतरता है शैतान,
कहाँ लौट कर जाएँगे वो,
जल्दी लेंगे जालिम ये जान ।

27. सूर: नम्ल

अता किया जाता है क़ुरआन,
तुम्हें तुम्हारे ख़ुदा की ओर से,
मोमिनों के लिए है ख़ुशख़बरी,
अज़ाब उन्हें जो नकारते इसे ।

गए आग लेने जब मूसा,
आयी उनको आवाज ख़ुदा की,
रहमत मिली, नुबुवत बख़्शी,
मिली निजात कौम को उनकी ।

बख़्शा इल्म दाऊद, सुलेमान को,
बने सुलेमान उनके जानशीन,
सिखलायी उन्हें जानवरों की बोली,
और इनायत उन्हें करी हर चीज ।

लश्कर जिन्न, इन्सान, परिंदों के,
जमा सुलेमान के लिए किए,
हर प्राणी की अलग जमाअत,
करी इकठ्ठी उनके लिए ।

हुदहुद पक्षी ने एक दिन,
आकर उन्हें यह ख़बर सुनायी,
सबा शहर में, बड़े तख़्त पर,
बैठी, राज करती एक रानी ।

रानी और उसके शहर वाले,
करते हैं सूरज को सज्दा,
रोके हुए है शैतान उनको,
दिखाता उनको आमाल सजा ।

सुलेमान ने भेजा एक ख़त,
हुदहुद गया उसे लेकर,
पढ़ा मलिका ने मश्वरा किया,
भेजा कासिद तोहफ़ा लेकर ।

दिया तोहफ़ा जब सुलेमान को,
क़बूल उन्होंने किया ना तोहफ़ा,
बेहतर है ख़ुदा देने वाला,
करता वो ही हर चीज अता ।

पूछा उन्होंने अपने लोगों से,
क्या कोई ऐसा है तुममें,
उड़ा ले आए तख़्त मलिका का,
उसके यहाँ आने से पहले ?

करी पेशकश एक जिन्न ने,
पर हाज़िर था एक इल्म वाला,
पलक झपकने से पहले उसने,
तख़्त वहाँ हाज़िर कर डाला ।

मलिका का लेने इम्तिहान,
सूरत तख़्त की बदल डाली,
पूछा मलिका जब आयी वहाँ,
क्या तख़्त तुम्हारा है ऐसा ही ?

कुछ पल निहार उस तख़्त को,
मलिका बोली यह है वैसा ही,
और आपकी शान और बड़ाई,
मालूम मुझे पहले ही हो गयी ।

मना किया सुलेमान ने उसको,
इबादत करना किसी और की,
पहले तो वह थी काफ़िर,
अब करे इबादत सिर्फ़ ख़ुदा की ।

मलिका को जब ले गए महल में,
फ़र्श लगा पानी का हौज उसे,
जब जाना शीशे लगे फ़र्श में,
बोली मैं लायी ईमान ख़ुदा पे ।

सालेह को भेजा समूद की ओर,
बोले इबादत करो ख़ुदा की,
पर फ़साद वो लोग करते थे,
माने ना वो बात सालेह की ।

क़सम खायी छापा मारेंगे,
सालेह के घर रात में,
कुछ कर पाते उससे पहले,
हलाक कर दिया उन्हें ख़ुदा ने ।

समझाया ऐसे ही लूत ने,
छोड़ो बे-हयाई कहा कौम को,
हुए लाजवाब तो बोली कौम,
निकाल बाहर करो लूत को ।

मेंह बरसा कर तबाह कर दिया,
ख़ुदा ने लूत की कौम को,
बख़्शी निजात पत्नी के सिवा,
लूत और उनके परिजनों को ।

सब तारीफ़ ख़ुदा को ही मुनासिब,
सलाम बन्दों पर जिनको चुना,
वो ही तो सब करता-धरता,
माबूद नहीं कोई उसके सिवा ।

पैदा किया ख़ल्क़त को उसी ने,
फिर बार-बार उसे पैदा करता,
देता है सबको वो रोजी,
जो कुछ करता, बस वो करता ।

कैसे हो सकता कोई और माबूद,
गर हो सच्चे, पेश दलील करो,
जानता नहीं कोई गैब की बातें,
अंजामें आख़िरत से मुशिरकों डरो ।

छिपी हैं जो बातें सीने में,
जानता है वो सब परवरदिगार,
जिन बातों में करते इख्तिलाफ,
कर देगा फ़ैसला वो परवरदिगार ।

हो हक़ पर तुम रखो भरोसा,
सुना नहीं सकते मुर्दों को बात,
जो ईमान आयतों पर लाते,
हो जाते हैं वो फ़रमाबरदार ।

रहे आयतें जो झुठलाते,
किए जाएँगे सब वो जमा,
पूरा होगा वादा ख़ुदा का,
जुल्म की वो पाएँगे सज़ा ।

जिस दिन फूँका जाएगा सूर,
उड़ते दिखेंगे पर्वत बादल से,
घबड़ा उठेंगे जो हैं जालिम,
होंगे बे-ख़ौफ़ ईमान वाले ।

पूज्य बनाया मक्का को जिसने,
इबादत उस मालिक की करूँ,
कहो, हुक्म यही हुआ मुझे,
आज्ञा का पालन उसकी करूँ ।

28. सूर: क़सस्

मूसा और फ़िरौन का हाल,
ऐ मुहम्मद, सुनाते हैं तुम्हें,
बतलाते सही बात इसलिए,
मोमिन जान सकें जिससे ।

मुल्क का राजा था फ़िरौन,
बाँटा गिरोह में लोगों को,
बेटे मारता एक गिरोह के,
जीने देता उनकी बेटियों को ।

हम चाहते थे करना एहसान,
किए गए थे जो कमजोर,
पेशवा उन्हें बना दें हम,
और थमा दें मुल्क की डोर ।

किया हुक्म मूसा की माँ को,
जब देखो तुम डर की बात,
ना करना ख़ौफ़, ना रंज करना,
मूसा को देना दरिया में डाल ।

बहकर पहुँचे फ़िरौन के पास,
पास रखा उसने उनको,
पीछे-पीछे बहन को भेजा,
दूर से देखे वह उनको ।

कर दिए थे दूध हराम,
हमने मूसा पर पहले से,
कहा बहन ने घर बतलाती,
पालन उसका जहाँ हो सके ।

पहुँचाया इस तरह वापिस,
हमने मूसा को माँ के पास,
पूरा किया वायदा अपना,
माँ ने ली चैन की सांस ।

जवान हो गए जब मूसा,
हिम्मत और इल्म उन्हें बख़्शा,
हुए शहर में जब दाख़िल,
दो लोगों को लड़ते देखा ।

एक कौम का था उनकी,
माँगी उसने मूसा से मदद,
ज्यूँ मूसा ने एक मुक्का मारा,
मारा गया वो दूसरा शख़्स ।

मूसा ने सोचा गुनाह हुआ,
बहकाया शैतान ने उनको,
परवरदिगार से माँगी माफ़ी,
बख़्श दिया ख़ुदा ने उनको ।

मदयन की ओर चले मूसा,
एक दृश्य उन्होंने वहाँ देखा,
देखा पानी पीते चोपायों को,
और दो स्त्रियों को खड़े देखा ।

पूछा मूसा ने जब उनसे,
बोली बकरियाँ प्यासी हैं हमारी,
जब तक चले ना जाएँ चरवाहे,
पिला नहीं सकते हम पानी ।

मदद करी मूसा ने उनकी,
बकरियों को पिला दिया पानी,
फिर साए में बैठ गए वो,
आस ख़ुदा की मन में मानी ।

वापिस आयी तब एक उनमें से,
बोली पिता ने बुलवाया तुम्हें,
करी जो तुमने हमारी मदद,
चाहते हैं बदला दें वो तुम्हें ।

इकरार हुआ पिता और मूसा में,
ब्याह देगा उन्हें वह एक बेटी,
पर मूसा को आठ बरस तक,
करनी पड़ेगी सेवा उनकी ।

हुई मुद्दत पूरी तो चले,
मूसा लेकर घर को साथ,
थोड़ी दूर पहुँच के उनको,
दिखी तूर पर्वत पर आग ।

गए उस तरफ़ जब मूसा,
एक पेड़ से सुनी आवाज,
मैं ख़ुदा, तुमसे मुखातिब,
लाठी अपनी नीचे दो डाल ।

देखा लाठी को हरकत करते,
डरे मूसा, वापिस हो लिए,
कहा हमने, हिम्मत रखो,
है ये बुलावा, तुम्हारे ही लिए ।

गिरेबान में हाथ डालकर,
बाहर निकालो अपना हाथ,
बगैर एब के सफ़ेद चमकेगा,
लो सिकौड़ तुम अपना हाथ ।

जाओ फिर फ़िरौन के पास,
हो रहे नाफ़रमान वो लोग,
मूसा बोले डरता हूँ मैं,
मार डालेंगे मुझको वो लोग ।

हारून बनाकर साथी मेरा,
भेजो उसको मेरे साथ,
तस्दीक करेगा हारून मेरी,
जुबाँ भी उसकी ज्यादा साफ़ ।

दीं हैं तुमको जो निशानियाँ,
फ़रमाया करेंगी मदद तुम्हारी,
पहुँच सकेंगे ना फ़िरौनी तुम तक,
मज़बूत करेंगे हम तुमको ।

झुठलाया फ़िरौन ने उनको,
दिया बाप-दादा का हवाला,
बोला फिर अपने लोगों से,
ख़ुदा ना तुम्हारा मेरे अलावा ।

कहा, पका कर ईंटें तुम,
एक ऊँचा सा महल बना दो,
चढ़ जाऊँ मैं ख़ुदा की ओर,
साबित कर दूँ झूठा इसको ।

पर फ़िरौन की चली ना एक,
लश्कर सहित वो पकड़ा गया,
होता यही अंजाम जालिमों का,
दरिया में उनको डुबा दिया ।

दी किताब मूसा को हमने,
हलाक उम्मतों को करने के बाद,
तुम वहाँ तब मौजूद ना थे,
है लम्बी मुद्दत पहले की बात ।

रहमत है तुम्हारा भेजा जाना,
ताकि तुम कर सको हिदायत,
पहले जहाँ आया नहीं कोई,
उन लोगों को मिले नसीहत ।

कह ना सकें रसूल ना भेजा,
वरना ले आते हम भी ईमान,
लेकिन जब हक़ आ पहुँचा,
कहते क्यों ना मिला निशान ?

जब मूसा को दी थी निशानियाँ,
कुफ़्र क्या तुमने नहीं किया,
कहो कि जो हो तुम सच्चे,
दूसरी किताब दो हमें दिखा ।

जो ना करते ये बात क़बूल,
समझो ख़्वाहिशों की पैरवी करते,
ज्यादा उससे कौन गुमराह,
जो चलते ख़्वाहिशों के पीछे ?

दिया जाएगा दो गुना बदला,
ख़ुदा के हुक्मबरदारों को,
कर नहीं सकते तुम हिदायत,
मर्जी अगर ना उसकी हो ।

आ जाएगी जिस दिन क़ियामत,
जो गुमराह थे, होंगे बेजार,
शरीक ना कोई काम आएगा,
ना ख़ुदा सुनेगा उनकी पुकार ।

मूसा की कौम से था कारून,
ख़ुदा ने दी बेशुमार दौलत,
पर इतराता दौलत पर अपनी,
था ना ख़ुदा का शुक्रगुजार ।

निकला एक दिन ठाठ से वो,
कहा किस्मतवाला लोगों ने उसे,
पर जिनको था इल्म वो बोले,
सवाब नेकी का बेहतर इससे ।

आयी जब रात, धसा धरती में,
कारून और घर उसके साथ,
कर ना सकी मदद धन-दौलत,
पल में हो गया वो बरबाद ।

हो जाएगी हर चीज फ़ना,
लौट जाएगा सब उसको,
बाकी रहेगी बस नेकी,
बेहतर बदला मिलेगा उनको ।

29. सूर: अंकबूत

जो कहते हम ईमान ले आए,
क्या आज़माइश होगी ना उनकी,
पहले भी आज़माए गए लोग,
करता ख़ुदा आज़माइश सब की ।

करते हैं जो काम बुरा,
समझे क्या काबू से बाहर,
वक़्त जरूर वह आने वाला,
किया जिसे ख़ुदा ने मुकर्रर ।

मेहनत करते हैं जो लोग,
होता उनका अपना फ़ायदा,
ना एहसान ख़ुदा पर कोई,
उसे ना दुनिया की परवा ।

दिया हुक्म नेक सुलूक करें,
इंसा अपने वालिदों के साथ,
गर कहें शिर्क करने को वो,
मुनासिब नहीं मानना वो बात ।

कहते काफ़िर हम बोझ उठा लेंगे,
गर हमारे तरीके की करो पैरवी,
गुनाहगार ख़ुद बोझ उठाएगा,
काफ़िर पर बोझा औरों का भी ।

याद करो तुम नबियों को,
नूह, इब्राहीम और लूत को,
देते थे वो ख़ुदा का पैगाम,
माने ना लोग नसीहत को ।

बख़्शी निजात उसने नबियों को,
और उनको जो लाए ईमान,
लेकिन जो रहे उन्हें झुठलाते,
उठाना पड़ा उन्हें भारी नुक्सान ।

बनाते कारसाज़ जो औरों को,
उनकी मिसाल मकड़ी की सी,
घर जो बनाती वो अपना,
होता सबसे कमजोर वही ।

ऐ मुहम्मद, पढ़ा करो क़ुरआन,
और नमाज़ अदा किया करो,
जानता ख़ुदा जो तुम करते,
ज़िक्र ख़ुदा का किया करो ।

झगड़ो ना अहले किताब से,
करते ना जो बे-इंसाफ़ी,
कह दो रखते हम ईमान,
किताबें जो तुम पर उतारी ।

जो किताब नाज़िल की तुम पर,
पढ़ ना सकते थे तुम पहले,
ना तुम को आता था लिखना,
इल्म दिया ये सीने में तुम्हें ।

कह दो ख़ुदा ही गवाह काफ़ी,
सब देखता, सब जानता वो,
बातिल को मान, ख़ुदा नकारते,
नुक्सान बड़ा उठाने वाले वो ।

खेल-तमाशा दुनिया की जिंदगी,
रहेगा सदा आख़िरत का घर,
ना शिर्क करो, ना ना-शुक्री,
ना बाँधो झूठे बुहतान ख़ुदा पर ।

30. सूर: रूम

जीत जाएँगे रूम वाले,
हो गया ये हुक्म ख़ुदा का,
हो जाएँगे ख़ुश मोमिन,
बस वक़्त लगेगा थोडा सा ।

है ग़ालिब और मेहरबान ख़ुदा,
जिसे चाहता वो मदद देता,
करता ना कभी वादा खिलाफ़ी,
पक्का होता उसका वादा ।

पर अक्सर लोग नहीं जानते,
बस वो जानते दुनिया की जिंदगी,
ग़ाफ़िल हैं आख़िरत की तरफ़ से,
करते नहीं वो ख़ुदा की बंदगी ।

क्या गौर नहीं करते दिल में,
जो कुछ है किया उसने पैदा,
देख लें कर सैर मुल्क की,
क्या उन लोगों का अंजाम हुआ ?

थी ज्यादा उनकी ताकत,
और ज्यादा आबाद करी धरती,
निशानी लेकर आते रहे पैगम्बर,
पर बात उन्होंने मानी ना उनकी ।

किया जुल्म उन्होंने ख़ुद अपने पर,
ख़ुदा ना जुल्म किसी पर करता,
लगे जो रहते झुठलाने में उसे,
अंजाम बुरा उनका हो रहता ।

फिर पैदा कर देगा वो,
जिसने किया है पहले पैदा,
ना-उम्मीद होंगे गुनाहगार बन्दें,
होगी क़ियामत जिस दिन बरपा ।

सिफ़ारिश ना करेगा शरीक कोई,
वो भी उनको इंकार करेंगे,
जिस दिन क़ियामत आ जाएगी,
फ़िर्कों में अलग वो बँट जाएँगे ।

करते जो नेकी, लाते ईमान,
होंगे ख़ुशहाल, वो जन्नत पाएँगे,
करते जो कुफ्र, आयतें झुठलाते,
होंगे बदहाल, वो अज़ाब पाएँगे ।

तो सुबह और शाम के वक़्त,
ख़ुदा की तुम तस्बीह करो,
दोपहर और तीसरे पहर में भी,
याद ख़ुदा की किया करो ।

वही जिंदों को मुर्दों से निकालता,
और मुर्दों को निकालता जिंदों से,
हरी करता सूखी जमीं को जैसे,
वैसे ही निकालेगा तुम्हें जमीं से ।

छिपी हुई उसकी निशानियाँ,
मिट्टी से तुम्हें बनाने में,
तुम्हें जीवन साथी देने में,
पैदा जमीं-आसमाँ करने में ।

समझाता एक मिसाल से तुमको,
माल तुम्हें जो ख़ुदा ने बख़्शा,
क्या तुम्हारा कोई भी गुलाम,
शरीक उस माल में हो सकता ?

मगर जालिम हैं जो लोग,
ख़्वाहिशों के ही पीछे चलते,
करे जिसको ख़ुदा गुमराह,
कभी हिदायत नहीं पा सकते ।

चले जाओ सीधा मुँह किए,
एक ख़ुदा के रस्ते पर,
पैदा किया जिस पर उसने,
अडिग रहो उस फितरत पर ।

ख़ुदा की दी उस फितरत में,
तब्दीली नहीं कोई हो सकती,
जानते नहीं पर अक्सर लोग,
यही है सीधी राह दीन की ।

करो ना दीन के टुकड़े-टुकड़े,
बँट जाओ ना फ़िर्कों में तुम,
मज़ा चखाता जब रहमत का,
करो ना शिर्क, ख़ुदा से तुम ।

ख़ुश होता है ख़ुदा उनसे,
अदा करते हक़ जो औरों का,
मुनासिब नहीं सूद का लेन-देन,
जो देता जकात, बरकत पाता ।

वो ही जिलाता, रोजी देता,
मारता वो, फिर पैदा करता,
शान ख़ुदा की बुलंद निराली,
शरीक नहीं कोई हो सकता ।

वो ही हवाओं को चलाता,
आसमान में बादल फैलाता,
जहाँ चाहता बरसाता पानी,
सूखी धरती में जान डालता ।

बेशक करता मुर्दों को जिंदा,
कादिर है ख़ुदा हर चीज पर,
बहरों को बात सुना नहीं सकते,
चल देते जो पीठ फेर कर ।

31. सूर: लुक्मान

रखते जो आख़िरत पर यकीन,
नमाज़ के पाबन्द, देते जकात,
ये ही लोग हिदायत पर हैं,
पाएँगे ये ही लोग निजात ।

लुक्मान को बख़्शी थी हिक्मत,
शुक्र करो ख़ुदा का तुम,
करो शुक्र या ना-शुक्री,
अपने ही लिए करते हो तुम ।

करो याद उस वक़्त की लोगों,
लुक्मान ने की बेटे को नसीहत,
कहा, कभी तुम शिर्क ना करना,
जुल्म बड़ा है करना शिरकत ।

करो शुक्र ख़ुदा का तुम,
माँ-बाप का भी शुक्र अदा करो,
गर जो कहें करने को शिर्क,
तो उस पर तुम ना गौर करो ।

दुनिया में दो उनका साथ,
चलो नेक रस्ते पर तुम,
छोटे से छोटा कोई अमल,
छिपा नहीं सकते उससे तुम ।

रखना नमाज़ की पाबन्दी,
देना अच्छे कामों का हुक्म,
बुरी बातों से करो मना,
सब्र कष्ट में रखना तुम ।

ना गाल फुलाना लोगों से,
रहना ना अकड़े जमीं पे तुम,
मुनासिब अपनानी दर्मियानी राह,
रखना आवाज को नीची तुम ।

क्या देखा नहीं यह तुमने,
सब किया ख़ुदा ने काबू तुम्हारे,
पूरी की सब नेमतें तुम पर,
पर कुछ रहते सदा झगड़ते ।

ना इल्म उन्हें, ना ही हिदायत,
ना रखते वो रोशन किताब,
मन्जूर ना सीधी राह पकड़ना,
शैतान दिलाता दोज़ख़ के अज़ाब ।

जाएँगे लौट कर सभी ख़ुदा को,
पाएँगे अपने कर्मों का अंजाम,
जानता ख़ुदा दिल की बातें,
बुराई का देता बुरा अंजाम ।

जो भी जमीं-आसमाँ में है,
है वो मालिक उन सबका,
तारीफ़ उसी की है सारी,
बेशक वो ख़ुदा है बेपरवा ।

कलम बना लो सब पेड़ों की,
सात समुन्दर स्याही कर लो,
ख़त्म ना होंगी उसकी सिफ़तें,
चाहे कोशिशें कितनी कर लो ।

उसकी मैहर से कश्ती चलती,
तूफां से बच जाते लोग,
फिर ना-शुक्रे वो हो जाते,
अक्सर वादा ना निभाते लोग ।

सच्चा एक ख़ुदा का वादा,
धोखे-फ़रेब से तुम बचना,
होगा कल क्या वो ही जानता,
रखता वो ही इल्म मौत का ।

32. सूर: सज्दा

बेशक यह किताब हुई नाज़िल,
सारे जहाँ के परवरदिगार से,
ना बनाया इसे रसूल ने,
बर-हक़ है ख़ुदा की ओर से ।

उन लोगों को करो हिदायत,
आया जहाँ ना पहले कोई,
मिले रास्ता सब लोगों को,
बिना हिदायत रहे ना कोई ।

छह दिन में किए पैदा,
जमीं-आसमाँ और सब चीजें,
फिर अर्श पर हुआ क़ायम,
ख़ुदा बना कर सब चीजें ।

प्रबन्ध करता हर काम का वो,
जानता सब छिपा और ज़ाहिर,
कौशल से सब उसने बनाया,
रहम वाला, सब पर ग़ालिब ।

शुरू मिट्टी से कर इंसा को,
दुरुस्त किया इंसा का बदन,
फूँकी रूह ख़ुदा ने उसमें,
हुआ ऐसे इंसा का जनम ।

बहुत कम शुक्र करते हैं लोग,
कहते, फिर क्या पैदा होंगे,
जब फ़रिश्ता रूह कब्ज करेगा,
वापिस ख़ुदा को तुम होंगे ।

ताज्जुब करो तुम, जब देखो,
गुनाहगार सर को झुकाए होंगे,
करेंगे मिन्नत भेज दो वापिस,
जाकर हम नेक आमाल करेंगे ।

पर ना मिलेगा उनको मौका,
चखेंगे वो मज़े आग के,
भुला दिया था उन्होंने जैसे,
हम भी उन्हें भुला देंगे ।

हमारी आयतों पर लोग वही,
लाते हैं अपना ईमान,
करी जाती जब उन्हें नसीहत,
झुकते सज्दे में जो इंसान ।

तारीफ़ के साथ परवरदिगार की,
करते हैं तस्बीह वो लोग,
ख़र्च करते वो नेक राह में,
सदा पुकारते हमें वो लोग ।

मोमिन, और नाफ़रमान हों जो,
कभी बराबर हो नहीं सकते,
नाफ़रमानों के लिए है दोज़ख़,
बनी बहिश्त मोमिनों के वास्ते ।

कर देगा फ़ैसला परवरदिगार,
इख़्तिलाफ़ का क़ियामत के दिन,
कर ना सकेंगे काफ़िर कुछ भी,
करेगा फैसला ख़ुदा जिस दिन ।

मूसा को दी हमने किताब,
बेशक मिलोगे तुम उससे,
बनी इस्राईल को मिली हिदायत,
और बनाए पेशवा उनमें से ।

33. सूर: अहज़ाब

डरते रहना ख़ुदा से, ऐ नबी,
जालिमों का कहा ना मानना,
की जाती जो तुम पर नाज़िल,
पैरवी उसकी करते रहना ।

रखना भरोसा ख़ुदा पर तुम,
कारसाज़ ख़ुदा ही काफ़ी,
यूँ ही कुछ कह देने से,
बात ना क़ायम वो हो जाती ।

असली पिता के नाम से ही,
पुकारा करो तुम लयपालकों को,
पसंद ख़ुदा को है यह बात,
अपना बेटा कहो ना उनको ।

ग़लती से गर कुछ हो जाए,
उसका तुम पर गुनाह नहीं,
गर इरादा दिल में ना हो,
करता वो उसकी पकड़ नहीं ।

मोमिनों पर हक़ नबियों का,
होता उनकी जान से ज्यादा,
और जो होती पत्नी रसूल की,
मोमिनों के लिए होती वो माता ।

याद करो मेहरबानी ख़ुदा की,
जब हमला फ़ौज करने को आयी,
भेजे ऐसी हवा और सेना,
नज़र नहीं जो तुमको आयी ।

तुम पर फ़ौज जब चढ़ आयी,
करी तुम्हारी हमने आज़माइश,
तो बोले दिल में ग़फ़लत वाले,
नबी का वादा था ना सच्चाई ।

लौट चलो कहते थे कुछ,
कुछ बोले घर खुले पड़े,
मंशा उनकी जाएँ भाग,
वादे पर उतरें ना खरे ।

कहो, भागते तुम जो मौत से,
बच कर कहाँ तुम जा सकते,
ख़ुदा की इच्छा होगी सो होगा,
कौन बचा सकता तुम्हें उससे ?

मगर हक़ीक़त में ये लोग,
कभी ना लाए थे ईमान,
किए बरबाद आमाल उनके,
काम ख़ुदा को था आसान ।

जो करता ज़िक्रे ख़ुदा ज्यादा,
ख़ुदा से मिलने का हो यकीं,
ऐसा ही शख़्स होगा पैगम्बर,
उसकी ही तुम करो पैरवी ।

जब मोमिनों ने लश्कर को देखा,
वादा था जिसका ख़ुदा, रसूल का,
ईमान और इताअत ज्यादा हो गयी,
इकरार ख़ुदा से सच कर दिखलाया ।

और काफ़िर थे जो लोग,
उनको ख़ुदा ने फेर दिया,
कर सके ना भलाई हासिल,
ख़ुदा मोमिनों को काफ़ी हुआ ।

क़िलों से उतारा अहले किताब को,
जिन्होंने उनकी मदद की थी,
क़ैद और क़त्ल किया कितनों को,
दहशत दिलों में उनके भर दी ।

धन-दौलत और जमीं-मकान,
पड़े जहाँ ना तुम्हारे पाँव,
बना दिया वारिस तुमको,
भारी ख़ुदा का सबसे दाव ।

ऐ पैगम्बर, कहो अपनी बीवियों से,
चाहतीं जो तुम दुनिया की जिंदगी,
तो आओ दूँ मैं माल तुम्हें,
और करूँ मैं तुम्हारी रुखसती ।

गर जो तलब रखती हो तुम,
ख़ुदा, पैगम्बर और बहिश्त की,
बड़ा बदला तैयार किया ख़ुदा ने,
करने वालीं हैं जो तुममें नेकी ।

खुली ना-शाइस्ता हरकत जो करेंगी,
पाएँगी उसकी वो दोगुनी सज़ा,
और जो करेंगी फ़रमाबरदारी,
पाएँगी उसका वो दोगुना नफ़ा ।

नहीं दूसरी स्त्रियों जैसी हो,
व्यवहार करो तुम बा-दस्तूर,
छोड़ो पुराने दिनों की बातें,
नमाज़ और जकात करो जरूर ।

चाहता है ख़ुदा, ऐ अहले बैत,
दूर कर दे तुमसे ना-पाकी,
बेशक ख़ुदा लतीफ़, बा-ख़बर है,
करो याद तुम उसकी ही ।

झुकाते सर इताअत में ख़ुदा को,
मिलती बख़्शिश और बड़ा बदला,
करते नाफ़रमानी ख़ुदा, रसूल की,
वो लोग यकीनन हैं गुमराह ।

जिस बात को तुम छिपाते थे,
ज़ाहिर करने वाला था ख़ुदा,
चाहते थे तुम हो ना तलाक,
पर तलाक ज़ैद का होके रहा ।

डरते थे तुम लोगों से,
वाजिब डरना सिर्फ़ ख़ुदा से,
हुक्म ख़ुदा का हो ज़ाहिर,
निकाह करा दिया तुम से ।

मुँह बोले बेटों की पत्नियाँ,
जब तलाक उनका हो जाए,
जायज करना तब उनसे निकाह,
यूँ ज़ाहिर हुक्में ख़ुदा हो जाए ।

अनुचित नहीं यह पैगम्बर को,
मुकर्रर हुआ जो उनके वास्ते,
पहले भी ऐसा होता ही रहा,
हुक्में ख़ुदा जो उनके वास्ते ।

करो ज़िक्रे ख़ुदा ईमान वालों,
सुबह, शाम उसकी पाकी बयान,
लाता अंधेरे से रोशनी में,
रहमत करता वो मेहरबान ।

गवाही देने और डराने वाला,
बना के भेजा तुम्हें पैगम्बर,
ख़ुदा की तरफ़ बुलाने वाला,
रोशन चिराग हो, ऐ पैगम्बर ।

ऐ मोमिनों, निकाह के बाद,
पर उसको छूने से पहले,
गर दे दो उसे तलाक़ तुम,
रोको मत फिर इद्दत के लिए ।

ऐ पैगम्बर, हलाल तुम्हें हैं,
वे बीवियाँ जिन्हें मह्र दे दिया,
और हलाल तुम्हें तुम्हारी लौंडियाँ,
चाचा, मामा, खाला, फूफी की बेटियाँ ।

अनुचित है जाना, ऐ मोमिनों,
बिना बुलाए, नबियों के घर,
और अनुचित है वहाँ रुके रहना,
दावत समाप्त हो जाने पर ।

रसूले ख़ुदा को देना तकलीफ़,
या उनका अदब नहीं करना,
मुनासिब नहीं कभी उनके बाद,
निकाह उनकी बीवियों से करना ।

गुनाह नहीं स्त्रियों के लिए,
अपने पिता से पर्दा ना करना,
ना बेटों से, ना भाइयों से,
भतीजे, भांजों से पर्दा ना करना ।

कह दो अपनी बीवी, बेटियों से,
मुस्लिम औरतों से भी कह दो,
जब बाहर तुम घर से निकलो,
मुँह अपना चादर से ढक लो ।

डरा करो, ऐ मोमिनों, ख़ुदा से,
और सीधी बात कहा करो,
बख़्श देगा वो गुनाह तुम्हारे,
हुक्म का पालन किया करो ।

पेश किया हमने अमानत को,
जमीं-आसमाँ ने इंकार किया,
बेशक जालिम और ज़ाहिल था,
इंसा, जो उसको उठा लिया ।

बना अज़ाब का जो कारण,
जालिम मर्दों और औरतों को,
बख़्शिश और मेहरबानी मिली,
मोमिन मर्दों और औरतों को ।

34. सूरः सबा

परवरदिगार से नाज़िल क़ुरआन,
दिखलाता रास्ता काबिले-तारीफ़,
जानते यह, जिन्हें इल्म मिला,
क़ुरआन हक़ है और ग़ालिब ।

काफ़िर कहते देखो यह शख़्स,
कहता फिर पैदा होंगे मर कर,
लगता इसको जुनून है कोई,
या ये बाँधता झूठ ख़ुदा पर ।

पर जिनको ना ईमान आख़िरत पर,
पड़े वो गुमराही औए आफ़त में,
ख़ुदा चाहे जमीं में धसा दे,
या आसमान के टुकड़े गिरा दे ।

दाऊद को हमने बख़्शी बरतरी,
परिंदों को किया उनके वश में,
कर दिया हमने लौहे को नरम,
ताकि जिरह बना सकें उससे ।

हवा को किया सुलेमान के ताबेअ,
बहा दिया तांबे का चश्मा,
काम करते थे जिन्न उनके वास्ते,
हुक्म में उनके रहते चस्पा ।

हुक्म दिया जब उन्हें मौत का,
मरना उनका हुआ ना मालूम,
गिरी जो लाठी घुन खाने से,
तब जिन्नों को हुआ मालूम ।

सबा वालों को दी थी निशानी,
दाएँ, बाएँ दिए दो बाग़,
खाओ, पिओ, रहो शहर में,
करो ख़ुदा-ए-गफ्फ़ार को याद ।

जब शुक्रगुजारी से मुँह मोड़ा,
छोड़ दिया उन पर सैलाब,
बद-मज़ा मेवे थे जिनके,
ऐसे हो गए उनके बाग़ ।

माबूद बनाते ख़ुदा के सिवा,
कहो कि बुलाओ तुम उनको,
मालिक नहीं जर्रा भर के,
ना शिरकत हासिल है उनको ।

हमारे गुनाह ना जिम्में तुम्हारे,
तुम्हारे आमाल को तुम जानों,
ख़ुदा करेगा सभी का फ़ैसला,
चाहे तुम मानों, ना मानों ।

काश, जालिमों को तब देखो,
खड़े होंगे जब ख़ुदा के सामने,
एक-दूजे को कोसेंगे वो,
क्यों आए हम बहकावे में ?

भेजे बस्तियों में डराने वाले,
पर हुए ना क़ायल उनके लोग,
माल-औलाद का था उन्हें भरोसा,
अज़ाब से ना डरते थे लोग ।

कह दो मेरा रब मालिक है,
जैसा चाहता, वैसा कर देता,
जिसको चाहता रोजी फ़ैलाता,
जिसे चाहता तंग कर देता ।

जिस दिन लोगों को जमा करेगा,
पूछेगा फ़रिश्तों से क्या तुम्हें पूजा,
वो कहेंगे बस तू ही पाक है,
करते थे ये जिन्नों की पूजा ।

उस दिन रखेगा ना कोई अधिकार,
किसी को हानि-लाभ पहुँचाने का,
समझे जिस दोज़ख़ को तुम झूठ,
कहेगा ख़ुदा मज़ा चखो उसका ।

ख़ुदा ही जानता ग़ैब की बातें,
वो ही ऊपर से हक़ उतारता,
ना पहले पैदा किया बातिल ने,
ना फिर वो पैदा कर सकता ।

बच ना सके अज़ाब से जालिम,
चाहे कहें ईमान हम लाये,
कैसे हाथ पहुँचेगा तब उनका,
पहले अटकल के तीर चलाये ।

35. सूर: फ़ातिर

सब तारीफ़ ख़ुदा ही के लिए,
किए जिसने जमीं-आसमाँ पैदा,
बनाता फ़रिश्तों को कासिद,
हर चीज पे वो क़ुदरत रखता ।

खोल दे जो रहमत का दरवाजा,
नहीं कोई उसे बन्द करने वाला,
और अगर हो बन्द दरवाजा,
नहीं कोई उसे खोलने वाला ।

याद करो एहसान ख़ुदा के,
पैदा करने, रोजी देने वाला,
कहाँ बहके फिरते हो तुम,
माबूद नहीं कोई उसके सिवा ।

सच्चा है वादा ख़ुदा का,
दुनिया की जिंदगी है धोखा,
मुमकिन है धोखा दे शैतान,
खाना ना शैतान से धोखा ।

भला दिखाएँ जाएँ जिसको,
सजा कर उसके आमाल बुरे,
क्या हो सकता वो भला आदमी,
उम्दा जो उनको लगे समझने ?

ख़ुदा ही सबको रोजी देता,
पानी पर कश्ती को चलाता,
दिन को रात, रात को दिन,
वो ही सूरज-चाँद चलाता ।

मुकर्रर किया हर चीज का वक़्त,
बादशाह वो, सबका परवरदिगार,
पुकारते उसके सिवाय जिन्हें तुम,
नहीं तनिक भी उनको अधिकार ।

अगर पुकारो, वो सुन ना सकेंगे,
क़बूल कुछ वो कर ना सकेंगे,
करेंगे तुम्हारे शिर्क से इंकार,
ख़बर तुम्हें वो दे ना सकेंगे ।

हैं सब लोग ख़ुदा के मोहताज,
वो बे-परवा, तारीफ़ के क़ाबिल,
चाहे तो कर दे नाबूद तुम्हें,
या कर दे मख़्लूक़ नयी ग़ालिब ।

बोझ उठाएँगे सब अपना ही,
ना कोई होगा मददगार,
कोई कुछ नहीं कर पाएगा,
चाहे हो वो तुम्हारा रिश्तेदार ।

ऐ पैगम्बर, उन्हीं लोगों को,
नसीहत तुम दे सकते हो,
बिन देखे ख़ुदा से डरते,
नमाज़ एहतिमाम से पढ़ते जो ।

होते नहीं बराबर दोनों,
अंधा और जिसकी आँखें हों,
सुना नहीं सकते तुम उनको,
जीते ही जी जो मुर्दा हों ।

रखते वो ही ख़ौफ़ ख़ुदा का,
होते हैं जो इल्म वाले,
मिलेगी निजात हमेशा की उन्हें,
होते जो नेक चलन वाले ।

भेजी किताब बर-हक़ ये तुम्हें,
पहली किताबों की करती तस्दीक,
ठहराया किताब का वारिस उनको,
चुना जिन्हें ख़ुदा के नजदीक ।

कुछ करते जुल्म ख़ुद अपने पर,
दोज़ख़ की आग में जलते रहते,
कुछ निकल जाते नेकी में आगे,
पाते जन्नत, वो ख़ुश उसमें रहते ।

पाते सज़ा जब ना-शुक्रे,
कहते अब नेक आमाल करेंगे,
उम्र बितायी थी तुमने,
तब नबियों को झुठलाने में ।

किया कुफ्र अब भुगतो उसको,
आज मददगार कोई होगा नहीं,
करते थे नफ़रत नबियों से,
भुगतोगे ख़ुद, कोई और नहीं ।

36. सूर: यासीन

यासीन, क़सम है क़ुरआन की,
भरा हुआ जो हिक्मत से,
ऐ मुहम्मद, तुम हो पैगम्बर,
शक नहीं कोई इस बात में ।

ग़ालिब, मेहरबान ने किया नाज़िल,
तंबीह तुम लोगों की कर दो,
ना लाएँगे ईमान वो लेकिन,
ग़फ़लत में पड़े हुए हैं जो ।

पड़ा हुआ है जिन पर पर्दा,
नज़र नहीं कुछ उनको आता,
करो, ना करो उनको नसीहत,
असर नहीं कुछ उन पर होता ।

जैसे किया पहले पैदा उसने,
बेशक करेगा मुर्दों को जिंदा,
रोशन किताब में लिख रखा,
हर शख़्स का उसने लेखा-जोखा ।

कहो गाँव वालों का किस्सा,
दो नबियों को ख़ुदा ने भेजा,
झुठलाए गए जब वो दोनों,
ख़ुदा ने तीसरा पैगम्बर भेजा ।

वो बोले हम जैसे हो तुम,
नाज़िल ना हुआ कुछ, झूठ बोलते,
ना मानोगे तो संगसार करेंगे,
ना ही मुबारक हम तुम्हें समझते ।

तभी दौड़ता आया एक शख़्स,
बोला मानों बात नबियों की,
नहीं चाहते कुछ बदले में,
राह दिखाते तुम को सीधी ।

सुनी ना उसकी गाँव वालों ने,
किया उन्होंने नबियों को इंकार,
नाज़िल हुआ अज़ाब ख़ुदा का,
बुझा गयी उनको चिंघाड़ ।

उसकी निशानी सूखी जमीं में,
हरा-भरा कर फसल उगाता,
दिन और रात में भी निशानी,
जिनसे जीवन का चक्र चलाता ।

बख़्शी रोजी ख़ुदा ने जो,
काफ़िर ना ख़र्चते औरों पर,
कहते, उनको भी दे देता,
करता जो रहमत वो उन पर ।

और कहते, अगर तुम हो सच्चे,
तो होगा कब वो वादा पूरा,
हैं इन्तिज़ार में ये अज़ाब के,
जब चाहे ख़ुदा तब आ पकड़ेगा ।

जिस वक़्त फूँका जाएगा सूर,
दौड़ेंगे कब्रों से निकल कर,
होगी आवाज एक जोर की,
होंगे खड़े सामने आ-आकर ।

ना कुछ जुल्म ख़ुदा करेगा,
करेगा सबके साथ इंसाफ़,
नेक लोग जन्नत में होंगे,
गुनाहगारों का होगा हिसाब ।

कहा था, ऐ आदम की औलाद,
दुश्मन है शैतान से बचना,
माने ना तुम, राह से भटके,
दोज़ख़ में अब पड़ेगा जलना ।

नसीहत और हिम्मत से भरा,
नेकों को हिदायत करता क़ुरआन,
सब कुछ बख़्शा ख़ुदा ने लेकिन,
करता नहीं उसका शुक्र इंसान ।

किए जिसने जमीं-आसमाँ पैदा,
क्या फिर पैदा नहीं कर सकता,
करता जब वह जिसका इरादा,
हो जाती, जब कहता 'हो जा' ।

37. सूर: साफ़्फ़ात

सफ़ बाँधते पैर जमा कर,
डाँट लगाते जो झिडक कर,
खाता क़सम ख़ुदा उनकी,
पढ़ते क़ुरआन गौर कर कर ।

कि माबूद तुम्हारा है बस एक,
मालिक है जो क़ायनात का,
सितारों से सजाया आसमान को,
दूर उन्हें शैतान से रखा ।

दी जाती जब उनको नसीहत,
क़बूल नहीं करते हैं लोग,
मज़ाक उड़ाते निशानी देख कर,
कहते खुला जादू उसको लोग ।

मर कर मिट्टी हो जाने पर,
फिर क्या जिंदा होंगे लोग,
यकीं नहीं जिनको इस पर,
कहो, जलील होंगे वो लोग ।

होगी आवाज एक जोर की,
रह जाएँगे उस वक़्त ये देखते,
बदले का दिन तब जान जाएँगे,
रहे ये जिसको झूठ समझते ।

हाल ये था गुमराहों का,
घमंड करते थे वो लोग,
कहते, दीवाने के कहने से,
कैसे माबूद छोड़ दें लोग ।

लेकिन हक़ लाए हैं पैगम्बर,
पहले नबियों की करते तस्दीक,
करनी का फल तुम्हें मिलेगा,
निश्चित पाओगे तुम तकलीफ़ ।

हैं जो ख़ुदा के बन्दे खास,
सुख पाएँगे जन्नत में वो,
और झाँक कर जब देखेंगे,
पाएँगे दोज़ख़ में गुमराहों को ।

और जब नूह ने हमें पुकारा,
करी दुआ क़बूल उनकी,
घरवालों के सहित नूह को,
बड़ी मुसीबत से निज़ात मिली ।

उनकी औलाद को ऐसा किया,
रह गए बस वो ही बाकी,
सारे जहाँ का सलाम नूह पर,
दुनिया वालों में नेक-नामी ।

इब्राहीम ने करी नूह की पैरवी,
बुत-परस्त थी पर उनकी कौम,
बोले इब्राहीम एक ख़ुदा ही सच्चा,
पर उन्हें जलाने में लगी कौम ।

मददगार था उनका ख़ुदा,
जला न पायी उनको कौम,
चली चाल ख़ुदा ने ऐसी,
बरबाद हो गयी ख़ुद ही कौम ।

माँगी इब्राहीम ने बख़्शिश,
नेक औलाद मिली उनको,
बेटा हुआ जब थोडा बड़ा,
सपना एक दिखा उनको ।

कहा उन्होंने बेटे को,
सपने में तुझे कुर्बान किया,
कहा बेटे ने अपने पिता से,
करो पूरा जो हुक्म मिला ।

माना हुक्म ख़ुदा का दोनों ने,
बेटा माथे के बल लिटा दिया,
बंद कर फिर आँखें पिता ने,
कुर्बान करने का प्रयत्न किया ।

इब्राहीम को तब हमने पुकारा,
कर दिखाया तुमने सच सपना,
थी तुम्हारी यह खुली आज़माइश,
मिलेगा जिसका तुम्हें बड़ा बदला ।

बेशक वो थे बन्दे मोमिन,
बख़्शे उनको हमने इसहाक,
की बरकतें उन पर नाज़िल,
नबी और नेक हुए इसहाक ।

मूसा और हारून पर हमने,
एहसान किए और निज़ात दिलवायी,
बख़्शी उन्हें हमने साफ़ किताबें,
कौम को सीधी राह दिखलायी ।

इल्यास भी थे एक पैगम्बर,
कौम ने उनको भी झुठलाया,
निज़ात दिलायी लूत को हमने,
जालिमों का कर दिया सफ़ाया ।

उजड़ी पड़ी हैं वो बस्तियाँ,
गुजरते तुम उनके पास से,
रात और दिन देखते रहते,
लो सबक कुछ तुम उनसे ।

और यूनुस ख़ुदा के पैगम्बर,
पहुँचे भाग कर कश्ती में,
निगल गयी उनको एक मछली,
पहुँचे वो उसके पेट में ।

करी बयान ख़ुदा की पाकी,
रहमते ख़ुदा हुई उन पर,
निकाल बाहर मछली से उन्हें,
डाला एक खुले मैदान पर ।

रहे बीमार जब तक यूनुस,
कद्दू का उन पर पेड़ लगाया,
स्वस्थ हो गए जब यूनुस,
नबी ख़ुदा ने उन्हें बनाया।

कहते जो ख़ुदा रखता औलाद,
बेशक लोग वो हैं झूठे,
ना दलील कोई उनके पास,
ना ही किताब में लिखा उनके।

ख़ुदा पाक हर नापाकी से,
नहीं किसी से उसका रिश्ता,
ख़ालिस बन्दे जो ख़ुदा के,
कोई उन्हें बहला नहीं सकता।

हर फ़रिश्ते का मुकाम मुकर्रर,
और सफ़ बाँधे रहते हैं वो,
करते रहते ज़िक्र ख़ुदा का,
अपनी हद में रहते वो।

कहा करते थे जो लोग,
काश, होती नसीहत की किताब,
अब लेकिन करते वो कुफ़्र,
जल्दी करते पाने को अज़ाब।

बहुत बुरा वह दिन होगा,
जिस दिन अज़ाब आ उतरेगा,
सुनाया गया डर जिनको,
अचानक ही उन्हें आ पकड़ेगा।

यह जो कुछ करते बयान,
पाक है उन सबसे ख़ुदा,
सलाम उसके नबियों को,
तारीफ़ का मालिक है ख़ुदा।

38. सूर: साद

स्वाद् क़सम है क़ुरआन की,
है जो नसीहत देने वाला,
घमंड और विरोध जो करते,
कहता उन्हें कुफ्र करने वाला।

ताज्जुब करते हैं कुछ लोग,
कि नबी है उनमें से एक,
कुछ कहते इतने माबूदों का,
माबूद बना दिया इसने एक।

कुछ कहते यह जादूगर, झूठा,
बनायी हुई है इसकी बात,
करते शक नबी पर वो,
मानते नहीं उतरी कोई किताब।

शक करते जो ये लोग,
उतरा नहीं उन पर अभी अज़ाब,
हारा हुआ लश्कर हैं ये,
औरों की तरह होंगे बरबाद।

याद करो दाऊद को तुम,
पहाड़ मानते थे उनका फ़रमान,
ज़िक्रे ख़ुदा करते थे वो,
उनके साथ सुबह और शाम ।

कहा उन्हें बादशाह बना कर,
करो फ़ैसले इंसाफ़ से तुम,
पैरवी करो ना ख़्वाहिश की,
राह भटकना कभी ना तुम ।

अता किए सुलेमान दाऊद को,
बहुत खूब बन्दे थे वो,
करी हवा उनके फ़रमान में,
देवों को हुक्म करते थे वो ।

याद करो हमारे बन्दे अय्यूब को,
पुकारा रब को दूर करो तकलीफ़,
कहा हमने लात मारो जमीं पर,
फूटा चश्मा, हरी हुई सूखी जमीन ।

और याद करो इब्राहीम को,
इसहाक और याकूब को भी,
इस्माईल, अल-यसअ और जुल्किफ्ल,
नेक बन्दे थे ये लोग सभी ।

कहो, मैं बस हिदायत करने वाला,
माबूद नहीं कोई ख़ुदा के सिवा,
जमीं-आसमाँ, मख़्लूक़ का मालिक,
ग़ालिब है वो और बख़्शने वाला ।

बनाया इंसा को जब मिटटी से,
कहा ख़ुदा ने करो सज्दा,
शैतान ना माना, अकड गया,
दण्ड मिला उसे लानत का ।

बोला मैं उन्हें बहकाता रहूँगा,
जो ना तेरे ख़ालिस बन्दे,
कहा ख़ुदा ने भर दूँगा,
साथ तेरे सब दोज़ख़ में ।

ऐ नबी, कह दो लोगों से,
बदला नहीं मैं तुमसे माँगता,
नसीहत है कुरआन दुनिया के लिए,
चल जाएगा तुमको पता ।

39. सूरः जुमर

उतरी किताब ख़ुदा-ए-ग़ालिब से,
ख़ालिस इबादत करो ख़ुदा की,
जो पूजते हैं किसी और को,
हिदायत नहीं मिलती उनको कभी ।

पैदा किया उसी ने तुमको,
और जो कुछ है दुनिया में,
वो ही तुम्हारा परवरदिगार है,
बादशाही उसी की दुनिया में ।

ख़ुदा ही अकेला है माबूद,
है सबसे वो बे-परवा,
पसंद ना करता ना-शुक्री,
ना-शुक्रों को देता सज़ा ।

होता जब तकलीफ़ में इंसा,
करता पुकार ख़ुदा की वो,
मिल जाती जब उसको नेमत,
भुला देता है ख़ुदा को वो ।

कहो, उठा लो थोडा सा फ़ायदा,
फिर होंगे वो दोज़खियों में,
कब हो सकते वो उनसे बेहतर,
करते जो इबादत रातों में ।

करते जो दुनिया में नेकी,
होगी भलाई उनके लिए,
और जो करने वाले सब्र,
होगा सवाब उनके लिए ।

कह दो, इर्शाद हुआ मुझसे,
करूँ इबादत, ख़ुदा की बन्दगी,
अव्वल सबसे बनूँ मुसलमां,
डरता करने से अवज्ञा उसकी ।

बचते बुतों की पूजा से,
करते रुख ख़ुदा की ओर,
दे दो उनको ये ख़ुशख़बरी,
पाएँगे जन्नत ये ही लोग ।

करी बयान मिसालें क़ुरआन में,
ताकि लोग नसीहत पाएँ,
नाज़िल किया शुद्ध अरबी में,
ख़ौफ़ ख़ुदा का ताकि लाएँ ।

मरना है सबको एक दिन,
तुमको भी और उनको भी,
जाओगे सब उसके सामने,
करेगा फ़ैसला झगड़ों का सभी ।

कह दो, मुझे ख़ुदा काफ़ी,
उसका ही भरोसा है मुझको,
मानो, ना मानों मर्जी तुम्हारी,
हुक्म हिदायत का बस मुझको ।

कर लेता ख़ुदा रूहें कब्ज,
मरने पर और सोते वक़्त,
रोकता रूह मरने वालों की,
बाकी रूहें, पातीं एक वक़्त ।

गर जालिम रखते हों खजाना,
काम ना कुछ उनको देगा,
रहे उड़ाते हँसी अज़ाब की,
एक दिन उनको आ घेरेगा ।

बख़्श देता वो गुनाह उनके,
करते जो उसकी फ़रमाबरदारी,
लेकिन जो आयतें झूठलाते,
धरी रह जाएगी उनकी शेखी सारी ।

बोला झूठ जिन्होंने ख़ुदा पर,
होंगे उनके मुँह काले,
निज़ात मिलेगी नेक लोगों को,
होंगे ख़ुश वो ख़ुदा वाले ।

कह दो, ख़ुदा का हुक्म तुम्हें,
जो शिर्क करेगा, होगा बरबाद,
करो इबादत एक उसी की,
अदा उसी को शुक्र हजार ।

चमक उठेगी क़ियामत के दिन,
यह जमीन नूर से उसके,
किताब आमाल की खोली जाएगी,
इंसाफ़ से वो करेगा फ़ैसले ।

जालिमों को मिलेगा दोज़ख़,
जन्नत मिलेगी नेकों को,
अपने-अपने आमाल का बदला,
देगा वो सब लोगों को ।

40. सूर: मुअमिन्

उतरी किताब यह उसकी तरफ़ से,
जो ख़ुदा-ए-ग़ालिब और दाता,
गुनाह बख़्शता, तौबा क़बूलता,
सज़ा भी देता, वो करम वाला ।

चाहे कोई माने कितना बुरा,
इबादत उसी की, उसी को पुकारो,
आमालों का बदला सबको मिलेगा,
सिफ़ारिश ना कोई, किसी को पुकारो ।

जो काफ़िर हैं, आयतों पर झगड़ते,
धोखा ना दे उनका चलना-फिरना,
पहले भी झगड़ती रहीं उम्मतें,
बचे ना वो, ना उनका ठिकाना ।

मालूम नहीं क्या उन लोगों को,
अंजाम लोगों का, उनसे पहले,
करते थे गुनाह, वो पकड़े गए,
बरबाद हो गयी, सब वो कौमें ।

उठाए हुए जो लोग अर्श को,
यादे ख़ुदा करते तारीफ़ के साथ,
बख़्शिश माँगते मोमिनों के लिए,
तेरी रहमत हो हमेशा उनके साथ ।

फ़िरौन की कौम भी ऐसी थी,
मूसा को था जिसने झुठलाया,
करता था गुनाह, जुल्म लोगों पर,
मूसा का कहा, उसको ना भाया ।

कहा जाएगा जिन्होंने कुफ्र किया,
नहीं मानते थे ईमान की बात,
कई ज्यादा बेजार होता था ख़ुदा,
जितने हो तुम ख़ुद से बेजार ।

एक मोमिन फ़िरौन की कौम का,
रखता था छिपाए जो अपना ईमान,
बोला आ जाए ख़ुदा का अज़ाब,
तो बचा ना सकेगा कोई इंसान ।

करेंगे गुनाहों का वो इकरार,
पुकारा ख़ुदा को ना तन्हा,
साथ उनके शामिल किए शरीक,
मिलेगा अब ना कोई रस्ता ।

समझाया अपनी कौम को उसने,
कौम ना मानी उसकी बात,
बचा लिया मूसा को ख़ुदा ने,
फ़िरौन की कौम को मिला अज़ाब ।

अपने नबी और ईमान वालों की,
करता यहाँ और वहाँ भी मदद,
बुरा घर है जालिमों के लिए,
और उन पर ख़ुदा की है लानत ।

बेशक ख़ुदा का है सच्चा वादा,
तो सब्र करो और तौबा करो,
सुबह और शाम परवरदिगार को,
तारीफ़ के साथ तुम याद करो ।

बिना दलील के जो लोग,
झुठलाते हैं ख़ुदा की आयतें,
दिल में बड़ाई रखते वो,
सफल नहीं पर उसमें होते ।

करेगा फ़र्क क़ियामत के दिन,
नेकों में और बदकारों में,
करता क़बूल दुआ जो करते,
दोज़ख़, जो रहते चूर घमंड में ।

हर चीज को जो पैदा करता,
तुमको भी किया जिसने पैदा,
बस वो ही इबादत के लायक,
क्यों फिरते फिर तुम यहाँ-वहाँ ?

आएगा साथ ना कोई शरीक,
जब जाएँगे दोज़ख़ में वो,
लौट जाएँगे सभी ख़ुदा को,
इंसाफ़ मिलेगा वहाँ उनको ।

किया बयान कुछ नबियों का,
और कुछ तुमसे कहे नहीं,
इंसाफ़ किया लोगों के साथ,
बातिल को कुछ मिला नहीं ।

क्या-क्या निशानियाँ झुठलाओगे,
कण-कण में उसकी क़ुदरत,
अज़ाब देख जो लाते ईमान,
काम ना आता, वो उस वक़्त ।

41. सूर: हामीम अस्-सज्दा

क़ुरआने अरबी, समझ वालों का,
ख़ुशख़बरी सुनाता, ख़ौफ़ बताता,
पर सुनते नही अक्सर लोग,
दिलों पे उनके पड़ा है परदा ।

कहो क्या करते उससे इंकार,
पैदा जमीं की दो दिनों में,
फिर चार दिनों में पहाड़ बनाए,
और बख़्शी रोजी तुम्हें जमीं में ।

फिर रुख किया गगन की ओर,
सात आसमाँ बना दिए उसने,
सितारों से सजाया आसमान को,
और हुक्म दिया सबको उसने ।

फिर अगर ये मुँह फेर लें,
याद दिला दो उनको अज़ाब,
कौमें आद और समूद की,
हो गयीं कैसे वो बरबाद ।

करते ख़्याल की खबर नहीं,
ख़ुदा को उनके आमालों की,
आँख, कान और बाकी अंग,
देंगे खिलाफ़ तब उनके गवाही ।

कहते काफ़िर ना सुनो क़ुरआन,
गर पढ़े कोई तो शोर करो,
देंगे सज़ा हम उन्हें गुनाह की,
ये वादा ख़ुदा का यकीन करो ।

बेहतर कौन भला उससे,
जो राह दिखाए और नेकी करे,
दो उसको भी तुम अच्छा सिला,
बात जो तुमसे सख़्त करे ।

बदल जाएँगे दिल उनके,
दोस्त तुम्हारे वो बन जाएँगे,
होती किस्मत बुलंद उनकी,
बर्दाश्त उसे जो कर जाएँगे ।

गर कोई वस्वसा शैतान से हो,
माँग लो तुम पनाह ख़ुदा की,
ना सूरज, ना चाँद को सज्दा,
सर झुके बस उसके आगे ही ।

करते आयतों में जो कजराही,
बन्दे वो ख़ुदा से छिपे नहीं,
है किताब यह ख़ुदा की उतारी,
झूठ का इसमें दखल नहीं ।

क़ुरआन जो होता और भाषा में,
कहते वो क्यों नहीं अरबी में,
क़ुरआन गैर-अरबी, मुखातब अरबी,
चैन ना आता कैसे भी उन्हें ।

बड़ा ही ना-शुक्र है इंसा,
नहीं मानता उसका एहसान,
जब मिल जाती राहत उसको,
भूल जाता ख़ुदा को इंसान ।

42. सूर: शूरा

भेजी जैसे पहले लोगों को,
भेजता तुम्हारी तरफ़ आयतें,
तारीफ़ ख़ुदा की करते फ़रिश्ते,
माँगते माफ़ी लोगों के वास्ते ।

भेजा तुम्हें यह अरबी क़ुरआन,
दिखलाओ रास्ता तुम लोगों को,
मक्का में रहने वालों को,
और आस-पास रहते हों जो ।

ना कोई यार, ना मददगार,
जालिम का कोई दोस्त नहीं,
रखता सब पर वो कुदरत,
कारसाज कोई उसके सिवा नहीं ।

आसमान और जमीन की कुंजियाँ,
है हाथ में ख़ुदा ही के,
जिसे चाहता उसे रोजी फैलाता,
तंग कर देता चाहे जिसे ।

चुना तुम्हारे लिए ख़ुदा ने,
वही सही रास्ता दीन का,
नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा को,
जिसका उसने हुक्म दिया ।

क़ायम रखना तुम दीन को,
और डालना ना फूट इसमें,
ख़ुदा जिसे चाहता, चुन लेता,
और ले आता उसे राह पे ।

और ये लोग जो हुए अलग,
इल्म के बाद, अपनी जिद से,
गर ठहर चुकी होती ना बात,
कर देता फ़ैसला ख़ुदा उनमें ।

उसी तरफ़ बुलाते रहना,
रहना दीन पर क़ायम तुम,
ख़्वाहिशों की उनकी, ऐ मुहम्मद,
कभी पैरवी करना ना तुम ।

कह दो किताब जो नाज़िल हुई,
ईमान मैं उस पर रखता हूँ,
और हुक्म हुआ है मुझको,
कि मैं तुमसे इंसाफ़ करूँ ।

हमारे आमाल का बदला हमको,
तुमको बदला तुम्हारे आमाल का,
क्यों करें हम बहस या तकरार,
परवरदिगार वो ही हम सबका ।

सच्चाई के संग नाज़िल की,
यह किताब परवरदिगार ने,
तराज़ू अद्ल और इंसाफ़ की,
दीने हक़, दिया ख़ुदा ने ।

जो चाहते आख़िरत में भलाई,
मिलेगी उनको बेहतर भलाई,
और जिन्हें दुनिया की ख़्वाहिश,
उनको बस दुनिया की भलाई ।

क्या उनके हैं वो शरीक,
ऐसा दीन जिन्होंने दिया उन्हें,
ख़ुदा ने हुक्म दिया ना जिसका,
देगा वो सख़्त अज़ाब उन्हें ।

देखोगे तुम की जालिम लोग,
डरते होंगे अपने आमालों से,
बच ना पाएँगे वो कैसे भी,
आकर रहेगा अज़ाब उन पे ।

जो लाए ईमान, नेकी करते,
मिलेंगे उन्हें बहिश्त के बाग़,
जो चाहेंगे वो मिलेगा उनको,
ख़ुश होंगे वो, होंगे आबाद ।

कह दो, नहीं मैं बदला माँगता,
रिश्तेदारी की मुहब्बत तो निभाओ,
बढ़ाएगा सवाब जो नेकी करेंगे,
कद्रदान वो, सीधी राह तो आओ ।

कहते क्या ये लोग नबी ने,
बाँध लिया है ख़ुदा पर झूठ,
चाहे ख़ुदा तो तुम्हें रोक ले,
हक़ के आगे चलती ना झूठ ।

जानता वो दिलों की बातें,
तौबा क़बूल करता बन्दों की,
बख़्शने वाला गुनाहों को वो,
रखता खबर सब करतूतों की ।

कर देता गर रोजी में फैलाव,
बन्दे करने लग जाते फ़साद,
जिस कदर चाहता नाज़िल करता,
इसलिए वह अन्दाजे के साथ।

वो ही तो है जो निराशा को,
करता दूर, झोली भर देता,
जमीं-आसमाँ में उसकी क़ुदरत,
जैसा चाहे, वैसा कर देता।

वो मेहरबान, रहम वाला,
कर देगा बहुत गुनाह माफ़,
जो मुसीबत होती तुम पर,
तुम्हारे आमालों का है जवाब।

परहेजगार और रखते भरोसा,
गुस्सा हों, पर करते माफ़,
नमाज़ पढ़ते और हुक्म मानते,
बेहतर मिलेगा उनको लाभ।

कर देते बुराई जो दरगुजर,
उनका बदला ख़ुदा के जिम्मे,
सब्र करें, माफ़ी कर दें,
काम हैं ये तो हिम्मत के।

कह दो तुम यह गुमराहों से,
वक़्त रहते सीधी राह आ जाओ,
ना मिलेगा मौका फिर तुमको,
तुम्हारी मर्जी, मानों, मत मानों।

सारी दुनिया का है वो बादशाह,
जैसा चाहे वो वैसा ही करता,
मुमकिन नहीं करना बन्दों से बात,
पर भेज देता वो कोई फ़रिश्ता।

ऐसे ही हमने अपने हुक्म से,
भेजा रूहुल-क़ुदुस द्वारा क़ुरआन,
जानते नहीं थे इसके पहले,
तुम किताब को, ना ही ईमान।

नूर बनाया हमने उसको,
लोगों को राह दिखने को,
हमने चुना तुम्हें, ऐ मुहम्मद,
लोगों को हिदायत करने को।

43. सूर: ज़ुख्रुफ़

बनाया हमने अरबी क़ुरआन,
ताकि तुम इसको समझ सको,
क्या बाज रहेंगे नसीहत से,
क्योंकि तुम हद से निकले हो ?

कई पैगम्बर पहले भी भेजे,
लोगों ने उड़ाया उनका मज़ाक,
सुनते बात ना नबियों की,
करी कौमें वो हमने हलाक।

क्या ख़ुदा ने चुन ली बेटियाँ,
तुम्हें दे दिए चुन कर बेटे,
पर ख़बर जब बेटी की मिलती,
क्यों मुँह उनके काले पड़ जाते ?

कहते अगर जो ख़ुदा चाहता,
तो हम उनको नहीं पूजते,
नहीं इल्म उन्हें कुछ इसका,
वो तो बस अटकल ही दौड़ाते ।

जिन्हें पूजते थे बाप-दादा,
कहते उन्हें ही वो पूजेंगे,
चाहे सीधी राह दिखा दो,
नहीं बात वो कुछ मानेंगे ।

जब आया हक़ उनके पास,
कहने लगे जादू है यह तो,
किसी बड़े पर क्यों ना उतरा,
क्या ये बाँटते उसकी रहमत को ?

जो ख़ुदा से मुँह फेरता,
बनता उसका साथी शैतान,
समझते वो सीधे रस्ते पर,
पर उल्टी राह चलाता शैतान ।

सुना नहीं सकते बहरे को तुम,
अंधे को राह दिखा नहीं सकते,
ना राह मिलेगी, जो गुमराही में,
राह पे उसको ला नहीं सकते ।

लेकर रहेंगे हम बदला,
तुम जीते हो या उसके बाद,
काबू रखते हम उन पर,
किया जो वादा, मिलेगा अज़ाब ।

किया गया जो तुम्हें फ़रमान,
बेशक सीधी राह है वो,
पकड़े रहो नसीहत जो मिली,
तुम्हें और तुम्हारी कौम को ।

भेजा था मूसा को हमने,
देकर अपनी निशानियाँ,
अज़ाब में पकड़े गए फ़िरौनी,
ना जब माने निशानियाँ ।

कहने लगे मूसा से तब,
दुआ करो परवरदिगार से,
बेशक हिदायत पाए हुए होंगे,
जो बच जाएँ अज़ाब से ।

दूर किया जब उनसे अज़ाब,
लगे तोड़ने अहद वो लोग,
ख़फ़ा किया जब हमें उन्होंने,
डुबा दिए हमने वो लोग ।

चिल्ला उठे तुम्हारी कौम के लोग,
ईसा का हाल जब कहा गया,
वह तो हमारे ऐसे बन्दे थे,
जिन पर हमने फ़ज़ल किया ।

क्या ख़्याल करते ये लोग,
बात उनकी सुन नहीं सकते,
सब सुनते हम छिपी या ज़ाहिर,
फ़रिशते हमारे सब लिखते रहते ।

कह दो ख़ुदा जो रखता औलाद,
तो मैं पहला करने वाला इबादत,
पाक है पर वो सबका मालिक,
खेलें वो, करते रहें बक-बक ।

पुकारते जिन्हें ये ख़ुदा के सिवा,
सिफ़ारिश का नहीं हक़ उनको,
इल्म और यकीन के साथ गवाही,
हक़ की दें, यह मंजूर उसको ।

44. सूर: दुख़ान

मुबारक रात में नाज़िल फ़रमाया,
किए उसमें ही हिक्मत के काम,
भेजे नबी अपने ही हुक्म से,
यह उसकी रहमत के काम ।

है सबका वो ही मालिक,
लेकिन यकीन ना लाते लोग,
इन्तिजार करते उस दिन का,
पकड़े जाएँगे जब वो लोग ।

कहेंगे अब हम लाए ईमान,
पर तब क्या उसका होगा,
कहा दीवाना जब नबियों को,
क्या होगी ना उसकी सज़ा ?

मिली फ़िरौनियों को भी सज़ा,
मूसा को जब उन्होंने झुठलाया,
बनी इस्राईल को किया पार,
फ़िरौनियों को दरिया में डुबाया ।

कहते हैं जो लोग हमें,
मरना है, फिर उठना नहीं,
क्या ख़्याल करते वो लोग,
हुए हलाक क्या पहले नहीं ?

ना बनाया जमीं-आसमाँ खेल में,
तदबीर से किया उनको पैदा,
काम ना आएगा उस दिन,
क़ियामत को जब होगा फ़ैसला ।

थूहर का पेड़ गुनाहगार का खाना,
खौलेगा पिंघले तांबे सा पेट में,
मज़ा चखेंगे तब दोज़ख़ का वो,
करते थे शक जिस दोज़ख़ में ।

बागों और चश्मों में होंगे,
परहेजगार और नेक लोग,
रहेंगे बहिश्त में ही हमेशा,
सब सुख पाएँगे ये लोग ।

45. सूर: जासिया

निशानियाँ अक्ल वालों के लिए,
ज़ाहिर है जीने और मरने में,
दुनिया के हर प्राणी में,
दिन-रात के आने-जाने में ।

अफ़सोस हर झूठे गुनाहगार पर,
सुनायी जाती जब उसे आयतें,
सुन लेता फिर हँसी उड़ाता,
अज़ाब ख़ुदा का उनके वास्ते ।

किया तुम्हारे काबू में दरिया,
शुक्र करो तुम रोजी पाते,
जमीं-आसमाँ में जो कुछ है,
लगा दिया सब काम तुम्हारे ।

किया क़ायम तुम्हें हमने,
दीन के खुले रस्ते पर,
चलना ना ख़्वाहिशों के पीछे,
चले चलो उसी रस्ते पर ।

होते जालिम एक-दूजे के दोस्त,
दोस्त परहेजगारों का होता ख़ुदा,
लोग जो काम बुरा करते,
होता है उनका अंजाम बुरा ।

बनाता जो ख़्वाहिशों के माबूद,
वो तो हो रहा है गुमराह,
आँखों पर पर्दा दाल दिया,
बस चाहे ख़ुदा तो मिले राह ।

कहते जो यहीं जीते-मरते,
दुनिया की है यही जिंदगी,
अटकल से लेते वो काम,
उनको है कुछ इल्म नहीं ।

सुनायी जाती जब उन्हें आयतें,
करते हैं हुज्जत वो लोग,
हो सच्चे तो बाप-दादा को,
कर लाओ जिंदा तुम लोग ।

कह दो, ख़ुदा ही जान बख़्शता,
देता वही है तुमको मौत,
जमा करेगा क़ियामत के दिन,
नहीं जानते पर तुम लोग ।

जिस दिन क़ियामत होगी बरपा,
अहले बातिल घाटे में पड़ेंगे,
क़बूल ना तब होगी तौबा,
दोज़ख़ में जब वो पड़ेंगे ।

46. सूर: अह्काफ़

हमने जमीं-आसमानों को,
और जो है उन दोनों में,
किया पैदा हिक्मत के साथ,
एक मुकर्रर समय के लिए ।

फेर लेते हैं मुँह काफ़िर,
जो नसीहत की जाती उससे,
कहो, भला क्या देखा तुमने,
ख़ुदा के सिवा पुकारते जिन्हें ?

दिखाओ जरा मुझे भी तो,
पैदा किया क्या यहाँ उन्होंने,
क्या उनकी शिरकत आसमान में,
या लिखा क्या कहीं किसी ने ?

कौन बढ़कर उससे गुमराह,
पुकारता उसे जो ना देता जवाब,
ना जिसे ख़बर किसी पुकार की,
और दुश्मन हो जब आए अज़ाब ।

क्या ये कहते तुमने ही बनाया,
कह दो, ख़ुदा ही गवाह काफ़ी,
जो होता है हुक्म मुझको,
मैं बस करता उसकी पैरवी ।

यह किताब अरबी जुबान में,
उससे पहले थी मूसा की किताब,
तस्दीक करती है यह उसकी,
सीधी राह दिखाती ये किताब ।

हुक्म दिया हमने इंसा को,
करो भलाई माँ-बाप के साथ,
कष्ट बड़ा सह कर वो पालते,
दुआ करते बने नेक औलाद ।

यही लोग हैं हम जिनके,
क़बूल करेंगे नेक आमाल,
बख़्श देंगे गुनाह उनके,
जन्नत का मिलेगा लाभ ।

जो करते माँ-बाप से तल्ख़ी,
सच्ची बात ना उनकी सुनते,
यही लोग हैं जो आख़िर में,
नुक्सान उठाने वाले जहन्नम के ।

गए हूद जब अपनी कौम को,
कहो इबादत करो ख़ुदा की,
बोले वो क्यों हमको डराते,
सच कर दिखाओ बात अज़ाब की ।

बोले हूद यह इल्म ख़ुदा को,
वो ही जाने गैब की बात,
अज़ाब आया बन आँधी-बादल,
कौमे आद को कर दिया बरबाद ।

कितनी बार हलाक की बस्तियाँ,
निशानियाँ अपनी करी ज़ाहिर,
क्यों ना फिर बचाने उनको,
माबूद उनके हुए हाज़िर ?

कुछ जिन्नों ने सुना क़ुरआन,
औरों को आकर वो बोले,
सुनी हमने है एक किताब,
हुई नाज़िल जो बाद मूसा के ।

इससे पहले जो उतरी किताब,
तस्दीक करती है यह उनकी,
क़बूल करो तुम इसकी बात,
राह दिखाती सीधी ये दीन की ।

गर लाए ईमान, गुनाह बख़्शेगा,
इन्कारी को होगा नुक्सान,
खुली गुमराही में वो लोग,
सुनते नहीं जो यह फ़रमान ।

जमीं-आसमाँ पैदा कर दिए,
लेकिन थकान ना हुई जिसको,
क्या उसको नहीं यह क़ुदरत,
कर दे जिंदा वो मुर्दों को ?

जैसे सब्र करते रहे पैगम्बर,
वैसे ही तुम भी सब्र करो,
जिस दिन ये देखेंगे अज़ाब,
सोचेंगे घड़ी भर जिंदा थे वो ।

47. सूर: मुहम्मद

जिन लोगों ने कुफ्र किया,
रोका ख़ुदा की राह से,
भला हुआ ना कुछ उनका,
आमाल उनके सब बरबाद हुए ।

नाज़िल हुई मुहम्मद पर जो,
मानते जो बर-हक़ है क़ुरआन,
गुनाह दूर हो, हालत संवरती,
नेकी करते, जो लाते ईमान ।

झूठी पैरवी करते काफ़िर,
हक़ के पीछे चलते नेक,
गुनाहगार माबूदों को पूजते,
इबादत ख़ुदा की करते नेक ।

काफ़िरों से जब भिड़ जाओ,
गरदनें तुम उनकी उड़ा दो,
और जो जिंदा पकड़े जाएँ,
क़ैद उन्हें करके रख लो ।

रख ना दें जब तक हथियार,
छोड़ो ना उनको तब तक तुम,
छोड़ दो फिर रखकर एहसान,
या माल उनसे कुछ ले लो तुम ।

होते शहीद जो राहे ख़ुदा में,
आमाल उनके ना होते बरबाद,
यहाँ और वहाँ भी भलाई मिलेगी,
जन्नत में ख़ुदा करेगा आबाद ।

नेकी और ईमान वालों को,
दाख़िल बहिश्त में ख़ुदा करेगा,
काफ़िर खाते हैवान हों जैसे,
दोज़ख़ ही बस उन्हें मिलेगा ।

जालिमों की कितनी ही बस्तियाँ,
जो ताकत में बढकर थीं,
मददगार उनका हुआ ना कोई,
हलाक हमने वो कर दीं ।

जो शख़्स ख़ुदा की रहमत से,
चल रहा हो सीधे रस्ते पे,
हो सकता कैसे उनकी तरह,
आमाल बुरे होते हैं जिनके ?

खूबी यह है जन्नत की,
बहतीं उसमें हैं नहरें सभी,
पानी, दूध, शराब और शहद,
और मेवे भी मिलते सभी ।

कुछ ऐसे जो सुनते सब कुछ,
पर बनते यूँ, कुछ सुना नहीं,
चलते अपनी ख़्वाहिश के पीछे,
दिल पर उनके मुहर लगी ।

सूर: कोई क्यों नाज़िल नहीं होती,
कहते हैं कुछ मोमिन लोग,
लेकिन जिहाद का जब होता बयान,
विचलित हो जाते मरीज लोग ।

गर रहना चाहते ख़ुदा से सच्चा,
अच्छा बहुत उनके लिए होता,
अजब नहीं गर हाकिम हो जाओ,
करो खराबी तोड़ो तुम रिश्ता ।

लानत उन्हीं पर करी ख़ुदा ने,
कानों को बहरा, आँखों को अंधा,
क्या करते नहीं क़ुरआन पर गौर,
या उनके दिलों पर लगा ताला ।

पीठ फेरते हिदायत के बाद,
और झांसे में शैतान के आते,
करते ना-ख़ुश ख़ुदा को ये,
आमाल उनके बरबाद हो जाते ।

बीमार दिल क्या करते ख़्याल,
ज़ाहिर ना करेगा उनके कीनों को,
गर चाहता उन्हें सामने ला देता,
पर आजमाना चाहता वो लोगों को ।

जिन्हें मिल गया सीधा रस्ता,
पर किया कुफ्र उसके बाद,
बिगड़ेगा ना कुछ ख़ुदा का,
किया-कराया उनका होगा बरबाद ।

काफ़िर ना जाएँगे बख़्शे,
मत उनसे तुम सुलह करो,
साथ तुम्हारे हैं परवरदिगार,
हिम्मत अपनी कम ना करो ।

खेल तमाशा दुनिया की जिंदगी,
राहे ख़ुदा ना बुख्ल करो,
ख़ुदा बे-नियाज, तुम मुहताज,
मुँह उससे ना तुम फेरो ।

48. सूर: फ़तह

ऐ मुहम्मद, फ़तह दी तुमको,
बख़्श दें ताकि तुम्हारे गुनाह,
पूरी कर दें तुम पर नेमत,
और तुम को चलाएँ सीधी राह ।

मदद करे ख़ुदा तुम्हारी,
मोमिनों का दृढ़ करे ईमान,
गुनाह दूर कर दे उनके,
जन्नत में दे उन्हें स्थान ।

मुनाफ़िक और मुशिरक लोगों को,
सोचते बुरा जो ख़ुदा के लिए,
दे अज़ाब, और उन पर लानत,
दोज़ख़ है तैयार उनके लिए ।

पैगम्बर बना भेजा, ऐ मुहम्मद,
ताकि लोगों तुम लाओ ईमान,
समझो बुज़ुर्ग उन्हें मदद करो,
करो तस्बीह सुबह और शाम ।

करते बैअत जो लोग तुमसे,
बैअत ख़ुदा से वो करते,
रखे या तोड़े अहद जो अपना,
नफ़ा-नुक्सान ख़ुद अपना करते ।

जो रह गए पीछे, कहेंगे वो,
मजबूरी हमारी ने हमको रोका,
कहते कुछ अपनी ज़ुबान से,
कुछ और मगर दिल में होता ।

ख़ुदा जानता उनके दिल की,
सोचा, लौटोगे ना तुम लोग,
करते थे ख़्याल बुरे-बुरे,
पड़े हलाकत में ये लोग ।

जब चलोगे तुम लेने ग़नीमत,
कहेंगे ये भी साथ चलने को,
चाहते ख़ुदा का कौल बदलना,
कह दो, साथ चलें ना वो ।

सोचेंगे तुम रखते हो हसद,
पर ना-समझे, ये हैं अहमक,
कह दो, जल्द मिलेगा मौका,
जिसकी तुम रखते हो हसरत ।

जल्द ही एक लड़ाकू कौम से,
मिलेगा तुम्हें लड़ने का मौका,
या तो वे इस्लाम ले आएँगे,
या जंग उनसे रहेगा चलता ।

गर मानोगे तुम हुक्म ख़ुदा का,
देगा ख़ुदा तुम्हें अच्छा बदला,
फेरा मुँह पहले सा तुमने,
तो मिल के रहेगी तुम्हें सज़ा ।

जब कर रहे थे बैअत मोमिन,
ख़ुश होकर ख़ुदा ने फ़तह बख़्शी,
जिसका किया ख़ुदा ने वादा,
उससे भी अधिक ग़नीमत बख़्शी ।

उसने ही तुम्हें फ़हत्याब किया,
सरहदे मक्का पर रोके रखा,
पहुँचे ना नुक्सान कहीं मोमिनों को,
इसलिए देर से फ़तह हुआ मक्का ।

करा ख़्वाब तुम्हारा ख़ुदा ने सच्चा,
मस्जिदे हराम गए सुकून के साथ,
ग़ालिब किया दीन तमाम दीनों पर,
काफ़ी है ख़ुदा, नबी के साथ ।

49. सूर: हुजुरात

बोलो ना जवाब में मोमिनों,
ख़ुदा और रसूल से पहले,
ऊँची करो ना आवाज अपनी,
बात नबी से करो अदब से ।

बे-अक्ले देते हैं आवाज,
तुमको हुजरों के बाहर से,
होता सब्र उनके लिए बेहतर,
बाहर निकल जब तुम आ जाते ।

बद-किरदार गर ख़बर कोई लाए,
खूब तहक़ीक कर लिया करो,
होना ना पड़े तुम्हें शर्मिन्दा,
नादानी से तुम बचा करो ।

पैगम्बर ख़ुदा के तुम्हारे बीच,
गर मानें तुम्हारी सब बातें,
शायद मुश्किल में पड़ जाओ,
ख़ुदा ही जानता सब बातें ।

गर मोमिन लड़ें आपस में,
सुलह करा दो उनमें तुम,
गर करे ज्यादती उनमें कोई,
लड़ो दूसरे की ओर से तुम ।

जब मान ले वो हुक्में ख़ुदा,
बराबरी से सुलह करा दो,
पसन्द ख़ुदा को है इंसाफ़,
इंसाफ़ से निर्णय किया करो ।

उड़ाए ना मज़ाक कोई किसी का,
मुमकिन है वो उससे बेहतर हो,
ना ऐब लगाओ, ना नाम बुरा,
गुनाह हैं ये, इनसे बचा करो ।

तौबा ना करे वो जालिम है,
बचो गुमान करने से तुम,
ना कोई किसी की करे गीबत,
रहो ख़ौफ़े ख़ुदा से डरते तुम ।

किया पैदा एक जोड़े से तुम्हें,
बनायी तुम्हारी कौमें व कबीले,
तुम में जो ज्यादा परहेजगार,
ख़ुदा के नजदीक वो इज्जत वाले ।

कहते देहाती हम ईमान ले आए,
सच में इस्लाम बस वो लाए,
सच्चे मोमिन तो हैं वो लोग,
ख़ुदा, रसूल पर ईमान जो लाए ।

लाकर ईमान पड़े ना शक में,
लड़े लगा कर माल और जान,
एहसान नहीं मुसलमां होने का,
लेकिन ख़ुदा का जो माने एहसान ।

50. सूर: क़ाफ़्

कहते हैं काफ़िर अजीब है ये,
हम में से एक हिदायत करता,
मर कर मिट्टी हो जाने पर,
दूर अक्ल से फिर जिंदा होना ।

लेकिन अजब वो उलझ गए,
समझा हक़ को झूठ उन्होंने,
क्या देखी नहीं ख़ुदा की क़ुदरत,
जमीं-आसमाँ ना देखे उन्होंने ?

मेंह बरसाता, फसल उगाता,
करता जिंदा, मुर्दा जमीं को,
इसी तरह क़ियामत के दिन,
फिर पैदा करेगा वो तुमको ।

पैदा किया हम ही ने इंसा,
जानते हम उसके दिल की,
बहुत करीब हैं हम उसके,
रगे जान से भी ज्यादा उसकी ।

करता इंसा जब कोई काम,
लिख देते हैं उसको फ़रिश्ते,
बेहोशी मौत की खोलती हक़ीक़त,
जिससे इंसा भागते फिरते ।

क़ियामत का दिन वो दिन है,
हर शख़्स हमारे सामने होगा,
देंगे फ़रिश्ते आमालों को गवाही,
दोज़ख़ में हर ना-शुक्रा होगा ।

कहेगा शैतान की ऐ परवरदिगार,
ना किया मैंने इंसा को गुमराह,
उलझ रहा था यह ख़ुद ही,
ख़ुद ही भटका यह अपनी राह ।

मिलेगी जन्नत परहेजगारों को,
ख़ौफ़े ख़ुदा से जो रहे डरते,
बेहतर बदला मिलेगा उनको,
रुख़ ख़ुदा की तरफ़ जो करते ।

बना दिया सब छह दिनों में,
जमीं-आसमाँ रच थके ना हम,
तो जो कुछ बकते हैं कुफ़्फ़ार,
सब्र करो बस थोडा सा तुम ।

भोर से पहले, सांझ के वक़्त,
तारीफ़ के साथ तस्बीह करो,
रात में और नमाज़ के बाद,
बयान ख़ुदा की पाकी करो ।

हम ही तो जिलाते और मारते,
पास हमारे फिर आना है तुम्हें,
फटेगी धरती झटपट निकलोगे,
यह जमा करना आसान है हमें ।

कहते हैं जो कुछ ये लोग,
भली तरह मालूम है हमें,
जो डरते हों ख़ौफ़े ख़ुदा से,
उन्हीं को नसीहत, तुम्हारे जिम्मे ।

51. सूर: जारियात

क़सम हवा की, धूल उड़ाती,
आँचल में अपने बादल लहराती,
मंद-मंद चल काम बनाती,
सब चीजों को तक्सीम कराती ।

खंगर बरसाने गुनाहगारों पर,
भेजे गए थे वो फ़रिश्ते,
बचा लिए सब मोमिन लोग,
और गुनाहगार सब ख़त्म किए ।

कि वादा किया वो सच्चा है,
आएगा जरूर इंसाफ़ का दिन,
पड़े हो तुम किस झगड़े में,
आएगा अज़ाब बदले के दिन ।

निशानियाँ छिपी ऐसी कितनी,
कितनी ही कौमें हुई हलाक,
मानी ना बात नबियों की,
कौमें कर दी वो बरबाद ।

चखेंगे मज़ा जो शरारत करते,
जिसके लिए मचाते वो जल्दी,
बहिश्तों, चश्मों में ऐश करेंगे,
जो लाते ईमान, करते नेकी ।

पैदा किए जिन्न और इंसान,
कि करें इबादत ख़ुदा की वो,
ना रोटी, ना खाना चाहता,
रोटी और खाना देता है वो ।

याद करो इब्राहीम के मेहमां,
कहा सलाम एक-दूजे से उन्होंने,
होगा उन्हें एक दानिशमंद बेटा,
ख़ुशख़बरी इब्राहीम को दी उन्होंने ।

बेशक अज़ाब होगा जालिमों को,
जैसे हुआ साथियों को उनके,
क्यों मचाते जल्दी ये लोग,
होगी खराबी जब अज़ाब देखेंगे ।

52. सूर: तूर

क़सम तूर की, लिखी किताब की,
आबाद घर, ऊँची छत की,
और उबलते दरिया की क़सम,
अज़ाबे ख़ुदा होगा वाकेअ ही ।

ना रोक सकेगा उसे कोई,
जब लरजेगा आसमाँ कपकपा कर,
झुठलाने वालों की होगी खराबी,
उड़ेंगे पहाड़ जब ऊन बन कर ।

जो खेल रहे ना-समझ बने,
आग में दोज़ख़ की वो जलेंगे,
ख़ुदा का वादा झूठा नहीं था,
पछताएँगे, कुछ कर ना सकेंगे ।

बख़्शेगा जन्नत परहेजगारों को,
पाएँगे ऐशो-आराम वो जिसमें,
बेशक ख़ुदा मेहरबान उन पर,
राहे ईमान जो चले दुनिया में ।

ना तुम काहिन, ना दीवाने,
पर अक्ल नहीं रखते काफ़िर,
कहते क़ुरआन तुम बना लाए,
क्या ऐसा बना सकते काफ़िर ?

बगैर किसी के पैदा किए,
हो गए क्या काफ़िर पैदा,
या पैदा किया अपने आप को,
किए जमीं-आसमाँ भी पैदा ?

क्या रखते ख़ुदा के ख़जाने,
या कहीं के हैं वो दारोगा,
सीढी चढ़ आसमान छू लेते,
या उन्हें है इल्म गैब का ?

पर यकीन नहीं ये रखते,
ना सनद कोई उनके पास,
करते शिर्क साथ ख़ुदा के,
लेकिन ख़ुदा शरीक से पाक ।

छोड़ दो उन्हें अपने हाल पर,
इन्तिजार करें क़ियामत का वो,
करो सब्र हुक्मे ख़ुदा पर,
तुम तो हमारे सम्मुख हो ।

53. सूर: नज्म

क़सम तारे की कि साहिब तुम्हारे,
भूले ना रास्ता, भटके ना वो,
हुक्म ख़ुदा का है ये कुरआन,
ख़्वाहिशे नफ़्स ना कहते हैं वो ।

जोर वाले ने सिखलाया क़ुरआन,
ख़ुदा ने भेजा जिब्रील को उन्हें,
ऊँचे किनारे आसमाँ से उतर कर,
रूबरू ख़ुदा के बन्दे से हुए ।

देखा जो उन्होंने दिल ने माना,
देखा फिर एक बार और उन्हें,
बनकर नूर बेरी पर छाया,
देखती रही एकटक निगाहें उन्हें ।

देखी अपने परवरदिगार की,
बड़ी-बड़ी कितनी ही निशानियाँ,
क़ुरआन ख़ुदा का है फ़रमान,
ना कोई मनगढंत कहानियाँ ।

देखे तुमने लात और उज्जा,
तीसरे मनात को भी देखा,
ये तो बस नाम ही नाम,
बुत हो सकते नहीं कभी ख़ुदा ।

हैं आसमानों में बहुत फ़रिश्ते,
काम ना आती उनकी सिफ़ारिश,
जब तक ना बख़्शे ख़ुदा इजाज़त,
कर सकते ना किसी की सिफ़ारिश ।

कहते फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ,
आख़िरत पर ना जिनको ईमान,
ख़बर नहीं उन्हें कुछ इसकी,
चलाते हैं बस गुमान से काम ।

फेरे मुँह जो हमारी याद से,
तुम भी उससे मुँह फेर लो,
जानता ख़ुदा जो सीधी राह पर,
और भटक गया राह से जो ।

जानता है ख़ुदा सब के आमाल,
देता उनको वैसा ही बदला,
जताओ ना ख़ुद को पाक साफ़,
किया उसने ही तुम्हें पैदा ।

भला उसे क्या देखा तुमने,
फेर लिया हो मुँह जिसने,
क्या ख़बर पहुँची ना उस तक,
या इल्म कोई पाया उसने ?

मालूम नहीं क्या यह उसको,
उठाएगा बोझ ना कोई किसी का,
करता जो कोशिश पाता है वो,
कोशिश का मिलता पूरा बदला ।

वो ही हँसाता, वो ही रुलाता,
वो ही मारता, वो ही जिलाता,
दौलत देता, मुफ़लिस कर देता,
हलाक कौमों को कर वो डालता ।

तो ऐ इंसान, तू परवरदिगार की,
कौन-कौन सी नेमत पर झगड़ेगा,
मुहम्मद तो सुनाने वाले डर के,
कष्ट क़ियामत का कौन टाल सकेगा ?

ताज्जुब करते क्या क़ुरआन पर,
और रोते नहीं तुम हँसते हो,
पड़ रहे हो तुम ग़फ़लत में,
करो उसकी इबादत, सज्दा करो ।

54. सूर: क़मर

क़ियामत करीब आ पहुँची है,
काफ़िर लेकिन नहीं समझते,
वक़्त मुकर्रर सभी कामों का,
लेकिन काफ़िर झुठलाते रहते ।

इबरत हासिल नहीं करते वो,
मानते नहीं किताब की बात,
परवा ना कुछ तुम भी करो,
भुगतेंगे वो जो होंगे हालात ।

जमा करेगा ख़ुदा जिस दिन,
कब्रों से अपनी निकल पड़ेंगे,
बड़ा सख़्त वो दिन होगा,
नज़र ना अपनी उठा सकेंगे ।

नूह झुठलाए उनकी कौम ने,
डुबा डाली हमने वो कौम,
कौमें आद ने भी झुठलाया,
लील गयी आँधी वो कौम ।

झुठलायी समूद ने भी हिदायत,
लूत को कौम ने इन्कारा,
किया अज़ाब हम ने नाज़िल,
जालिमों को पल में मारा ।

ऐसे ही डराते हम उनको,
बुरे आमाल जो करते रहते,
किया आसान क़ुरआन को हमने,
तो है कोई जो सोचे समझे ?

झुठलायी निशानियाँ कौमें फ़िरौन ने,
पकड़ लिए हमने वो लोग,
क्या मजबूत तुम्हारे काफ़िर उनसे,
भाग जाएँगे जल्दी ये लोग ।

55. सूर: रहमान

फ़रमायी क़ुरआन की तालीम,
निहायत मेहरबान परवरदिगार ने,
उसी ने पैदा किया इंसान,
सिखलाया बोलना उसे, उसी ने ।

चल रहे मुकर्रर हिसाब से,
चाँद और सूरज दोनों गगन में,
कर रहे हैं उसको सज्दा,
पेड़ और पौधे सभी जमीं में ।

किया उसी ने बुलंद आसमाँ,
जमीन बिछायी ख़लक़त के लिए,
दिए मेवे और खजूर के पेड़,
अनाज और फूल ख़ुशबू के लिए ।

झुठला सकते तुम कौन नेमतें,
पैदा किया उसने तुमको,
इंसा को बनाया मिट्टी से,
शोलों से बनाया जिन्नों को ।

उसने ही तराज़ू की क़ायम,
बढ़ो ना हद से आगे तुम,
तौलो पूरा इंसाफ़ के साथ,
कभी तौल ना होवे कम ।

मालिक वही मश्रिकों, मग्रिबों का,
किए उसने ही दो दरिया जारी,
आपस में मिलते हैं वो दोनों,
पर करी उनमें एक आड़ तारी ।

बख़्शे दुनिया में मूंगे मोती,
जहाज़ बनाए बड़े-बड़े,
चलते जैसे पहाड़ नदी में,
हैं उसकी ही सभी नेमतें ।

जो मख़्लूक़ जमीं पर है,
सबको होना है फ़ानी,
बाकी रहेगी जात ख़ुदा की,
जलाल और अज़मत वाली ।

जितने प्राणी जमीं-आसमाँ में,
माँगते हैं वो सभी उसी से,
हरदम लगा काम में रहता,
जो भी मिलता, मिलता उसी से ।

ऐ इंसा और जिन्नों की जमात,
गर रखते हो क़ुदरत तुम लोग,
निकल जाओ जमीं-आसमाँ से,
पर जोर नहीं रखते तुम लोग ।

छोड़े तुम पर आग के शोले,
तो कर ना सकोगे तुम मुकाबला,
होगा होलनाक वो दिन जब,
फट पड़ेगा तुम पर ये आसमाँ ।

ना पूछेंगे उनके गुनाह,
इंसा से या जिन्नों से,
गुनाहगार सब पकड़े जाएँगे,
होगी पहचान बस चेहरों से ।

डरता सामने खड़े होने से,
जो शख़्स अपने परवरदिगार के,
किस्म-किस्म के मेवों के पेड़,
उसको मिलेंगे दो बागों में ।

बह रहे इनमें दो चश्में,
मेवो के पेड़ झुके होंगे,
सभी तरह के ऐशो-आराम,
हासिल उन्हें वहाँ पर होंगे ।

तो तुम अपने परवरदिगार की,
झुठलाओगे कौन-कौन सी नेमत,
जलाल और अज़मत का मालिक,
नाम में उसकी बड़ी बरकत ।

56. सूर: वाक़िअ

वाक़ेअ होने वाला जब हो जाए,
कोई पस्त तो कोई बुलंद होंगे,
काँपने लगेगी भूचाल से जमीन,
रेजा-रेजा हो पहाड़ उड़ने लगेंगे ।

तीन किस्म हो जाओ तुम लोग,
दाएँ, बाएँ औए आगे बढ़ने वाले,
बाएँ को अज़ाब, दाएँ को खूबी,
बेहतर सबसे आगे बढ़ने वाले ।

मुक़र्रब हैं यही लोग ख़ुदा के,
नेमत की बहिश्त में जो होंगे,
बहुत से अगले लोगों में से,
और थोड़े पिछलों में से होंगे ।

बैठेंगे जड़ाऊ तख्तों पर वो,
ख़िदमत करेंगे नौजवां उनकी,
मिलेगीं उन्हें जन्नत की हूरें,
बदला उसका जो करी नेकी ।

दाहिने हाथ वालों की ऐश,
फल होंगे वहाँ, मेवे होंगे,
प्यारी और हम उम्र पत्नियाँ,
ख़ुशी-ख़ुशी वो रहते होंगे ।

अफ़सोस बाएँ हाथ वालों पर,
होंगे अज़ाब में वो गिरफ्तार,
पाएँगे कष्ट तरह-तरह के,
अड़े हुए थे जो गुनाहगार ।

पैदा किया हमीं ने तुमको,
फिर करेंगे पैदा, क्यों नहीं समझते,
निश्चित किया है मरना तुम्हारा,
किसी और जगह पैदा कर सकते ।

जो तुम बोते, क्या तुम्हीं उगाते,
पानी जो पीते, क्या तुम बरसाते,
हम चाहें सब उल्टा कर दें,
फिर भी तुम क्यों नहीं समझते ?

तारों की मंजिलों की हमें क़सम,
है यह बड़े रुत्बे का क़ुरआन,
उतारा गया उसकी तरफ़ से,
किताबे महफ़ूज में लिखा है क़ुरआन ।

जब गले में रूह आ जाती,
नजदीक होते हम मरने वाले के,
सच्चे हो तो रूह फेर लो,
बस में नहीं लेकिन ये तुम्हारे ।

मुक़र्रिब को मरने पर मिलता,
नेमत के बाग और आराम,
दाएँ हाथ वालों को मिलता,
दाएँ हाथ वालों का सलाम ।

गर वो झुठलाने वाला गुमराह,
तो खौलते पानी की मेहमानी,
होगा जहन्नम में वो दाख़िल,
ना कोई शुबह, ना हैरानी ।

57. सूर: हदीद

करती है ख़ुदा की तस्बीह,
सब मख़्लूक़ जमीं-आसमाँ की,
ग़ालिब और हिक्मत वाला वो,
सब पर बादशाही है उसकी ।

सबसे पहला, सबसे पिछला,
ज़ाहिर और पोशीदा है वो,
चाहे कहीं भी तुम चले जाओ,
हरदम तुम्हारे साथ है वो ।

राहे ख़ुदा में ख़र्च करो,
है ये बड़ा सवाब का काम,
पैगम्बर बुला रहे तुमको,
क्यों नहीं लाते तुम ईमान ?

वो ही तो अपने बन्दों पर,
करता है खुली आयतें नाज़िल,
शफ़क़त करने वाला वो मेहरबाँ
अंधेरे से उजाला कराता हासिल ।

जमीं-आसमाँ विरासत ख़ुदा की,
क्यों नहीं करते फिर तुम ख़र्च,
बढ़ कर दर्जा उन लोगों का,
फ़तह से पहले करे जो ख़र्च ।

कौन है जो ख़ुदा को दे,
नेक नीयत और ख़ुलूस से क़र्ज़ा,
जन्नत देगा ख़ुदा उनको,
और करेगा ख़ुदा उसे अदा दोगुना ।

जिस दिन मोमिनों को देखोगे,
और उनके ईमान का नूर,
आगे-आगे और दायीं तरफ़,
दिखेगा चलता उनका नूर ।

कहा जाएगा तब उनसे,
हो बशारत यह तुमको,
आज तुम्हारे लिए बाग़ हैं,
हमेशा तुम जिन में रहो ।

कहेंगे उस दिन मुनाफ़िक लोग,
नज़र हमारी तरफ़ भी कीजिए,
कहा जाएगा तब यह उनसे,
नूर तलाश कहीं और कीजिए ।

दीवार बीच में उनके होगी,
जिसमें एक दरवाजा होगा,
भीतर दरवाजे के रहमत होगी,
जो बाहर, उनको अज़ाब होगा ।

तो मोमिनों से कहेंगे मुनाफ़िक,
क्या हम तुम्हारे साथ ना थे,
मोमिन कहेंगे ख़ुद बला में डाला,
करते इन्तिजार तुम हादसे की थे ।

शक किया इस्लाम में तुमने,
धोखा आरजूओं ने तुमको दिया,
आ गया ख़ुदा का हुक्म, मगर,
देता रहा तुम्हें शैतान दगा ।

ख़ुदा को याद करने के वक़्त,
और कुरआन सुनने के वक़्त,
हो जाएँ दिल नर्म मोमिनों के,
आया नहीं अभी वो वक़्त ।

ना हो जाएँ उन लोगों जैसे,
जिनको पहले दी गयी थी किताब,
गुजरा जमाना, दिल सख़्त हो गए,
लोग अक्सर हैं अब ना-फ़रमान ।

जान रखो कि दुनिया की जिंदगी,
बस खेल-तमाशा और जीनत,
आपस में तुम्हारा गरूर और शेख़ी,
माल और औलाद की ज्यादा तलब ।

इसकी मिसाल जैसे बारिश से,
खेती उगती, जोरों पर आती,
पक कर पीली पड़ जाती,
चूरा-चूरा फिर हो जाती ।

आख़िरत में काफ़िरों को अज़ाब,
बख़्शिश, ख़ुश्नूदी मोमिनों के लिए,
दुनिया की जिंदगी धोखे का माल,
जन्नत है ईमान वालों के लिए ।

है ख़ुदा का यह फ़ज़ल,
जिसे चाहे वो अता फ़रमाए,
पड़ती नहीं मुसीबत तुम पर,
जब तक उसे ख़ुदा ना चाहे ।

जो तुमसे फौत हो गया,
गम उसका ना खाया करो,
जो दिया उसको तुमने,
उस पर ना इतराया करो ।

जो इतराते और शेख़ी बधारते,
उन्हें ख़ुदा दोस्त नहीं रखता,
बुख्ल करते और मुँह फेरते,
उनकी ख़ुदा परवा नहीं करता ।

भेजे पैगम्बर किताबें बख़्शी,
दिया तराज़ू इंसाफ़ करने को,
शस्त्रों के लिए दिया लौहा,
और रक्षा अपनी करने को ।

भेजे हमने नूह और इब्राहीम,
सिलसिला नबियों का जारी रखा,
वक़्त-वक़्त पर उतारी किताबें,
इंजील के संग ईसा को भेजा ।

करी उनकी जिन्होंने पैरवी,
दिलों में शफ़क़त, मैहर डाली,
लज़्ज़तों से की किनाराकशी तो,
उन्होंने ख़ुद नयी बात निकाली ।

दिया ना हुक्म उनको हमने,
ख़ुद सोचा ख़ुश करेंगे हमको,
बनाना चाहिए था फिर जैसा उसे,
निभा ना सके उस बात को वो ।

जो उनमें से लाए ईमान,
हमने उनको बदला दिया,
उसके ही हाथ देना फ़ज़ल,
जिस पर चाहा फ़ज़ल किया ।

58. सूर: मुजादला

झगड़ती थी जो औरत तुमसे,
शौहर की शिकायत करती थी,
बातचीत सुन रहा था ख़ुदा,
इल्तिजा ख़ुदा ने उसकी सुन ली ।

कह देते जो पत्नी को माँ,
हो नहीं जाता माँ कहने से,
माँ तो बस वो होती है,
पैदा हुए पेट से जिसके ।

बेशक ना-माकूल और झूठी बात,
पर ख़ुदा माफ़ करने वाला,
सब कुछ देखता जानता वो,
गुनाह बन्दों के बख़्शने वाला ।

कह बैठे जो बीवी को माँ,
फिर रूजुअ कौल से कर ले,
एक गुलाम आज़ाद करे वो,
पहले जैसे रहने से पहले ।

इस हुक्म से नसीहत की जाती,
जो करते तुम, है ख़ुदा ख़बरदार,
मिले ना लेकिन जिसको गुलाम,
रोजे रखे वो दो महीने लगातार ।

रख सकता ना गर रोजे,
भोजन कराए वो साठ मुहताज,
ख़ुदा की हदें ना माने जो,
उन्हें दर्द देने वाला अज़ाब ।

सब कुछ ख़ुदा जानता, सुनता,
चाहे कानाफूसी भी करे कोई,
होता यह गुनाह और जुल्म,
नाफ़रमानी रसूल की करे कोई ।

देते ये दुआ जिस कलिमे से,
और कहते हैं अपने दिल में,
जो नबी को कहते हैं हम,
देता ना सज़ा क्यों ख़ुदा हमें ?

दोज़ख़ ही काफ़ी होगा उन्हें,
किए जाएँगे दाखिल उसमें,
ऐ पैगम्बर, उन्हें कह दो,
बुरी जगह उन्हें दोज़ख़ में ।

भला देखा ना तुमने उन्हें,
जो करते दोस्ती ऐसों से,
जिन पर ख़ुदा का गज़ब हुआ,
तुम में ना वे उनमें से ।

ऐ मोमिनों, कानाफूसी करो तो,
नेकी परहेज की बातें करना,
जमा होंगे तुम जिसके सामने,
परवरदिगार से डरते रहना ।

यकीनन बुरा जो करते थे,
क़समों को अपने ढाल बनाते,
जब अज़ाब का मज़ा चखेंगे,
काम ना कुछ देंगी क़समें ।

पहुँचा नहीं सकता कोई नुक्सान,
जब तक हुक्में ख़ुदा ना हो,
गम ना होगा तुम्हें मोमिनों,
जो रखते भरोसा ख़ुदा पे हो ।

किया शैतान ने काबू उन्हें,
याद ख़ुदा की उन्हें भुला दी,
यह जमाअत शैतान का लश्कर,
दोज़ख़ जाएगा यह लश्कर ही ।

जब हुक्म मिले खुल कर बैठो,
खुल कर तब तुम बैठा करो,
और हुक्म हो खड़े होने का,
तब तुम उठ खड़े हुआ करो ।

ख़ुदा, रसूल का जो दुश्मन,
ईमान वाले ना उनके दोस्त,
चाहे वो हो भाई-बंधू,
दूर ही रहते हैं वो लोग ।

जो ले आए तुम में ईमान,
इल्म अता जिन्हें किया गया,
ख़ुदा जानता तुम्हारे सब काम,
दर्ज़ा बुलंद उनका किया गया ।

होते हैं उनमें वो लोग,
दिलों में जिनके लिखा ईमान,
गैबी फैज से मदद मिलेगी,
लकीर पत्थर की उनका ईमान ।

59. सूर: हशर

तस्बीह करती सब चीजें ख़ुदा की,
है वो ग़ालिब और हिक्मत वाला,
उसी ने कुफ़्फ़ार अहले किताब को,
पहले हशर में घरों से निकाला ।

समझे थे जो घरों में सुरक्षित,
बचे ना वो अज़ाबे ख़ुदा से,
ना गुमान था जिनका उन्हें,
आ लिया ख़ुदा ने उन्हें वहाँ से ।

मुख़ालफ़त की थी उन लोगों ने,
ख़ुदा और उसके रसूल की,
करता जो शख़्स उनकी मुख़ालफ़त,
सज़ा मिलती उसे सख़्त अज़ाब की ।

दिलवाया जो माल नबी को,
उसमें तुम्हारा कुछ हक़ नहीं,
जिन्हें चाहता ख़ुदा मुसल्लत करता,
करी कोई मशक़्क़त तुमने नहीं ।

यह माल ख़ुदा, पैगम्बर का,
रिश्ते वालों, जरूरतमन्दों का,
गरीब वतन छोड़ने वाले और,
जिन्हें ख़ुदा मुकर्रर करे, उनका ।

कहते मुनाफ़िक कुफ़्फ़ारों से,
साथ हम निभाएँगे तुम्हारा,
पर झूठे शैतान से ये,
वक़्त आते कर जाते किनारा ।

चाहिए हर शख़्स को देखे,
भेजा उसने क्या कल के वास्ते,
सब आमाल से ख़बरदार ख़ुदा,
रहें ईमान वाले उससे डरते ।

वही ख़ुदा है सब जानने वाला,
बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला,
पाक जात, सलामत, सबका बादशाह,
निगहबान, ग़ालिब और बड़ाई वाला ।

60. सूर: मुम्तहिन

मोमिनों अगर निकले हो,
राहे ख़ुदा में मक्का से तुम,
मेरे और अपने दुश्मनों को,
दोस्त कभी ना बनाओ तुम ।

वो इन्कारी दीने हक़ के,
चाहते निकालना देश से तुमको,
भटक गया वो राह से सीधी,
जो पैगाम पोशीदा भेजता उनको ।

पर काफ़िर ग़ालिब हों तुम पर,
बन जाएँगे वो तुम्हारे दुश्मन,
तकलीफ़ देंगे और यह चाहेंगे,
तुम भी काफ़िर जाओ बन ।

रिश्ते नाते या औलाद तुम्हारी,
ना काम आएँगे इंसाफ़ के दिन,
जो करते तुम ख़ुदा देखता,
करेगा फ़ैसला ख़ुदा ही उस दिन ।

नेक चलन तुम पर जरूर है,
इब्राहीम और साथियों का उनके,
कहा कौम से बे-ताल्लुक हैं वो,
जब तक वो बुतों को पूजते ।

अदावत और दुश्मनी रहेगी हम में,
जब तक तुम ईमान ना लाते,
हुए ना इब्राहीम क़ायल कौम के,
और पलट गए अपने पिता से ।

भरोसा तुम्हीं पर, ऐ परवरदिगार,
तेरी ही तरफ़ हम रूजूअ करते,
हुज़ूर में तेरे लौट कर आते,
गुनाह माफ़ कर, ऐ ख़ुदा हमारे ।

अज़ब नहीं की पैदा कर दे,
ख़ुदा दोस्ती उन में, तुम में,
जिसने दीन पे जंग ना करी,
या घर से निकाला ना तुम्हें ।

मगर मंज़ूर नहीं उसे दोस्ती,
दीन पर जिसने जंग करी,
या घरों से तुम्हें निकाला,
या उन लोगों की मदद करी ।

मोमिनों जब आएँ पास तुम्हारे,
मोमिन औरतें वतन छोड़ के,
भेजो ना वापिस कुफ़्फ़ार के पास,
कर लो निकाह मह्र दे के ।

काफ़िर औरतें वापिस दे दो,
लेकर उनसे जो किया ख़र्चा,
औरतें अपनी वापिस ले आओ,
चाहे जंग तुम्हें पड़े करना ।

गर मोमिन औरतें बैअत करें,
ना चोरी, ना शिर्क करेंगी,
न बदकारी, ना औलाद क़त्ल,
ना बुहतान वो कोई बाँधेगी ।

ले लो बैअत तुम उनसे,
गर ना करें वो नाफ़रमानी,
माँगो उनके लिए बख़्शिशें,
बेशक ख़ुदा करता मेहरबानी ।

61. सूर: सफ़्फ़

क्यों कहते ऐसी बात मोमिनों,
जो तुम किया नहीं करते,
इससे सख़्त बेजार ख़ुदा,
कहते कुछ, तुम कुछ करते ।

शीशा पिलाई दीवार हो जैसे,
ऐसे अपने पाँव जमा कर,
राहे ख़ुदा में जो लड़ते,
रहते महबूबे ख़ुदा बन कर ।

याद करो वह वक़्त की जब,
मूसा ने कहा अपनी कौम से,
क्यों देते तुम मुझे तकलीफ़,
ख़ुदा का भेजा आया हूँ मैं ।

देखा ख़ुदा ने जब कौम को,
कि उन लोगों ने टेढ़ अपनाया,
टेढ़े कर दिए दिल उनके,
दूर कर दिया हिदायत का साया ।

तस्दीक तौरात की करी ईसा ने,
और बनी इस्राईल से ये कहा,
मेरे बाद जो आएँगे पैगम्बर,
नाम अहमद होगा उनका ।

कौन भला उससे जालिम,
ख़ुदा पर झूठे बुहतान जो बाँधे,
कर के रहेगा ख़ुदा रोशनी,
कितना भी वो चाहें बुझा दें ।

वही तो है जिसने नबी को,
दीने हक़ देकर भेजा,
सब दीनों पर करने ग़ालिब,
चाहे लगे मुशिरकों को बुरा ।

देती जो अज़ाब से मुक्ति,
ऐसी तिजारत तुम्हें मैं बताता,
राहे ख़ुदा में करना जिहाद,
ख़ुदा, रसूल पे ईमान का लाना ।

बख़्श देगा तुम्हारे वो गुनाह,
करेगा तुम्हें बहिश्त में दाख़िल,
मिलेगी मदद और होगी फ़तह,
करेगा अपनी रहमत वो नाज़िल ।

62. सूर: जुमुअ:

उसी ने भेजा, उनमें से,
बना के पैगम्बर, अपढो में,
आयतें पढ़ते, पाक करते,
और सिखाते हिक्मत वो उन्हें ।

भेजा उनमें से औरों को,
जो अभी नहीं मिले उनसे,
है ख़ुदा का फ़ज़ल उन पर,
जिसे चाहता करता अता उसे ।

जिनको अता करी तौरात,
उसका जिसने पालन ना किया,
उसकी मिसाल गधे की सी,
बड़ी-बड़ी किताबों से लदा हुआ ।

झुठलाते जो ख़ुदा की आयतें,
उनको वो हिदायत नहीं देता,
ख़ूब जानता ख़ुदा जालिमों को,
मौत के दिन वो बता देगा ।

अज़ान सुनो जब नमाज़े जुमे की,
ख़ुदा की याद में जल्दी करो,
बेहतर रोजी और निजात बख़्शता,
उसको ही तुम याद करो ।

63. सूर: मुनाफ़िक़ून

जब मुनाफ़िक तुम्हारे पास आते,
इकरार करने का करते ढ़ोंग,
अपनी क़समों को ढाल बनाते,
पर करते काम बुरे ये लोग ।

एतिकाद ना रखते ये दिल में,
लाते ईमान फिर काफ़िर हो जाते,
दुश्मन हैं तुम्हारे, बेख़ौफ़ ना रहना,
यहाँ-वहाँ फिरते ये बहके ।

माँगो, ना माँगो माग्फ़िरत तुम,
हरगिज ना ख़ुदा उनको बख़्शेगा,
नाफ़रमानों को हिदायत नहीं देता,
हलाक ख़ुदा उनको कर देगा ।

कहते, उन पर ना ख़र्चा करो,
रसूल के पास लग जो रहते,
सभी ख़जाने हैं उसके ही,
लेकिन मुनाफ़िक ये नहीं समझते ।

मोमिनों तुम्हें माल और औलाद,
यादे ख़ुदा से गाफ़िल ना करे,
दिया जो माल तुम्हें हमने,
करो ख़र्च मौत आने से पहले ।

जब सिर पर मौत खड़ी होगी,
माँगे ना मिलेगी मोहलत तुमको,
वक़्त हाथ से निकल जाएगा,
जो करना है अभी कर लो ।

64. सूर: तगाबुन

जो चीज जमीं-आसमाँ में है,
ख़ुदा की तस्बीह करती हैं सब,
उसी की सच्ची बादशाही है,
उसी की सब पर है क़ुदरत ।

काफ़िर हो या हो मोमिन,
सबको उसने ही किया पैदा,
जमीं-आसमाँ भी पैदा किए,
बनायी तुम्हारी सूरतें पाकीजा ।

सब जानता वो छिपा या ज़ाहिर,
दिल के भेदों को भी जानता,
क्या करते तुम क्या ना करते,
कुछ भी नहीं उससे है छिपा ।

ख़बर नहीं क्या यह तुमको,
काफ़िर जो हुए, उन्हें मिली सज़ा,
मुँह फेरा जो उन्होंने ख़ुदा से,
ख़ुदा ने भी उनसे मुँह फेरा ।

जो काफ़िर हैं सोचते ये,
उठेंगे ना वे हरगिज दोबारा,
कह दो मेरे ख़ुदा की क़सम,
करेगा वो तुम्हें ज़िंदा दोबारा ।

लाते जो ईमान ख़ुदा पर,
उनके दिल को हिदायत मिलती,
एक भरोसा ख़ुदा का सच्चा,
करो इताअत ख़ुदा, रसूल की ।

मोमिनों तुम्हारे रिश्ते नातों में,
हैं तुम्हारे कुछ दुश्मन भी,
बचो उनसे, माफ़ कर दो,
करेगा तुम पर वो मेहरबानी ।

करते ख़र्च जो उसके वास्ते,
डरते ख़ुदा से, हुक्म मानते,
देता उन्हें वो दोगुना बदला,
वो ही सीधी राह भी पाते ।

65. सूर: तलाक़

ऐ नबी, कह दो मुसलमानों से,
जब तलाक़ तुम देने लगो,
दो तलाक़ इद्दत के शुरू में,
और इद्दत को तुम गिनते रहो ।

घर से ना निकालो इद्दत में,
ना निकलें वो ख़ुद घर से,
गर ना करें खुली बे-हयाई,
रहने दो उन्हें तुम घर में ।

लांघता जो ख़ुदा की हद को,
ज़ुल्म वो ख़ुद पर करता,
ना मालूम क्या मर्जी उसकी,
शायद कर दे कोई रास्ता पैदा ।

जब मियाद करीब आ जाए,
सोच समझ तब करो फैसला,
साथ रहने दो अच्छी तरह,
या अच्छी तरह करो अलहदा ।

करो गवाही देने के लिए,
इंसाफ़ पसंद दो मर्द गवाह,
है जरूरी ईमान वालों को,
खरे ईमान पर उतरें गवाह ।

रखता जो ईमान ख़ुदा पर,
और ख़ुदा से जो कोई डरेगा,
गुमान ना हो, उसे वहाँ से,
रोजी देगा और किफायत करेगा ।

किया इद्दत का वक़्त मुकर्रर,
ख़ुदा ने ईमान वालों के लिए,
होते काम उनके आसान,
जो ख़ुदा से रहते डर के ।

जिस जगह तुम ख़ुद रहते हो,
इद्दत के दिनों वहाँ रखो उन्हें,
गैर वाजिब तकलीफ़ ना दो,
ना नीयत तंग करने की उन्हें ।

गर हामिल: हो पत्नी तुम्हारी,
बच्चा जनने तक ख़र्चा दो,
करो ख़र्च हैसियत के मुताबिक़,
दूध पिलाएँ तो उज्रत दो ।

और बहुत सी कौमों ने,
करी सरकशी, हुक्म ना माना,
चखा मज़ा, सज़ा मिली,
पड़ा उनको नुक्सान उठाना ।

सो डरो ख़ुदा से अक्ल वालों,
मानों तुम बात पैगम्बर की,
देतीं हैं नसीहत तुम्हें आयतें,
तम से निकाल करतीं रोशनी ।

उसने ही बनाये सात आसमाँ,
फिर वैसी ही जमीनें बनायी,
उनमें ख़ुदा के हुक्म उतरते,
उसकी क़ुदरत सब पर छायी ।

66. सूर: तहरीम

ऐ पैगम्बर, जो चीज ख़ुदा ने,
जायज़ की है तुम्हारे लिए,
किनाराकशी क्यों करते उससे,
पत्नियों की ख़ुश्नूदी के लिए ?

ख़ुदा मेहरबां बख़्शने वाला,
करता क़समों का मुकर्रर कुफ़्फ़ारा,
ख़ुदा ही तुम्हारा कारसाज़ है,
जानने वाला और हिक्मत वाला ।

जब कही एक भेद की बात,
पैगम्बर ने अपनी बीवी से,
रख ना सकी उसे पेट में,
बात नबी तक आई लौट के ।

कहा नबी ने उन दोनों को,
तौबा करो तुम ख़ुदा के आगे,
बेहतर उससे बख़्शिश माँगना,
जो दिल हो जाएँ कुछ टेढ़े ।

अपने आप को, घर वालों को,
ऐ मोमिनों, जहन्नम से बचाओ,
बदला मिलेगा जो किया तुमने,
कोई बहाने ना आज बनाओ ।

साफ़ दिल से करो तौबा,
आशा है गुनाह को दूर करेगा,
पैगम्बर और ईमान वालों को,
ख़ुदा उस दिन रुसवा ना करेगा ।

उनका नूर चल रहा होगा,
उनके आगे और दायीं तरफ़,
और करेंगे वो ख़ुदा से इल्तिजा,
पुरनूर कर और हमे माफ़ कर ।

लड़ो और उन पर सख़्ती करो,
काफ़िर और मुनाफ़िक से तुम,
दोज़ख़ है जो उनका ठिकाना,
बुरी जगह है, कह दो तुम ।

नूह की बीवी, लूत को बीवी,
काफ़िरों के लिए मिसाल फ़रमायी,
करी दोनों ने उनकी खिनायत,
ख़ुदा ने उन्हें दोज़ख़ फ़रमायी ।

फ़िरौन की बीवी, इम्रान की बेटी,
ये हैं मिसाल मोमिनों के लिए,
करती थीं इल्तिजा वो ख़ुदा से,
हो ख़ुदा की रहमत उनके लिए ।

67. सूर: मुल्क

बादशाही है जिसके हाथों में,
ख़ुदा बड़ी बरकत वाला,
हर चीज पर क़ुदरत रखता है,
है जबरदस्त और बख़्शने वाला ।

बनाए जो उसने सात आसमाँ,
क्या तू उसमें कमी देखता,
आँख उठा कर देख जरा तू,
नहीं मुकाबला उसकी क़ुदरत का ।

किया जिन्होंने इनकार ख़ुदा से,
जहन्नम का अज़ाब उनके लिए,
क्या हिदायत करने आया ना कोई,
पूछा जाएगा तब यह उनसे ?

कहेंगे वो आया था जरूर,
पर हमने ही उसे झुठलाया,
कहते थे उसे ग़लत हो तुम,
इर्शाद ख़ुदा ने ना फ़रमाया ।

और कहेंगे जो सुनते समझते,
तो हम दोज़खियों में ना होते,
कर लेंगे गुनाहों का इकरार,
पर दोज़ख़ में वो रहेंगे रोते ।

बिन देखे जो ख़ुदा से डरते,
बख़्शिश उन्हें और बड़ा बदला,
पैदा किया जिसने अनजान नहीं,
दिलों की बातें उसे है पता ।

जमीं नर्म की, रोजी दी तुम्हें,
जाना लौट कर पास उसके,
ख़ौफ़ नहीं क्या उसका तुम्हें,
जिसे क़ुदरत जो चाहे कर दे ?

झुठलाया जिन्होंने उनसे पहले,
देखो क्या उनका अंजाम हुआ,
कौन है ऐसा इस दुनिया में,
करे जो मदद, ख़ुदा के सिवा ?

पूछते काफ़िर गर सच्चे हो,
पूरी होगी कब यह धमकी,
होगा वादा जिस दिन पूरा,
उड़ जाएगी रौनक मुँह की ।

68. सूर: क़लम

नून, क़लम, क़लम वालों की क़सम,
ऐ मुहम्मद, नहीं हो तुम दीवाने,
अख़्लाक बुलंद है बड़ा तुम्हारा,
देखेंगे जल्द ये हैं कौन दीवाने ?

ख़ूब जानता है तुम्हारा परवरदिगार,
कौन भटका, कौन सीधी राह पर,
ये चाहते तुम नर्म हो जाओ,
लाना ना भरोसा, इन झूठों पर ।

आज़माइश की उनकी इस तरह,
बाग़ वालों की करी थी जैसे,
कहा उन्होंने जब क़समें खाकर,
मेवे तोड़ लेंगे सुबह होते-होते ।

कहा ना उन्होंने 'इन्शाअल्लाह',
सो गए अपने घर वो जा,
फिर गयी बाग पर एक आफ़त,
हो गया बाग कटी खेती सा ।

बड़े सवेरे जा पहुँचे बाग में,
मन में मनाते, फ़कीर ना आए,
देखी उन्होंने जब बाग़ की हालत,
सोच शायद वो रस्ता भूल आए ।

बोले हम ही कुसूरवार थे,
बढ़ गए थे हद से आगे,
रूजु लाते हम ख़ुदा की तरफ़,
उम्मीद वो हम पर रहम करे ।

हो गया है क्या तुमको,
कैसी तज्वीजें तुम करते हो,
क्या लिखा है किसी किताब में,
या हमने क़सम कोई खायी हो ?

क्या खायी क़सम की क़ियामत तक,
हुक्म करोगे तुम जिसका,
होगी हाज़िर वह चीज तुम्हें,
लेता है कौन इसका जिम्मा ?

क्या इस कौल में शामिल हैं,
शरीक कोई और भी उसके,
गर सच्चे हैं ये लोग,
अपने शरीकों को ला करें सामने ।

जिस दिन मुश्किल की घड़ी होगी,
और बुलाए जाएँगे कुफ़्फ़ार सज्दे को,
तब वो सज्दा कर ना सकेंगे,
उठा ना सकेंगे अपनी नज़रों को ।

तो समझ लेने दो तुम मुझको,
इस क़लाम को जो झुठलाते,
उनको ख़बर भी ना होगी,
पकड़ लेंगे हम उनको ऐसे ।

करो इन्तिजार हुक्मे ख़ुदा का,
और थोड़ा सा सब्र करो,
काफ़िर घूरते जब सुनते कुरआन,
उनकी ना तुम फ़िक्र करो ।

69. सूर: हाक्क़ा

क्या जानों, क्या सचमुच होने वाली,
झुठलाया कौमों ने, खड़खड़ाने वाली,
समूद कड़क से, आद आँधी से,
हलाक उन कौमों को करने वाली ।

फ़िरौनी और जो लोग पहले थे,
करते थे जो काम गुनाह के,
नाफ़रमानी करते थे ख़ुदा की,
पकड़ा बड़ा सख़्त उन्हें ख़ुदा ने ।

सूर एक बार जब फूँकी जाएगी,
उठेंगे जमीन और पहाड़ उस दिन,
टूट-टूट कर होंगे वो बराबर,
हो पड़ेगी, होने वाली उस दिन ।

क़ियामत के दिन फट जाएगा आसमाँ,
फ़रिश्ते उतर आएँगे किनारों पर,
आठ फ़रिश्ते होंगे उठाए उस दिन,
तुम्हारे परवरदिगार का अर्श काँधों पर ।

पेश किए जाओगे उस दिन,
तुम अपने आमालों के साथ,
भले-बुरे तुम्हारे आमालों का,
होगा उस दिन हिसाब-किताब ।

बुरे आमाल जिनके होंगे,
दोज़ख़ में वो भेजे जाएँगे,
काम ना देगा माल- असबाब,
ना दोस्त किसी को वो पाएँगे ।

तो क़सम हमें उन चीजों की,
जो तुम्हें नज़र आती, ना आती,
श्रेष्ठ फ़रिश्ते की जुबाँ का पैगाम,
किसी शायर का क़लाम, कुरआन नहीं ।

गर पैगम्बर कहते कुछ झूठ,
तो हाथ पकड़ लेते हम उनका,
फिर काट डालते गर्दन की रग,
कोई रोकने वाला हमें ना होता ।

यह किताब परहेजगारों को नसीहत,
पर तुम में कुछ झुठलाने वाले,
काफ़िरों को हसरत की वजह है,
बेशक क़ाबिल है ये यकीन के ।

70. सूर: मआरिज

तलब किया अज़ाब एक ने,
नाज़िल वह होकर रहेगा,
आसमानों के मालिक ख़ुदा का,
हुक्म कोई टाल नहीं सकेगा ।

ख़ुदा है मालिक जिन दर्जों का,
रूहुल अमीन व फ़रिश्ते चढ़ते उधर,
होगा अज़ाब नाज़िल जिस दिन,
जिसका अंदाज़ा पचास हजार बरस ।

करो हौसले के साथ बर्दाश्त,
वो दूर समझते, पर करीब हमारे,
आसमाँ होगा पिंघले तांबे सा,
और पहाड़ धुंकी हुई ऊन जैसे ।

पूछेगा ना दोस्त, दोस्त को,
सोचेंगे अज़ाब टल जाए कैसे,
धन-दौलत और बीवी बेटे,
जो चाहे वह वो सब ले ले ।

पर हरगिज ना वो छोड़े जाएँगे,
आग दोज़ख़ की उन्हें बुलाएगी,
दीने हक़ से मुँह फेरा था,
गुनाहगारी न वो बख़्शी जाएगी ।

लेकिन नमाज़ जो नियम से पढ़ते,
माल में हिस्सा औरों को देते,
सच समझते जो आख़िरत को,
और अज़ाबे ख़ुदा से डरते ।

जो रखते अपने ऊपर संयम,
निकलते नहीं हद से आगे,
क़ायम रहते अपने कौल पर,
लोग बहिश्त में ये ही जाएँगे ।

तो क्या हुआ उन काफ़िरों को,
कि तुम्हारी तरफ़ दौड़े चले आते,
क्या रखता उम्मीद की हर शख़्स,
दाख़िल होगा नेमत के बाग में ?

हरगिज नहीं होगा ऐसा,
रहने दो उन्हें बातिल में,
ताकत रखते हैं कि हम,
बेहतर लोग बदल लाएँ ।

वादा किया उनसे जिस दिन का,
आ मौजूद होने दो उसको,
दौड़ेंगे तब कब्रों से निकल कर,
झुकी आँखें और जिल्लत से वो ।

71. सूर: नूह

भेजे नूह उनकी कौम को,
ताकि हिदायत वो उनको करें,
उन पर अज़ाब आने से पहले,
नसीहत वो अपनी कौम को करें ।

कहा नूह ने कौम को अपनी,
करो इबादत और ख़ुदा से डरो,
एक वक़्त की देता है मोहलत,
फिर गुनाह तुम्हारे ना बख़्शेगा वो ।

ना सुनी जब बात नूह की,
अर्ज करी उन्होंने परवरदिगार से,
बुलाता रहा मैं उन्हें रात-दिन,
लेकिन वो और भी रहे भागते ।

कहा, माफ़ फ़रमाएगा वो तुम्हें,
जो तुम कर लेते तौबा,
कानों में ऊँगली देते रहे,
अकड़ बैठे और कपड़ा ओढा ।

कहा जो तुम माफ़ी माँगोगे,
बख़्श देगा वो बख़्शने वाला,
आसमान से मेंह बरसा कर,
बना देगा तुम्हें दौलत वाला ।

क्या देखा नहीं कैसे ख़ुदा ने,
बना दिए ऊपर तले सात आसमाँ,
चाँद को नूर, सूरज को चिराग,
और तुम्हें किया जमीं से पैदा ।

लौटा देगा फिर जमीं में,
और उसी से निकालेगा तुम्हें,
रास्ते बनाए चलने फिरने को,
फर्श बनाया जमीं को उसने ।

और अर्ज करी ऐ परवरदिगार,
माबूद ना छोड़ेंगे, कहते हैं ये,
गुमराह किया बहुतों को उन्होंने,
कर दे तू भी गुमराह इन्हें ।

किए जो गुनाह उनके कारण,
डुबा दिया उन्हें ख़ुदा ने,
उसके सिवा ना मददगार,
डाले गए फिर वो आग में ।

और दुआ करी फिर नूह ने,
ना बसा जमीं पर कोई काफ़िर,
गर रहने देगा जो तू उन्हें,
गुमराह करेंगे बन्दों को काफ़िर ।

मुझे और माँ-बाप को मेरे,
और ले ईमान जो घर आए,
माफ़ फ़रमा उन सबको तू,
और तबाही, जालिमों के लिए ।

72. सूरः जिन्न

ऐ पैगम्बर, लोगों से कह दो,
कि जिन्नों ने जब क़ुरआन सुना,
तो कहने लगे आपस में वो,
हमने अजीब एक क़ुरआन सुना ।

भलाई का रास्ता बतलाता क़ुरआन,
उस पर ले आए हम ईमान,
ना बानाएँगे ख़ुदा के साथ शरीक,
बहुत बड़ी परवरदिगार की शान ।

जो हम में से कुछ बेवक़ूफ़,
गढ़ते ख़ुदा के बारे में झूठ,
ना बीवी ख़ुदा की, ना औलाद,
ना समझे हम लोगों का झूठ ।

कुछ इंसान जिन्नों को मानते,
समझे ख़ुदा ना जिलाएगा उन्हें,
लेकिन भाग लें वो कहीं भी,
पकड़ ही लेगा ख़ुदा उन्हें ।

सुनता जो हिदायत की किताब,
और लाता उस पर ईमान,
डर उसे ना किसी जुल्म का,
और ना उसे होगा नुक्सान ।

और उन्हें यह भी कह दो,
गर वो सीधी राह पर होते,
आज़माइश उनकी करने के लिए,
पीने को बहुत हम पानी देते ।

कि मस्जिदें ख़ास ख़ुदा की हैं,
करो ना शरीक ख़ुदा के साथ,
यादे ख़ुदा से जो मुँह फेरेगा,
देगा उसे वह सख़्त अज़ाब ।

कह दो कि इबादत करता हूँ,
मैं तो अपने परवरदिगार की,
ख़बर नहीं कुछ मुझको,
तुम्हारे नुक्सान और नफ़े की ।

दे सकता नहीं कोई पनाह,
सिवा ख़ुदा, उसके अज़ाब से,
हुक्म और पैगाम ख़ुदा का,
पहुँचाना ही बस जिम्मे मेरे ।

नाफ़रमानी जो शख़्स करेंगे,
ख़ुदा और उसके पैगम्बर की,
रहेंगे हमेशा-हमेशा उसमें,
पाएँगे सज़ा वो जहन्नम की ।

देख लेंगे जब उस दिन को,
जिसका उनसे किया जाता वादा,
तब हो जाएगा मालूम इनको,
ना कोई दोस्त, ना मदद वहाँ ।

कह दो कि मैं नहीं जानता,
कब होगा दिन जिसका वादा,
करता नहीं किसी पर वो ज़ाहिर,
वो ही गैब का जानने वाला ।

73. सूर: मुज्जम्मिल

ऐ मुहम्मद, कियाम करो रात को,
आधी रात या कुछ कम ज्यादा,
ठहर-ठहर कर पढ़ा करो क़ुरआन,
नाज़िल जल्द भारी फ़रमान होगा ।

बेहतर है जागना रात में,
नफ़्स को ये काबू में रखता,
होता अच्छा ज़िक्रे ख़ुदा भी,
दिन तो और कामों में गुजरता ।

हर तरफ़ से ध्यान हटा कर,
उसी तरफ़ मुतवज्जह हो जाओ,
हर घड़ी करो उसी का ज़िक्र,
उसी को कारसाज़ अपना बनाओ ।

सहते रहो दिल दुखाना उनका,
और किनारा उनसे कर लो,
दौलत वाले जो झुठलाते रहते,
समझ मुझे उनसे लेने दो ।

थोड़ी सी मोहलत दे दो उन्हें,
फिर हम बेड़ियों में जकड़ लेंगे,
भड़कती आग और गुलूगीर खाना,
दर्दनाक अज़ाब उन्हें हम देंगे ।

काँपने लगे जमीं जिस दिन,
पहाड़ हो जाएँ रेत के टीले,
मूसा की तरह मुहम्मद उस दिन,
होंगे गवाह वो तुम्हारे मुकाबले ।

बचोगे उस दिन तुम कैसे,
जो बच्चों को बूढा कर देगा,
फ़िरौन ना बचा तुम कैसे बचोगे,
जब आसमाँ ये फट पड़ेगा ?

किया करते थे तुम रात में कियाम,
कभी आधी रात और कभी ज्यादा,
ख़ूब जानता है तुम्हारा परवरदिगार,
रखता वो रात-दिन का अन्दाजा ।

जानता वो निबाह नहीं सकोगे,
पढ़ो क़ुरआन आसान हो जितना,
करोगे जो तुम नेक आमाल,
पाओगे उससे ज्यादा तुम बदला ।

हाँ, जिस नबी को पसन्द फरमाएँ,
उसे बता देता गैब की बातें,
निगेहबान उन पर मुकर्रर करता,
हर चीज को रखता अपने ताबे ।

74. सूर: मुद्दस्सिर

ऐ मुहम्मद, जो कपड़ा हो लपेटे,
उठो, लोगों को हिदायत कर दो,
करो बड़ाई अपने परवरदिगार की,
और कपड़ों को अपने पाक रखो ।

करो ना एहसान इस नीयत से,
कि ज्यादा के तुम तालिब हो,
दूर रहो नापाकी से और,
सब्र तुम उसके लिए करो ।

फूँका जाएगा जिस दिन सूर,
दिन होगा वह मुश्किल का,
समझ लेने दो हमें उससे,
अकेला किया जिसे हमने पैदा ।

और ज्यादा उसको माल दिया,
बेटे भी दिए उसको हमने,
हो रहा वो आयतों का दुश्मन,
पर रखता ख़्वाहिश हम ज्यादा दें ।

ऐसा होगा हरगिज भी नहीं,
चढाएँगे हम उसे सऊद पर,
कैसी उसने की तज्वीज,
करता घमंड मुँह फेर कर ।

कहता है यह जादू है,
ख़ुदा का नहीं, इंसा का क़लाम,
सक़र में उसे दाख़िल करेंगे,
और करेंगे उसका काम तमाम ।

किए दारोगा दोज़ख़ के फ़रिश्ते,
करें किताब वाले ताकि यकीन,
शक ना लाएँ नेक लोग,
अहले किताब और जो मोमिन ।

दिल में मर्ज या हों काफ़िर,
पूछें क्या है मक्सूद ख़ुदा का,
करता गुमराह वो इसी तरह,
और देता हिदायत जिसे चाहता ।

हाँ, हाँ, चाँद की हमें क़सम,
रात की और रोशन सुबह की,
दोज़ख़ की आग बड़ी आफ़त है,
हर बशर को वजह ख़ौफ़ की ।

रेहन रखा हुआ हर शख़्स,
बदले में अपने आमालों के,
नेक लोग जाएँगे बहिश्त में,
जालिम होंगे हवाले दोज़ख़ के ।

पूछेंगे नेक जब दोज़खियों से,
पढ़ी ना नमाज़ कहेंगे वो,
ना फ़कीरों को खाना खिलाया,
हक़ पर ईमान ना लाए वो ।

काम ना देगी उनको सिफ़ारिश,
मुँह फेर रहे जो नसीहत से,
चाहते उन पर उतरे किताब,
पर होगा नहीं कभी भी ऐसे ।

नहीं आख़िरत का उन्हें है ख़ौफ़,
नसीहत है यह कोई शक नहीं,
तो जो चाहे इसको रखे याद,
ख़ुदा चाहे जैसा होता है वही ।

75. सूर: क़ियाम

क़सम कियामत की, नफ़्से लव्वामा की,
उठा कर सब खड़े किए जाएँगे,
सोचता इंसान हम कर ना सकेंगे,
बिखरा पिंजर और मिट्टी दुरुस्त करेंगे ।

पूछते जो कब होगी कियामत,
चुँधियाएगी आँखें चाँद गहना जाएगा,
किए जाएँगे सूरज-चाँद जमा,
कहीं भाग जाऊँ इंसान चाहेगा ।

पर पनाह ना कोई मिलेगी,
बस ख़ुदा के पास ठिकाना,
आमाल उसके होंगे ज़ाहिर,
बनेगा गवाह वो ख़ुद अपना ।

ऐ मुहम्मद, वह्य पढ़ने से पहले,
ज़ुबान अपनी तुम चलाया ना करो,
हमारे जिम्मे जमा करना पढ़ाना,
वह जो पढ़े तुम सुना करो ।

पर लोगों तुम्हारी दुनिया से दोस्ती,
और आख़िरत को छोड़ देते हो,
चमकेंगे बहुत से मुँह उस दिन,
देखेंगे जब वो अपने परवरदिगार को ।

और बहुत से होंगे उदास,
सोचेंगे मुसीबत वाक़ेअ होने को,
फँसी होगी जान गले में,
तैयारी चलने की परवरदिगार को ।

तो ना-समझ उस बन्दे ने,
ना की तस्दीक क़लामें ख़ुदा की,
पढ़ी ना नमाज़ मुँह फेर लिया,
बस अकड़ दिखाई और नादानी की ।

अफ़सोस है उस पर, फिर अफ़सोस,
क्या छोड़ दिया जाएगा यूँ ही,
पैदा किया उसको जिसने,
क्या फिर जिलाने की क़ुदरत नहीं ?

76. सूरः दह्र

ज़िक्र के काबिल ना था इंसान,
अपने पैदा होने से पहले,
बनाया हमीं ने देखता सुनता,
एक मिले-जुले नुत्फे से उसे ।

पैदा कर उसे राह दिखाई,
चाहे शुक्र करे चाहे ना-शुक्रा,
जंजीर, तौक और दहकती आग,
काफ़िरों को दोज़ख़ की सज़ा ।

नेकी वाले सब ऐश करेंगे,
पाएँगे वो जन्नत का मज़ा,
औरों की जरूरत करी पूरी,
तकलीफ़ें सही उसका बदला ।

सब्र रखा दुनिया में उन्होंने,
रहमत ख़ुदा की उन्हें मिलेगी,
रत्ती भर भी ना होगी तकलीफ़,
जन्नत में सब ख़ुशी मिलेगी ।

धीरे-धीरे किया है नाज़िल,
ऐ मुहम्मद, तुम पर कुरआन,
सब्र करो, हुक्म है जैसा,
यादे ख़ुदा सुबह और शाम ।

बयान करो पाकी उसकी,
देर रात तक सज्दा करो,
कहा ना मानों ना-शुक्रों का,
राज़ी में उसकी राज़ी रहो ।

77. सूरः मुर्सलात

नर्म-नर्म चलती हवाओं की क़सम,
जोर पकड़ कर झक्कड़ हो जाती,
फैला देती फाड़ कर बादल,
जुदा-जुदा फिर उन्हें कर देती ।

क़सम है फिर फ़रिश्तों की,
जो वह्य तुम तक लाते,
किया जाता है जिसका वादा,
दिन जरूर वो रहेगा आ के ।

जाती रहे जब चमक तारों की,
और आसमान जब फट जाए,
उड़े-उड़े जब फिरें पहाड़,
और पैगम्बर फ़राहम किए जाएँ ।

देर की गई इसलिए इनमें,
कि फैसले का आ जाए दिन,
क्या ख़बर तुम्हें वह क्या है,
झूठों की खराबी है उस दिन ।

क्या हलाक किया ना लोगों को,
इन पिछलों को भी भेजते पीछे,
करते ऐसा ही गुनाहगारों के साथ,
पाएँगे खराबी उस दिन झूठे ।

क्या तुम्हें पैदा किया ना हमने,
बनाया ना जमीं को समेटने वाली,
उस पर ऊँचे पहाड़ रख दिए,
और पिलाया तुमको मीठा पानी ।

जिस चीज को तुम झुठलाते थे,
अब तुम उसकी ओर चलो,
प्रचण्ड बड़ी एक आग है वो,
बच ना सकोगे, चाहे जो हो ।

उठा लो किसी कदर फ़ायदे,
पर गुनाहगार तुम बेशक हो,
झुकते नहीं तुम ख़ुदा के आगे,
तुम्हें होगी खराबी उस दिन को ।

78. सूर: नबा

किस चीज के बारे पूछते ये,
क्या बड़ी ख़बर के बारे में,
देखो, जान लेंगे ये बहुत जल्द,
इख्तिलाफ़ कर रहे ये जिसमें ।

क्या जमीं को बनाया ना बिछौना,
पहाड़ों को उसकी मेखें ठहराया,
पैदा किया तुमको जोड़ा-जोड़ा,
नींद को आराम की वजह बनाया ।

रात को पर्दा किया मुकर्रर,
दिन रोजी का वक़्त किया,
ऊपर तले सात आसमाँ बनाए,
सूरज को रोशन चिराग किया ।

और बादल से मेंह बरसाया,
ताकि फ़सल करो तुम पैदा,
बाग़ लगाओ घने-घने,
और पिओ पानी तुम ठंडा ।

बेशक मुकर्रर है फ़ैसले का दिन,
उस दिन सूर फूँका जाएगा,
जुट के जुट हो जाओगे जमा,
आसमाँ उस दिन खोला जाएगा ।

बेशक दोज़ख़ घात में है,
सरकशों का है वो ठिकाना,
पड़े रहेंगे उसमें मुद्दतों,
बहुत बुरा दोज़ख़ है ठिकाना ।

कामियाबी है परहेजगारों को,
सब आराम व सुख होगा,
ना झूठ, ना बात बेहूदा,
बदला ख़ुदा से बड़ा मिलेगा ।

रूहुल अमीन और फ़रिश्ते जब,
सफ़ बाँध कर होंगे खड़े,
कोई कुछ ना बोल सकेगा,
इजाज़त ना जब तक वो बख़्शे ।

कर दिया आगाह अज़ाब से,
बहुत जल्द जो आने वाला,
दिन बर-हक़ शख़्स जो चाहे,
ख़ुदा के पास बना ले ठिकाना ।

79. सूर: नाज़िआत

क़सम है उन फ़रिश्तों की,
डूब कर जो खींच लेते हैं,
खोल देते हैं आसानी से और,
उनकी जो तैरते-फिरते हैं ।

फिर बढ़ते हैं लपक कर आगे,
करते इन्तिजाम सब कामों का,
आकर रहेगा जरूर वह दिन,
जब भोचाल जमीं को आएगा ।

डरते होंगे दिल लोगों के,
और आँखें झुकी हुई होंगी,
कहेंगे काफ़िर बिखरी हड्डियाँ,
क्या उस दिन जमा होंगी ?

भला पहुँची मूसा की हिकायत,
जब तुवा में उन्हें पुकारा,
हुक्म दिया फ़िरौन को जाओ,
सरकश बड़ा वो हो रहा ।

कहो, क्या होना चाहते पाक,
तो मैं तुम्हें रास्ता दिखाऊँ,
ख़ौफ़े ख़ुदा हो तुममें पैदा,
ख़ुदा का मैं पैगाम सुनाऊँ ।

मूसा झुठलाए, फ़िरौन ना माना,
बोला सबका हूँ मैं मालिक,
हुआ शिकार अज़ाबे ख़ुदा का,
करो किस्से से इबरत हासिल ।

भला मुश्किल क्या तुम्हें बनाना,
बना दिया जिसने आसमान,
छत को उसकी ऊँची किया,
फिर उसको कर दिया समान ।

रात अँधेरी बनायी उसी ने,
उसी ने दिन में धूप करी,
फैला दिया जमीं को उसने,
उसी ने पानी और फ़सल करी ।

तो जिस दिन बड़ी आफ़त आएगी,
याद करेंगे सब अपने आमाल,
सरकशों का दोज़ख़ है ठिकाना,
बहिश्त, जो करते नेक आमाल ।

पूछते जो कब होगी क़ियामत,
कह दो मालूम ख़ुदा को ये,
देख लेंगे जब वे उसको,
सोचेंगे यहाँ कुछ पल ही रहे ।

80. सूर: अ-ब-स

आया एक अंधा पास तुम्हारे,
क्या ख़बर वो पाकी हासिल करता,
मुतवज्जह हो तुम और की तरफ़,
जो परवाह नहीं तुम्हारी करता ।

आया जो तुम्हारे पास दौड़ते,
और ख़ुदा से जो डरता,
बेरुखी करते तुम उससे,
जो क़ुरआन सुनना है चाहता ।

देखो यह क़ुरआन नसीहत है,
लिखा अदब के क़ाबिल पन्नों में,
रखे हुए हैं, बुलन्द मुकाम पर,
जो चाहे इसे याद रखें ।

ऐसा ना-शुक्रा है इंसान,
कि जिसने बनाया है इसको,
मानता नहीं उसी का हुक्म,
जिसने दिया सब कुछ उसको ।

तो जब क़ियामत का गुल मचेगा,
दूर रिश्तों से हर कोई भागेगा,
ख़ुश होंगे उस दिन नेक लोग,
और काफ़िरों का मुँह स्याह होगा ।

81. सूर: तक्वीर

लपेट लिया जाएगा जब सूरज,
तारे बे-नूर जब हो जाएँगे,
चलाए जाएँगे जिस दिन पहाड़,
और दरिया आग हो जाएँगे ।

मिला दी जाएगी जब रूहें,
अम्लों के दफ्तर खोले जाएँगे,
खींची जाएगी आसमाँ की ख़ाल,
दोज़ख़ में आग को भड़काएँगे ।

नेक आमालों वालों के लिए,
लायी जाएगी जब बहिश्त क़रीब,
मालूम कर लेगा तब हर शख़्स,
कैसे आमाल हैं उसके क़रीब ।

बेशक बुलंद दर्जा फ़रिश्ते का,
ज़ुबाँ का पैगाम है क़ुरआन,
दीवाने नहीं हैं तुम्हारे रफीक,
देखा फ़रिश्ता पूरब के आसमान ।

नहीं क़लाम यह शैतान का,
फिर किधर को तुम जाते,
नसीहत यह लोगों के लिए,
सीधी राह जो चलना चाहते ।

82. सूर: इन्फ़ितार

जिस दिन आसमान फट जाएगा,
और झड़ पड़ेंगे सब तारे,
दरिया बह कर मिल जाएँगे,
उखेड़ दी जाएँगी जब कब्रें ।

कर लेगा हर शख़्स मालूम,
कि उसने आगे क्या भेजा,
ख़ुदा के बारे में तुझको,
ऐ इंसान किसने दिया धोखा ?

उसी ने तो बनाया तुझको,
ठीक किया तेरे अंगों को,
हैरत और अफ़सोस कि तू ने,
झुठला दिया उसके बदले को ।

निगहबान है तुम पर मुकर्रर,
जो तुम करते, लिखते जाते,
बदला मिलेगा तुम्हें वैसा ही,
जैसा करते, वो उसे जानते ।

और तुम्हें मालूम नहीं है,
बदले का दिन कैसा होगा,
मदद ना करेगा कोई किसी की,
हुक्म ख़ुदा का ही बस होगा ।

83. सूर: मुतफ़्फ़िफ़ीन

कमी जो करते नाप-तौल में,
लेते पूरा पर देते हैं कम,
क्या नहीं जानते उठाए जाएँगे,
होंगे ख़ुदा के पेशे कदम ?

सिज्जीन में लिखे झूठों के आमाल,
उस दिन ख़राबी झुठलाने वालों की,
जंग लगा है उनके दिलों पर,
जलेंगे वो आग में दोज़ख़ की ।

इल्लीयीन में नेकों के आमाल,
हाज़िर जिसके पास फ़रिश्ते,
चैन में होंगे, तख्तों पर बैठे,
ताजा चेहरे, राहत से हँसते ।

मोमिनों से हँसी करते थे काफ़िर,
करते थे हिकारत से वो इशारे,
तो आज हँसी करेंगे मोमिन,
मिलेंगे जब उन्हें आमालों के बदले ।

84. सूर: इन्शिक़ाक़

आसमान जब फट जाएगा,
जब जमीं होगी हमवार,
और जो कुछ उसके भीतर,
देगी उसे बाहर निकाल ।

इर्शादे ख़ुदा की तामील करेंगे,
और उनको है यह लाज़िम,
जा मिलोगे परवरदिगार से,
उस दिन क़ियामत होगी क़ायम ।

आमालनामा जिनके दाहिने हाथ में,
हिसाब आसान और वो ख़ुश होंगे,
जिन्हें आमालनामा मिलेगा पीछे से,
दोज़ख़ में लोग वो दाख़िल होंगे ।

रहते थे मस्त अपने अहल में,
सोचा ना ख़ुदा को फिर जाएँगे,
सब देख रहा था परवरदिगार,
लोग ना अब वो बख़्शे जाएँगे ।

हमें शाम की लाली की क़सम,
क़सम रात की और चाँद की,
तुम दर्जा-दर्जा ऊँचे चढ़ोगे,
क्यों लाते लोग ईमान नहीं ?

जब पढ़ा जाता क़ुरआन सामने,
तो करते नहीं ये लोग सज्दा,
काफ़िर जो झुठलाते, अज़ाब पाएँगे,
ईमान और नेकों को बड़ा बदला ।

85. सूर: बुरूज

बुर्ज वाले आसमाँ की क़सम,
और उस दिन की, जिसका वादा,
क़सम हाज़िर होने वाले की,
और उसकी जो हाज़िर होगा ।

कि कर दिए गए वो हलाक,
खोदी जिन्होंने आग की खन्दक,
बैठ किनारों पर देख रहे थे,
मोमिन जलें खन्दकों के अन्दर ।

दी जिन्होंने तकलीफ़ मोमिनों को,
लेकिन ना करी जिन्होंने तौबा,
दोज़ख़ का अज़ाब होगा उन्हें,
और अज़ाब जलने का होगा।

सख़्त बहुत है पकड़ ख़ुदा की,
वो ही पैदा करता है दोबारा,
अर्श का मालिक, बड़ी शान वाला,
कर देता वो, जो वो चाहता।

नहीं झूठ इस किताब में कुछ,
बल्कि कुरआन है अजीमुश्शान,
लौहे महफूज में लिखा हुआ,
बख़्शिश पाते जो लाते ईमान।

86. सूर: तारिक़

आसमान और जो रात को आए,
चमकने वाले उस तारे की क़सम,
कि ऐसा कोई नफ़्स नहीं है,
जिस पर किए ना निगेहबां क़ायम।

तो चाहिए इंसा को देखना,
कि वह काहे से पैदा हुआ,
पैदा किया पहली बार उसी ने,
बेशक वो करेगा फिर से पैदा।

करेगा इरादा वो जिस दिन,
जाँचेगा वो भेद दिलों के,
ना मददगार कोई इंसा का,
ना क़ाबू होगा कुछ उसके।

क़सम आसमाँ की जो मेंह बरसाता,
क़सम जमीं की जो फट जाती,
करता जुदा हक़ को बातिल से,
यह क़लाम कोई बेहूदा बात नहीं।

87. सूर: अअला

करो तस्बीह ख़ुदा के नाम की,
इंसा को बनाया, फिर ठीक किया,
जिसने ठहराया उसका अन्दाजा,
और फिर उन्हें रास्ता बतलाया।

हम तुम्हें पढ़ा देंगे ऐसे,
भूलोगे फिर ना उसे कभी,
ख़ुदा जानता सब बातें तुम्हारी,
चाहे ज़ाहिर हों, या हों छिपी।

नफ़ा देने की उम्मीद जहाँ तक,
उन्हें तुम नसीहत रहो करते,
जिसे ख़ौफ़े ख़ुदा, पकड़ेगा नसीहत,
बदबख़्त रहेगा मगर भागते ।

होगा आग में वो दाख़िल,
ना मरेगा, ना जिएगा वहाँ,
मुराद मिली जो पाक हुआ,
नमाज़ पढ़ी और ज़िक्र किया ।

लेकिन करते हो तुम लोग,
स्वीकार जिंदगी को दुनिया की,
लिखी हुई सहीफ़ों में है,
बेहतर आख़िरत जो रहती बाकी ।

88. सूर: ग़ाशिय:

होगी बरपा क़ियामत जिस दिन,
बहुत से लोग जलील होंगे,
सख़्त मेहनत करेंगे थके-मांदे,
दहकती आग में दाख़िल होंगे ।

एक खौलते हुए चश्मे का,
मिलेगा उन्हें पानी पीने को,
और सिवा कांटेदार झाड़ के,
कुछ ना मिलेगा खाने को ।

और बहुत से ख़ुश होंगे तब,
ऊँचे बहिश्त में मिलेगा ठिकाना,
मिलेंगे उन्हें ऐशो-आराम,
अम्न और चैन का वो ठिकाना ।

देखते नहीं क्या ये लोग,
बनाए कैसे हमने ऊँट अजीब,
बुलंद किया आसमाँ कैसा,
और बिछायी कैसे हमने जमीन ?

काम तुम्हारा नसीहत करना है,
नियुक्त नहीं तुम उन पर दारोगा,
जो मुँह फेरते, उन्हें देंगे अज़ाब,
जब लौटेंगे हमे, हिसाब होगा ।

89. सूर: फ़ज्र

क़सम फ़ज्र की, दस रातों की,
क़सम जुफ़्त और ताक की,
काफ़िरों को जरूर अज़ाब होगा,
क़सम जाती हुई रात की ।

क्या देखा कि परवरदिगार ने,
क्या किया आद, समूद के साथ,
फ़िरौन भी जो हुआ था सरकश,
उन सबको कर दिया हलाक ।

अजीब मख़्लूक़ है मगर इंसान,
जब ख़ुदा उसको आजमाता,
उसे इज्ज़त देता, बख़्शता नेमत,
मुझे इज्ज़त बख़्शी, वो इतराता ।

जब आजमाता मुश्किल में उसे,
कहता किया जलील ख़ुदा ने,
बदला उसी के आमालों का,
जुल्म किए थे जो उसने ।

जिस दिन हाज़िर होगी दोज़ख़,
तो इंसा उस दिन चेतेगा,
कहेगा काश कुछ किया होता,
पर तब पछताए कुछ ना होगा ।

लौट चल अपने ख़ुदा की तरफ़,
ऐ रूह, इत्मीनान पाने वाली,
हो जा शामिल मेरे बन्दों में,
तू उससे, वो तुझसे राज़ी ।

90. सूर: ब-लद

हमें इस शहर मक्का की क़सम,
आदम और उसकी औलाद की,
कि तकलीफ़ में बनाया हमने इंसान,
क्या क़ाबू हमारा उस पर नहीं ?

कहता उसने माल बरबाद किया,
क्या उसे किसी ने देखा नहीं,
दी उसे जुबाँ, दो होंठ दिए,
क्या हमने दी उसे आँखें नहीं ?

भले बुरे दोनों रास्ते दिखाए,
पर घाटी से होकर ना गुजरा,
ना करी सहायता कभी किसी की,
हमारी आयतों से भी मुकरा ।

फिर उनमें भी हुआ दाख़िल,
ईमान और नेक आमालों वालों में,
सब्र की नसीहत, शफ़क़त की वसीयत,
यही लोग शामिल सआदत वालों में ।

पर वो लोग जो झुठलाते,
मानते नहीं हमारी आयतों को,
बद-बख़्त हैं वो सज़ा पाएँगे,
पाएँगे वो दोज़ख़ की आग को।

91. सूर: शम्स

सूरज की क़सम, रोशनी की क़सम,
क़सम चाँद की, जब पीछे निकले,
और दिन की जब चमका दे,
रात की जब उसे छिपा ले।

आसमान और उसे बनाया जिसने,
जमीं और उसे फैलाया जिसने,
इंसा को बनाया, उसे ठीक किया,
और उसकी, समझ दी उसे जिसने।

कि पाक रखा नफ़्स को जिसने,
मिल गयी उसे अपनी मुराद,
घाटे में रहा वो शख़्स जिसने,
मिलाई अपनी नफ़्स में खाक।

समूद कौम ने झुठलाया नबी को,
काट दी उन्होंने ऊँटनी की कूँचे,
अज़ाब नाजिल किया उन पर,
हालाक कर दिया उन्हें ख़ुदा ने।

92. सूर: लैल

क़सम रात की दिन छिपा ले,
दिन की क़सम जब चमक उठे,
और क़सम उसकी जिसने,
नर और मादा, दोनों पैदा किए।

मालूम ख़ुदा को है लोगों,
करते कोशिश तुम तरह-तरह की,
कोई माल ख़र्चते राहे ख़ुदा में,
कोई परहेज, कोई करते नेकी।

कोई कंजूस और बेपरवाह,
नेक बात को झूठ समझते,
ऐसे ही लोगों से हम,
पेश सख़्ती से हैं आते।

नेक लोगों को देंगे हम,
आसान तरीके की तौफ़ीक,
आख़िरत और दुनिया भी,
हैं हमारी ही दोनों ही चीज।

डराया तुम्हें भड़कती आग से,
दाख़िल उसमें वो होगा,
बद-बख़्त बड़ा इस दुनिया में,
जिसने झुठलाया और मुँह फेरा।

जो देगा माल पाकी के लिए,
ना उतारने को कोई एहसान,
रजामंदी ख़ुदा की हासिल करने को,
मिलता जल्द उसको इनाम।

93. सूर: जुहा

सूरज की रोशनी की क़सम,
रात की जब अँधियारा हुआ,
ऐ मुहम्मद, तुम्हारे परवरदिगार ने,
ना तुम्हें छोड़ा, ना नाराज हुआ।

दी जगह तुम्हें यतीम पाकर,
अनजान थे सीधा मार्ग दिखाया,
पाया तंगदस्त परवरदिगार ने,
दिया माल, गनी कर दिखाया।

आख़िरत तुम्हारे लिए बेहतर है,
दुनिया के हाल से कई ज्यादा,
हो जाओगे ख़ुश बहुत जल्द,
अता फ़रमाएगा ख़ुदा कुछ ऐसा।

तो तुम भी किसी यतीम पर,
सितम कोई कभी ना करना,
झिड़कना ना भिक्षु को कभी,
बयान नेमतों का करते रहना।

94. सूर: इन्शिराह

ऐ मुहम्मद, सीना तुम्हारा,
क्या हमने नहीं खोल दिया,
तोड़ रखी थी पीठ जिसने,
बोझा क्या ना उतार दिया ?

ज़िक्र किया तुम्हारा बुलंद,
आसानी है मुश्किल के साथ,
करो इबादत जब फ़ारिग हो,
और ख़ुदा को अपने याद।

95. सूर: तीन

क़सम इंजीर की, जैतून की क़सम,
और क़सम हमें तूरे सीनीन की,
पैदा किया अच्छी सूरत में रखा,
क़सम अम्न वाले शहर मक्का की ।

पैदा किया फिर हालत बदली,
पस्त से पस्त उसे कर दिया,
मगर नेक और ईमान वालों को,
बे-इन्तिहा बदला हमने दिया ।

तो ऐ आदम की औलाद,
झुठलाता क्यों बदले का दिन,
क्यों तुझको है यकीन नहीं,
ख़ुदा है सबसे बड़ा हाकिम ?

96. सूर: अलक़

पढ़ो, ऐ मुहम्मद, पढ़ो, पढ़ो,
लेकर नाम ख़ुदा का पढ़ो,
पैदा किया जिसने दुनिया को,
करम वाला वो ख़ुदा पढ़ो ।

क़लाम के जरिए इल्म सिखाया,
सिखाया वो, जिसका इल्म ना था,
सरकश मगर हो जाता इंसान,
जब वो ख़ुद को गनी देखता ।

कुछ शक नहीं कि बन्दों को,
लौट कर जाना ख़ुदा की तरफ़,
चलते जो सीधी राह पर हों,
मना करता भला क्यों कोई शख़्स ?

क्या उसको मालूम नहीं,
कि देख रहा है ख़ुदा उसे,
गर बाज ना वो आएगा तो,
देंगे हम उसकी सज़ा उसे ।

देखो उसका कहा ना मानना,
और करते रहना सज्दा तुम,
इबादत करना सदा ख़ुदा की,
कुर्ब हासिल करो ख़ुदा का तुम ।

97. सूरः क़द्र

नाज़िल करना शुरू किया,
शबे क़द्र में हमने कुरआन,
मालूम तुम्हें क्या शबे क़द्र,
हजार महीनों से जो महान ।

रूहुल अमीन और फ़रिश्ते,
इसी रात में सब वो उतरते,
अमान और सलामती सुबह तक,
काम सब हुक्में ख़ुदा से करते ।

98. सूरः बय्यिनः

जब तक खुली दलील ना आती,
जो काफ़िर हैं उनके पास,
रहते ना वो बाज कुफ़्र से,
मुशिरक लोग और अहले किताब ।

नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें,
दीन यही तो है सच्चा,
पड़ेंगे वो दोज़ख़ की आग में,
रहेंगे वो उसमें ही सदा ।

अलग-अलग हुए जो अहले किताब,
हुए खुली दलील आने के बाद,
हुक्म हुआ था उन्हें करने का,
इबादत, अमन के इख़लास के साथ ।

जो लाते ईमान, नेकी करते,
बेहतर तमाम ख़लक़त से वो,
वो भी और ख़ुदा भी ख़ुश,
जन्नत में रहेंगे हमेशा वो ।

99. सूरः ज़िल्ज़ाल

डोल उठेगी जिस दिन धरती,
निकाल डालेगी बोझ भीतर से,
कहेगा इंसान इसे क्या हुआ,
करेगी हाल बयान वो अपने ।

भेजा होगा हुक्म ख़ुदा ने,
लोग जमा होकर आएँगे,
जो भी किया उन्होंने होगा,
आमाल उन्हें वे दिखाए जाएँगे ।

जरा भी नेकी करी जिसने,
देख लेगा वो उसको,
और करी जिसने भी बुराई,
देखेगा वो भी उसको ।

100. सूर: आदियात

क़सम दौड़ने वाले घोड़े की,
जो दौड़ते सरपट, हांप उठते,
पत्थरों पर ताल मार कर,
आग निकालते खुर से अपने ।

पहुँच के जल्दी मंजिल पर,
सुबह को छापा मारते वो,
गर्द उड़ा अपनी चाल से,
दुश्मन के खेमें घुसते वो ।

कि इंसान ख़ुदा का ना-शुक्रा,
और आगाह है वह उससे,
सख़्त मुहब्बत है करने वाला,
इंसा अपनी धन-दौलत से ।

क्या नहीं जानता इंसा वह वक़्त,
जब मुर्दों को बाहर निकलना होगा,
ज़ाहिर कर देगा भेद दिलों के,
बेशक वो दिन ख़ुदा जानता होगा ।

101. सूर: क़ारिअ:

खड़खड़ाने, क्या खड़खड़ाने वाली,
क्या जानो, क्या खड़खड़ाने वाली,
खड़खड़ाने वाली वह क़ियामत है,
हर चीज हिलाकर रख देने वाली ।

होंगे उस दिन लोग ऐसे,
जैसे बिखरे हुस पतंगे हों,
पहाड़ हो जाएँगे ऐसे जैसे,
रंगी धुंकी हुई ऊन हों ।

जिसके आमाल भारी निकलेंगे,
वह दिल पसन्द ऐश में होगा,
जिसके आमाल हल्के निकलेंगे,
लौटना उसको हाबिया में होगा ।

102. सूर: तकासुर

कर दिया है तुमको गाफ़िल,
धन-दौलत की ख़्वाहिश ने,
कब्रें भी तुमने जा देखीं,
पर आया नहीं यकीन तुम्हें ।

होता तुम्हें जो यकीन का इल्म,
तो पड़ते नहीं तुम ग़फ़लत में,
दोज़ख़ देख यकीन आ जाएगा,
पूछे जाओगे नेमत के बारे में ।

103. सूर: अस्र

क़सम अस्र की, नुक्सान में इंसा,
जो ईमान ले आए सिवा उनके,
नेकी, आपस में हक़ की तल्कीन,
ताकीद सब्र की जो करते रहे ।

104. सूर: हु-म-ज़

ख़राबी है हर चुगलखोर की,
करते इशारे और ताने मारते,
गिन-गिन कर माल जमा करते,
हमेशा जिंदगी की वजह समझते ।

लेकिन ऐसा हरगिज नहीं होगा,
हुतमा में वो डाला जाएगा,
ख़ुदा की भड़कायी आग है हुतमा,
बन्द जिसमें वो किया जाएगा ।

105. सूर: फ़ील

क्या देखा नहीं कि परवरदिगार ने,
क्या हाथी वालों के साथ किया,
भेजे जानवर जो फेंकते थे पत्थर,
खाये भुस सा उन्हें कर दिया ।

106. सूर: क़ुरैश

करें एक ख़ुदा की इबादत,
अम्नों-चैन से रहते-सहते,
जाड़े-गर्मी में क़ुरैश वाले,
बिना रोक-टोक सफर करते ।

107. सूर: माऊन

क्या देखा वो शख़्स तुमने,
जो बदले के दिन को झुठलाता,
देता है जो यतीमों को धक्का,
फ़कीरों के लिए तर्गीब नहीं देता ।

ख़राबी है ऐसे नमाजियों की,
जो नमाज़ से गाफ़िल रहते,
करते हैं काम दिखावे का वो,
औरों को चीज बरतने नहीं देते ।

108. सूर: कौसर

ऐ मुहम्मद, अता की तुम्हें कौसर,
तो पढ़ो नमाज़ ख़ुदा के लिए,
दुश्मन तुम्हारे ही होंगे बे-औलाद,
करो क़ुर्बानी ख़ुदा के लिए ।

109. सूर: काफ़िरून

ऐ पैगम्बर, कह दो कि काफिरों,
नहीं पूजता मैं तुम्हारे बुतों को,
और जिसकी मैं करता इबादत,
पूजते नहीं तुम मेरे ख़ुदा को ।

जिन्हें पूजते तुम, पूजूंगा नहीं,
मेरी बन्दगी, मेरे ही सर,
तुम रहो दीन पर अपने,
मैं रहूँगा अपने दीन पर ।

110. सूर: नस्र

आई मद्दे ख़ुदा, लो फ़तह हुई,
लोग दीन में ले रहे दाख़िला,
तस्बीह करो और माग्फ़िरत माँगो,
बेशक ख़ुदा बड़ा माफ़ करने वाला ।

111. सूर: ल-हब

अबू लहब के टूटें हाथ,
और हलाक हो वो जल्दी,
ना कुछ काम आए माल,
ना उसने जो कमाई करी ।

दाख़िल होगा भड़कती आग में,
साथ में उसके जोरू होगी,
उठाए फिरती है सर पर ईंधन,
गले में उसके रस्सी होगी ।

112. सूर: इखलास

कहो कि एक है वो अल्लाह,
माबूदे बर-हक़ और है बे-नियाज़,
हमसर नहीं कोई उसका,
बेटा ना वो किसी का बाप ।

113. सूर: फ़लक़

कहो कि माँगता हूँ पनाह,
मैं सुबह के मालिक की,
हर चीज की बुराई से,
जो भी उसने पैदा की ।

अँधेरी रात की बुराई से,
गंडों पर फूँकने वालियों से,
और हसद जब करने लगे,
हसद वाले की बुराई से ।

114. सूर: नास

कहो कि पनाह माँगता हूँ मैं,
लोगों के परवरदिगार की,
हक़ीकी बादशाह है जो सबका,
उस माबूदे बर-हक़ की ।

पनाह शैतान की बुराई से,
जो ख़ुद हट जाता है पीछे,
डालता वस्वसे लोगों के दिल में,
चाहे इंसा हो या जिन्नों से ।

दुआए मासुर

ऐ ख़ुदा, मेरे मरने के बाद,
इस क़ुरआन पाक के वसीले से,
हालाते कब्र से मुझे मानूस कर,
और नवाज तू अपनी रहमत से ।

अम्न के साथ, दिन और रात,
करूँ तिलावत, ये नसीब अता कर,
दलील बना उसे तू मेरे लिए,
और दुआ ये मेरी क़बूल कर ।

इमाम बना मेरे लिए क़ुरआन,
नूर, हिदायत और रहमत बना,
जो भूल गया, उसे याद दिला,
जो ना आता, मुझको सिखला ।

आमीन ! आमीन ! आमीन !

....

कुछ उर्दू शब्दों का हिंदी भाषा में अर्थ

अख्लाक	चरित्र, आचरण
अज़ाब	पाप के बदले मिलने वाला दण्ड
अद्ल	सच्ची गवाही योग्य व्यक्ति, सम भाग करना
अफ़्जल	श्रेष्ठ
अस्र	तलवार के लौहे की धारियाँ
अहले किताब	किताब के मानने वाले
आमाल	कर्म
आराफ़	स्वर्ग और नरक के बीच का स्थान
इंशिक़ाक़	फट जाना
इंशिराह	ह्रदय का खुल जाना, प्रसन्नता
इख्तिलाफ़	मतभेद
इद्दत	वह समय जिसमें स्त्री दोबारा निकाह नहीं कर सकती
इताअत	आज्ञा पालन
इबरत	सबक हासिल करना
इब्लीस	शैतान
इम्रान	आबादी
इर्शाद	आज्ञा देना
इल्का	दैवीय प्रेरणा
इल्लत	बीमारी, रोग
इल्लीयीन	अच्छे आचरण वालों का रजिस्टर
उज्रत	पारिश्रमिक
उम्मत	किसी विशेष पैगम्बर को मानने वाला समुदाय
उलेमा	विद्वान
एतिक़ाद	श्रद्धा, आस्था
एहतिमाम	देख-रेख में, प्रबंध से,
एहराम	हज के लिए पहना जाने वाला वस्त्र
कजराही	आयतों का मतलब बदलना
कफ़्फ़ारा	प्रायश्चित
क़सस्	किस्सा कहना
कहफ़	गुफा
क़ादिर	समर्थ, काबू रखने वाला
कारसाज	कार्य साधने वाला
क़ारिअ	दुर्घटना
क़ालिब	शरीर, देह, ढाँचा
क़ासिद	दूत, संदेश वाहक
काहिन	शगुन विचारने वाला
क़िब्ले	मक्का में स्थित हजरे अस्वद (काला पत्थर), जिसकी ओर मुँह कर नमाज़ पढ़ी जाती है
कियाम	नमाज़ में खड़े होना
क़ियामत	महाप्रलय
कुर्ब	करीबी, निकटता

कौसर	स्वर्ग में बहने वाली एक नहर
ख़ल्क़त	सृष्टि
ख़ुश्नूदी	ख़ुशी
ख़ूँबहा	हत्या के बदले दिया जाने वाला धन
ख़ियानत	ग़बन
ख़ूँरेजी	खून बहाना, हत्या करना
ख़्वाहिशें नफ़्स	मन की इच्छाएँ
गनी	धनी
ग़नीमत	युद्ध में जीता हुआ माल
ग़ालिब	शक्तिशाली, विजेता
ग़ाशिय	नर्क की आग, महाप्रलय
गीबत	चुगली
गुलूगीर	गला पकड़ने वाला, आवाज रुँधा देने वाला
गैब	नियति, भाग्य
चश्मा	झरना
चश्में	छोटी नदी, सोता, कुंड, झरने
जबूर	हज़रत दाऊद पर उतरी आसमानी किताब
ज़लज़ाल	कंपाना
जानशीन	उत्तराधिकारी
ज़ाहिर	प्रत्यक्ष
जिनाँ	व्याभिचार
जिब्रील	पैगम्बरों के पास सन्देश पहुँचाने वाला फ़रिश्ता
जिरह	जिरह-बख्तर (योद्धाओं की सुरक्षा के लिए)
जीनत	श्रृंगार, शोभा
जुखरुफ़	सजावट
जुफ़्त	सम संख्या
तंगदस्त	हाथ में पैसा ना होना
तंबीह	चेतावनी
तक्वा	संयम
तक्सीम	विभाजन, बँटवारा
तगाबुन	घाटा पहुँचाने वाला
तज्वीज़	सलाह करना, योजना बनाना
तफ्सील	विवरण
तर्गीब	प्रलोभन, प्रेरणा
तल्कीन	दीक्षा देना, सदुपदेश देना
तस्दीक	पुष्टि
तस्बीह	माला जपना
तहक़ीक	जाँच-पड़ताल
ताक	विषम संख्या
तिजारत	व्यापार
तिलावत	धर्मग्रंथ पढ़ना
तूरे सीनीन	सीनै पर्वत
तौक	कैदियों के गले में पहनाई जाने वाली हँसली
तौफ़ीक	देवकृपा, योग्यता, सामर्थ्य

दानाई	बुद्धिमता
दानिश	बुद्धि
दोज़ख़	नर्क
नजासत	अपवित्रता, विष्ठा
नफ़्स	वासना
नम्ल	चींटी
नबी	पैगम्बर
नबी-ए-उम्मी	मुहम्मद साहब का ख़िताब-उनहोंने किसी से पढ़ा ना था
नस्र	गद्द
नहूल	शहद की मक्खी
ना-ख़लफ़	कपूत,
नाज़िल	प्रकट होना, उतरना, सामने आना
ना-शाइस्ता	अ-शिष्ट
निसा	स्त्रियाँ
नुत्फ़े	वीर्य, शुक्र
नुबुवत	नबी (पैगम्बर) बनना
पोशीदा	छिपा हुआ, गुप्त
फ़ज़ल	कृपा
फ़ज़ीलत	श्रेष्ठता
फ़ज्र	भोर
फ़राहम	एकत्र
फ़हत्याब	विजय
फ़ातिर	सृष्टिकर्ता
फ़िर्केबाजी	अलग-अलग पक्षों में बांटना, भेद डालना
फील	हाथी
फैज	कृपा धार
फौत	मृत्यु
बनी इस्राईल	यहूदी, यहूदियों की उपाधि (यहूदी कौम)
बर-हक़	सत्य, दुरुस्त
बशारत	ख़ुशख़बरी
बसारत	चातुर्य, दिल की नज़र
बातिल	झूठ
बा-हिदायत	जिसे हिदायत (उपदेश) मिला हुआ हो
बुख्ल	कंजूसी
बय्यिन	ठोस प्रमाण
बे-नियाज	निस्पृह
बैत	दीक्षा, शपथ
बुहतान	झूठा इल्ज़ाम
मआरिज	सीढियाँ
मकर	मक्कारी
मक्सूद	अभिप्राय
मख़्लूक़	दुनिया, लोग
मग्रिबों	पश्चिम

मशक़्क़त	दौड़-धूप, कष्ट
मश्रिकों	पूर्व दिशा
मश्गला	दिल बहलाव, व्यापार
माग्फ़िरत	मुक्ति, मोक्ष
मानूस	जिसकी घबराहट दूर हो गयी हो
माबूद	ईष्ट, हस्ती
मीरास	दाम, गुजारे के लिए दी गयी जमीन
मुकम्मल	सम्पूर्ण
मुक़र्रब	निकटस्थ
मुकर्रर	तय करना
मुखातब	श्रोता
मुख्लिस	निश्छल, पवित्र
मुजादला	लड़ाई
मुतवज्जह	ख्याल करनेवाला
मुनाफ़िक	जिसके मुँह में कुछ और दिल में कुछ और हो
मुफ्लिसी	गरीबी
मुम्तहिन	इम्तहान लेने वाला
मुर्सल	भेजी हुई वस्तु
मुशिरक	जो ईश्वर को एक ना मानता हो
मुसल्लत	आच्छादित, विवश किया हुआ
मोमिन	मुसलमान
रगे जान	सबसे बड़ी खून की रग जो दिल में जाती है
रफीक	मित्र
रिसालत	रसूल (नबी, पैगम्बर) बनाना
रुजूअ	प्रवृत, आकृष्ट होना
रूहुल अमीन	हजरत जिब्रील
रूहुल-कुदुस	पवित्र आत्मा, फ़रिश्ता
लतीफ़	सूक्ष्म, बारीक
लयपालक	गोद लिए पुत्र/पुत्री के पालक
लव्वामा	बुरे कामों और पापों से रोकने वाली मानसिक शक्ति
लैल	रात्रि
वस्वसा	विरुद्ध विचार, अनिष्ट की आशंका
वह्य	ईश्वरीय आदेश
वुसअत	सामर्थ्य
शफ़क़त	हमदर्दी
शबे क़द्र	रजब के महीने की 27 वी तारीख, पवित्र रात
शहादत	साक्षी, गवाही, कुर्बानी
शरीअत	धार्मिक न्याय व्यवस्था
शिफा	रोगमुक्ति
शिर्क	अनेकेश्वरवादी होना
शुअरा	कविगण
शूरा	परामर्श
संगसार	पत्थर मारना

सआदत	भलाई, कल्याण
सऊद	यातना, ऊपर चढ़नेवाला
सक़र	नरक, दोज़ख़
सदका	निछावर
सफ़	पंक्ति, कतार
सरकश	उद्दण्ड, विद्रोही
सरमाया	पूँजी, धन
सहीफ़	धर्मग्रन्थ
सिज्जीन	बुरे आचरण वालों का रजिस्टर
सिफ़त	प्रशंसा
सूर	क़ियामत के दिन फूँकी जाने वाली तुरही
सूरः	कुरआन की सूरत; अध्याय
हदीद	लौहा, फौलाद
हमवार	समतल
हसद	ईर्ष्या
हामिल:	गर्भवती
हिक्मत	बुद्धिमता, युक्ति
हिजरत	देश छोड़ना, प्रवास (मक्का से मदीना जाना)
हुजरों	आश्रय स्थल
हैबत	रोब, भय